प्रणु [illegible] न होतो — 22

वैराग्यादिक गुण पृष्ठ 22

यजुर्वेद संहिता के भाष्य का भाष्य ग्रीफिथ ~~साहब~~ - पृष्ठ. 84
और शतपथ ब्राह्मण दे।

पृष्ठ ४५ में- मांसादि से होम करना

पृष्ठ १४८ - मांस के पिण्ड देने में पाप नहीं

पृष्ठ १९१ - यज्ञ के वास्ते जो पशुओं की हिंसा है सो विधिपूर्वक हनन है

पृष्ठ 302 - कोई भी मांस न खाय तो जानवर तो जानवर पक्षी —

पृष्ठ 303 - जहां २ गोमेधादिक लिखे हैं वहां २ पशुओं में नरों का मारना
और वन्ध्या गाय होती है उसको भी गोमेध में मारना।

पृष्ठ ३९९ - पशुओं को मारने में थोड़ा सा दुःख होता है परन्तु यज्ञ में
चराचर का अत्यन्त उपकार होता है।

[illegible] २१ स. प्र. अध्याय २ में लिखा

पण्डित - पृष्ठ - 334 1 2

शंकराचार्य - - 312 - 286

जब पुण्य और पाप तुल्य होते हैं तब मनुष्य होता है
(उल्लास [illegible] १६१) पृ. २८४

पृ २३२ में - जब जीवों को ईश्वर ने रचा -

पृ. १५२ सब जीवों को स्वतन्त्र [illegible]

विषय में लिखा जाय
इन्द्रादिक देवों के प्र
करना चाहिये उत्तर
क्योंकि जो किसी का
किसी से उदासीन भी
जगत् का मित्रही है
व्यवहार में किसी क
से उदासीन होने से
महाभाष्य के बचन क
कार्यसम्प्रत्ययः गौणमुख्
है कि प्रधान और अ
धान और मुख्यही का
ने पूछा कि यह कौन
है इसमें विचार करन
भृत्य हाथी घोड़े और
उनका ग्रहण नही भय
हुआ क्योंकि प्रधा औ
हण नहीं है
सभों मे मुख्य
नहीं इसी से परमेश्वर
चित है। इअवरणो
शब्द सिद्ध होता है
नीयस्सवरुणः। अथवा
भिः यः सवरुणः परमे
शिष्टादिभिः सवरुणः
है शिष्ट मुमुक्षु और
वरुण नाम परमेश्वर

र्वा वरयति नाम जो
ण है वर्यते नाम और
य होय उसका नाम
वरुणो नाम वरः वरो
ा नाम वरुण है वैसा
ों । ऋगतिप्रापणयं का
जो सभों के कर्मों के
करने वालों को यथाम
त्य नियम करे उसका
धातु से इन्द्र शब्द को
वति स इन्द्रः जिसको
ा भी ऐश्वर्य न होवे
ो आगे पति शब्द का है
न:सबृहस्पतिः । जो बड़ों
र ब्रह्मादिकों का जो
प्लु व्याप्तौ ॥ इस धातु
नाम व्याप्नोतिचराचरं जो
क्रम यस्यसउरुक्रमः
म अनन्त पराक्रम
है इहहिहहो । इनो
व के ऊपर विराजमान
ा ब्रह्म है वायु का अर्थ
लेना चाहिये अर्थ
यह पद से हम सभ
ॐकारादिक जितने
ब्रह्म हैं । त्वामेवप्रत्यक्ष
ब्रह्म कहूंगा प्रत्यक्ष नाम

. जा.
जिस

( )

सब जगत् में आप नित्यही प्राप्त हो ऋतम्वदिष्यामि । आप की जो यथार्थ आज्ञा है उसी को मैं कहूंगा और उसी कोही मैं ाकरूंगा सत्यम्वदिष्यामि । और सत्यही कहूंगा और करूंगा ो तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु । ऐसा जो मैं आपकी आज्ञा को ने वाला और करने वाला मेरी आप रक्षा करें ज्ञा से मेरी बुद्धि विरुद्ध न होय । उसी आज्ञा ने वाला उसी आज्ञा से मैं विरुद्ध कभी न कहूं । की आज्ञा है धर्म रूपीही है जो उससे विरुद्ध सो उसी आज्ञा को कहूं और करूं भी वैसी आप कृपा करें जब उस आज्ञा को यथावत कहूंगा और करूंगा भी तब उस मुख्य फल यही है कि आप की प्राप्ति का होना अवतुमाम-वक्तारम् । यह फिर जो दूसरी बार पाठ है मन्त्र में वह दर के वास्ते है जैसे कि किसी ने किसी से कहा त्वंग्रामङ्-गच्छ । यह कहने से क्या जाना जाता है कि तूं ग्राम को घ्रही जा वैसेही दूसरी बार पाठ से आप मेरी अवश्यही रक्षा करें और (ॐशान्तिश्शान्तिश्शान्तिः) यह जो तीन बार पाठ है सका अभिप्राय यह है कि अध्यात्मताप जो शरीर में रोगा-कों से होता है दूसरा शत्रु व्याघ्र और सर्पादिकों से जो होता उसका नाम आधि भौतिक है तीसरा ताप वह है कि वृष्टि ा अत्यन्त होना और कुछ भी वृष्टि का न होना अति शीत उष्णता का होना उसका नाम आधि दैविक ताप है हम ोगों की यह प्रार्थना है कि जगत के तीनों तापों की निवृत्ति ाप की कृपा से होजाय भवान्शन्नोभवतु । आप हम लोगों के र्थात सब संसार के कल्याण करने वाले हो आप से भिन्न ई भी कल्याण कारक अथवा कल्याण स्वरूप नहीं है इससे ाप सेही प्रार्थना है कि सब जीवों के हृदय में आपही प्रकाशित होवैं इस मन्त्र का संक्षेप से अर्थ पूर्ण होगया और

रत्यरंतज्जलम् ।(जो अव्यक्त से व्यक्त को और एक परमाणु से दूसरे परमाणु को अन्योन्य संयोग और वियोग के वास्ते जो हनन और प्रतिहनन करने वाला होय उसका नाम जल है इससे परमेश्वर का नाम जल है हनन नाम एक से एक को मिलाना प्रतिहनन नाम दूसरे से तीसरे को मिलाना तीसरे को चौथे से मिलाना जगत की उत्पत्ति समय में सभों का संयोग करने वाला और प्रलय समय में वियोग का करनेवाला ऐसा परमेश्वरही है दूसरा कोई भी नहीं)॥ जनीप्रादुर्भावे । लाआदाने इन धातुओं से भी जल शब्द सिद्ध होता है जनयति नाम उत्पादयतिसर्वञ्जगत् तज्जम् लातिगृह्णाति नाम आदत्ते चराचरञ्जगत्तल्लम् जञ्चतल्लञ्चतज्जलम् ॥ ब्रह्म ज शब्द से सभों का जनक और ल शब्द से सभों का धारण करने वाला उसका नाम जल, जल नाम परमेश्वर का है काशृदीप्तौ । इससे आकाश शब्द सिद्ध होता है ॥ आसमन्तात् सर्वतः सर्वञ्जगत्प्रकाशतेसआकाशः । जो परमेश्वर सब जगह से और सब प्रकार से सभों को प्रकाशता है इससे परमेश्वर का नाम आकाश है ॥ अदभक्षणे । इससे अन्न शब्द सिद्ध होता है ॥ अत्तिभक्षयतिचराचरञ्जगत्तदन्नम् । जो चराचर जगत् का भक्षक है और काल को भी खाके पचा लेता है उसका नाम अन्न है इसमें प्रमाण है ॥ अद्यतेऽत्तिचभूतानि तस्मादन्नन्तदुच्यते । यह तैत्तिरीयोपनिषद का वचन है ॥ अहमन्नमहमन्नमहमन्नम् अहमन्नादोऽहमन्नादोऽहमन्नादः । यह भी उसी उपनिषद में है ॥ अन्नमत्तीत्यन्नादः । अन्न शब्दसे चराचर जगत् का जो ग्राहक उसका नाम अन्नाद है यह वचन परमेश्वरही का है क्योंकि मैं अन्न हूं मैंहीं अन्नाद हूं तीन बार इस श्रुति में पाठ आदर के वास्ते है जैसे कि त्वंग्रामङ्गच्छगच्छगच्छ । इससे क्या लिया जाता है कि शीघ्रही तूं ग्राम को जा और कहीं भी ठहरना

नहीं इस प्रकार के व्यवहारों में जो बहुत बार का कहना है सो जैसे अनर्थक नहीं वैसे इसमें भी अनर्थक नहीं इस विषय में व्यासजी का सूत्र भी प्रमाण है ॥ अत्ताचराचरग्रहणात्। अत्ता नाम खाने वाले का है उसी का नाम अन्नाद है चराचर नाम जड़ और चेतन सब जगत उसके ग्रहण करने से परमेश्वर का नाम अत्ता और अन्नाद है जैसे कि गूलर के फल में कृमि उत्पन्न होके उसी में रहते हैं और उसी में नाश हो जाते हैं इससे परमेश्वर का नाम अत्ता अन्न और अन्नाद है वसनिवासे इस धातु से वसु शब्द सिद्ध होता है ॥ वसन्तिसर्वाणिभूतानि यस्मिन्सवसुः। अथवा सर्वेषुभूतेषुयोवसतिसवसुः। सब आकाशादिक भूत जिसमें रहते हैं उसका नाम वसु है अथवा सब भूतों में जो बास कर्ता है उसका नाम वसु है इससे वसु परमेश्वर का नाम है ॥ रुदिर्अश्रुविमोचने। रुदेर्णिलोपश्च इस धातु से और इस सूत्र से रुद्र शब्द सिद्ध होता है ॥ रोदयति न्यायकारिणोजनान्सरुद्रः। रोवाता है दुष्ट कर्म करने वाले जीवों को जो उसका नाम रुद्र है इसमें यह श्रुति का भी प्रमाण है ॥ यन्मनसाध्ययति तद्वाचावदति यद्वाचावदति तत्कर्मणाकरोति यत्कर्मणाकरोति तदभिसम्पद्यते। यह यजुर्वेद के ब्राह्मण की श्रुति है इसका यह अर्थ है कि जो जीव मन से विचारता है वही बचन से कहता है उसी को कर्त्ता है और जिसको कर्ता है उसी कोही प्राप्त होता है ऐसी परमेश्वर की आज्ञा है कि जो जैसा कर्म करै सो वैसाही फल पावै इस आज्ञा को कहने वाला परमेश्वर है उसकी आज्ञा सत्यही है इससे जो जैसा कर्ता है सो वैसाही प्राप्त होता है इससे क्या आया कि दुष्ट कर्मकारी जितने पुरुष हैं वे सब दुष्ट कर्मों के फल प्राप्त होके रोदनहीं कर्ते हैं इस कारण से परमेश्वर का नाम रुद्र है नारायण भी नाम परमेश्वर का है ॥ आपोनाराइतिप्रो

का आपोवैनरसूनवः। तायदस्यायनंपूर्वं तेननारायणःस्मृतः॥ यह श्लोक मनुस्मृति का है आप नाम जल का है और नारसंज्ञा भी जलकी है और वे प्राण जलसंज्ञक हैं वे सब प्राण जिसका अयन नाम निवासस्थान है इससे परमेश्वर का नाम [illegible] है सूर्य का अर्थ तो कर दिया है॥ चदिआल्हादे। इस धातु से चन्द्र शब्द सिद्ध होता है॥ चन्दतिसोयञ्चन्द्रः। जो आल्हाद नाम आनन्द स्वरूप होय और जो मुक्त पुरुष जिसको प्राप्त हो के सदा आनन्द स्वरूपही रहै उसको दुःखका लेश कभी न होय इससे परमेश्वर का नाम चन्द्र है॥ मगिधातुर्गत्यर्थः। मङ्गेरलच् इससे मङ्गल शब्द सिद्ध हुआ॥ मङ्गतिसोयंमङ्गलः। जो आपतो मङ्गल स्वरूपहो हैं और सब जीवों के मङ्गल का वही कारण है इससे परमेश्वर का नाम मङ्गल है॥ बुधअवगमने। इस धातु से बुध शब्द सिद्ध होता है॥ बुध्यतेसोयंबुधः। जो आप तो बोध स्वरूप होय और सब जीवों के बोधों का कारण होय इससे परमेश्वर का नाम बुध है बृहस्पति का अर्थ प्रथम कर दिया है॥ ईशुचिरपूतीभावे। इस धातु से शुक्र शब्द सिद्ध होता है शुचिर्गीम। अत्यन्त पवित्र का जो आपतो अत्यन्त पवित्र होय औरों के पवित्रता का कारण होय इससे परमेश्वर का नाम शुक्र है चरगतिभक्षणयोः। इस धातु से शनैस् अव्यय पूर्व पदसे शनैश्चर शब्द सिद्ध होता है जो अत्यन्त धैर्यवान् होय और सब संसार के धैर्य का कारण होय इससे परमेश्वर का नाम शनैश्चर है रहत्यागे। इस धातु से राहु शब्द सिद्ध होता है जो सब से एकान्त स्वरूप होय जिसमें कोई भी मिला न होय और सब त्यागियों के त्याग का हेतु होय इससे परमेश्वर का नाम राहु है॥ कित निवासेरोगापनयनेच। इससे केतु शब्द सिद्ध होता है जो सब जगत् का निवासस्थान होय और सब रोगोंसे रहित होय मुमुक्षुओं के जन्म मरणादिक रोगों के नाशका हेतु होय

इससे परमेश्वर का नाम यज्ञ है ॥ यजदेवपूजासङ्गतिकरणदानेषु इस धातु से यज्ञ शब्द सिद्ध होता है ॥ इज्यतेसर्वैर्ब्रह्मादिभिर्जनैस्सयज्ञः । सब ब्रह्मादिक जिसकी पूजा कर्ते हैं उसका नाम यज्ञ है ॥ यज्ञोवैविष्णुरितिश्रुतेः । यज्ञ का नाम विष्णु है और विष्णु नाम है व्यापक का इस श्रुति से भी परमेश्वर का नाम यज्ञ है ॥ हुदानादनयोः । इस धातु से होम शब्द सिद्ध होता है ॥ हूयतेसोयंहोमः । जो दान नाम देने के योग्य है और अदन नाम ग्रहण करने के योग्य है उसका नाम होम है सब दानों से परमेश्वर का जो दान नाम उपदेश का करना और सब ग्रहणों से जो परमेश्वर का ग्रहण नाम परमेश्वर में दृढ़ निश्चय का करना इस दान से वा ग्रहण से कोई भी उत्तमदान वा ग्रहण नहीं है इससे परमेश्वर का नाम होम है ॥ बन्धबन्धने इस धातु से बन्धु शब्द सिद्ध होता है जिसने सब लोक लोकांतर अपने २ स्थान में प्रबन्ध करके यथावत् रक्खे हैं और अपने २ परिधि के ऊपर सब लोक भ्रमण करैं इस प्रबन्ध के करने से किसी से किसी का मिलना न होय जैसे कि बन्धु बन्धु का सहायकारी होता है वैसेही सब पृथिव्यादिकों का धारण करना और सब पदार्थों का रचन करना इससे परमेश्वर का नाम बन्धु है पा पाने पारक्षणे । इन दो धातुओं से पिता शब्द सिद्ध होता है जैसे कि पिता अपनी प्रजा के ऊपर कृपा और प्रीति को कर्त्ताही है तैसे परमेश्वर भी सब जगत के ऊपर कृपा और प्रीति कर्ता है इससे परमेश्वर का नाम सब जगत् का पिता है पितृणांपितापितामहः । जितने जगत में पिता लोग हैं उन सभों के पिता होने से परमेश्वर का नाम पितामह है ॥ पितामहानांपिता प्रपितामहः । जगत में जितने पिताओं के पिता हैं उन सभों के पिता के होने से परमेश्वर का नाम प्रपितामह है ॥ मा माने माङ्माने शब्देच । इन दो धातुओं से माता शब्द

सिद्ध होता है जैसे कि माता अपनी प्रजाका मान करती है और लाड़न करती है तैसेही सब जगत का मान और लाड़न अत्यन्त कृपा और प्रीति करने से परमेश्वर का नाम माता है ॥ श्रोत्रस्यश्रोत्रंमनसोमनो यद्वाचोहवाचंसउप्राणस्यप्राणः । चक्षुषश्चक्षुरतिमुच्यधीराः प्रेत्याऽस्माल्लोकादमृताभवन्ति ॥ यह केनोपनिषद का बचन है इसका यह अभिप्राय है कि जैसे श्रोत्रादिक अपने २ बिषय को ग्रहण करते हैं तथा सब श्रोत्रादिकों का और श्रोत्रादिक बिषयों को उनकी क्रिया को भी यथावत् जानता है इस्से परमेश्वर का नाम श्रोत्रका श्रोत्र है तथा मन का मन वाणी को वाणी प्राण का प्राण और चक्षु का चक्षु इस्से परमेश्वर के नाम श्रोत्र मन वाणी प्राण और चक्षु ये सब हैं बोधयन् बुद्धिर्भवति चेतयन्चित्तम्भवति । नाम सब का चेताने वाले हैं इस्से परमेश्वर का नाम चित्त और बुद्धि है ॥ अहङ्कुर्वन्नहङ्कारोभवति । नाम अहङ्करोतीत्यहङ्कारः जो अव्याकृतादिक सब जगत् को मैंहीं करता हूं ऐसा जो ज्ञान का होना इस्से परमेश्वर का नाम अहङ्कार है ॥ जीवप्राणधारणे । इस धातुसे जीव शब्द सिद्ध होता है ॥ जीवयतिसर्वान्प्राणिनःसजीवः । जो सब जीव और प्राणों का जीवन् धारण करने वाला है इस्से परमेश्वर का नाम जीव है ॥ आप्लृव्याप्तौ । इस धातु से अप् शब्द सिद्ध होता है सब जगत में व्यापक होने से परमेश्वर का नाम आप है ॥(जनीप्रादुर्भावे इस्से अज शब्द सिद्ध होता है ॥ नजायतइत्यजः । जिसका जन्म कभी न हुआ न है और न होगा इस्से परमेश्वर का नाम अज है ॥ सत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्म । यह तैत्तिरीयोपनिषद का बचन है ॥ अस्तीतिसत् सतेहितंसत्यम् । जो सब दिन रहे जिसका नाश कभी न होय ॥ इस्से परमेश्वर का नाम सत्य स्वरूप है और ज्ञान स्वरूप होने से परमेश्वर का नाम ज्ञान है (जिसका अन्त नाम सीमा कभी नहीं अर्थात

देश काल और वस्तु का परिच्छेद नहीं जैसे कि मध्यदेश में दक्षिण देश नहीं दक्षिण देश में मध्यदेश नहीं भूतकाल में भविष्यत्काल नहीं और दोनों में वर्तमान काल नहीं तैसेही पृथिवी आकाश नहीं और आकाश पृथिवी नहीं ऐसा भेद परमेश्वर में नहीं है ऐसा ब्रह्मही है किन्तु सब देशों सब कालों और सब वस्तुओं में अखण्ड एक रस के होने से और कोई भी जिसका अन्त न लेसके इस्से परमेश्वर का नाम अनन्त है टुनदि समृद्धौ। इस्से आनन्द शब्द सिद्ध होता है जो सब समृद्धिमान् सदा आनन्द स्वरूप और मुमुक्षु मुक्तों को जिस की प्राप्ति से सब समृद्धि और नित्यानन्द के होने से परमेश्वर का नाम आनन्द है॥ सत् शब्द का अर्थ सत्य शब्द के व्याख्यान में जान लेना और ज्ञान शब्द के व्याख्यान से चित् शब्द का अर्थ जान लेना इस्से परमेश्वर को सच्चिदानन्द स्वरूप कहते हैं॥ शुन्धशुद्धौ। इस्से शुद्ध शब्द सिद्ध होता है जो आप तो शुद्ध होय जिसको कुछ मलीनता के संयोग का लेश कभी न होय और सब शुद्धियों के हेतु के होने से परमेश्वर का नाम शुद्ध है बुध अवगमने। इस धातु से बुद्ध शब्द सिद्ध होता है जो सब बोधों का परमावधि नाम परम सीमा के होने से परमेश्वर का नाम बुद्ध है॥ (मुच्लृ मोचने। इस धातु से मुक्त शब्द सिद्ध होता है जो आप तो सदा मुक्त स्वरूप होय और सब मुक्त होने वालों के मुक्ति के साक्षात् हेतु होने से परमेश्वर का नाम मुक्त है)॥ सदकारणवन्नित्यम्। जो सत् स्वरूप होय और कारण जिसका कोई भी नहीं इस्से परमेश्वर का नाम नित्य है ये सब मिलके ऐसा एक नाम हो जायगा॥ नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावः। जो स्वभावही से नित्य शुद्ध बुद्ध और मुक्त के होने से परमेश्वर का नाम नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव है॥ डुकृञ्करणे। इस धातु से निराकार शब्द सिद्ध होता है॥ (निर्गतः आकारोयस्मात्स-

निराकारः। जिसका आकार कोई भी नहीं इस्से परमेश्वर का नाम निराकार है॥ (अञ्जनं मायाऽविद्ययोर्नाम निर्गतमञ्जनं यस्मात् स निरञ्जनः। माया नाम छल और कपट का है क्योंकि यह पुरुष मायावी है इस्से क्या जाना जाता है कि यह छली और कपटी है अविद्या अज्ञान का नाम है जिसको माया और अविद्या का लेश मात्र सम्बन्ध कभी न हुआ न है और न होगा इस्से परमेश्वर का नाम निरञ्जन है)॥ गणसंख्याने। इस धातु से गण शब्द सिद्ध होता है इसके आगे ईश शब्द रखने से गणेश शब्द सिद्ध होता है॥ गणानांसमूहानांजगतामीशस्स गणेशः। जो सब गणों का नाम संघातों का अर्थात सब जगतों का ईश नाम स्वामी होने से परमेश्वर का नाम गणेश है॥ विश्वस्यईश्वरःविश्वेश्वरः। विश्वनाम सब जगत का ईश्वर होने से परमेश्वर का नाम विश्वेश्वर है॥ कूटेतिष्ठतीतिकूटस्थः। जिसमें सब व्यवहार होय आप सब व्यवहारों में व्याप्त होय और सब व्यवहार का आधार भी होय परन्तु जिस्के स्वरूप में व्यवहार का लेश मात्र भी विकार न होनेसे परमेश्वर का नाम कूटस्थ है। जितने देव शब्द के अर्थ लिखे हैं वेही अर्थ देवी शब्द के जान लेना चाहिये॥ शक्लृशक्तौ शक्नोतियया साशक्तिः। जो सब पदार्थों को रचने का सामर्थ्य जिसमें है इस्से परमेश्वर का नाम शक्ति है॥ लक्षदर्शनाङ्कनयोः। इस्से लक्ष्मी शब्द सिद्ध होता है लक्षयति नाम दर्शयति चराचरञ्जगत् सालक्ष्मीः जो सब जगत् को उत्पन्न करके देखावै उसका नाम लक्ष्मी है॥ अङ्कयति चिन्हयति वा चराचरञ्जगत्सालक्ष्मीः। जो सब जगत के चिन्हों को अर्थात नेत्र नासिकादिक और पुष्प पत्र मूलादिक एक से एक विलक्षण जितने चिन्ह हैं उनके रचने और प्रकाशक के होने से परमेश्वर का नाम लक्ष्मी है॥ लक्ष्यतेवेदादिभिश्शास्त्रैर्ज्ञानिभिश्चसापिलक्ष्मीः। वेदादिक शास्त्र और ज्ञानियों

का लक्ष्यनाम दर्शन के योग्य होने से परमेश्वर का नाम लक्ष्मी है ॥ सृगतौ । इस सरस् शब्द से मतुप् और ङीप् प्रत्यय के करने से सरस्वती शब्द सिद्ध होता है सरोनाम विज्ञानम् विज्ञानंनाम विविधंयत्ज्ञानम् तत्विज्ञानम् सरस् शब्द विज्ञान का वाचक है विविधनाम नानाप्रकार शब्द शब्दों का प्रयोग और शब्दार्थ सबन्धों का यथावत् जो ज्ञान उसका नाम विज्ञान है ॥ सरोनाम विज्ञानंविद्यतेयस्याः सासरस्वती । सर नाम विज्ञान सो अखण्डित विद्यमान है जिसको उसका नाम सरस्वती है वैसा परमेश्वरही है इससे सरस्वती नाम परमेश्वर का है ॥(सर्वाःशक्तयोविद्यन्तेयस्यससर्वशक्तिमान् । जिसको सब शक्ति नाम सब सामर्थ्य विद्यमान होय उसका नाम सर्व शक्तिमान् है अर्थात जो किसी का लेशमात्र सामर्थ्य का आश्रय न लेवै और सब जगत उसका आश्रय कर्ता है इससे परमेश्वरका नाम सर्व शक्तिमान् है)धर्म न्याय और पक्षपात का त्याग ये तीन नाम एक अर्थ के वाचक हैं ॥(प्रमाणैरर्थपरीक्षणंन्यायः । यह न्यायशास्त्र सूत्रों के ऊपर वात्स्यायन मुनिकृत भाष्य का बचन है जो प्रत्यक्षादिक प्रमाणों से सत्य सत्य सिद्ध होय उसका नाम न्याय है ॥ न्यायकर्तुंशीलमस्यसोऽयंन्यायकारी । जिसका न्याय करनेही का स्वभाव होय और अन्याय करने का लेशमात्र सम्बन्ध कभी न होय ऐसा परमेश्वरही है इससे परमेश्वर का नाम न्यायकारी है)॥ दय दान गति रक्षण हिंसादानेषु । इस धातु से दया शब्द सिद्ध होता है ॥ दय्यतेयासादया । दान नाम अभय का देना गतिर्नाम यथावत् गुण दोषों का विज्ञान रक्षण नाम है सब जगत को रक्षा का करना हिंसा नाम दुष्ट कर्मकारियों को दण्ड का होना आदान नाम सब जगत के ऊपर वात्सल्य से कृपा का करना इसका नाम दया है)॥ दयाविद्यतेयस्यसदयालुः । उस दया के नित्य विद्यमान होने से

परमेश्वर का नाम [redacted] है ॥(सदेवसोम्येदमग्रआसीदेकमेवा द्वितीयम् । यह छांन्दोग्योपनिषद् का बचन है इस्का अभिप्राय यह है कि हे सोम्य हे श्वेतकेतो श्वेतकेतु के जो पिता उद्दालक व उस्से कहते हैं अग्रे नाम सृष्टि जब उत्पन्न नहीं भई थी तब एक अद्वितीय ब्रह्म परमेश्वरही था और कोई भी नहीं था वैसा कोई परमेश्वर से भिन्न न हुआ न है और न होगा सदेव नाम जिस्का नाश किसी काल में कभी न होय ॥ इस्से श्रुति में सदेव यह बचन का पाठ है)॥ एकम् एव और अद्वितीयम् ये तीनों शब्दों से यह अर्थ जाना जाता है कि ॥ सजातीयविजातीयस्वगतभेदशून्यंब्रह्मास्तीति । सजातीय भेद यह है कि मनुष्यसे भिन्न दूसरे मनुष्यों का होना विजातीय भेद यह है कि मनुष्य से भिन्न विजातीय पाषाण और स्वगत भेद यह है कि जैसे मनुष्य में नाक कान सिर पांव एक से एक भिन्न अवयव हैं तैसेही परमेश्वर में तीन प्रकार के भेद नहीं जब सजातीय परमेश्वर से भिन्न कोई दूसरा वैसाही परमेश्वर होय तब तो सजातीय भेद होय ऐसा दूसरा कोई परमेश्वर नहीं है इस्से परमेश्वर में सजातीय भेद नहीं है जैसे परमेश्वर का न्यायकारित्वादि गुण स्वाभाविक हैं तैसाही परमेश्वर से भिन्न अन्यायकारित्वादि विशिष्ट गुणवान् दूसरा विरुद्ध स्वभाव परमेश्वर होय तब तो परमेश्वर में विजातीय भेद आसकै जैसा कि खुदा के विरुद्ध शैतान ऐसा कभी नहीं इस्से परमेश्वर में विजातीय परिच्छेद नहीं(परमेश्वर निराकार और निरवयव है) वैसेही कोई प्रकार का भेद नहीं है इस्से परमेश्वर में स्वगत परिच्छेद नहीं इस्से परमेश्वर का नाम [redacted] है यही अद्वैत शब्द का अर्थ है ॥ द्वयोर्भावोद्विताद्वितैवद्वैतम् नविद्यतेद्वैतंयस्मिन्नयस्वातदद्वैतम् । दोनों विद्यमान ईश्वरों का जो होना उस्का नाम द्विता है द्विता जिसको कहते हैं उसी का नाम द्वैत है

नहीं है विद्यमान द्वैत जिसमें जिसको वा उसका नाम अद्वैत है, अद्वितीय और अद्वैत परमेश्वरही का नाम है ॥ निर्गता: जन्मादय: अविद्यादय: सत्त्वादय: गुणा: यस्मात् सनिर्गुण: परमेश्वर: । जगत् के जन्मादिक अविद्यादिक और सत्वादिक गुणों से भिन्न हैं अर्थात जगत के जितने गुण हैं वे परमेश्वर में लेश मात्र सम्बन्ध से भी नहीं रहते इस्से परमेश्वर का नाम निर्गुण है सच्चिदानन्दादिगुणै: सहवर्तमानत्वात्सगुण: अपने नित्य स्वाभाविक सच्चिदानन्दादिक गुणों से सदा सहवर्तमान होनेसे परमेश्वर का नाम सगुण है कोई भी संसार में ऐसी वस्तु नहीं है जो कि केवल निर्गुण अथवा सगुण होय जैसे कि पृथिवी में गन्धादिक गुणों के योग होने से सगुण है और वही पृथिवी चेतन और आकाशादिकों के गुणों से रहित होने से निर्गुण भी है वैसेही अपने सर्वज्ञादिक गुणों से सदा सहित होनेसे परमेश्वर का नाम सगुण है और उत्पत्ति स्थिति नाश जड़त्वादिक जगत के गुणों से रहित होने से परमेश्वर निर्गुण भी है वैसे सब जगहों में विचार कर लेना ॥(सर्वजगतोन्तर्यन्तुं शीलमस्यसो ऽन्तर्यामी । जो सब जगत के भीतर बाहर और मध्य में सर्वत्र व्याप्त होके सब को जानते हैं और सब जगत को नियम में रखने से परमेश्वर का नाम अन्तर्यामी है)न्यायकारी नाम के अर्थ में धर्म शब्द की व्याख्या कर दी है उस्से जानलेना धर्मेण राजते सधर्मराज: अथवाधर्मंराजयतिप्रकाशयति सधर्मराज: । धर्म न्याय का और न्याय पक्षपात के त्याग का नाम है तिस धर्म से सदा प्रकाशमान होय अथवा सदा धर्म का प्रकाशकरने से परमेश्वरका नाम धर्मराज है ॥(सर्वञ्जगत्करोतीतिसर्वजगत् कर्त्ता सो सब जगत् का करने वाला होने से परमेश्वर का नाम सर्व जगत् कर्त्ता है)॥ निर्गतंभयंयस्मात्सनिर्भय:)। जिसको किसी से किसी प्रकार का भय नहीं होता है इस्से परमेश्वर का नाम

निर्भय है ॥ (नविद्यतेआदिःकारणंयस्यसः अनादिः । जिसका कारण कोई भी नहीं और अपने तो सब जगत का आदि कारण है इससे परमेश्वर का नाम अनादि है)॥(अणोरणीयान्महतोमहीयान् । यह मुण्डकोपनिषद् का वचन है/ जो सब सूक्ष्म पदार्थों से अत्यन्त सूक्ष्म के होने से परमेश्वर का नाम सूक्ष्म है/ और जो सब बड़ों में अत्यन्त बड़ा है इससे परमेश्वर का नाम महान् है सब कल्याण गुणों से सदा युक्त रहने से परमेश्वर का नाम शिव है ॥(भगोविद्यतेयस्यसभगवान् । जो अनन्त ज्ञान अनन्त वैराग्यादिक नित्य गुणों से युक्त होने से परमेश्वर का नाम भगवान् है)॥(मानयतिचराचरञ्जगत् । अथवा सर्व्वैर्वेदादिभिश्शास्त्रैः शिष्टैश्चमन्यतेयः समनुः । जो सब जगत का मान करै अथवा सब वेदादिक शास्त्र और शिष्टलोक जिसको अत्यन्त मानैं इससे परमेश्वर का नाम मनु है)॥ चिन्तितुंयोग्यश्चिन्त्यःनचिन्त्योऽचिन्त्यः। जो विषयासक्त पुरुषों से चिन्तने में नाम सम्यक् जानने में नहीं आते इससे परमेश्वर का नाम अचिन्त्य है परन्तु ऐसा ज्ञान ज्ञानियों को होता है कि सर्वव्यापक जो परमेश्वर सो हृदय देश में भी है उस हृदयस्थ व्यापक परमेश्वर को जानने से सब अनन्त जो परमेश्वर उस्का ज्ञान निश्चित होता है जैसा मेरे हृदय में परमेश्वर है वैसाही सर्वत्र है जैसे कि समुद्र के जल का एक बिन्दु जीभ के ऊपर रखने से उसके स्वादादिक गुणों के जानने से सब समुद्र के जल का ज्ञान हो जाता है वैसेही परमेश्वर का दृढ़ ज्ञान ज्ञानियों को हो जाता है ॥(प्रमातुंयोग्यः प्रमेयः नप्रमेयः अप्रमेयः । जो परिमाणों से जिस्का परिमाण तौलन नहीं होता इतनाहीं परमेश्वर में सामर्थ्य है ऐसा कोई भी नहीं कह सक्ता और न जान सक्ता है इससे परमेश्वर का नाम अप्रमेय है)॥ प्रमदितुंनाम उन्मदितुंशीलमस्यसप्रमादी नप्रमादी अप्रमादी । जिस्का प्रमाद नाम उन्मत्तता

के लेशमात्र का भी सम्बन्ध नहीं है इस्से परमेश्वर का नाम अजन्मा है॥ विश्वंबिभर्तीतिविश्वम्भरः। जो विश्व का धारण और पोषण का कारण होने से परमेश्वर का नाम विश्वम्भर है कलसंख्याने। इस धातु से काल शब्द सिद्ध होता है॥ कल-यतिसर्वञ्जगत् सकालः जो सब जगत की संख्या और परिमाण को आदि अन्त मध्य को यथावत् जानने से परमेश्वर का नाम काल है उसका काल कोई भी नहीं है और वह काल का भी काल है)॥ प्रीञ्तर्पणेकान्तौच। इस धातु से प्रिय शब्द सिद्ध होता है॥ प्रीणातिसर्वान्धर्मात्मनः। अथवाप्रीयतेधर्मात्म-भिःसप्रियः। जो सब शिष्टों को और मुमुक्षुओं को अपने आनन्द से प्रसन्न करदे अथवा जिस्को प्राप्त होके सब जीव प्रसन्न हो जांय इस्से परमेश्वर का नाम प्रिय है) शिव नाम कल्याण का है जो आप तो कल्याण स्वरूप होय और जिस्को प्राप्त होके जीव भी कल्याण स्वरूप होय इस्से परमेश्वर का नाम शिवशङ्कर) है इतने सौ १०० नाम परमेश्वर के विषय में लिख दिये परन्तु इन से भिन्न भी बहुत अनन्त नाम हैं उन का इसी प्रकार से सज्जन लोक विचार कर लेवें कुछ थोड़ा सा परमेश्वर के विषय में मैंने लिखा है किन्तु वेदादिक शास्त्रों में परमेश्वर के विषय में जितना ज्ञान लिखा है उसके आगे मेरा लिखना ऐसा है कि समुद्र के आगे एक बिन्दु भी नहीं और जो यह लिखा है सो केवल उन वेदादिक शास्त्रों के पढ़ने पढ़ाने की प्रवृत्ति के लिये लिखा है जब सब लोक उन शास्त्रों के पठन पाठन में प्रवृत्त होंगे और जब उन शास्त्रों को ऋषि मुनियों के व्याख्यान की रीति से पढ़के विचारेंगे तब सब लोगों को परमेश्वर और अन्य पदार्थों का भी यथावत् ज्ञान होगा अन्यथा नहीं इस प्रकरण का नाम मङ्गलाचरण है ऐसा कोई कहे कि मङ्गला-चरण आदि मध्य और अन्तमें किया जाता है ऐसा आप

भी करेंगे वा नहीं ऐसा हमको करना योग्य नहीं क्योंकि वह बात मिथ्या है आदि मध्य और अन्तमें जो मङ्गल करेगा तो आदि और मध्यके बीचमें अन्त और मध्य के बीच में अमङ्गल ही को लिखेगा इस्से यह बात मिथ्या है किन्तु शिष्टों को तो सदा मङ्गलही का आचरण करना चाहिये और अमङ्गल का कभी नहीं इसमें कपिल ऋषि का प्रमाण भी है ॥(मङ्गलाचरणंशिष्टाचारात् फलदर्शनाच्छ्रुतितश्चेति । इस सूत्र का यह अभिप्राय है कि मङ्गलनाम सत्य सत्य धर्म जो ईश्वर को आज्ञा उसका यथावत् आचरण उसका नाम मङ्गलाचरण है उस मङ्गलाचरण के करने वाले उनका नाम शिष्ट है उस शिष्टाचार के हेतु से मङ्गलही का आचरण करना चाहिये और जो मङ्गल को आचरण करने वाले हैं उन को मङ्गल रूपही फल होता है अमङ्गल कभी नहीं और श्रुति से भी यही आता है कि मङ्गलही का आचरण करना चाहिये)॥ यान्यनवद्यानिकर्माणि तानिसेवितव्यानिनोइतराणीति । इसका यह अभिप्राय है कि अनवद्य नाम श्रेष्ठोंका है धर्मरूपही मङ्गलकर्म करना चाहिये अधर्म रूप अमङ्गल कर्म कभी न करना चाहिये इस्से क्या आया कि आदि अन्त और मध्यहीं में मङ्गलाचरण करना चाहिये यह बात मिथ्या जानी गई कि सदा मङ्गलाचरणही करना चाहिये अमङ्गल का कभी नहीं और आज काल के पण्डित लोक जो कि मिथ्या ग्रन्थ रचते हैं सत्यशास्त्रों के ऊपर मिथ्या टीका रचते हैं उन के आदि में जो [redacted] सीतारामाभ्यान्नमः दुर्गायैनमः राधाकृष्णाभ्यांनमः बटुकायनमः श्रीगुरुचरणारविन्दाभ्यान्नमः हनुमतेनमः । भैरवायनमः ॥ इत्यादिक लेख देखने में आते हैं इनको बुद्धिमान् मिथ्याही जान लेवें क्योंकि वेदों में और ऋषि मुनियों के किये ग्रन्थों में किसी स्थान में भी ऐसे लेख देखने में नहीं आते हैं

ऋषि लोक अथ शब्द का और ॐकार शब्द का पाठ आदि में कर्ते हैं सो अधिकारार्थ अधिकारार्थ नाम इतनी विद्या होने से इस शास्त्र पढ़ने का अधिकारी होता है वा आनन्तर्यार्थ आनन्तर्यार्थ नाम एक शास्त्र को करके उसके पीछे दूसरे का जो रचना अथवा एक कर्म करके दूसरे कर्म को करना इस वास्ते ॐकार और अथ शब्द का पाठ ऋषि मुनि लोग कर्ते हैं ॐकारं वेदेषु अथकारं भाष्येषु यह कात्यायन मुनिकृत प्रातिशाख्य का बचन है वैसेही मैं दिखाता हूं अथशब्दानुशासनम् अथेत्ययंशब्दोऽधिकारार्थः प्रयुज्यते यह व्याकरण महाभाष्य के प्रारम्भ का बचन है॥ अथातोधर्मजिज्ञासा । यह भी मीमांसा शास्त्र के आरम्भ का बचन है॥ अथातोधर्मंव्याख्यास्यामः । यह वैशेषिक दर्शन शास्त्र का प्रथम सूत्र है ॥ प्रमाणप्रमेयेत्यादि ॥ यह न्यायदर्शन शास्त्र के आरम्भ का बचन है ॥ अथयोगानुशासनम् यह पातञ्जलदर्शन के प्रारम्भ का बचन है॥ अथत्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः । यह साङ्ख्यदर्शन शास्त्र के आरम्भ का बचन है ॥ अथातोब्रह्मजिज्ञासा। यह वेदान्तशास्त्र के प्रारंभ का बचन है॥ ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत । यह छान्दोग्य उपनिषद के प्रारम्भ का बचन है ॥ ओमित्येतदक्षरमिदंसर्वन्तस्योपव्याख्यानम् । यह माण्डूक्यउपनिषद का बचन है इत्यादिक और भी जानलेने, देखना चाहिए कि ऋषि लोगोंने और बेदों मेंभी अथ और ॐकार अग्न्यादिक भी चारों बेदों के आरम्भ में अग्नि तथा इट् और शम् ये शब्द देखने में आते हैं परन्तु श्रीगणेशायनमः इत्यादिक बचन किसी बेद में और ऋषियों के ग्रन्थों में भी नहीं देखने में आते हैं इससे क्या जाना जाता है कि बेदादिक शास्त्रों से और ऋषि मुनियों के किये ग्रन्थों से भी यह नवीन लोगों का प्रमादही है ऐसाही शिष्ट लोगों को जानना चाहिये और वैदिक लोक हरिःओम् इस

शब्द का पठन पाठन के आरम्भ में उच्चारण करते हैं वह सत्य है वा नहीं। यह भी मिथ्याही है क्योंकि ओंकारका तो ऋषि ग्रन्थों के प्रारम्भ में पाठ देखने में आता है परन्तु हरिः शब्द का पाठ कहीं देखने में नहीं आता है इससे हरिः शब्द का पाठ तो मिथ्याही है पूर्वोक्त प्रातिशाख्य के प्रमाण से ओंङ्कार तो उचितही है यह प्रकरण तो पूर्ण होगया इससे आगे शिक्षा के विषय में लिखा जायगा॥ इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते प्रथमः समुल्लासः सम्पूर्णः॥१॥ ओ३म्

अथशिक्षांवक्ष्यामः। मातृमान्पितृमानाचार्यवान्पुरुषोवेद इतिश्रुतिः। प्रथम तो सब जनों को माता से शिक्षा होनी उचितहै जन्म से लेके तीनवर्ष अथवा पांचवर्ष पर्यन्त अपने संतानों को सुशिक्षा अवश्य करै प्रथम तो सुश्रुत और चरक जो वैद्यक शास्त्र ग्रन्थ हैं उनकी रीति से शरीर के स्वभाव के अनुकूल दुग्धादिकों में ओषधों को मिला के वा संस्कार करके पुत्रों को और कन्याओं को पिलावै अथवा जो स्त्री उनको अपना दूध पिलावै सोई स्त्री उन श्रेष्ठ पदार्थों का भोजन करै जिस्से कि उसीके दूध में उनका अंश आजायगा जिस्से बालकों के भी शरीर की पुष्टि बल और बुद्धि वृद्धि होय और शुद्ध स्थान में उनको रखना चाहिये शुद्ध सुगन्ध देश में बालकों को भ्रमण कराना चाहिये जब उनका जन्म होय उसी दिन अथवा दूसरे तीसरे दिन धनाढ्य लोग और राजा लोग दासी वा अन्य स्त्री की परीक्षा करके कि उसके शरीर में रोग न होय और दूध में भी रोग न होय उसके पास बालक को रख देवैं और वही स्त्री उनका पालन करै परन्तु माता उस स्त्री के और बालकों के भी शिक्षा के ऊपर दृष्टि रक्खै और जो असमर्थ लोग हैं जिनको दासी वा अन्यस्त्री रखने का सामर्थ्य न होय तो छेरी

अथवा गाय वा भैंसो के दूध से बालकों का पोषण करैं जहां छेरी आदिकों का अभाव होय वहां जैसा होसके वैसा करैं और अञ्जनादिकों से नेत्रादिकों कोभी युक्तिसे रोग निवारणार्थ करैं परन्तु बालकों की जो माता है सो उन्हों को दूध कभी न देवै स्त्रीके दूध देने से स्त्रीका शरीर निर्बल और क्षीण होजायगा जो स्त्री प्रसूत हुई वह भी अपाने शरीर की रक्षा के लिये श्रेष्ठ भोजनादिक करै जो कि औषधवत् होय जिस्से फिर भी युवावस्था की नाई उसका शरीर होजाय और दूध के रक्षा के वास्ते उक्त वैद्यकशास्त्र में जैसा वह औषध सो यथावत संपादन करके स्तन के ऊपर लेपन करके उस मार्ग को रोकदेवै जिस्से कि दूध न निकल जाय इस्से स्त्रीका शरीर फिरभी पूर्ण बलवान् होजाय जैसे कि युवती का शरीर उसके तुल्य उसका भी शरीर होजायगा इस्से जो सन्तान होगा सो वैसाही फिर बलवान् और निरोग होगा जो उक्त वैद्यकशास्त्र में जैसी कि रीति लिखी है उसी प्रकार के लेपन से योनि का संकोच और योनि का शोधन भी स्त्री लोग करैं इस्से अपने पति का भी बल क्षीण न होगा जब कुछ बालक लोग समर्थ होंय तब उनको चलने बैठने मलमूत्र के त्याग और शौच नाम पवित्रता की शिक्षा करैं और हस्त पाद मुख नेत्रादिकों की सुचेष्टा की शिक्षा करैं जिस्से कि किसी अङ्ग से वे बालक लोग कुचेष्टा न करैं और खाने पीने की भी यथावत् शिक्षा करैं बालक को जिह्वा का शोधन करावैं क्योंकि कोमल जिह्वा के होने से अक्षरों का उच्चारण स्पष्ट होगा औषधों से और दन्तधावन से फिर बालक को बोलने की शिक्षा करैं तब माता श्रेष्ठ वाणी से स्थान और प्रयत्न के साथ भाषण करैं जैसे कि प इसका ओष्ठ तो स्थान है और दोनों ओष्ठों का मिलाना सो स्पर्श प्रयत्न है ओष्ठ स्थान के और स्पर्श प्रयत्न के बिना पकार का शुद्ध उच्चारण कभी न होगा

ऐसेही सब वर्णों का स्थान और प्रयत्न ह्रस्व और दीर्घ विचार के माता उच्चारण करै वैसाही बालकों को करावै जिस्से कि वे बालक शुद्ध उच्चारण करैं गमन, आसन, सोना, बैठना, इस्की भी शिक्षा माता करै जिस्से कि सब कर्म युक्त युक्तही करैं और यह भी उपदेश उनको माता करै कि माता पिता तथा ज्येष्ठ बन्ध्वादिक मान्य लोगों को नमस्कार बालक लोग करैं रोदन हास्य और क्रीड़ासक्त भी वे न होवैं बहुत हर्ष शोक भी न करैं उपस्थ इन्द्रिय को हस्तसे नेत्र नासिकादिकों के बिना प्रयोजन से मर्द्दन अथवा स्पर्श न करैं क्योंकि निमित्त से बिना उपस्थेन्द्रिय का मर्द्दन और बारम्बार स्पर्श के करने से वीर्य की क्षीणता होगी और हस्त दुर्गन्ध युक्त भी होगा इस्से व्यर्थ कर्म करना न चाहिये इतनी शिक्षा बालकों को पांचवर्ष तक करना चाहिये उसके पीछे माता और पिता अक्षर लिखने की और पढ़ने की शिक्षा करैं देवनागराक्षर और अन्यदेशों के भाषाक्षरों का लिखने पढ़ने का अभ्यास ठीक २ करावैं स्पष्ट लिखने पढ़ने का अभ्यास होजाय इस्से यह भी अवश्य शिक्षा करना चाहिये और भूत प्रेतादिक हैं ऐसा विश्वास बालक लोग कभी न करैं क्योंकि यह बात मिथ्याही है जब भूत प्रेतादिकों की बात सुनके उनके हृदय में मिथ्या भय होजाता है तब किसी समय में अन्धकार होनेसे शृगालादिक पशु पक्षि और मूषक मार्जारादिक अथवा चोर वा अपने शरीर को छाया देखने से शृगालादिकों के भागने का शब्द सुनके उसके हृदय में पूर्व सुनने के संस्कार के होने से अत्यन्त भूत प्रेतादिकों का विश्वास होने से भयभीत होके कम्प और ज्वरादिक होते हैं इस्से बहुत दुःख से पीड़ित होते हैं इस्से यह शङ्का का बहुत रीति से निवारण करना चाहिये जिस्से कि उनको कभी भूत प्रेतादिकों के होने में निश्चय न होय वैद्यक शास्त्र में बहुत से मानस

रोग लिखे हैं वे जब होते हैं तब उन्मत्त होके अन्यथा चेष्टा मनुष्य करता है तब निर्बुद्धि लोग जानते हैं और कहते हैं कि इसके शरीर में भूत वा प्रेत आगया है फिर वे मिलके बहुत से पाखण्ड करते हैं कि मैं मन्त्र से झाड़ झूड़ के पांच रुपैया मुझको दे तो अभी निकाल देऊं फिर उनके सम्बन्धी लोग उन पाखण्डियों से कहते हैं कि हम पांच रुपैया देंगे परन्तु इसके भूत को जल्दी आप लोग निकाल देवें फिर वे मिल के मृदङ्ग झांझ इत्यादिकों को लेके उसके पास आके बजाते गाते हैं फिर एक कोई पाखण्ड से उन्मत्त होके नांचता कूदता है कि इसके शरीर में बड़ा भूत प्रविष्ट हुआ है वह भूत कहता है कि मैं न निकलूंगा इसका प्राण लेही के निकलूंगा वह नांचने कूदने वाला कहता है कि मैं देवी वा भैरव हूं मुझ को एक बकरा और मिठाई, वस्त्र देओ तो मैं इस भूत को निकाल देऊं तब उनके सम्बन्धी कहते हैं कि जो तुम चाहो सो लेलो परन्तु इस भूत को आप निकाल देवें सब लोग उस उन्मत्त के गोड़ पैं गिर पड़ते हैं तब तो उन्मत्त बहुत नांचता कूदता है परन्तु कोई बुद्धिमान् उसको एक थपेड़ा वा एक जूता मार देवै तब शीघ्रही उसको देवी वा भैरव भाग जाते हैं क्योंकि वह केवल धूर्त धनादिक हरण करने के लिये पाखण्ड करता है जो नाममात्र तो पण्डित हैं ज्योतिश्शास्त्र का अभिमान करके कहते हैं कि सूर्यादि ग्रह क्रूर इनके ऊपर आये हैं इससे यह पुरुष पीड़ित है परन्तु इसके ग्रहों को शान्ति के लिये दान पाठ और पूजा जो करावै तो ग्रहों को शान्ति होजाय अन्यथा शान्ति न होगी उनको बहुत पीड़ा होगी और इनका मरण होजाय तो आश्चर्य नहीं इनसे कोई पूंछे कि सूर्यादिक ग्रह सब आकाश में रहते हैं वे सब लोक हैं जैसा कि पृथिवी लोक है कैसे वे पीड़ा कर सकते हैं और जो तापादिक उनके तेज हैं सब के ऊपर

समानही प्रकाश है कैसे एक के ऊपर क्रूर होके दुःख दे और दूसरे को शान्त होके सुख दे यह बात कभी नहीं हो सक्ती है जितने धनाढ्य और राजा लोग हैं उनके ऊपर सब मिलके आपके ऊपर क्रूर ग्रह आये हैं ऐसा कहते हैं क्योंकि दरिद्रों से तो इतना धन नहीं मिल सकता है इस्से उन धनाढ्यों के पास जाके बारम्बार ग्रहों की कथा से भय देखा के बहुत धन को हरण कर लेते हैं जो कोई बुद्धिमान् उनसे ऐसा कहे कि आप पण्डित लोग अपने घरमें ग्रहों की शान्ति के लिये पूजा पाठ दान वा पुण्य क्यों नहीं कराते हैं तब वे सब पुरोहित पण्डितादिक मिलके कहते हैं कि तूं नास्तिक होगया इस रीति से भय देखाके उनको उपदेशादिक बहुत प्रकार कहके उसी मार्ग में ले आते हैं परन्तु कोई बुद्धिमान् होता है सो उनके जाल में नहीं आता है वैसेही मुहूर्त विषय अथवा यात्रा में जाल रचते हैं धन लेने के लिये तथा जन्मपत्र का जो रचन होता है सो भी मिथ्या है वह जन्मपत्र नहीं है किन्तु शोकपत्र है ऐसा जानना चाहिये क्योंकि जन्मपत्र रचके पण्डित उस्का फल उनके पास आके कहते हैं इस बालक का १० वां वर्ष अथवा २० वां वर्ष जब आवेगा तब इसके ऊपर बहुत से क्रूर ग्रह आवेंगे यह बहुत सी पीड़ा पावेगा यह मरजावे तो भी आश्चर्य नहीं इस बात को सुनके बालक के माता अथवा पितादिक शोकातुर हो जाते हैं इस्से इस पत्र का नाम शोक पत्रही रखना चाहिये कभी इसके ऊपर विश्वास न करना चाहिये इसको बुद्धिमान् मिथ्याही जानें रोग निवृत्ति के लिये औषधादिक अवश्य करें इस रीति से बालकों का प्रथमही माता वा पिता को शिक्षा का निश्चय करना वा कराना उचित है मारण मोहन उच्चाटन वशीकरणादिक विषय में सत्यत्व प्रतिपादन करते हैं सो भी मिथ्या जानना चाहिये और तांबे का सोना करते हैं

पारे को चांदी बनाता है यह भी बात मिथ्या जानना चाहिए फिर उन बालकों को हृदय में अच्छी रीति से यह बात निश्चय कराना चाहिये कि वीर्य की रक्षा करने में निश्चित बुद्धि होय क्योंकि वीर्य की रक्षा से बुद्धि बल पराक्रम और धैर्यादिक गुण अत्यन्त बढ़ते हैं इस से बालकों को बहुत सुख की प्राप्ति होती है इसमें यह उपाय है कि विषयों की कथा और विषयी लोगों का सङ्ग विषयों का ध्यान कभी न करैं श्रेष्ठ लोगों का सङ्ग विद्या का ध्यान और विद्या ग्रहण में प्रीति सदा होने से विषयादिकों में कभी प्रवृत्त न होंगे जब तक ब्रह्मचर्य की पूर्ति और विवाह का समय न होय तब तक उन बालकों का माता पितादिक सर्वथा रक्षा करैं और ऐसा यत्न करैं कि जिसमें अपने बालक मूर्ख न रहैं किसी प्रकार से भ्रष्ट भी न होंय ऐसे ७ सात वर्ष वा ८ आठवर्ष तक माता पिता यत्न करैं प्रथम जो श्रुति लिखी थी कि मातृमान् नाम माचा शिक्षितः प्रथम माता से उक्त प्रकार से अवश्य शिक्षा होनी चाहिये पितृमान् नाम पिता से भी शिक्षा होनी चाहिये आचार्यवान् नाम पांचवर्ष के पीछे वा ८ आठवर्ष के पीछे आचार्य की शिक्षा होनी चाहिये जब तीनों से यथावत् शिक्षित पुत्र वा कन्या होंगे तब शिष्ट होंगे अन्यथा पशुवत् होंगे मनुष्य गुण जो हैं विद्यादिक वे कभी न आवेंगे और विद्या रूप धन की सन्तान को प्राप्ति कराना यही माता पिता और आचार्य का मुख्य फल है कि उनका लाड़न कभी न करना कराना चाहिये क्योंकि लाड़न में बहुत से दोष हैं और ताड़न में बहुत से गुण हैं इसमें व्याकरण महाभाष्य की कारिका का प्रमाण है ॥ सामृतैःपाणिभिर्घ्नन्ति गुरवोनविषो-क्षितैः । लाड़नाश्रयिणोदोषा स्ताड़नाश्रयिणोगुणाः ॥ इसका यह अर्थ है कि सामृतैः नाम अमृत के तुल्य ताड़न है जैसा कि हाथ से किसी को कोई अमृत देवै वैसाही बालकों का ताड़न

है क्योंकि जो वे ताड़न से श्रेष्ठ शिक्षा को और सद्विद्या को ग्रहण करेंगे तब उनको प्रतिष्ठा सुख और मान सर्वत्र प्राप्त होगा उस्से धन और आजीविका भी उनको सर्वत्र होगी वे बहुत सुखी होंगे साम्हतैः पाणिभिर्घ्नन्ति नाम सदा गुरु लोक ताड़ना कर्ते हैं न विषोक्षितैः नाम विष से युक्त जो हाथ उस्से जो स्पर्श वह दुःखही का हेतु होता है वैसा अभिप्राय उनका नहीं है किन्तु हृदय में तो कृपा परन्तु केवल गुण ग्रहण कराने के लिये माता पिता तथा गुर्वादिक ताड़न कर्ते हैं क्योंकि लाड़ना श्रयिणोदोषाः नाम जो अपने सन्तानों का लाड़न करेंगे तो वे मूर्ख रहजांयगे पीछे जो कुछ उनके अधिकार में धन वा राज्य रहेगा उसका वे न पालन करेंगे न अधिक वृद्धि होगी उन पदार्थों का नाशही करदेंगे फिर वे अत्यन्त दुःखी होजांयगे और दूसरे के आधीन रहेंगे यह दोष माता पिता तथा गुर्वादिकों का गिना जायगा इस्से क्या आया कि उनका लाड़न क्या किया किन्तु उनको मारही डाला ताड़ना श्रयिणोगुणाः नाम अवश्य सन्तानों को गुण ग्रहण कराने के लिए सदा ताड़नहीं कराना चाहिये क्योंकि ताड़न के बिना वे श्रेष्ठ स्वभाव और श्रेष्ठ गुणों को कभी ग्रहण न करेंगे इस्से वैसाही करना चाहिये जिस्से अपने सन्तान उत्तम होंय उनको विद्या और श्रेष्ठ गुणों काही आभूषण धारण कराना चाहिये और सुवर्णादिकों का कभी नहीं क्योंकि विद्यादिक गुण का जो आभूषण धारना है सोई आभूषण उत्तम है और सुवर्णादिकों का आभूषण का जो धारण है उसमें गुण तो नहीं है किन्तु दोषही बहुत से हैं क्योंकि चौरादिक भी उनको मारके आभूषणों को लेजाते हैं और आभूषणों को धारण करने वाले को बहुत अभिमान रहता है जो कोई उसके सामने विद्यावान् भी पुरुष होय तो भी वह तृण के बराबर उसको गणना करेगा

और अभिमान से गुण ग्रहण भी न करैगा और जब वे सोते हैं तब चोर आके उनको मार डालते हैं अथवा अङ्ग भङ्ग करके आभूषण लेजाते हैं इस्से सुवर्णादिकों का आभूषण धारना उचित नहीं और कभी चोरी न करैं किसी का पदार्थ उसको आज्ञा के बिना एक तृण वा पुष्प भी ग्रहण न करैं क्योंकि जो तृण की चोरी करेगा सो सब की चोरी करेगा फिर उसको राजगृह में दण्ड होगा अप्रतिष्ठा भी होगी और निन्दा होगी उसका विश्वास कोई भी न करेगा इस्से मनसे भी कभी चोरी करने की इच्छा न करनी चाहिये और मिथ्या भाषण भी करना न चाहिये क्योंकि मिथ्या भाषण जो करेगा सो सब पाप कर्मों को भी करेगा और उसका विश्वास कोई भी न करेगा प्रतिज्ञा भी मिथ्या न करनी चाहिये प्रथम तो बिचार करके प्रतिज्ञा करनी चाहिये जब प्रतिज्ञा की तब उसका पालन यथावत् करना चाहिये प्रतिज्ञा क्या होती है कि नियम से जो कहना उस वक्त में आपके पास आऊंगा वा आप मेरे पास आवैं इस पदार्थ को मैं देऊंगा वा लेऊंगा सो जैसा कहै वैसाही प्रतिज्ञा पालन करै अन्यथा कभी न करै प्रतिज्ञा की जो हानि है सो मनुष्य का महादोष है इस्से प्रतिज्ञा की हानि कभी न करनी चाहिये अभिमान कभी न करना चाहिये अभिमान नाम अहङ्कार का है मैं बड़ा हूं मेरे सामने कोई कुछ भी नहीं इस्से क्या होगा कि कभी वह गुण ग्रहण तो न करेगा परन्तु मूर्खही रहजायगा छल कपट वा कृतघ्नता कभी न करनी चाहिये क्योंकि छल, कपट, और कृतघ्नता से, अपनाही हृदय दुःखित होता है तो दूसरे की क्या कथा और उसका उपकार कोई भी न करेगा छल कपट और कृतघ्न तो उसको कहते हैं कि हृदय में तो और बात बाहर और बात कृतघ्नता नाम कोई उपकार करै उस उपकार को न मानना सो कृतघ्नता कहाती है क्रोध

भी कभी न करना क्रोध से अपने अपनीही हानि करदेवै और
को भो हानि करले इस्से क्रोध भी न करना चाहिये किसी से
कटुक वचन न कहै किन्तु मधुर वचनही सदा कहै बिना बोलाये
किसी से बोले नहीं और बहुत बकवाद कभी न करै जितना
कहना चाहिये इतनाही कहै जिस्से कहना वा सुनना सो
सफलता सेही करै अभिमान से कभो नहीं किसी से बाद विवाद
भी करै नेत्र नासिकादिकों से चपलता कभो न करै जहां किसी
के पास जाय वहां उसको पहिलेही नमस्कार करै और नीच
आसन में बैठे न किसो को आड़ होय न किसी को दुःख होय
जो कोई उसको उठावै जिस्से गुण ग्रहण करै उसको पूर्व नम-
स्कार करै उस्से बिरोध कभी न करै उसको प्रसन्न करके जैसे
गुण मिले वैसाही करै पीछे भी मरण तक उसके गुण को माने
जिस गुण को ग्रहण करै उस गुण को आच्छादन कभो न करै
किन्तु उस गुण का प्रकाशही करना उचित है किसी पाखण्डी
का विश्वास कभी न करै सदा सज्जनों का सङ्ग करै दुष्टों का
कभी नहीं अपने माता और पिता वा आचार्य की आज्ञा पालन
सदा करै परन्तु जो आज्ञा सत्यधर्म सम्बन्धी होय तो करै और
जो धर्म विरुद्ध आज्ञा होय तो कभी न करै परन्तु सेवा के लिये
जो माता पिता और आचार्य आज्ञा देवैं उसको अपने सामर्थ्य
के योग्य जरूर करै और माता पिता धर्म सम्बन्धी श्लोको को
अथवा निघंटु वा अष्टाध्यायी को कण्ठस्थ करा देवैं परन्तु सत्य
सत्य धर्म के विषय में और परमेश्वर के विषय में दृढ़ निश्चय
करा देवैं जैसे कि पहिले प्रकरण में परमेश्वर के विषय में
लिखा है वैसा उसी को उपासना में दृढ़ निश्चय करा देवैं और
वस्त्र धारने की यथावत् शिक्षा कर देवैं जैसा कि धारना चाहिये
भोजन की भी जितनी क्षुधा होय इस्से कुछ न्यून भोजन करैं
जिस्से कि उनके शरीर में रोग न होय गहरे जल में कभो

स्नान के लिये प्रवेश न करैं क्योंकि जो गम्भीर जल होगा और तरना न जानेगा तो डूब के मर जायगा अथवा जलजन्तु होगा तो खालेगा वा काटलेगा इस्से दुःखही होगा सुख कभी न होगा इसमें मनुस्मृती का प्रमाण भी है ॥ नाविज्ञातेजलाशये। इसका यह अभिप्राय है कि जिस जल को परीक्षा यथावत् जो न जानै सो स्नान के लिये उसमें प्रवेश कभी न करै किन्तु जल के तट पै बैठ के स्नान करै और बहुत कूदना फांदना न करै जिस्से कि हाथ पैर टूट जाय ऐसा न करै और मार्ग में जब चले तब नीचे दृष्टि करके चलैं क्योंकि कांटा और नीचा ऊंचा जीवजंतु देखके चलै जल को छान के पिये और वचन को विचार के सत्यही बोले जो कुछ कर्म करै उसको पहिले विचारही के आरंभ करै इस्से क्या सुख वा दुःख हानि वा लाभ होगा किस रीति से इसको करना चाहिये कि जिस रीति से परिश्रम तो न्यून होय और उसकी सिद्धि अवश्य होय इस रीति से विचार करके कर्म का आरम्भ करना चाहिये इसमें मनुस्मृति के वचन का प्रमाण भी है ॥ दृष्टिपूतंन्यसेत्पादं वस्त्रपूतंजलंपिबेत्। सत्यपूतांवदेद्वाचं मनःपूतंसमाचरेत् ॥ दृष्टिपूतं नाम आंख से देख देख के आगे चले, वस्त्रपूतं नाम वस्त्र से छान के जल को पीवै क्योंकि जल में कश्च अथवा तृण वा जीव रहते हैं छानने से शुद्ध होजाता है इस्से जल छानही के पीना चाहिये, सत्यपूतांवदेद्वाचम् नाम सत्य से दृढ़ निश्चय करके यही कहना सत्य है तब विचार करके मुख से निकालना चाहिये क्योंकि वचन निकाला जो गया सो जो मिथ्या होजायगा तब बुद्धिमान् लोग उसको जान लेंगे कि यह विचारशून्य पुरुष है इस्से विचार करके सत्यही कहना चाहिये, मनःपूतंसमाचरेत् नाम मनसे विचार करके कर्म का आरम्भ करना चाहिये कि भविष्यत्काल में इसका फल क्या होगा ऐसा जो विचार करके कर्म न करेगा

उसको पश्चातापही होगा और सुख न होगा इससे जो कुछ करना चाहिये सो विचार के करना चाहिये इस रीति से आठ वर्षतक बालकों को शिक्षा होनी चाहिये जो कुछ और शिक्षा लिखी है सत्य भाषणादिक सो तो सब को करना उचित है जिन के सन्तान सुशिक्षित होंगे वेही सुख पावेंगे और जिनके सन्तान सुशिक्षित न होंगे वे कभी सुख न पावेंगे यह बाल शिक्षा तो कुछ कुछ शास्त्रों के आशयों से लिख दी परन्तु सब शिक्षा का ज्ञान जब वेदादिक सत्य शास्त्रों को पढ़ेंगे और विचारेंगे तब होगा इसके आगे ब्रह्मचर्याश्रम और गुरु शिष्य को शिक्षा लिखी जायगी उसी के भीतर पढ़ने पढ़ाने की शिक्षा भी लिखी जायगी॥ इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषाविरचिते द्वितीयःसमुल्लासः सम्पूर्णः॥ २॥

अथाध्ययनाध्यापनविधिंव्याख्यास्यामः। आठ वर्ष का पुत्र और कन्याओं को पाठशाला में पढ़ने के लिये आचार्य के पास भेज देवैं अथवा पांचवे वर्ष भेजदेवैं घरमें कभी न रक्खैं परंतु ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य इनके बालकों का यज्ञोपवीत घरमें होना चाहिये पिता यथावत् यज्ञोपवीत करै पिताही उनको गायत्री मन्त्र का उपदेश करै गायत्री मन्त्र का अर्थ भी यथावत् जना देवै गायत्री मन्त्र में जो प्रथम ओंकार है उसका अर्थ प्रथम समुल्लास में लिखा है वैसाही जान लेना॥ भूरितिवैप्राणः भुवरित्यपानः स्वरितिव्यानः। यह तैत्तिरीयोपनिषद् का वचन है॥ प्राणयतिचराचरञ्जगत्सप्राणः। जो सब जगत् के प्राणों का जीवन कराता है और प्राण से भी जो प्रिय है इससे परमेश्वर का नाम प्राण है सो भूः शब्द प्राण का वाचक है और भुवः शब्द से अपान अर्थ लिया जाता है॥ अपानयति सर्वंदुःखंसोपानः। जो मुमुक्षुओं को और मुक्तों को सब दुःखसे छोड़ा के आनन्द स्वरूप रक्खै इससे परमेश्वर का नाम अपान

है सो अपान भुवः शब्द का अर्थ है व्यानयतिसव्यानः। जो सब जगत् के विविध सुख का हेतु और विविध चेष्टा का भी आधार इससे परमेश्वर का नाम व्यान है सो व्यान अर्थ स्वः शब्द का जानना तत् यह द्वितीया का एक बचन है सवितुः षष्ठी का एक बचन है वरेण्यं द्वितीया का एक बचन है ॥ भर्गः २ का एक बचन है ॥ देवस्य ६ का एक बचन है धीमहि क्रिया पद है धियः द्वितीया का बहुबचन है यः प्रथमा का एक बचन है नः षष्ठी का बहु बचन है, प्रचोदयात् क्रिया पद है, सविता शब्द का और देव शब्द का अर्थ प्रथम समुल्लास में कह दिया है वहीं देख लेना ॥ वर्तुमर्हंवरेण्यं। नाम अति श्रेष्ठम् भर्गो नाम तेजः तेजोनाम प्रकाशः प्रकाशोनाम विज्ञानम् वर्तुं नाम स्वीकार करने को जो अत्यन्त योग्य उसका नाम वरेण्य है और अत्यन्त श्रेष्ठ भी वह है धी नाम बुद्धि का है नः नाम हमलोगों को प्रचोदयात् नाम प्रेरयेत् हे परमेश्वर हेसच्चिदानन्दानन्त स्वरूप हेनित्य शुद्धबुद्ध मुक्त स्वभाव हेकृपानिधे हेन्यायकारिन् हेअज हे निर्विकार हेनिरञ्जन हेसर्वान्तर्यामिन् हेसर्वाधार हेसर्वजगत्पितः हेसर्वजगदुत्पादक हेअनादे हेविश्वम्भर सवितुर्देवस्य तवयद्वरेण्यं भर्गः तद्वयंधीमहि तस्य धारणं वयं कुर्वीमहि हेभगवन् यः सविता देवः परमेश्वरः सभवान् अस्माकंधियः प्रचोदयादित्यन्वयः हे परमेश्वर आप का जो शुद्ध स्वरूप ग्रहण करने को योग्य जो विज्ञान स्वरूप उसको हम लोग सब धारण करैं उसका धारण ज्ञान उसके ऊपर विश्वास और दृढ़ निश्चय हम-लोग करैं ऐसी कृपा आप हम लोगों पर करैं जिस्से कि आप के ध्यान में और आप की उपासना में हम लोग समर्थ होंय और अत्यन्त श्रद्धालु भी होंय जो आप सविता और देवादिक अनेक नामों के वाच्य अर्थात अनन्त नामों के अद्वितीय जो आप अर्थ हैं नाम सर्वशक्तिमान् सो आप हमलोगों की बुद्धियों

को धर्म विद्या मुक्ति और आप की प्राप्ति में आपही प्रेरणा करैं कि बुद्धि सहित हम लोग उसी उक्त अर्थ में तत्पर और अत्यन्त पुरुषार्थ करने वाले होंय इस प्रकार की हम लोगों की प्रार्थना आप से है सो आप इस प्रार्थना को अङ्गीकार करैं यह संक्षेप से गायत्री मन्त्र का अर्थ लिख दिया परन्तु उस गायत्री मन्त्र का वेद में इस प्रकार का पाठ है॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि धियोयोनः प्रचोदयात्। इस मन्त्र को पुत्रों को और कन्याओं को भी कण्ठस्थ करा देवें और इसका अर्थ भी हृदयस्थ करा देवें परंतु कन्या लोगों को यज्ञोपवीत कभी न कराना चाहिये और संस्कार तो सब करना चाहिये योगशास्त्र की रीति से प्राणों के और इन्द्रियों के जीतने के लिये उपाय का उपदेश करैं सो यह योगशास्त्र का सूत्र है॥ प्रच्छर्दनविधारणाभ्यांवाप्राणस्य। इसका यह अर्थ है कि छर्दन नाम वमन का है जैसे कि मक्खी वा और कुछ पदार्थ खाने से उदर से मुख द्वारा अन्न बाहर निकल जाता है और प्रकर्षच्छर्दनञ्च प्रच्छर्दनम् अत्यन्त जो बल से वमन का होना उसका नाम प्रच्छर्दन है॥ विधारणंनाम विरुद्धञ्चतद्धारणञ्च विधारणम्। जैसे कि उस अन्न का धारण पृथिवी में होता है उसको देख के घृणा होती है तो ग्रहण की इच्छा कैसे होगी कभी न होगी यह दृष्टान्त हुआ परन्तु दृष्टान्त इसका यह है कि नाभि के नीचे से अर्थात मूलेन्द्रिय से लेके धैर्य से अपान वायु को नाभि में लेआना नाभि से अपान को और समान को हृदय में लेआना हृदय में दोनों वे और तीसरा प्राण इन तीनों को बल से नासिका द्वार से बाहर आकाश में फेंक देना अर्थात जो वायु कुछ नासिका से निकलता है और भीतर जाता है उन सब का नाम प्राण है उसका मूलेन्द्रिय नाभि और उदर को ऊपर उठाले तब तक वायु न निकले पीछे हृदय में इकट्ठा करके

जैसे कि वमन में अन्न बाहर फेंका जाता है वैसे सब भीतर की वायु को बाहर फेंक दे फिर उसको ग्रहण न करै जितना सामर्थ्य होय तब तक बाहरही वायु को रोक रक्खे जब चित्त में कुछ क्लेश होय तब बाहर से वायु को धीरे धीरे भीतर लेजाय फिर उसको वैसाही बारम्बार २० बार भी करेगा तो उसका प्राण वायु स्थिर होजायगा और उसके साथ चित्त भी स्थिर होगा बुद्धि और ज्ञान बढ़ेगा बुद्धि इस प्रकार की तीव्र होगी कि बहुत कठिन विषय को भी शीघ्र जान लेगी शरीर में भी बल पराक्रम होगा और वीर्य भी स्थिर होगा तथा जितेन्द्रियता होगी सब शास्त्रों को बहुत थोड़े काल में पढ़लेगा इसे यह दोनों उपदेशों को यथावत् अपने सन्तानों को करदे फिर उसको आचमन का उपदेश करै हाथ में जल लेके गायत्री मन्त्र मन से पढ़के तीनबार आचमन करै ॥ अंगुष्ठमूलस्यतले ब्राह्मन्तीर्थं प्रचक्षते । कायमङ्गुलिमूलेऽग्रे दैवंपित्र्यं तयोरधः ॥ अंगुष्ठ मूल के नीचे तले नाम रेखा का जो मध्य है उसका नाम ब्राह्मतीर्थ है कनिष्ठिका के मूल में जो रेखा है उसका नाम प्राजापत्य तीर्थ है अंगुलियों का जो अग्रभाग है उसका नाम देवतीर्थ है तर्जनी और अंगुष्ठ इन दोनों के मूल जो बीच है उसका नाम पितृतीर्थ है आचमन समय में ब्राह्मतीर्थ से आचमन करै इतने जल से आचमन करै कि हृदय के नीचे पर्यन्त वह जल जाय उससे क्या होता है कि कण्ठ में कफ और पित्त कुछ शान्त होगा फिर गायत्री मन्त्र को तो पढ़ता जाय और अंगुली से जल का छींटा शिर और नेत्रादिकों के ऊपर देवे इससे क्या होगा कि निद्रा और आलस्य न आवेगा जैसे कि कोई पुरुष को निद्रा और आलस्य आता होय तो जलके छींटा से निवृत्त हो जाता है तैसे यहां भी होगा पीछे गायत्री मन्त्र से उपस्थान करै उपस्थान नाम परमेश्वर की प्रार्थना और अघमर्षण करै

अघमर्षण उसका नाम है कि पाप करने की इच्छा भी न करना चाहिये संक्षेप से संध्योपासन कह दिया परन्तु यह दोनों बात एकान्त में जाके करना चाहिये क्योंकि एकान्त में चित्त की एकाग्रता होती हैं और परमेश्वर की उपासना भी यथावत् होती है इसमें मनुस्मृति का प्रमाण भी है ॥ अपांसमीपेनियतो नैत्यकंविधिमास्थितः । सावित्रीमप्यधीयीत गत्वाऽरण्यंसमाहितः ॥ इसका यह अभिप्राय है कि जल के समीप जाके और जितनी आचमन प्राणायामादिक क्रिया उनको करके वनके शून्य देश में बैठके गायत्री को मनसे यथावदुच्चारण करके एक एक पद का अर्थ चिन्तन करके और प्राणायाम से प्राण चित्त और इन्द्रियों की स्थिरता करके परमेश्वर की प्रार्थना और स्वरूप विचार से उक्त रीति से उसमें मग्न होजाय नाम समाधिस्थ होजाय ऐसेही नित्य दो बार द्विज लोक प्रातःकाल और सायङ्काल करैं एक घण्टा तक तो अवश्यही करैं इससे बहुत सा सुख और लाभ भी होगा फिर वह पुत्रों को अग्निहोत्र का आचार सिखावै एक चतुष्कोण मिट्टी को वा तांबे को वेदि रच ले ☐ ऊपर चौड़ी नीचे छोटी ऊपर तो १२ अंगुल नीचे चार ४ अंगुल रहै ऐसी रचके चन्दन वा पलाश आम्रादिक श्रेष्ठ काष्ठों को लेके उस वेदि के परिमाण से खण्ड खण्ड कर लेवै वेदी अच्छी शुद्ध करके उस वेदी में काष्ठों को यथावत् रक्खै उसके बीच में अग्नि रखदे उसके ऊपर फिर काष्ठ रख दे रख कर अग्नि प्रदीप्त करै और एक चमसा रचले हाथ की कोणी से कनिष्ठिका के अग्रपर्यन्त परिमाण से और इस प्रकार की प्रोक्षणीपात्र रचले ⊂⊃ । उससे डेढ़ा प्रणीता पात्र रचले—[] एक घृत पात्र रचले ० प्रणीता में तो जल रक्खै पीछे उसमें से जब जब कार्य होय तब तब प्रोक्षणी में प्रणीता से जल लेके चमसा को और घृत के पात्र को नित्य शुद्ध करै

और कुशा को भी रखले जब जब होम करने का समय आवै तब सब पात्र को शुद्ध करके घृतपात्र में घृत को लेके अङ्गारों के ऊपर तपावै फिर उतार के आंख से देखके उसमें कुछ केश वा और जीव पड़े हों तो उनको कुशाग्र से निकाल देवै पीछे अग्नि को प्रदीप्त करके चमसा में घृत को लेके ओं भूरग्नयेस्वाहा इदमग्नये इदन्नमम। इस मन्त्र से जो काष्ठ अग्नि से प्रदीप्त होय उसके बीच में एक आहुति देवै॥ ओं भुववायवेस्वाहा इदं वायवे इदन्नमम। इससे दूसरी आहुति देवै। ओं स्वरादित्याय स्वाहा इदमादित्याय इदन्नमम। इससे तीसरी आहुति देवै॥ ओं भूर्भुवः स्वः अग्निवाय्वादित्येभ्यःस्वाहा इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदन्नमम। इससे चौथी आहुति देनी॥ ओं सर्वंवैपूर्णंस्वाहा। इससे पांचवी आहुति देवै॥ और जो अधिक होम करना होय तो गायत्री मन्त्र से करदे ऐसेही संध्योपासन के पीछे नित्य दो बार अग्निहोत्र सब करैं ओंकार भू आदिक और अग्न्यादिक जितने इन मन्त्रों में नाम हैं वे सब परमेश्वरही के हैं उनका अर्थ प्रथम प्रकरण में कह दिया है वहां जान लेना चाहिये और जो इसमें तीन बार पाठ है सो प्रथम जो अग्नयेस्वाहा इसका यह अर्थ है कि जो कुछ करना सो परमेश्वर के उद्देशही से करना इदमग्नये दूसरा जो पाठ है उसका यह अभिप्राय है कि सब जगत् परमेश्वर के जनाने के लिये है क्योंकि कार्य जो होता है सो कारणही वाला होता है इदन्नमम यह जो तीसरा पाठ है सो इस अभिप्राय से है कि यह जो जगत है सो मेरा नहीं है किन्तु परमेश्वरही का रचा है किस लिये कि हम लोगों के सुख के लिये परमेश्वर ने कृपा करके सब पदार्थ बनाये हैं हम लोग तो भृत्यवत् हैं परमेश्वरही इस जगत् का स्वामी है क्योंकि जो जिसका पदार्थ होता है उसका वही स्वामी होता है और जो इन मन्त्रों में स्वाहा शब्द है

इसका यह अर्थ है स्वम् आह सा स्वाहा अथवा स्वा नाम स्वकीया वाक् आह सा स्वाहा स्वम् नाम अपना जो हृदय सो सत्यही है जैसा जो कर्त्ता है वैसाही सो जानता है आह नाम कहने का है जैसा कि हृदय में होय वैसाही वाणी से कहै ऐसी परमेश्वर की आज्ञा है संध्योपासन अग्निहोत्र तर्पण बलि वैश्वदेव और अतिथि सेवा पंच महा यज्ञों के प्रयोजन पीछे लिखेंगे अग्निहोत्र के आगे तर्पण करैं ॥ नित्यं स्नात्वा शुचिः कुर्याद्देवर्षिपितृतर्पणम् । यह मनुस्मृति का वचन है ॥ अथदेवतर्पणम् ॐ ब्रह्मादयोदेवास्तृप्यन्ताम् १ ॐ ब्रह्मादिदेवपत्न्यस्तृप्यन्ताम् ॥ १ ॥ ॐ ब्रह्मादिदेवसुतास्तृप्यन्ताम् १ ॐ ब्रह्मादिदेवगणास्तृप्यन्ताम् १ इतिदेवतर्पणम्) (अथर्षितर्पणम्) ॐ मरीच्यादयऋषयस्तृप्यन्ताम् २ ॐ मरीच्याद्यृषिपत्न्यस्तृप्यन्ताम् २ ॐ मरीच्याद्यृषिसुतास्तृप्यन्ताम् २ ॐ मरीच्याद्यृषिगणास्तृप्यन्ताम् २ (इत्यृषितर्पणम्) अथ पितृतर्पणम् । ॐ सोमसदः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ हविर्भुजः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ आज्यपाः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ सुकालिनः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ यमादिभ्योनमः यमादींस्तर्पयामि ३ ॐ पित्रे स्वधानमः पितरन्तर्पयामि ३ ॐ पितामहायस्वधानमः पितामहन्तर्पयामि ३ ॐ प्रपितामहायस्वधानमः प्रपितामहन्तर्पयामि ३ ॐ मात्रे स्वधानमः मातरंतर्पयामि ३ ॐ पितामह्यैस्वधानमः पितामहींस्तर्पयामि ३ ॐ प्रपितामह्यै स्वधानमः प्रपितामहींस्तर्पयामि३ ॐ अस्मत्पत्न्यैस्वधानमः अस्मत्पत्नींस्तर्पयामि ३ ॐ सम्बन्धिभ्योमृतेभ्यः स्वधानमः सम्बन्धिमृतांस्तर्पयामि ३ ॐ सगोत्रेभ्योमृतेभ्यः स्वधानमः सगोत्रमृतांस्तर्पयामि ३ इतितर्पणविधिः । (पित्रादिकों में जो कोई जीता होय उसका तर्पण न करै और जितने मरगये होंय उनका तो अवश्य करै)॥ उद्धृते दक्षिणेपाणा वुपवीत्युच्यते-

द्विजः । सव्येप्राचीनआवीति निवीतिःकण्ठसज्जने॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अर्थ है कि जैसे वामस्कन्ध के ऊपर यज्ञोपवीत सदा रहताही है परन्तु उस यज्ञोपवीत को दहिने हांथ के अंगुठा में लगाले इस क्रिया के करने से द्विजों का नाम उपवीती होता है सो सब देव कर्मों को उपवीती होके करैं पूर्वाभिमुख होके देवतर्पण करै और देवतीर्थ से कण्ठ में जब यज्ञोपवीत रक्खै और दोनों हाथ के अंगुष्ठा मे यज्ञोपवीत को लगाने से द्विजों की निवीति संज्ञा होती है ब्राह्मतीर्थ से उत्तराभिमुख होके ऋषि तर्पण करना चाहिये और दक्षिण-स्कन्ध में यज्ञोपवीत रक्खै और वाम अंगुष्ठ में यज्ञोपवीत लगाने से द्विजों का नाम प्राचीनावीती होता है दक्षिणाभिमुख प्राचीनावीति और पितृतीर्थ से पितृकर्म तर्पण और श्राद्धकरना चाहिये देवतर्पण में एक बार मन्त्र पढ़के एक अंजलि देवैं ऋषि तर्पण में दोबार मन्त्र पढ़के दो अंजलि देवैं दूसरी बार मन्त्र पढ़के दूसरी अंजलि देवै और पितृतर्पण में एक बार मन्त्र पढ़के एक अंजलि देवै दूसरी बार मन्त्र पढ़के दूसरी अंजलि देवै और तीसरी बार मन्त्र पढ़के तीसरी अंजलि देवै॥ अथबलिवैश्वदेवम् । वैश्वदेवस्यसिद्धस्य गृह्येऽग्नौविधिपूर्वकम् । आभ्यःकुर्याद्देवताभ्यो ब्राह्मणोहोममन्वहम्॥ ॐ अग्नयेस्वाहा ॐ सोमायस्वाहा ॐ अग्नीषोमाभ्यांस्वाहा ॐ विश्वेभ्योदेवेभ्यःस्वाहा ॐ धन्वन्तरयेस्वाहा ॐ कुह्वैस्वाहा। ॐ अनुमत्यैस्वाहा ॐ प्रजापतये-स्वाहा ॐ सहद्यावापृथिवीभ्योस्वाहा । मृत्तिका की चतुष्कोण वेदी वा तांबे की रचके लवणान्न को छोड़के जो कि भोजन के लिये पदार्थ बना होय उसमें उसमें दशाहुति देवैं[ ] पीछे इस प्रकार की रेखाओं से कोष्ठ रचके यथा क्रमसे उस२ दिशाओं में भागों को रखदे अपनी २ जगह में ॐ सानुगायेन्द्रायनमः इससे पूर्वदिशा में भागदेना ॐ सानुगाययमायनमः । दक्षिण

दिशा में भाग रक्खे ओं सानुगायवरुणायनमः। इस मन्त्र से पश्चिम दिशा में भाग रक्खे ओं सानुगायसोमायनमः। इस मन्त्र से उत्तर दिशा में भाग रक्खे ओं मरुद्भ्योनमः। इस मन्त्र से द्वार में भाग रक्खे ओं अद्भ्योनमः। इस मन्त्र से वायव्यकोण में भाग रक्खे ओं वनस्पतिभ्योनमः। इस मन्त्र से अग्निकोण में भाग रक्खे ओं श्रियैनमः। इस मन्त्र से ऐशान्यकोण में भाग रक्खे ओं भद्रकाल्यैनमः। इस मन्त्र से नैर्ऋत्यकोण में भाग रक्खे ओं ब्रह्मपतयेनमः। ओं वास्तुपतयेनमः॥ इन दो मन्त्रों से कोठा के बीच में भाग रक्खे ओं विश्वेभ्योदेवेभ्योनमः। ओं दिवाचरेभ्योभूतेभ्योनमः। ओं नक्तंचारिभ्योभूतेभ्योनमः। इन मन्त्रों से ऊपर हाथ करके कोष्ठ के बीच में तीनों भाग रख देवै ओं सर्वात्मभूतयेनमः। इस मन्त्र से कोष्ठ के पीछे भाग रक्खे अपसव्य करके ओं पितृभ्यःस्वधानमः इस मन्त्रसे कोष्ठ के भीतर दक्षिणदिशा में भाग रक्खे इन सोलहों भागों को इकट्ठा करके अग्नि में रखदे श्वभ्योनमः पतितेभ्योनमः श्वपग्भ्योनमः पापरोगिभ्योनमः वायसेभ्योनमः कृमिभ्योनमः। इन छः मन्त्रों से शाक दाल इत्यादिक सब अन्न मिला के भूमि में छः भाग को रखके कुत्ता वा मनुष्यादिकों को देवै॥ इति बलिवैश्वदेवम्। इसके पीछे अतिथि की सेवा करनी चाहिये अतिथि दो प्रकार के हैं एक तो विद्याभ्यास करनेवाले दूसरे पूर्ण विद्यावाले नाम त्यागी लोग जो कि पूर्ण विद्यावाले पूर्ण वैराग्य और पूर्णज्ञान सत्यवादी जितेन्द्रिय भोजन के समय प्राप्त जो होय उनका सत्कार अन्न जल और आसनादिकों से करै पीछे गृहस्थ लोग भोजन करैं वा साथ में भोजन करावैं अथवा भोजन के पीछे भी आवैं तो भी सत्कार करना चाहिये नित्य पंच महायज्ञ करना चाहिये इनके करने में क्या प्रयोजन है इसका यह उत्तर है कि जिस्से इनको करना चाहिये प्रथम तो जिसका

नाम संध्योपासन है सो ब्रह्मयज्ञ है उसके दो भेद हैं पढ़ना पढ़ाना जप परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना यह सब मिलके ब्रह्मयज्ञ कहाता है इसका फल तो बहुत लोग जानते हैं और कुछ लिख भी दिया है अब लिखना आवश्यक नहीं इसके आगे दूसरा अग्निहोत्र है और अग्निहोत्र का करना अवश्य है अग्निहोत्र से किस की पूजा होती है उत्तर परमेश्वर की पूजा होती है और संसार का उपकार होता है अग्निहोत्र में जितने मन्त्र हैं वे तो परमेश्वर के स्वरूप स्तुति प्रार्थना और उपासना के वाचक हैं इस्से परमेश्वर की उपासना आती है और संसार का इस्से क्या उपकार है कि वेद ब्राह्मण और सूत्र पुस्तकों में चार प्रकार के पदार्थ होम के लिखे हैं एक तो जिसमें सुगन्ध गुण होय जैसे कि कस्तूरी केशरादिक और दूसरा जिसमें मिष्ट गुण होय जैसे कि मिश्री शर्करादिक और तीसरा जिसमें पुष्टिकारक गुण होय जैसा कि दूध घी और मांसादिक और चौथा जिसमें रोग निवृत्तिकारक गुण होय जैसा कि वैद्यकशास्त्र की रीति से सोमलतादिक औषधियां लिखी हैं उन चारों का यथावत् शोधन उनका परस्पर संयोग और संस्कार करके होम करें सायं और प्रातः क्योंकि संध्याकाल और प्रातःकाल में मलमूत्र त्याग सब लोग प्रायः कर्त्ते हैं उसका दुर्गन्ध आकाश और वायु में मिलके वायु को दुष्ट करदेता है दुष्ट वायु के स्पर्श से अवश्य मनुष्यों को रोग होता है जैसे कि जहां २ मेला होता है जिस जिस स्थान में दुर्गन्ध अधिक है उस २ स्थान में रोग अधिक देखने में आता है और दुर्गन्ध और दुष्ट वायुसे जिस्को रोग होता है वही पुरुष उस स्थान को छोड़ के जहां सुगन्ध वायु होय उस स्थान में जाने से रोग की निवृत्ति देखने में आती है इस्से क्या निश्चित जाना जाता है कि दुर्गन्ध युक्त वायु से बहुत से रोग होते हैं

र्य लोगों के मलसे जितना दुर्गन्ध होगा जब सब लोग उक्त सुगन्धादिक द्रव्यों का अग्नि में होम करेंगे उस दुर्गन्ध को निवृत्त करके वायु को शुद्ध करदेगा उस्से मनुष्यों का बहुत उपकार होगा रोगों के न होने से फिर वे सुगन्धादिकों के परमाणु मेघमण्डल और जलमें जाके मिलेंगे उनके मिलने से सबको शुद्ध करदेंगे जोकि सूर्य की उष्णता का सुगन्ध दुर्गन्ध जल तथा रस के संयोग होने से सब अवयवों को भिन्न २ कर देता है जब अवयव भिन्न २ होते हैं तब लघु होजाते हैं लघु होने से वायु के साथ ऊपर चढ़ जाते हैं जहां पृथ्वी से ऊपर ५० क्रोश तक वायु अधिक है इस्से ऊपर वायु थोड़ा है उन दोनों के सन्धि में वे सब परमाणु रहते हैं उस्से नीचे भी कुछ रहते हैं जब को सुगन्ध दुर्गन्ध जल को वा रस को हमलोग मिलाते हैं तब वह पदार्थ मध्यस्थ होता है वैसाही वह जल मध्यस्थ होता है जब सुगन्धादिक गुण युक्त जो धूम है उसके परमाणु में अधिक तो जल है तथा अग्नि कुछ पृथ्वी वायु और ये चार मिले हैं परन्तु वेभी वैसे सुगन्धादिक गुण युक्त हैं वे जब मध्यस्थ जल के परमाणु में जाके मिलते हैं तब उनको सुगन्धादिक गुणयुक्त कर देते हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं और जो कोई इस विषय में ऐसी शंका करे कि वह जल तो बहुत है होम के परमाणु थोड़े हैं कैसे उस सब जल को वे शुद्ध करेंगे उस्का यह उत्तर है कि जैसे बहुत से शाक में अथवा बहुत सी दाल में थोड़ी सी सुगन्धित इलायची इत्यादिक और थोड़ा सा घी करछुल में वा पात्र में रखके अग्नि में तपाने से जब वह जलता है तब धूम उठता है फिर उसको दाल के पात्र में मिला के मुख बन्द करदे और छौंक देदे वह सब धूम जल होके सब अंशों में मिल जाता है फिर वह सुगन्ध और स्वादयुक्त होता है वैसेही थोड़े भी होम के परमाणु सब मध्यस्थ जल के पर-

माणु को शुद्ध करदेंगे फिर जब उसी जल की दृष्टि होगी और वही जल भूमि पर आवैगा उस जल के पीने से वा स्नान करने से रोग की निवृत्ति होजायगी और बुद्धि बल पराक्रम नैरोग्य बढ़ेंगे वैसेही उसी जल से अन्न घास वृक्ष और फल दूध घी इत्यादिक जितने पदार्थ होंगे वे सब उत्तमही होंगे उनके सेवन से भी जितने जीव हैं वे सब अत्यन्त सुखी होंगे और जो होम करने वाले हैं वे भी अत्यन्त सुख पावेंगे इस लोक में अथवा परलोक में क्योंकि अग्नियुक्त सुगन्ध के परमाणु को नासिका द्वार से जब भीतर मनुष्य ग्रहण करता है मल मूत्र त्याग समय में दुर्गन्ध युक्त जितने परमाणु मस्तक में प्राप्त हुये थे उनको निकाल देंगे वा सुगन्धित करदेंगे तब उस मनुष्य के शरीर में सर्दी और आलस्य न होंगे उस्से फूर्ति और पुरुषार्थ बढ़ेंगे पुष्प वा अतर के सुगन्ध से यह फल न होगा क्योंकि इस सुगन्ध में अग्नि के परमाणु मिले नहीं वे सब जगत् के उपकारक हैं इस्से उनको भी अवश्य सुख रूप उपकार होगा उस पुण्य से और जब अश्वमेधादिक यज्ञ होय तब तो असंख्य सब जीवों को सुख होय इस्से सब राजा धनाढ्य और विद्वान् लोग इसका आचरण अवश्य करें। तर्पण और श्राद्ध में क्या फल होगा इसका यह समाधान है कि ॥ तृप प्रीणने प्रीणनं तृप्तिः । तर्पण किसका नाम है कि तृप्ति का और श्राद्ध किसका नाम है जो श्रद्धा से किया जाता है (मरे भये पिचादिकों का तर्पण और श्राद्ध करता है) उस्से क्या आता है कि जीते भये को अन्न और जलादिकों से सेवा अवश्य करनी चाहिये यह जाना गया दूसरा गुण जिनके ऊपर प्रीति है उनका नाम लेके तर्पण और श्राद्ध करेगा तब उसके चित्तमें ज्ञान का संभव है कि जैसे वे मरगये वैसे मुझको भी मरना है मरण के स्मरण से अधर्म करने में भय होगा धर्म करने में प्रीति होगी

दूसरा गुण यह है कि दायभाग बाटने में सन्देह न होगा क्योंकि इसका यह पिता है इसका यह पितामह है इसका यह प्रपितामह है ऐसेही छः पीढ़ी तक सभों का नाम कण्ठस्थ रहैगा वैसेही इसका यह पुत्र है इसका यह पौत्र है इसका यह प्रपौत्र है इस्से दायभाग में कभी भ्रम न होगा चौथा गुण यह है कि विद्वानों का श्रेष्ठ धर्मात्माओं होके निमन्त्रण भोजन दान देना चाहिये मूर्खों को कभी नहीं इस्से क्या आता है कि विद्वान् लोग आजीविका के बिना कभी दुःखी न होंगे निश्चिन्त होके सब शास्त्रों को पढ़ावेंगे और बिचारेंगे सत्य २ उपदेश करेंगे और मूर्खों का अपमान होने से मूर्खों को भी विद्या के पढ़ने में और गुण ग्रहण में प्रीति होगी पांचवां गुण यह है कि देवऋषि पितृ संज्ञा श्रेष्ठों की है देवसंज्ञा दिव्य कर्म करने वालों की है पठन पाठन करने वालों को तो ऋषि संज्ञा है और यथार्थ ज्ञानियों की पितृ संज्ञा है उनको निमन्त्रण देगा तब उनसे बात भी सुनेगा प्रश्न भी करेगा उस्से उनको ज्ञान का लाभ होगा छठवां प्रयोजन यह है कि श्राद्ध तर्पण सब कर्मों में वेदों के मन्त्रों को कर्म करने के लिये कण्ठस्थ रक्खैंगे इस्से उस पुस्तक का नाश कभी न होगा फिर कोई उस विद्या का विचार करेगा तब पदार्थ विद्या प्रगट होगी उस्से मनुष्यों को बहुत लाभ होगा सातवां प्रयोजन यह है कि ॥ वसून्वदन्तिवैपितॄन् रुद्रांश्चैवपितामहान्। प्रपितामहांस्त्वादित्यान् श्रुतिरेषासनातनी ॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि वसू जो है सोई पिता है जो रुद्र है सोई पितामह है जो आदित्य है सोई प्रपितामह है ये तीनों नाम परमेश्वरही के हैं इस्से परमेश्वर होकी उपासना तर्पण से और श्राद्ध से आई पितृ कर्म में स्वधा जो शब्द है उसका यह अर्थ है कि स्वन्दधातीति स्वधा अपने जनों को ज्ञानादिकों से धारण करै अथवा पोषण करै उसका

नाम है स्वधा स्वधा नाम है परमेश्वर का किन्तु अपनेही पदार्थ को धारण करना चाहिये औरों के पदार्थ का धारण न करना चाहिये अन्याय से अथवा अपनेहीं पदार्थ से प्रसन्नता करनी चाहिये छल कपट वा परपदार्थ मे पुष्टि की इच्छा न करनी चाहिये इस प्रकार का स्वाहा और स्वधा का अर्थ शतपथ ब्राह्मण पुस्तक में लिखा है इतने सात प्रयोजन तो कह दिये और भी बहुत से प्रयोजन हैं बुद्धिमान् लोग बिचार से जान लेवें/और बलि वैश्व देव का प्रयोजन तो होम के नाईं जान लेना फिर यह भी प्रयोजन है कि भोजन के समय बलि वैश्व देव करेंगे वेभी सुगन्ध से प्रसन्न हो जांयगे और वह स्थान सुगन्ध युक्त होने से मक्खी मच्छरादिक जीव सब निकल जांयगे उस्से मनुष्यों को बहुत सुख होगा यह प्रयोजन अग्निहोत्रादिक होम का भी जान लेना और अतिथि सेवा से बहुत गुणों को प्राप्ति होगी इत्यादिक बहुत से प्रयोजन हैं इस्से अपने पुत्रों को पिता सब उपदेश करदे उपदेश करके आचार्य के पास अपने सन्तानों को भेजदे कन्याओं की पाठशाला में पढ़ाने वाली और नौकर चाकर सब स्त्रीही लोग रहैं पांचवर्ष का बालक भी वहां न जाय वैसेही पुत्रों की पाठशाला में सब पुरुषही रहैं पुरुष की पाठशाला में पांचवर्ष की कन्या भी न जाय वे कन्या और पुत्र इनका परस्पर मेलभी न होय॥ ब्राह्मणस्त्रयाणांवर्णानामुपनयनङ्कर्त्तुमर्हति । राजन्योद्वयस्यवैश्यो वैश्यस्यैवेतिशूद्रमपि कुलगुणसम्पन्नं मन्त्रवर्जमनुपनीत मध्यापयेदित्येके॥ यह सुश्रुत के सूत्र स्थान के द्वितीयाध्याय का बचन है ब्राह्मण का अधिकार तीन वर्णों के बालकों को यज्ञोपवीत कराने का है क्षत्रिय को क्षत्रिय और वैश्य इन दो वर्णों के बालकों को यज्ञोपवीत कराने का अधिकार है और वैश्य को वैश्यवर्णही का यज्ञोपवीत कराने का अधिकार है और शूद्र

लोगों की कन्या भी कन्याओं के पाठशाला में पढ़ैं शूद्रों के बालक यज्ञोपवीत के बिना सब शास्त्रों को पढ़ैं परन्तु वेद को संहिता को छोड़के उनके जे आचार्य हैं वे प्रतिज्ञा पूर्वक नियम बांधें प्रथम तो काल का नियम करैं॥ षट्त्रिंशदाब्दिकंचर्यं गुरौत्रैवे- दिकंव्रतम्। तदर्द्धिकंपादिकंवा ग्रहणान्तिकमेववा॥ ब्रह्मचर्या- श्रम का नियम २५।३०।४०।४४।४८ बर्ष तक है अथवा उसका अर्द्ध १८ अथवा ९ नवबर्ष अथवा जबतक पूर्ण विद्या न होय तब तक यह मनुस्मृति का श्लोक है पूर्वोक्त सुश्रुत में शरीर की अवस्था धातुओं के नियम से ४ प्रकार की लिखो है॥ वृद्धियौवनंसंपूर्णता किञ्चित्परिहाणिश्चेति। षोड़श बर्ष से २५ बर्ष तक धातुओं की वृद्धि होती है और २५ बर्ष से आगे युवाऽवस्था का प्रारम्भ होता है अर्थात सब धातु क्रमसे बलको ग्रहण करते हैं उनके बल की अवधि ४० वें बर्ष सम्पूर्ण होती है उत्तम पुरुष के ब्रह्मचर्य का नियम ४० बर्ष तक होता है और छान्दोग्य उप- निषद में ४४ वा ४८ बर्ष तक ब्रह्मचर्य जो कर्त्ता है वह पुरुष विद्या पराक्रम और सब श्रेष्ठ गुणों में उत्तमों में भी उत्तम होगा और ३० से ३६ बर्ष तक मध्यम ब्रह्मचर्य का नियम है और २५ से ३० बर्ष तक न्यून से न्यून ब्रह्मचर्य का नियम है इससे न्यून ब्रह्मचर्य का नियम कभी न होना चाहिये जो कोई इससे न्यून ब्रह्मचर्याश्रम करेगा अथवा कुछ भी न करेगा उस को धैर्यादिक श्रेष्ठ गुण कभी न होंगे सदा रोगी, भ्रष्टबुद्धि, विद्या- हीन, कुत्सित, कर्मकारीही होगा क्योंकि जिसके धातुओं की क्षीणता और विषमता शरीर में होगी उस मनुष्य को किसी रीति से सुख न होगा और कन्याओं का २० से २४ बर्ष तक उत्तम ब्रह्मचर्याश्रम है १६ बर्ष से आगे २० बर्ष तक मध्यम ब्रह्मचर्याश्रम का काल है १६ वें बर्ष से १७ वा १८ बर्ष तक अधम ब्रह्मचर्य का काल है १६ बर्ष से न्यून कन्याओं का ब्रह्म-

चर्य कभी न होना चाहिये जो कोई कन्या १६ बर्ष से न्यून ब्रह्मचर्याश्रम को करेगी वह विद्या, बुद्धि, बल, पराक्रम, धैर्यादिक गुणों से रहित और रोगादिक दोषों से युक्त होगी सदा दुःखीही रहेगी इस्से ब्रह्मचर्याश्रम पुरुषों को वा कन्याओं को न्यून कभी न करना चाहिये ॥ पञ्चविंशेततोबर्षे पुमान्नारीतु षोडशे समत्वागतवीर्यौतौ जानीयात्कुशलोभिषक् ॥ यह सुश्रुत का बचन है इसका यह अर्थ है कि १६ बर्ष से न्यून कन्या का बिवाह कभी न करना चाहिये और २५ बर्ष से न्यून पुरुषों का भी न करना चाहिये और जो कोई इस बात का व्यतिक्रम करै कि १६ बर्ष से पहिले कन्याओं का बिवाह करै और २५ बर्ष से पहिले पुत्रों का बिवाह करै उसको राजा दंड दे उनके माता पिता को भी और जो कोई अपने सन्तानों को पाठशाला में पढ़ने के लिये न भेजै उसको भी राजा दण्ड देवै क्योंकि सब लोगों का सत्य व्यवहार और धर्म व्यवहार की व्यवस्था राजा ही के अधीन है जिस देश का जो राजा होय उसी को इस व्यवस्था को प्रीति से पालन करना चाहिये सो गुरु जो आचार्य यह प्रथम तो उक्त नियम को करावे आगे और नियमों कोभी ऋतंचस्वाध्याय प्रवचनेच सत्यञ्चस्वाध्याय प्रवचनेच तपश्चस्वाध्याय प्रवचनेच दमश्चस्वाध्याय प्रवचनेच शमश्चस्वाध्यायप्रवचनेच अग्नयश्चस्वाध्याय प्रवचनेच अग्निहोत्रञ्च स्वाध्याय प्रवचनेच अतिथयश्च स्वाध्याय प्रवचनेच मानुषञ्च स्वाध्याय प्रवचनेच प्रजाचस्वाध्याय प्रवचनेच प्रजनश्चस्वाध्याय प्रवचनेच प्रजातिश्च स्वाध्याय प्रवचनेच ॥ यह तैत्तिरीयोपनिषद का बचन है ऋत नाम है यथार्थ और सत्य २ ज्ञान का ब्रह्मचारी लोग और अध्यापक लोग सत्य २ बात की प्रतिज्ञा करैं कि सत्य २ ही को मानैंगे मिथ्या को कभी नहीं और कभी असत्य को न सुनेंगे न कहेंगे स्वाध्याय नाम पढ़ना प्रवचन नाम पढ़ाना सत्य २ पढ़ें

और सत्य २ पढ़ावेंगे सत्यही कर्म करेंगे और करावेंगे तप नाम धर्मानुष्ठान का है सदा धर्मही करेंगे और अधर्म कभी नहीं हम लोग जितेन्द्रिय होंगे किसी इन्द्रिय से कभी परपदार्थ और पर स्त्री ग्रहण न करेंगे इसका नाम दम है शम नाम अधर्म की मनसे इच्छा भी न करनी अग्नयश्च नाम अग्नि में जगत् के उपकार के लिये सदा हम लोग होम करेंगे अग्निहोत्रञ्च नाम अग्निहोत्र का नियम सब दिन पालेंगे अतिथियों की सेवा सब दिन करेंगे मानुषञ्च नाम मनुष्यों में जैसा जिस्से व्यवहार करना चाहिये वैसाही करेंगे बड़ा छोटा और तुल्य इनको जैसा मानना चाहिये वैसा उसको मानेंगे और जिस रीति से प्रजा की उत्पत्ति करनी चाहिये प्रजा का व्यवहार और पालन जैसा करना चाहिये धर्म से वैसाही करेंगे प्रजनश्च नाम वीर्यप्रदान जो करेंगे सो धर्मही से करेंगे प्रजातिश्च नाम जैसा कि गर्भ का पालन करना चाहिये और जन्म के पीछे भी जैसा पालन करना चाहिये वैसाही पालन उसका करेंगे परन्तु ऋतादि करेंगे स्वाध्याय प्रवचन का त्याग कभी नहीं करेंगे स्वाध्याय पढ़ना प्रवचन नाम पढ़ाना ऋतादिकों का ग्रहणही पूर्वक स्वाध्याय और प्रवचन को सदा करना चाहिये इसका विचार सब दिन करेंगे इसके छोड़ने से संसार की बहुत सी हानि होजाती है इस प्रकार से शिष्यों के प्रति पुरुष कन्याओं को स्त्री और पुरुषों को पुरुष शिक्षा करैं। वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति सत्यम्वद धर्मञ्चर स्वाध्यायान्माप्रमदः आचार्याय प्रियंधनमाहृत्य प्रजातन्तुम्माव्यवच्छेत्सीः सत्यान्नप्रमदितव्यम् धर्मान्नप्रमदितव्यम् कुशलान्नप्रमदितव्यम् स्वाध्यायप्रवचनाभ्यांनप्रमदितव्यम् १ देवपितृकार्याभ्यांनप्रमदितव्यम् मातृदेवोभव पितृदेवोभव आचार्यदेवोभव अतिथिदेवोभव यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नोइतराणि यान्यस्माकंसुचरितानि

तानित्वयोपास्यानि नोइतराणि येकेचास्मच्छ्रेयांसोब्राह्मणास्तेषांत्वयासनेन प्रश्वसितव्यम् श्रद्धयादेयम् अश्रद्धयादेयम् श्रियादेयम् ह्रियादेयम् भियादेयम् संविदादेयम् अथयदिते कर्म विचिकित्सा वा वृत्त विचिकित्सावास्यात् ३ ये तत्रब्राह्मणाः सम्मदर्शिनः युक्ता अयुक्ताः अलुक्षाधर्मकामाः स्युः यथातेतत्रवर्तेरन् तथातत्र वर्तेथाः एषआदेश एषउपदेश एषावेदोपनिषत् एतदनुशासनम् एवमुपासितव्यम् एवमुचैतदुपास्यम् ११ यह तैत्तिरीयोपनिषद् का वचन है इसी प्रकार से गुरु लोग शिष्यों को उपदेश करैं हे शिष्य तूं सब दिन सत्यही बोल और धर्मही को कर स्वाध्याय नाम पढ़ने में जैसे तुमको विद्या आवै वैसेही कर जब तक विद्या तुमको पूर्ण न होय तब तक ब्रह्मचर्य का त्याग न करना फिर जब विद्या और ब्रह्मचर्य भी पूर्ण होजाय तब जैसा तुमारा सामर्थ्य होय वैसा उत्तम पदार्थ आचार्य को दे के प्रसन्न करना चाहिये और आचार्य भी उनको शीघ्र विद्या होय वैसाही करै केवल अपनी सेवा के लिये सब दिन उनमें न रक्खैं कृपा करके विद्या पढ़ावैं छल कपट आचार्य लोग कभी न करैं क्योंकि सत्यगुणों का प्रकाशही करना उचित है सब शिष्ट लोगों को जब ब्रह्मचर्य और पूर्ण विद्या भी हो जाय तब उनको विवाह करना उचित है प्रजा का छेदन करना उचित नहीं और सत्य से प्रमाद न करना चाहिये अर्थात सत्य को छोड़ के असत्य से कोई व्यवहार न करना चाहिये धर्मही से सब व्यवहारों को करना चाहिये धर्म से विरुद्ध कोई कर्म न करना चाहिये कुशलता को सब दिन ग्रहण करना चाहिये और दुराग्रह अभिमान को कभी न करना चाहिये नम्रता शरलता से सदा गुण ग्रहण करना चाहिये भूति नाम सिद्धि इनकी प्राप्ति में पुरुषार्थ सदा करना चाहिये और पढ़ने पढ़ाने से रहित कभी न होना चाहिये सब दिन पढ़ने पढ़ाने का पुरु-

कार्य्य हीं करना चाहिये देवकार्य नाम अग्निहोत्रादिक पितृकार्य नाम श्राद्ध तर्पणादिक उसको कभी न छोड़ना चाहिये माता पिता अतिथि और आचार्य इनकी सेवा कभी न छोड़नी चाहिये क्योंकि उनों ने जो पालन किया है वा विद्या दी है अथवा सत्य जो उपदेश करते हैं इस उपकार को कभी न भूलना चाहिये इनको अवश्य मानना चाहिये और जितने धर्मयुक्त कर्म हैं उनको करना चाहिये और पाप कर्मों को कभी न करना चाहिये माता पिता आचार्य और अतिथि भी शास्त्र प्रमाण से धर्म विरुद्ध जो उपदेश करैं अथवा पाप कर्म करावैं उनको कभी न करना चाहिये और उनके जो सुकर्म हैं उनको तो अवश्य करना चाहिये उनके जो दुष्टकर्म हैं उनको कभी न करना चाहिये वैसेही मातादिक उपदेश करैं कि हमलोग जो सुकर्म करैं उनको तो तुम लोगों को अवश्य करना चाहिये हमलोग जो दुष्टकर्म करैं उनको कभी न करना चाहिये जो मनुष्य लोगों के बीचमें विद्या वाले धर्मात्मा और सत्यवादी होंय उनका सब दिन सङ्ग करना चाहिये उनसे गुणग्रहण करना चाहिये उनके वचन में और उनमें अत्यन्त श्रद्धा करनी चाहिये शिष्य लोग जब सुपात्र और धर्मात्मा मिलें तब श्रद्धा से उनको जो प्रियपदार्थ हो उसको देवें अथवा अश्रद्धा से भी देना चाहिये श्री नाम लक्ष्मी से देवें दारिद्र्य होवै तो भी दान की इच्छा न छोड़नी चाहिये लज्जा और प्रतिज्ञा से भी देना चाहिये अर्थात् किसी प्रकार से देना चाहिये दान का बंधक भी न करना चाहिये परन्तु श्रेष्ठ सुपात्रों को देना चाहिये कुपात्रों को कभी नहीं किसी को अन्याय से दुःख न देना चाहिये सब लोगों को बन्धुवत् जानना चाहिये और सब लोगों से प्रीति करनी चाहिये किसी से विवाद न करना चाहिये सत्य का खण्डन कभी न करना चाहिये और जो तुमको किसी विषय

वा किसी पदार्थ विद्या में सन्देह होय तब तुम लोग ब्रह्मवित् पुरुषों के पास जाओ वे कैसे होंय कि सर्वशास्त्रवित् निर्वैर पक्षपात कभी न करैं वे युक्त अर्थात् योगी अथवा तपस्वी होंय रूक्ष नाम कठोर स्वभाव न होंय और धर्म काम में सम्पन्न होंय उनसे पूछ के संदेह निवृत्ति कर लेना वे जिस प्रकार से धर्म में वर्तमान करैं वैसाही तुमको धर्म में वर्त्तमान होना चाहिये यही आदेश है आदेश नाम परमेश्वर की आज्ञा है यही उपदेश है उपदेश नाम इसी का उपदेश कहना योग्य है यही वेदोपनिषत् है नाम वेदों का सिद्धान्त है और यही अनुशासन है अनुशासन नाम सुनियम और शिष्टाचार है ऐसेही धर्म की उपासना करनी चाहिये इसी प्रकार जानना भी चाहिये इसी प्रकार कहना भी चाहिये गुरु शिष्य को परस्पर ऐसा वर्त्तमान करना चाहिये ओं सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै तेजस्विना वधीतमस्तु मा विद्विषावहै ओं शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः सहनाम परस्पर रक्षा करैं गुरु तो शिष्यों की कुकर्मों से रक्षा करैं और शिष्य लोग गुरु की आज्ञा पालन और गुरु की सेवा से रक्षा करैं सहैव परस्पर भोग करैं अर्थात जो शिष्य लोग कोई उत्तम अन्न पान वस्त्रादिकों को प्राप्त होंय सो पहिले गुरु को निवेदन करके शिष्य लोग भोजनादिक करैं सहनाम परस्पर वीर्य को करैं वीर्य नाम पराक्रम नाम सत्य २ जो विद्या उसको बढ़ावैं जब गुरु यथावत् परिश्रम से विद्या दान करैंगे तब उनकी भी विद्या तीव्र होगी शिष्य लोग यथावत् परिश्रम से और सुविचार से विद्या ग्रहण करैंगे तब उनकी भी सत्य २ विद्या तीव्र होगी ऐसे सब गुरु शिष्य विचार करैं कि हम लोगों का पढ़ना पढ़ाना तेजस्वी नाम प्रकाशित होय जिसका शिष्य विद्यावान् नहीं होता उसका जो गुरु है उसी की निन्दा होती है बहुत से एक गुरु के पास पढ़ते हैं उनमें

से कितने तो विद्यावान् होते हैं और कितने नहीं गुरु तो यथावत् पढ़ावेंगे और कोई शिष्य यथावत् विद्या को ग्रहण न करेगा तब तो उस शिष्य की निन्दा होगी इससे इस प्रकार का पढ़ना पढ़ाना करना चाहिये कि सत्य२ विद्या का प्रकाश होय और अविद्या जो अन्धकार उसका नाश होय॥ कामात्मता न प्रशस्ता नचैवेहास्त्यकामता। काम्योहि वेदाधिगमः कर्मयोगश्च वैदिकः॥ मनुष्यों को विषयों में जो कामात्मता नाम अत्यन्त कामना सो श्रेष्ठ नहीं और अकामता नाम कोई पदार्थ की इच्छा भी न करनी वह भी श्रेष्ठ नहीं क्योंकि विद्या का जो होना सो इच्छाही से है धर्म विद्या और परमेश्वर की उपासना की तो कामना अवश्यही करना चाहिये क्योंकि॥ काम्योहि वेदाऽधिगमः। वेद विद्या की जो प्राप्ति है सो कामनाऽधीनही है और वैदिक कर्म जितने हैं वेभी कामनाऽधीनही हैं इससे श्रेष्ठ पदार्थों की कामना सदा करनी चाहिये और अश्रेष्ठ पदार्थों की कामना कभी नहीं॥ सङ्कल्पमूलः कामोवैयज्ञाः सङ्कल्पसम्भवाः व्रतानियमधर्माश्चसर्वे सङ्कल्पजाः स्मृताः काम का मूल सङ्कल्प है अर्थात सङ्कल्पही से काम की उत्पत्ति होती है हृदय से वाह्य पदार्थ की प्राप्ति की सूक्ष्म जो इच्छा उसको सङ्कल्प कहते हैं ब्रह्मचर्यादिक जितने व्रत हैं वे भी कामही से सिद्ध होते हैं पांच प्रकार के यम होते हैं अहिंसासत्यास्तेय ब्रह्मचर्या परिग्रहायमाः। यह योगशास्त्र का सूत्र है इसका यह अर्थ है कि अहिंसा नाम कोई से कभी वैर न करना सत्य जैसा हृदयमें है वैसाही वचन कहना अस्तेय नाम चोरी का त्याग बिना आज्ञा से किसी का पदार्थ न ग्रहण करनाब्रह्मचर्य नाम विद्या बल बुद्धि पराक्रम को यथावत् प्राप्ति करनी अपरिग्रह नाम अभिमान कभी न करना धर्म नाम न्याय का न्याय नाम पक्षपात का त्याग करना जैसे कि अपना प्रिय पुत्र भी दुष्ट कर्म के

करने से मारा जाता होय तोभी मिथ्या भाषण न करै ॥ अकामस्यक्रियाकाचि द्दृश्यतेनेहकर्हिचित् । यद्यद्धिकुरुतेकिञ्चित्तत्तत्कामस्यचेष्टितम्॥ जिस पुरुष को कामना न होय तो उसको नेत्रादिकों की कुछ चेष्टा भी न होय इससे जो २ शरीर में कुछ भी चेष्टा होती है सो २ कामही से होती है ऐसाही निश्चय जानना इससे क्या आया कि काम के बिना कोई भी शरीर धारण नही करसक्ता और खाना पीना भी नहीं कर सक्ता इसलिये श्रेष्ठ पदार्थों की कामना सब दिन करनीही चाहिये दुष्ट पदार्थों की कभी नहीं और जो पुरुषार्थ को छोड़ेगा सो तो पाषाण और काष्ठ की नांई होगा इससे आलस्य कभी न करना चाहिये और पुरुषार्थ को छोड़ना भी नहीं ॥ आचार:परमोधर्म: श्रुत्युक्त: स्मार्त्त एवच । तस्मादस्मिन्सदायुक्तो नित्यंस्यादात्मवान्द्विज: ॥ शास्त्र को पढ़के सत्य धर्मों का आचरण जो न करै उसका पढ़ना व्यर्थही है सोई परम धर्म है परन्तु वह आचार वेदादिक सत्य शास्त्रोक्त और मनुस्मृत्युक्तही लेना तिस हेतु से इस आचरण नाम धर्माचरण में द्विज लोग अर्थात सब मनुष्य लोग युक्त होंय ॥ आचाराद्विच्युतोविप्रो नवेदफलमश्नुते । आचारेणतुसंयुक्त: संपूर्णफलभाग्भवेत् ॥ जो पुरुष वेदोक्त आचार को नहीं करता उसका जो विद्या का पढ़ना है उसका फल वह नहीं पाता और जो वेदादिकों को पढ़के यथोक्त आचार करता है उसको संपूर्ण सुख रूप फल होता है ॥ योऽवमन्येततेमूले हेतुशास्त्राश्रयात्द्विज: । ससाधुभिर्बहिष्कार्यो नास्तिकोवेदनिन्दक:॥ कुतर्क से जो कोई मनुष्य श्रुति नाम वेद स्मृति नाम धर्मशास्त्र ये दोनों धर्म के प्रकाशक हैं और धर्म के मूल हैं इनको जो न मानै उसको सज्जन लोग सब अधिकारों से बाहर कर देवैं क्योंकि वह नास्तिक है जो वेद नाम विद्या की निन्दा करता है सोई पुरुष नास्तिक होता है॥ वेद:स्मृति:सदाचार: स्वस्यचप्रि-

यमात्मनः। एतच्चतुर्विधम्प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्॥ श्रुति स्मृति सत्पुरुषों का आचार और अपने हृदय की प्रसन्नता नाम जितने पाप कर्म हैं उनकी इच्छा जब पुरुषों को होती है तब उसी समय भय, शङ्का और लज्जा से हृदय में अप्रसन्नता होती है और जितने पुण्य कर्म हैं उनमें नहीं होती इस से जिस २ कर्म में हृदय का अन्तर्यामी प्रसन्न होय वही धर्म है और जिसमें अप्रसन्न होय वही अधर्म जानना इसके उदाहरण चौर्जारादिक हैं इसको साक्षाद्धर्म का ४ प्रकार का लक्षण कहते हैं॥ अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानंविधीयते। धर्मंजिज्ञासमानानां प्रमाणम्परमंश्रुतिः॥ जो मनुष्य अर्थोंमें नाम धनादिकों में आसक्त नाम लोभ नहीं कर्त्ते हैं और कामनाम विषयासक्ति में जो आसक्त नहीं नाम फसे नहीं हैं उन्हीं को धर्म का ज्ञान होता है अन्य को कभी नहीं परन्तु जिनको धर्म जानने को इच्छा होय वे वेदादिक शास्त्र पढ़ें और विचारें उनको बिना पढ़ने से धर्म का यथार्थ ज्ञान न होगा॥ वेदास्त्यागश्चयज्ञाश्च नियमाश्चतपांसिच। नविप्रदुष्टभावस्य सिद्धिङ्गच्छन्तिकर्हिचित्॥ वेद, विद्या, त्याग, यज्ञ, नियम और तप इतने विप्र दुष्ट नाम अजितेन्द्रिय पुरुष को कभी सिद्ध नहीं होते। इस्से जितेन्द्रियता का होना सब मनुष्यों को आवश्यक है जितेन्द्रिय का लक्षण क्या है कि॥ श्रुत्वास्पृष्ट्वाचदृष्ट्वाच भुक्त्वाघ्रात्वाचयोनरः। नहृष्यतिग्लायतिवा सविज्ञेयोजितेन्द्रियः॥ जिस पुरुष को अपनी निंदा सुनके शोक न होय और अपनी स्तुति सुनके हर्ष न होय तथा दुष्टस्पर्श, दुष्टरूप, दुष्टरस और दुष्टगन्ध को पाके शोक न होय और श्रेष्ठस्पर्श, श्रेष्ठरूप, श्रेष्ठरस और श्रेष्ठगन्ध को प्राप्त होके जिसको हर्ष नहीं होता उसको जितेन्द्रिय कहते हैं अर्थात सब मनुष्यों को यही योग्यता है कि न हर्ष करना चाहिये न शोक किन्तु न शोक में गिरै न हर्ष के मध्यही में सदा बुद्धि को रक्खै

यही सुखका स्थान है॥ ब्रह्मारम्भेऽवसानेच पादौग्राह्यौगुरो: सदा। संहत्यहस्तावध्येयं सहिब्रह्माञ्जलि:स्मृत:॥ जब शिष्य गुरु के पास पढ़ने का नित्य आरम्भ करैं तब आदि और अन्त में गुरु को नमस्कार और पादस्पर्श करैं जब तक पढैं तथा गुरु के सन्मुख रहैं तब तक हाथही जोड़ के रहैं इसी का नाम ब्रह्माञ्जलि है जब गुरु उठै तब आपही पहिले उठै जो आप बैठा होय और गुरु आवैं तब अपने उठके सन्मुख जाके गुरु को शीघ्रही नमस्कार करै और उत्तम आसन पर बैठावै आप नीचे आसन पर बैठे और नम्र होके पूंछे अथवा सुनै॥ नापृष्ट:कस्यचिद्ब्रूयान्नचान्यायेनपृच्छत:। जानन्नपिहिमेधावी जड़वल्लोकआचरेत्॥ जब तक कोई न पूंछे तब तक कुछ न कहै और जो कोई हठ, छल और कपट से पूंछे उससे कभी न कहै जाने तो भी मूर्खों के सामने मौनही रहना ठीक है क्योंकि शठ लोग कभी न मानेंगे इससे उनसे कहना व्यर्थही है॥ अधर्मेणचय:प्राह यश्चाधर्मेणपृच्छति। तयोरन्यतर:प्रैति विद्वेषम्वाधिगच्छति॥ जो कोई अधर्म से कहता और जो अधर्म से पूंछता है नाम छल, कपट, दोनों का विरोध होने से किसी का मरण अथवा विद्वेष होजाय तो अवश्य होगा इससे गुरु शिष्य अथवा कोई मनुष्य जो इस शिक्षा को मानेगा और यथावत् करेगा उसको बड़ा सुख होगा॥ आचार्यपुत्र:शुश्रूषुर्ज्ञानदोधार्मिक:शुचि:। आप्त:शक्तोऽर्थद:साधु: स्वोध्याप्यादशधर्मत:॥ आचार्य का पुत्र शुश्रूषु नाम सेवा का करने वाला तथा ज्ञान का देने वाला वा धार्मिक शुचि नाम पवित्र आप्त नाम पूर्णकाम और शक्त नाम समर्थ अर्थद नाम अर्थ का देनेवाला साधु नाम सत्य मार्ग में चलने वाला और सत्य का उपदेश करने वाला इन दश पुरुषों को विद्वान् धर्म और परिश्रम से पढ़ावै जिससे कि वे विद्यावान् होंय क्योंकि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र

और उन सभों की स्त्री वे सब जब तक विद्या वाले न होंगे तब तक यथावत् बुद्धि, बल, पराक्रम, नैरोग्य और धर्म की उन्नति कभी न होगी आर्य्यावर्त्त देश की उन्नति तभी होगी जब विद्या का यथावत् प्रचार होगा और जब तक उक्त आचार में प्रवृत्त न होंगे तब तक सुख के दिन कभी न आवेंगे क्योंकि ब्राह्मण और सम्प्रदायिक लोग पढ़के यथावत् धर्म में निश्चित तो नहीं होते किन्तु अपनी २ आजीविका और अपना २ सम्प्रदाय जो वेद विरुद्ध पाखण्ड उनही को बढ़ावेंगे और जीविका के लोभ से सब दिन छल कपटही में रहेंगे कभी धर्म में चित्त न देंगे न धर्म को जानेंगे क्योंकि उनको पाखण्डही से सुख मिलता है इससे पाखण्डही को पढ़ावेंगे धर्म को कभी नहीं जब क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र पढ़ेंगे उनको आजीविका नाश का भय तो नहीं है इससे कभी छल कपट से असत्य न कहेंगे इससे सत्यही सत्य प्रवृत्ति होगी और वे क्षत्रियादिक जब तक न पढ़ेंगे तब तक आर्य्यावर्त्त देश वासियों के मिथ्याचार और पाखण्डों का नाश कभी न होगा जो राजा और जितने धनाढ्य लोग हैं उनको तो अवश्य सब शास्त्रों को पढ़ना चाहिये क्योंकि उनके पढ़े बिना कोई प्रकार से भी विद्या का प्रचार धर्म की व्यवस्था और आर्य्यावर्त्त देश की उन्नति कभी न होगी उनकी बहुतसी हानि भी होगी क्योंकि उनके अधिकार में राज्य धन और बहुत से पुरुष रहते हैं जब वे विद्यावान्, बुद्धिमान्, जितेन्द्रिय और धर्मात्मा होंगे तब उनके राज्य में धर्म और विद्या का प्रचार होगा उनका धन अनर्थ में कभी न जायगा और उनके स्त्री सब श्रेष्ठ धर्मात्मा होंगे इससे सब देशस्थों का उपकार होगा केवल आर्य्यावर्त्त वासियों का नहीं किन्तु सब देशस्थ मनुष्यों को ऐसाही करना उचित है कि पक्षपात का छोड़ना सत्य का ग्रहण करना और जितने मत हैं वे सब मूर्खोंही के

कल्पित हैं और बुद्धिमानों का एकही मत अर्थात सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना है इससे क्या आया कि जो लाभ विद्या के प्रचार से होता है ऐसा लाभ कोई अन्य प्रकार से नहीं होता ये सब श्लोक मनुस्मृति के हैं जो पढ़ना अथवा पढ़ाना सो शास्त्रोक्त प्रत्यक्षादिक प्रमाणों से सत्य २ परीक्षित करकेही पढ़ना और पढ़ाना भी ॥ इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम् ॥ यह गोतम मुनि का सूत्र है सो प्रत्यक्ष सब को अवश्य मानना चाहिये ॥ अक्षस्य २ प्रतिविषयंवृत्तिः प्रत्यक्षम्। अक्ष नाम इन्द्रिय का है इन्द्रिय इन्द्रिय के प्रति विषय ग्रहण करने वाली जो वृत्ति तज्जन्य जो ज्ञान उसको प्रत्यक्ष कहते हैं सो जब किसी बाह्य व्यवहार की जीव को इच्छा होती है तब मन को संयुक्त होके जीव प्रेरणा कर्त्ता है तब मन इन्द्रियों को अपने २ विषयों के प्रति प्रेरता है तब इन्द्रियों का और विषयों का सन्निकर्ष होता है अर्थात सम्बन्ध होता है सम्बन्ध किसका नाम है कि उन उन इन्द्रिय और विषयों का जो यथावत् वृत्ति नाम वर्तमान का होना अथवा ज्ञान का होना उसका नाम है सन्निकर्ष सन्निकर्षोद्वृत्तिर्ज्ञानं वा। यह वात्स्यायन भाष्य का बचन है इस पुस्तक में बारम्बार न लिखा जायगा परंतु ऐसा जानना कि जो कुछ लिखा जायगा सो गौतम सूत्रादि के अनुसारही से और वात्स्यायनादिक मुनि के भाष्यों के अभिप्राय से लिखा जायगा इसमें जिसको शङ्का अथवा अधिक जानना चाहे सो उन ग्रन्थों में देख ले वैसा प्रत्यक्षज्ञान ठीक २ यथावत् तत्त्वस्वरूप जानना उसके भिन्न जो होगा उसको भ्रम नाम अज्ञान कहा जायगा जैसे कि ॥ व्यवस्थितः पृथिव्यांगन्धः अप्सु रसः रूपन्तेजसि वायौ स्पर्शः। ये सूत्र और अभिप्राय वैशेषिक सूत्रकार मुनि के हैं इन्द्रियों से गुणही का ग्रहण होता है द्रव्य का कभी नहीं क्यों-

कि ॥ श्रोत्रग्रहणोयोऽर्थः सशब्दः। यह वैशेषिक का सूत्र है ऐसे सब सूत्र हैं हम लोग श्रोत्र नाम कर्णेन्द्रिय से शब्दही का ग्रहण कर्ते हैं और स्पर्शादिकों का नहीं ऐसेही स्पर्शेन्द्रिय से स्पर्शही का ग्रहण कर्ते हैं तथा नेत्र से रूप का जीभ से रस का और नासिका से गन्ध का ये शब्दादिक आकाशादिकों के गुण हैं गुणोंही को इन्द्रियों से ग्रहण करते हैं आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इनका ग्रहण इन्द्रियों से कभी नहीं होता मन से तो जीव आकाशादिकों का प्रत्यक्ष ग्रहण कर्त्ता है क्योंकि जो जिसका स्वाभाविक गुण है वह उससे भिन्न कभी नहीं होता जैसे कि पृथ्वी का स्वाभाविक गुण गन्ध है सो पृथ्वी से भिन्न कभी नहीं रहता और गन्ध से पृथ्वी भी भिन्न नहीं रहती इन दोनों के सम्बन्ध से जीव को गन्ध के ज्ञान होने से पृथ्वी काभी प्रत्यक्ष होता है वैसेही रस, रूप, स्पर्श और शब्दों का जीभ, नेत्र, त्वक् और श्रोत्र से ग्रहण होने से जल, अग्नि, वायु और आकाश का भी मनसे जीव को प्रत्यक्ष होता है सो प्रत्यक्ष किस प्रकार का लेना कि पृथ्वी में जल, अग्नि और वायु के सम्बन्ध होने से रस, रूप और स्पर्श भी ये तीनों गुण देख पड़ते हैं परन्तु तीन गुण स्पर्शादिक वायु आदिकों के संयोग निमित्तही से हैं वैसेही जल में रूप और स्पर्श मिले हैं तथा अग्नि में स्पर्श और वायु में शब्द आकाश में कोई नहीं एक शब्दही अपना स्वाभाविक गुण है वायु में जो शब्द है सो आकाश के संयोग निमित्त से और जल में जो गन्ध है सो पृथ्वी के संयोग से है ऐसेही अन्यत्र जान लेना सो प्रत्यक्ष ज्ञान ऐसा लेना कि अव्यपदेश्य नाम संज्ञा से जो होता है जैसे कि घट एक पदार्थ की संज्ञा है इस संज्ञा से जिसका नाम कि घट है वह घट शब्द के उच्चारण से कि तूं घड़े को ला जब वह घड़ा लेने को चला जिसवक्त उसने घड़े को देखा उस वक्त जो घट संज्ञा सो उस

को न देख पड़ी किन्तु जैसी घटकी आकृति और रूप वही तो देख पड़ा और घट शब्द नहीं फिर वह घड़े को लेके जिसने आज्ञा दी थी उसके पास घड़े को रखके बोला कि यह घड़ा है उसने घड़े को प्रत्यक्ष देखा परन्तु उसमें घड़ा ऐसा जो नाम उसको उसने भी न देखा के जो संज्ञा बिना पदार्थ मात्र का ज्ञान होना उसको अव्यपदेश्य कहते हैं और जो व्यपदेश्य ज्ञान है सो तो शब्द प्रमाण में है प्रत्यक्ष में नहीं और दूसरा प्रत्यक्ष ज्ञान का अव्यभिचारि यह विशेषण है सो जानना चाहिये व्यभिचारिज्ञान इस प्रकार का होता है कि अन्य पदार्थ में भ्रम से अन्यपदार्थ का ज्ञान होना जैसे कि लकड़ी के स्तम्भ में पुरुष का ज्ञान रज्जु में सर्पका सीपमें चांदी और पाषाणादि मूर्त्ति में देव का ज्ञान इत्यादिक ज्ञान सब व्यभिचारि हैं उस समय में तो यथार्थ भ्रमसे देखने में आते हैं परन्तु उत्तरकाल में स्तम्भादिकों का साक्षात् प्रत्यक्ष निर्भ्रम तत्त्वज्ञान के होने से पुरुषादिकों का जो भ्रम से ज्ञान हुआ था सो नष्ट होजाता है इससे क्या आया कि जिस ज्ञान का कभी व्यभिचारि नाम नाश न होय उसको कहते हैं अव्यभिचारि ज्ञान सो प्रत्यक्ष अव्यभिचारिही लेना अन्य नहीं और इस प्रत्यक्ष का तीसरा विशेषण व्यवसायात्मक है व्यवसाय नाम है निश्चय का और जो जिसका तत्त्व स्वरूप है उसका नाम है आत्मा जबतक उस पदार्थ का तत्त्व नाम स्वरूप निश्चय न होय तब तक व्यवसायात्म ज्ञान नहीं होता और जब उसके स्वरूप का यथावत् ज्ञान का निश्चय होता है उसको व्यवसायात्मक कहते हैं जैसे कि दूर से श्वेत बालुका देखी अथवा घोड़ा देखा उसके नेत्र से सम्बन्ध भी भया परन्तु उसके हृदय में निश्चय न हुआ कि यह वस्त्र अथवा बालू अथवा और कुछ है यह घोड़ा अथवा गैया अथवा और कुछ है जब तक यथावत् वह निकट से न देखेगा

तब तक सन्देह की निवृत्ति न होगी और जब तक सन्देह की निवृत्ति न होगी तब तक सन्देहात्मक नाम भ्रमात्मक ज्ञान रहेगा उसको प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं जानना और जो सत्य २ दृढ़ निश्चित तत्त्वज्ञान है उसको उक्त प्रकार से प्रत्यक्ष ज्ञान जानना इस प्रकार से थोड़ा सा प्रत्यक्ष के विषय में लिखा परंतु जिसको अधिक जानने की इच्छा होय सो षड्दर्शनों में देख लेवै इससे आगे दूसरा अनुमान प्रमाण है ॥ अथतत्पूर्वकं त्रिविधमनुमानं पूर्ववच्छेषवत्सामान्यतोदृष्टञ्च। यह गौतममुनि का सूत्र है अथ नाम प्रत्यक्ष लक्षण लिखने के अनन्तर अनुमान लक्षण का प्रकाश करते हैं तत्पूर्वक नाम प्रत्यक्ष पूर्वक जिसमें पहिले प्रत्यक्ष का होना आवश्यक होय और अनुमान पीछे मान नाम ज्ञान होना उसका नाम अनुमान है सो अनुमान प्रत्यक्ष पूर्वकही होता है अन्यथा नहीं यह अनुमान तीन प्रकार का होता है एक तो पूर्ववत् दूसरा शेषवत् तीसरा सामान्य तो दृष्ट पूर्ववत् इसका नाम है कि जहां कारण से कार्य का ज्ञान होना जैसे बादल के विना वृष्टि कभी नहीं होती सो बादलों की उन्नति गर्जना और विद्युत् इनको देखके अवश्य वृष्टि होगी ऐसा ज्ञान होता है तथा परमेश्वर के विना सृष्टि कभी नहीं होती क्योंकि रचना करने वाले के बिना रचना कभी नहीं होती और बादल जो है सो वृष्टि का कारण है परमेश्वर जो है सो जगत् का कारण है यह पूर्ववत् अनुमान है और शेषवत् यह है कि जहां कार्य से कारण का ज्ञान होना जैसे कि पहिले नदी में थोड़ा प्रवाह वेग भी न्यून अथवा सूखी देखते थे फिर जब वह पूर्ण हुई देख के उसके प्रवाह का शीघ्र चलना वृक्ष काष्ठ घासादिक बहे जाते देख के अवश्य ज्ञान होता है कि वृष्टि ऊपर कहीं भई होगी है इस संसार की रचना देख के अवश्य रचना करने वाला परमेश्वरही है इसका नाम शेषवत् अनुमान है तीसरा

सामान्य तो दृष्ट अनुमान है जैसे कि चलकेही स्थान से स्था-
नान्तर में जाता है किसी पुरुष को अन्य स्थान में कहीं बैठा
देखा फिर दूसरे काल में अन्य स्थान में उसी पुरुष को बैठा
देखा इस्से देखने वाले ने क्या जाना कि यह पुरुष इस स्थानसे
चलकेही आया है क्योंकि विना गमन स्थान से स्थानान्तर में
कोई भी नहीं जा सक्ता ऐसा सामान्य से नियम है इस प्र-
कार का सामान्य से दृष्ट अनुमान है उसका गमन तो उसने
देखा नहीं परन्तु उसको गमन का ज्ञान होगया अथवा पूर्ववत्
नाम किसी स्थान में अग्नि नाम अङ्गारे को काष्ठादिकों में
मिलाहुआ और उसमें धूम भी निकलता हुआ देखाथा उसने
जान लिया कि अग्नि और काष्ठादिकों का संयोग जब होता है
तब धूम अवश्य निकलता है फिर किसी समय उसने दूर स्थान
में धूम को देखा देखने से उसको ज्ञान भया कि वहां अग्नि
अवश्य है इस प्रकार का अनेकविधि पूर्ववत् अनुमान होता है
सो जान लेना शेषवत् नाम किसी ने बुद्धि से विचार करके कहा
कि यह पुरुष उत्तम पण्डित है इस्से क्या आया कि अन्य ऐसा
कोई पण्डित नहीं और मूर्ख भी बहुत से हैं इस स्थान में
विना कहने से ऐसा जाना गया ऐसे अन्य भी बहुत प्रकार का
शेषवत् अनुमान जान लेना सामान्य दृष्ट नाम जैसे कि मनुष्य
के शिर में प्रत्यक्ष शृङ्ग के नहीं देखने से अदृष्ट मनुष्यों के शिर
में भी शृङ्ग का नहीं होना ऐसा निश्चित जाना जाता है इसका
नाम सामान्य से दृष्ट अनुमान है इस्से आगे तीसरा उपमान
प्रमाण है ॥ प्रसिद्धसाधर्म्यात्साध्यसाधनमुपमानम् । यह गौतम
मुनि का सूत्र है प्रसिद्ध नाम प्रगट साधर्म्य नाम तुल्य धर्मता
एक का दूसरे से होना साध्य नाम जिसको जनावै साधन नाम
जिस्से जनावै जिसकी उपमा जिस्से की जाय उसका नाम उप-
मान प्रमाण है किसी ने किसी से पूछा कि गवय नाम नीलगाय

किस प्रकार की होती है उसने उसे उत्तर दिया कि जैसी यह गाय होती है वैसाही गवय होता है उसने उसके उपदेश को हृदय में रख लिया फिर उसने कभी कालान्तर में किसी स्थान में बन में वा अन्यत्र उस पशु को देखके जान लिया कि यही नीलगाय है क्योंकि गाय के तुल्य होने से ज्ञान का निश्चय होगया अथवा किसीने किसीसे कहा कि तूं देवदत्त नाम मनुष्य के पास जा तब उसने उससे पूछा कि देवदत्त कैसा है उसने उससे कहा कि जैसा यह यज्ञदत्त है वैसाही देवदत्त है फिर वह वहां गया उसने यज्ञदत्त के तुल्य देवदत्त को देखके निश्चय जान लिया कि यही देवदत्त है तब देवदत्त ने कहा कि आपने मुझको कैसे जाना उसने कहा मुझसे किसी ने कहा था कि यज्ञदत्तही के समान देवदत्त है उस यज्ञदत्त के समान होने से आपको मैंने जान लिया इसका नाम उपमान प्रमाण है चौथा शब्द प्रमाण है ॥ आप्तोपदेशः शब्दः । यह गौतममुनि का सूत्र है ॥ आप्तः खलुसाक्षात् कृतधर्मा यथादृष्टस्यार्थस्य चिख्यापयिषया प्रयुक्त उपदेष्टा साक्षात् करण मर्थस्याप्तिस्तया प्रवर्ततइत्याप्तः ऋष्यार्यम्लेच्छानां समानंलक्षणम् ॥ यह वात्स्यायन मुनि का भाष्य है आप्त किसको कहते हैं कि साक्षात् कृतधर्मा जिसने निश्चय करके धर्मही कियाथा करता होय और करै अधर्म कभी नहीं और जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोकादिक दोषों का लेश कभी न होय विद्यादिक गुण सब जिसमें होंय वैर किसी से न होये पक्षपात कभी न करै और सब जीवों के ऊपर कृपा करै अपने हृदय में सत्य २ जानने से जैसा सुख भया वैसाही सब जीवों को सत्य २ उपदेश जनाने से सुख प्राप्त कराने की इच्छा से जो प्रेरित होके उपदेश करै और आप्ति उसका नाम है कि जो जैसा पदार्थ है उसका वैसाही ज्ञान का होना उस आप्ति से युक्त होय नाम सब काम जिसके पूर्ण होंय छल, कपट

और लोभ से जो कभी प्रवृत्त न होय किन्तु एक परमेश्वर की आज्ञा जो धर्म और सब जीवों के कल्याण के उपदेश की इच्छा जिसको होय उसको आप्त कहते हैं सब आप्तों में भी आप्त परमेश्वर है उस आप्त परमेश्वर का और उस प्रकार के उक्त आप्त मनुष्यों का जो उपदेश है शब्द प्रमाण उसको कहते हैं उसी का प्रमाण करना चाहिये इनसे विपरीत मनुष्यों के उपदेश का कभी प्रमाण न करना चाहिये आप्त कोई देश विशेष में होता है अथवा सब देशों में होता है इसका यह उत्तर है कि ऋष्यार्यम्लेच्छानांसमानंलक्षणम्। ऋषि नाम यथार्थ मंत्रदृष्टा यथार्थ पदार्थों के विचार के जानने वाले उत्तर में हिमालय और दक्षिण में विन्ध्याचल पूर्व में समुद्र और पश्चिम में समुद्र इन चारों के अवधि पर्यन्त देश में रहने वाले मनुष्यों का नाम आर्य्य है इस देश से भिन्न देशों में रहनेवाले मनुष्यों का नाम म्लेच्छ है म्लेच्छ नाम निन्दित नहीं है किंतु(म्लेच्छ-अव्यक्तेशब्दे। इस धातु से म्लेच्छ शब्द सिद्ध होता है उसका अर्थ यह है कि जिन पुरुषों के उच्चारण में वर्णों का स्पष्ट उच्चारण नहीं होता उनका नाम म्लेच्छ है) सब देशों में और सब मनुष्यों में आप्त होने का सम्भव है असम्भव कभी नहीं अर्थात् ऋषि आर्य्य और म्लेच्छ इनमें आप्त अवश्य होते हैं क्योंकि जो किसी मनुष्यों में उक्त प्रकार का लक्षण वाला मनुष्य होगा उसी का नाम आप्त होगा यह नियम नहीं है कि इस देश में होय और अन्य देश में न होय(आर्य्य नाम है श्रेष्ठ का)और जो हिन्दू नाम इनका रक्खा है सो मुसल्मानों ने ईर्ष्या से रक्खा है उसका अर्थ है दुष्ट, नीच, कपटी, छली और गुलाम इससे यह नाम भ्रष्ट है किंतु(आर्य्यों का नाम हिन्दू कभी न रखना चाहिये॥ आसमुद्रात्तुवैपूर्वादासमुद्रात्तुपश्चिमात्। तयोरेवान्तरंगिर्योरार्य्यावर्त्तंविदुर्बुधाः॥ आर्य्यैरावर्त्तः सआर्य्यावर्त्तः जो

देश आर्य्यों से नाम श्रेष्ठों से आवर्त्त नाम युक्त होय उसका नाम आर्य्यावर्त्त देश है सो देश हिमालयादिक अवधि से कह दिया सो जान लेना वह शब्द प्रमाण दो प्रकार का होता है सू० सद्द्विधोदृष्टाऽदृष्टार्थत्वात्। जिस शब्द का अर्थ प्रत्यक्ष देख पड़ता है सो तो दृष्टार्थ शब्द है और जिस शब्द का श्रवण तो प्रत्यक्ष होता है और उसका अर्थ प्रत्यक्ष देखने में नहीं आता उसका नाम अदृष्टार्थ शब्द है जैसे कि स्वर्गादिक शब्दों का अर्थ देखनेमें नहीं आता इस प्रकार के शब्द का नाम अदृष्टार्थ शब्द है दृष्टार्थ शब्द यह है कि जैसा पृथिव्यादिक इतने प्रत्यक्षादि के ४ प्रकार के भेद हैं एक तो प्रमाता होता है कि जो पदार्थ को प्रमाणों से जान लेता है जिसका नाम जीव है प्रमाणों का करने वाला प्रमिणोति सप्रमाता येनार्थं प्रमिणोतितत्प्रमाणम् जिससे अर्थ को यथावत् जानै उसका नाम प्रमाण है प्रत्यक्षादिक तो कह दिये जैसे कि नेत्र से जीव जो है सो रूप को जान लेता है योऽर्थः प्रतीयतेतत्प्रमेयम्। जिसको प्रतीति होती है उसका नाम प्रमेय है जैसा कि रूप नेत्र से देखा गया यदर्थविज्ञानंसा प्रमितिः। जो अर्थ का यथावत् तत्त्व विज्ञान होना उसका नाम प्रमिति है प्रमाता प्रमाण, प्रमेय, और प्रमिति इन चार प्रकार की विद्या को भी यथावत् जान लेना चाहिये और भी ४ प्रकार की जो विद्या है उसको जानना चाहिये हेयम् नाम त्याग करने के जो योग्य होय जैसे कि अधर्म और ग्राह्य नाम ग्रहण करने के योग्य जैसा कि धर्म दूसरा तस्यनिवर्तकम् नाम हेय जो अधर्म उसकी निवृत्ति का जो ज्ञान से करना और पुरुषार्थ से तस्य प्रवर्तकम् ग्राह्य जो धर्म उसको जो प्रवृत्ति हृदय में विचार से और पुरुषार्थ से होनी तीसरा हानमात्यन्तिकम् जो हेय अधर्म का अत्यन्त त्याग कर देना पुरुषार्थ से और विचार से स्थान मान मात्यन्तिकम् नाम ग्राह्य जो धर्म उसकी दृढ़स्थिति हृदय

में हो जानो कि हृदय और आचरण से धर्म का नाश कभो न होय चौथा तस्योपायोऽधिगन्तव्यः । हेय जो अधर्म उसके त्याग के उपाय को प्राप्त होना और धर्म के ग्रहण के उपाय को प्राप्त होना वह उपाय सत्पुरुषों का सङ्ग, श्रेष्ठबुद्धि और सद्विद्या के होने से प्राप्त होता है इतने ४ अर्थपद होते हैं इनका सम्यक् जानने से निःश्रेयस जो मोक्ष नाम नित्यानन्द परमेश्वर को प्राप्ति और जन्म मरणादिक दुखों को अत्यन्त निवृत्ति होजाती है इस्से इस ४ प्रकार की विद्या को भी सज्जनों को अवश्य जानना चाहिये ४ प्रकार के जो प्रमाण हैं उनका विषय लिखा गया और इनकी परीक्षा भी संक्षेप से इस्से आगे लिखो जाती है सो जान लेना ॥ प्रत्यक्षादो नाम प्रामाण्यं त्रैकाल्यासिद्धेः । इत्यादिक परीक्षा में गोतममुनि प्रणीत सूत्रों ही को लिखेंगे सो आप लोग जान लेवें प्रत्यक्षादिकों का प्रमाण नहीं है क्योंकि तीन कालों की असिद्धि के होने से पूर्वा पर सहं-भाव नियम के भङ्ग होने से कि पहिले प्रमाण होता है वा प्रमेय देखना चाहिये कि पहिले जो प्रमाण सिद्ध होय और पीछे प्रमेय तो बिना प्रमेय के प्रमाण किसका होगा वा पहिले प्रमेय होय प्रमाण पीछे होय तो बिना प्रमाण के प्रमेय कैसे जाना जायगा और जो सङ्ग में दोनों का ज्ञान होय तो बिना प्रमेय से प्रमाण की उत्पत्तिही नहीं इस्से किसी प्रकार से भी प्रत्यक्षादिकों का प्रमाण नहीं होसक्ता तथाहिपूर्वंहि प्रमाण सिद्धौनेन्द्रियार्थसन्निकर्षात्प्रत्यक्षोत्पत्तिः । यह गोतममुनि का सूत्र है जैसे कि गन्धादि विषय का जो प्रत्यक्ष ज्ञान सो गन्धादिकों का और नासिकादिक इन्द्रियों का सम्बन्ध होने से प्रत्यक्ष की उत्पत्ति होती है अन्यथा नहीं और जो कोई कहै कि पहिले प्रमाण की उत्पत्ति होती है पीछे प्रमेय की अच्छा तो गन्धादिकों का तो सम्बन्ध भी उत्पन्न नहीं भया उनके सम्बन्ध से

बिना प्रत्यक्ष की उत्पत्तिही नहीं होती फिर इन्द्रियार्थ सन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमित्यादि प्रत्यक्ष का जो लक्षण किया है सो व्यर्थ हो जायगा क्योंकि आप ने प्रमाण की उत्पत्ति प्रमेय के सम्बन्ध से पूर्वही मानी है इस्से आपके मतमें यह दोष आवेगा अच्छा तो मैं प्रमेयों के सम्बन्ध के पीछे प्रमाणों की उत्पत्ति मानता हूं फिर क्या दोष आवेगा अच्छा सुनो सूत्र ॥ पश्चात्सिद्धौनप्रमाणेभ्यः प्रमेयसिद्धिः। पहिले प्रमेय की सिद्धि मानेंगे तो प्रमाणोंही से प्रमेय की सिद्धि होती है यह जो आप का कहना सो मिथ्या होजायगा जो आप एक सङ्ग प्रमाण और प्रमेय मानेंगे तो भी यह दोष आवेगा सूत्र ॥ युगपत्सिद्धौप्रत्यर्थनियतत्वात्क्रमवृत्तित्वाभावोबुद्धीनाम्। यह जो बुद्धि है सो एक विषय को जानकर दूसरे विषय को जान सक्ती है दोनों को एक समय में नहीं जान सकती जैसे कि एक वस्तु को देखा देख के जब रूप की बुद्धि होती है तब इतना यह वस्तु भारी है उसको न जानैगी और जब भार का मन विचार करता है तब रूपका नहीं कर सकता जब रूप का तब भार का नहीं ॥ सूत्र। युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसोलिङ्गम्। एक काल में दोनों ज्ञान को न ग्रहण करै किन्तु एक को ग्रहण करके फिर दूसरे का ग्रहण करै उसी का नाम मन है वैसेही प्रमाण और प्रमेय एककाल में दोनों का ज्ञान कभी नहीं होता जिस समय प्रमाण का ज्ञान होता है उस समय प्रमेय का नहीं जिस समय प्रमेय का ज्ञान होता है उस समय प्रमाण का नहीं यह सब जीवों को अनुभव सिद्ध बात है इस बात में आप के कहने से दोष आवेगा ऐसा भी कहना आप को उचित नहीं इस पूर्वपक्ष का यह समाधान है कि ॥ सूत्र। उपलब्धिहेतोरुपलब्धिविषयस्यचार्थस्यपूर्वापरसहभावानियमाद्यथादर्शनंविभागवचनम् ॥ भाष्य उपलब्धि का हेतु नाम प्रकाशक जिस्से कि ज्ञान होता

है और उपलब्धि का विषय जिसका ज्ञान होता है जैसा कि घटादिक इनका पूर्वा पर सह भाव नाम यह इस्से पूर्व वा यह पर ऐसा नियम नहीं सर्वत्र देखने में आता इस्से जैसा जहां योग्य होय वैसा वहां लेना चाहिये देखना चाहिये कि सूर्य का दर्शन तो पोछे होता है और दो घड़ी रात्रि से पहिलेही प्रकाश हो जाता है उस्से वस्त्रादिक पदार्थों का पहिलेही दर्शन होजाता है जब दीप को जलाते हैं तब दीप का दर्शन तो पहिले होता है फिर दीप के प्रकाश से अन्य सब पदार्थों का दर्शन पीछे होता है सूर्य और दीप अपना प्रकाश आपही करते हैं और अन्य पदार्थों का भी एक कालमें प्रकाश करते हैं यह तो दृष्टान्त हुआ वैसाही प्रमाणों के दृष्टान्त में जानना चाहिये कहीं तो पहिल प्रमाण होता है कहीं प्रमेय अन्य समय में दोनों एकही सङ्ग में होते हैं जैसे कि ॥ सूत्र। त्रैकाल्यासिद्धेः प्रतिषेधानुपपत्तिः। आपने प्रत्यक्षादिक प्रमाणों का जो निषेध किया सो तीनों कालों को मान के किया अथवा नहीं जो आप भूत काल नाम बीते भये कालमें प्रमाणों को सिद्धि न मानेंगे तो आपने निषेध किसका किया और जो भविष्यत्काल में होने वाले प्रमाणों का आपने निषेध किया तो प्रमाण उत्पन्न भी नहीं भये पहिले निषेध कैसे होगा और जो वर्तमान कालमें प्रत्यक्षादि प्रमाण सिद्ध हैं तो तिन्हीं का निषेध कोई कैसे करेगा ॥ सूत्र। सर्वप्रमाणप्रतिषेधाच्च प्रतिषेधानुपपत्तिः। किसी प्रमाण को आप न मानेंगे तो आपके प्रतिषेध की प्रमाण से सिद्धि कैसे होगी जब प्रतिषेध में कोई प्रमाण नहीं है तब प्रतिषेध अप्रमाण होगा तब कोई शिष्ट इस प्रमाण के निषेध को न मानेगा वह आप का निषेधही व्यर्थ होगया इस्से आप को भी प्रमाणों को अवश्य मानना चाहिये ॥ सूत्र। त्रैकाल्याप्रतिषेधश्च शब्दादातोद्यसिद्धिवत्तत्सिद्धेः।

तीन कालों का निषेध नहीं हो सकता जैसे कि वीणा अथवा बांसुलि वा कोई वादित्र कोई दूर बजाता होय उनका शब्द दूसरे सुनके पूर्व सिद्ध वादित्र को जान लिया जाता है कि यह वीणा का शब्द है और जब वीणा देखो तब भविष्यत्काल में जो होने वाला शब्द उसको जान लिया कि वीणा आगे बजाने से शब्द होगा और जब सन्मुख वीणा को और उसके शब्द को भी एक काल में देखता और सुनता है तब वीणा और वीणा के शब्द को भी जान लेता है वैसीही व्यवस्था प्रमाणों की जान लेना ॥ सूत्र । प्रमेयताचतुलाप्रामाण्यवत् । जैसे कि तुला पदार्थों के तोलने के लिये प्रमाण की नाईं है तुलासेही घृतादिक द्रव्यों को तोल के प्रमाण कर लेते हैं इसमें तुला तो प्रमाण स्थानी है और घृतादिक प्रमेय स्थानी हैं परन्तु वही तुला दूसरी तुला से तोली जाय तब प्रमेय संज्ञा भी उसको होती है वैसेही जब प्रत्यक्षादिक प्रमाणों से रूपादिक विषयों को चक्षुरादिकों से हम लोग देखते हैं तब तो प्रत्यक्षादिक और चक्षुरादिक प्रमाण हैं रूपादिक विषय प्रमेय हैं और जब प्रत्यक्षादिक क्या होते हैं ऐसी आकांक्षा होगी तब वेही प्रमेय हो जायगे क्योंकि ऐसे लक्षण वाले को प्रत्यक्ष प्रमाण कहना और ऐसा लक्षण जिसका होय वह अनुमान होता है इत्यादिक सब जान लेना तीन प्रकार से शास्त्र की प्रवृत्ति होती है १ एक उद्देश, २ दूसरा लक्षण, और ३ तीसरी परीक्षा, उद्देश उसका नाम है कि नाम मात्र से पदार्थ की गणना करनी जैसा कि द्रव्य गुण कर्म सामान्य विशेष और समवाय लक्षण उसका नाम है कि निश्चित जो जिसका धर्म है उससे पृथक् कभी न होय जैसा कि पृथिवी में गन्ध जलमें रस इत्यादिक गन्धही पृथिवी को जनाता है और गन्धही से पृथिवी जानी जाती है गन्ध रसादिकों से विशेष है और गन्ध से रसादिक

विशेष हैं परस्पर ये गन्धादि वे निवर्तक और ज्ञापक हो जाते हैं इस से गन्ध पृथ्वी का लक्षण है और रसादिक जलादिकों का लक्षण हैं। गन्ध का लक्षण नासिका, नासिका का लक्षण मन, मन का लक्षण आत्मा, आत्मा का लक्षण भी आत्माही है और कोई नहीं लक्षण का भी लक्षण होता है वा नहीं लक्षण का लक्षण कभी नहीं होता जो कोई लक्षण का लक्षण कहता है सो मूर्ख पुरुष है वा जिसने ग्रन्थ में लिखा है वह भी मूर्ख पुरुष है क्योंकि पृथ्वी का लक्षण गन्ध है गन्ध का लक्षण नासिका सो नासिका के प्रति गन्ध लक्ष्य है क्योंकि नासिकाही से गन्ध जाना जाता है और नासिका मन से जानी जाती है इस से नासिका का लक्षण मन है नासिका मन का लक्ष्य है मन का लक्षण आत्मा है क्योंकि आत्माही से मन जाना जाता है आत्मा के प्रति मन लक्ष्य है क्योंकि मेरा मन सुखी वा दुःखी है सो आत्मा मन कोही जान के कहता है इस से मन आत्मा का लक्ष्य है (आत्मा और परमात्मा परस्पर लक्ष्य और लक्षण हैं क्योंकि आत्मा परमात्मा को जान सक्ता है और अपने को आप भी जान लेता है तथा परमात्मा सब काल में आत्माओं को जानता है और आप को भी आप सदा जानता है वे अपने आपही को लक्ष्य और लक्षण भी हैं) इस से आगे जो तर्क करना है सो मूढ़ही का धर्म है क्योंकि इसके आगे जो तर्क कुतर्क करता है उसका ज्ञान और बुद्धि नष्ट होजाती है इस से सज्जनों को और बुद्धिमानों को अवश्य जानना चाहिये कि यही ज्ञान की परम सीमा है और यही परम पुरुषार्थ है जो कोई लक्षण का लक्षण कहता है उसके मत में अनवस्था दोष प्रसङ्ग आवेगा कहीं भी अवस्था न होगी क्योंकि लक्षण का लक्षण उसका लक्षण २ ऐसा वाद करता २ मर जायगा कुछ हाथ नहीं आवेगा और जैसा कि लक्षण का लक्षण करता है वैसा लक्ष्य का लक्ष्य

उसका लक्ष्य २ यह भी अनवस्था दूसरी उसके मनमें आवेगी इससे बुद्धिमानों को ऐसी बात न कहनी चाहिये और न सुननी चाहिये कुछ थोड़ी सी प्रमाणों के विषय में परीक्षा लिख दी है और अधिक जानने की जिसको इच्छा होय वह गोतमसूत्र के २ ध्याय से लेके ५ पंचमाध्याय की पूर्त्ति पर्य्यन्त देख लेवै इतने ४ प्रमाण हैं परन्तु ४ चारों में और ४ चार प्रमाण मानना चाहिये॥ नचतुष्ट्वमैतिह्यार्थापत्तिसम्भवाभावप्रामाण्यात्। यह गोतममुनि का पूर्वपक्ष का सूत्र है ४ चारही प्रमाण नहीं किन्तु ८ आठ प्रमाण हैं ऐतिह्य नाम जो बहुत काल से सुनते सुनाते चले आये उसका नाम ऐतिह्य है अर्थापत्ति किसी ने किसी से कहा कि बादल के होनेही से वृष्टि होती है इससे क्या आया कि बिना बादल से वृष्टि नहीं होती इसका नाम अर्थापत्ति है सम्भव नाम मण के जानने से आधा मण पसेरी सेर और छटांक को जो बिचार से ज्ञान होजाय उसका नाम सम्भव है क्योंकि मण ४० सेर का होता है उसका आधा २० सेर होगा २० सेर के चतुर्थांश की पसेरी होगी उसका ५ पांचवां अंश सेर होगा सेर का १६ सोलहवां अंश छटांक होगा ऐसा विचार करने से जो ज्ञान होता है उसका नाम सम्भव है यह सप्तम प्रमाण है आठवां अभाव किसी ने किसी से कहा कि तूं अलक्षित नाम अदृष्ट मनुष्य को ला जो कि तूने नहीं देखा है वह जाके जिसको उसने कभी न देखा था उसी को ले आवेगा देखने के अभाव से उसको ज्ञान होगया इससे अभाव भी आठवां प्रमाण मानना चाहिये इसका समाधान यह है कि॥ सूत्र। शब्दऐतिह्यानर्थान्तरभावादनुमानेऽर्थापत्तिसम्भवाभावानर्थान्तरभावाच्चाप्रतिषेधः । चारही प्रमाण मानना चाहिये उसका जो आप ने निषेध किया सो अयुक्त है क्योंकि आप्तों का उपदेश जो है सो शब्द है उसी में ऐतिह्य भी आगया क्योंकि

देव श्रेष्ठ होते हैं और असुर अश्रेष्ठ होते हैं यह भी तो आप्तों ही के उपदेश से सत्य २ जाना जाता है मूर्खों के उपदेश से कभी नहीं वैसेही प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष को जानना उसका नाम अनुमान है इस अनुमान में अर्थापत्ति सम्भव और अभाव ये तीनों गणना कर लीजिये इस्से चारही प्रमाण का मानना ठीक है यह गोतममुनि का अभिप्राय है पूर्व मीमांसा दर्शन और वैशेषिक दर्शन में प्रत्यक्ष और अनुमान दो प्रमाण माने हैं तथा योगशास्त्र और सांख्यशास्त्र में प्रत्यक्ष अनुमान और शब्द तीन प्रमाण माने हैं वेदान्त शास्त्र में प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति और अनुपलब्धि ये छः प्रमाण माने हैं और जो कोई आठ प्रमाण मानैं तो भी कुछ दोष नहीं इन उक्त प्रमाणों से ठीक २ परीक्षा करके शास्त्र को पढ़ै वा पढ़ावै और जो पुस्तक इन प्रमाणों से विरुद्ध होय उनको न पढ़ै और न पढ़ावै इनसे विरुद्ध व्यवहार अथवा परमार्थ कभी न करना और मानना भी न चाहिये ॥(अथ पठन पाठन विधिं वक्ष्यामः) प्रथम तो अष्टाध्यायी को पढ़ै और पढ़ावै सो इस क्रम से वृद्धिरादैच् यह तो पाठ भया वृद्धिः आत् ऐच् यह पदच्छेद भया आदैचां वृद्धि संज्ञा स्यात् यह सूत्र का अर्थ है कि आ, ऐ, और औ, इन तीन अक्षरों की वृद्धि संज्ञा कि वृद्धि नाम है इस प्रकार से पाणिनि मुनिजी की जो बुद्धिमान् अष्टाध्यायी के आठ अध्यायों को पढ़ै सो छः महीने में अथवा आठ महीने में पढ़ लेगा इसके पीछे धातुपाठ को पढ़ै उसमें भवति भवतः भवन्ति इत्यादिक तिङन्त रूपों को और भावः भावौ भावाः इत्यादिक सुबन्त रूपों को उन्हीं सूत्रों से साथ २ के पढ़ले तीन मास में दशगण दशलकार और बुभूषति इत्यादिक प्रक्रिया के रूपों को भी पढ़ लेगा वही सब अष्टाध्यायी के सूत्रों के उदाहरण और प्रत्युदाहरण होवेंगे इसके पीछे उणादि और गणपाठ को पढ़ै उसमें वायुः

वायू वायवः इत्यादिक रूप और बहुत से शब्दों का ज्ञान होगा एक मास में उसको पढ़ लेगा उसके पीछे सर्व विश्व उभ उभय इत्यादिक गणपाठ के साथ अष्टाध्यायी की द्वितीयावृत्ति नाम दूसरी बार पढ़ै उसके सूत्रों में जितने शब्द हैं और जितनेपद हैं उनको सूत्रों से सिद्ध कर लेवेगा और सर्वादि गणों के सर्वः सर्वौ सर्वे ऐसे पुल्लिङ्ग में रूप होते हैं सर्वा सर्वे सर्वाः इत्यादिक स्त्रीलिङ्ग में रूप होते हैं और सर्वं सर्वे सर्वाणि इत्यादिक नपुंसक में रूप होते हैं इनको भी पढ़ लेवै सूत्रों से साध के ऐसे दूसरी बार अष्टाध्यायी को ४ वा ६ छः मास में पढ़ लेगा इस प्रकार से १६ वा १८ अठारह मास में पाणिनि मुनि के किये ४ चार ग्रन्थों को पढ़लेगा फिर इसके पीछे पतञ्जलि मुनि का किया महाभाष्य जिसमें अष्टाध्याय्यादिक चार ग्रन्थों की यथावत् व्याख्या है बहुत से वार्त्तिक सूत्र हैं सूत्रों के ऊपर और अनेक परिभाषा हैं अनेक प्रकार के शास्त्रार्थ, शङ्का और समाधान हैं उनको यथावत् पढ़ले जब उसको पढ़लेगा तब सब व्याकरण शास्त्र उसका पूर्ण हो जायगा वह महा वैय्याकरण कहावेगा फिर विद्वान् संज्ञा भी उसको हो जायगी सो अठारह १८ महीने में सब महाभाष्य का पढ़ना संपूर्ण हो जायगा ऐसे मिलके ३ वर्ष तक व्याकरण शास्त्र संपूर्ण होगा उसके संपूर्ण पठन होने से अन्य सब शास्त्रों का पढ़ना सुगम हो जायगा इसमें कोई सज्जन को शङ्का मत हो कि यह बात सत्य नहीं है किन्तु इस प्रकार से पढ़ना और पढ़ाना होय तीन ३ वर्ष में संपूर्ण व्याकरण को पढ़ै और पूर्त्ति न होय तब शङ्का करनी चाहिये पहिले जो शङ्का करनी सो व्यर्थही है इससे जिन पुरुषों का बड़ा भाग्य होगा वेही इस रीति में प्रवृत्त होंगे और उनको शीघ्र विद्या भी हो जायगी वे बहुत सुख पावेंगे और जो भाग्यहीन हैं वे तो सुख की रीति को कभी न मानेंगे

व्याकरण के नाम से जो जाल रूप कौमुद्यादिक ग्रन्थ चन्द्रिक सारस्वतादिक और मुग्ध बोधादिकों के ५० वर्ष तक पढ़ने से भी जैसा बोध नहीं होता है उससे हजारगुणा अष्टाध्याय्यादिक सत्य ग्रन्थों के पढ़ने से तीन वर्ष मेंही बोध हो जाता है इससे विचार करना चाहिये कि सत्य ग्रन्थों के पढ़ने में बड़ा लाभ होता है वा मिथ्या जालरूप ग्रन्थों के पढ़ने में जालरूप ग्रन्थों के पढ़ने से कुछ भी लाभ नहीं होगा क्योंकि जाल रूप ग्रन्थों में इस प्रकार का व्यर्थ विवाद लिखा है उसको पढ़ाने और पढ़ने वाले भी वैसेही हठी, दुराग्रही और विरुद्ध वादी होंगे ऐसेही देख भी पड़ते हैं क्योंकि जैसा ग्रन्थ पढ़ेगा वैसीही बुद्धि उसकी होगी इस प्रकार का बड़ा एक जाल बनाया है कि मरण तक एक शास्त्र भी पूर्ण नहीं होता उसको अन्य शास्त्र पढ़ने का अवकाश कैसे होगा कभी न होगा एक शास्त्र के पढ़ने से मनुष्य की बुद्धि संकुचितही रहती है विस्तृत कभी नहीं होती सब दिन उसको शंकाही बनी रहती है सब पदार्थों का निश्चय कभी नहीं होता और जो व्याकरण का पढ़ना है सो तो वेदादिक अन्यशास्त्रों के पढ़ने केही लिये है जब वह एक व्याकरणही में वाद विवाद करता २ मर जायगा तब हाथ में उसके कुछ भी न आवेगा इससे सब सज्जन लोगों को ऋषि मुनियों की पठन पाठन की जो रीति है उसी में चलना चाहिये जाली लोगों की रीति में कभी नहीं क्योंकि आर्य्यावर्त्त मनुष्यों के बीच में कपिलादिक ऋषि मुनि जितने भये हैं वे बड़े विद्वान् और बड़े धर्मात्मा पुरुष भये हैं उनके सहस्रांश में भी इस समय जो आर्य्यावर्त्त में मनुष्य हैं वे बुद्धि, विद्या और धर्माचरण में नहीं देख पड़ते इस लिये उनका आचरण हम लोगों को करना उचित है कि उसी से आर्य्यावर्त्त की लोगों की उन्नति होगी अन्यथा कभी नहीं व्याकरण को तीन

र्ष तक सम्पूर्ण पढ़के कात्यायनादि मुनि कृत जो कोश यास्क मुनिकृत जो निघण्टु और यास्क मुनिकृत निरुक्त को पढ़ै और पढ़ावे उसमें अव्ययार्थ एकार्थ कोश और अनेकार्थ कोश नाम और नामियों का आप्तों के किये संकेत से जो सम्बन्ध हैं डेढ़ वर्ष के बीच में उसका ज्ञान होजायगा उसके पीछे पिङ्गल मुनि के किये जो छन्दों के सूत्र भाष्य सहित को पढ़ै पीछे यास्कमुनि के किये काव्यालङ्कार सूत्र और उसके ऊपर वात्स्यायन मुनि के भाष्य को पढ़ै उससे गायत्र्यादिक छन्दों का काव्य अलङ्कार और श्लोक रचने का भी यथावत् ज्ञान छः मास में होवेगा और अमर कोशादिक जो कोश ग्रन्थ और श्रुतबोधादिक जो छन्दो ग्रन्थ वे सब जाल ग्रन्थही हैं इनके दश वर्ष में पढ़ने से भी बोध नहीं होता सो उक्त निघंट्वादिक सत्यशास्त्रों के पढ़ने से दो वर्ष में होगा इससे इनकाही पढ़ना और पढ़ाना उचित है इसके पीछे पूर्व मीमांसाशास्त्र को पढ़ै जो कि जैमिनि मुनि के किये सूत्र हैं उनके ऊपर व्यासमुनि जीकी को अधिकरणमाला व्याख्या के सहित पढ़ै चार मास के बीच में पढ़ लेगा और(इसी शास्त्र के साथ मनुस्मृति को पढ़ै सो एक मास में मनुस्मृति को पढ़लेगा)उसके पीछे वैशेषिकदर्शन जो कि कणादमुनि के किये सूत्र हैं उसके ऊपर गोतममुनि जो का किया जो प्रशस्त पादभाष्य और भरद्वाज मुनिको किये सूत्रों की वृत्ति के सहित को पढ़ै उसके पढ़ने में दो मास जांयगे उसके पीछे न्यायदर्शन जो कि गोतममुनि के किये सूत्र उनके ऊपर वात्स्यायन मुनि का किया भाष्य उसको पढ़ै इसके पढ़ने में चार मास जांयगे इसके पीछे पातञ्जल दर्शन नाम योगशास्त्र जो कि पतञ्जलि मुनि के किये सूत्र उसके ऊपर व्यासमुनि जी का किया भाष्य इसको एक मास में पढ़ लेगा उसके पीछे सांख्यदर्शन जो कि कपिलमुनि के किये सूत्र उनके ऊपर भागुरि

मुनि का किया भाष्य इसको भी एक मास में पढ़ लेगा इसके पीछे (ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्ड, मांडूक्य, तैत्तिरीय, छान्दोग्य, और वृहदारण्यक इन दश उपनिषदों को) पांच महीने के बीच में पढ़लेगा और इसके पीछे वेदान्तदर्शन को पढ़ै जो कि व्यास मुनि के किये सूत्र उनके ऊपर वात्स्यायन मुनि का किया भाष्य अथवा बौधायन मुनि का किया भाष्य वा शङ्कराचार्य जी का किया भाष्य पढ़ै जब तक बौधायन और वात्स्यायन मुनि का किया भाष्य मिले तब तक अन्य भाष्य को न पढ़ै इसको छः मास में पढ़लेगा इनको छः शास्त्र कहते हैं इनके पढ़ने में दो वर्ष काल जायगा दोवर्ष के बीच में सब पदार्थ विद्या पुरुष को यथावत् आवैगी और इनके विषय में बहुत से जालग्रन्थ लोगों ने रचे हैं जैसे कि पाराशर स्मृत्यादिक १७ सतरह पूर्व मीमांसा शास्त्र के विषय में जालग्रन्थ लोगों ने रचे हैं तथा वैशेषिकदर्शन और न्यायदर्शन के विषय में तर्कसंग्रह, न्यायमुक्तावली, जगदीशी, गदाधरी, और मथुरानाथी इत्यादिक जालग्रन्थ लोगों ने रचे हैं ऐसेही योगशास्त्र के विषय में हठ प्रदीपिकादिक मिथ्या ग्रन्थ लोगों ने रचे हैं तथा सांख्य शास्त्र के विषय में सांख्य तत्त्व कौमुद्यादिक जाल ग्रन्थ लोगों ने रचे हैं और वेदान्तशास्त्र के विषय में पञ्चदशी, वेदान्त, संज्ञा, वेदान्तमुक्तावली, आत्मपुराण, योगवाशिष्ठ और पूर्वोक्त दश उपनिषदों को छोड़ के गोपालतापिनी, नृसिंहतापिनी, रामतापिनी और अल्लोपनिषत् इत्यादिक बहुत उपनिषद जाल करके लोगों ने रची हैं वे सब सज्जनों को त्याग करने के योग्य हैं इन जाल ग्रन्थों में जो कुछ सत्य है सो सत्य शास्त्रोंही का विषय है उसका लिखना ग्रन्थान्तर में अयुक्त है क्योंकि जो बात सत्य शास्त्रों में लिखीही है उसका फिर लिखना व्यर्थ है जैसे कि पीसे भये पिसान को फिर पीसना वैसाही यह है

किन्तु पिसान भी उड़ जायगा तथा सत्यशास्त्र की बात भी उनके हाथ से उड़जायगी और जो सत्यशास्त्रों से विरुद्ध बात है सोतो कपोल कल्पित मिथ्याही है इस्से इनका पढ़ना और पढ़ाना मिथ्याही जानना चाहिये इस्से कुछ फल न होगा और जो कोई पढ़ता है वा पढ़ेगा एक शास्त्र की मरण तक भी पूर्त्ति न होगी और कुछ बोध भी उसको न होगा इस्से सज्जन लोगों को सत्यशास्त्रोंही का पढ़ना और पढ़ाना उचित है जाल ग्रन्थों का कभी नहीं पूर्व पक्ष छः शास्त्रों में भी अन्योन्यविरोध और परस्पर खण्डन देख पड़ता है एक का दूसरे से दूसरे का तीसरे से ऐसाही सर्वत्र है जैसा कि जाल ग्रन्थों में एक शास्त्र के विषय में बहुत सी परस्पर विरुद्ध टीका और मूल ग्रन्थ हैं वैसाही विरोध सत्यशास्त्रों में भी देख पड़ता है जो दोष आप ने जाल ग्रन्थों में दिया वही दोष सत्यशास्त्रों में भी आया फिर सत्यशास्त्रों का पढ़ना और जालग्रन्थों का न पढ़ना आप कहते हैं इसमें क्या प्रमाण है उत्तर कि यह आप लोगों को जालग्रन्थों के पढ़ने और सुनने से भ्रान्ति होगई है कि सत्यशास्त्रों में भी विरोध और परस्पर खण्डन है यह बात आप लोगों की मिथ्याही है देखना चाहिये कि आज काल के लोग टीका वा ग्रन्थ रचते हैं सो द्वेष बुद्धिही से रचते हैं कि अपनी बात मिथ्या भी होय तो भी सत्य कर देते हैं तब सब लोग उसको कहते हैं कि वह बड़ा पण्डित है इस प्रकार के जो धूर्त्त मनुष्य हैं वेही टीका वा ग्रन्थ रचते हैं उनमें इसी प्रकार की मिथ्या धूर्त्तता रखते हैं उनको जो पढ़ता है वा पढ़ाता है उसकी भी बुद्धि वैसीही भ्रष्ट हो जाती है सो मिथ्या वाद मेंही प्रवृत्त होता है और सत्य वा असत्य का विचार कभी नहीं कर्त्ता उसको तो यही प्रयोजन रहता है कि दूसरे की सत्य बात को भी खण्डन करके अपनी मिथ्या बात को मण्डन करके जिस किस प्रकार

से दूसरे का पराजय करना अपना विजय करलेना उस्से प्रतिष्ठा करना और धन लेना पीछे विषय भोग करना यही आज काल के पण्डितों की क्षुद्रबुद्धि और सिद्धान्त हो गया है इस प्रकार के कितने मौलवी और पादरी लोग भी देखने में आते हैं पण्डितादिकों में कोई जो सत्य कथन करै तब वे सब धूर्त्त लोग उस्से विरोध करते हैं उसका नाम नास्तिक रखते हैं और उससे सब दिन विरोधही रखते हैं क्योंकि उनकी बुद्धि वैसीही है इस दोष के होने से सत्य शास्त्रों का जो यथावत् अभिप्राय है उसको जानते भी नहीं इस्से वे कहते हैं कि सत्यशास्त्रों में भी परस्पर विरोध है परन्तु मैं आप लोगों से कहता हूं कि छः शास्त्रों में लेशमात्र भी परस्पर विरोध नहीं है क्योंकि इनका विषय भिन्न २ है और जो विरोध होता है सो एक विषय में परस्पर विरुद्ध कथन के होने से होता है जैसे कि एक ने कहा गन्धवाली जो होती है सो पृथ्वी कहाती है इसी विषय में दूसरे ने कहा कि नहीं जो रस वाली होती है सोई पृथिवी होती है क्योंकि पृथिवी में क्षार मिष्टादिकरस प्रत्यक्ष देख पड़ते हैं इस प्रकार के विषय कों विरोध जानना चाहिये और जो ऐसा कहै कि गन्धवाली जो पृथिवी होती है और रसवाला जल होता है सो एक तो पृथिवी के विषय में व्याख्या करता है और दूसरा जल के विषय में दोनों का विषय भिन्न होने से व्याख्या भी भिन्न होगी परन्तु उसका नाम विरोध नहीं जैसे कि किसी ने ज्वर के विषय में चिकित्सा निदान औषध और पथ्य को लिखा और दूसरे ने कफ के विषय में चिकित्सादिक लिखे उसको विरोध नहीं कहना चाहिये वैसाही षट् शास्त्रों के विषय और भी सब वेदादिक शास्त्रों के विषय में जानना चाहिये जैसे कि (धर्मशास्त्र नाम पूर्व मीमांसा में धर्म और धर्मी दो पदार्थों को मानते हैं) और कर्मकाण्ड जो कि वेदोक्त है

सन्ध्योपासन से लेके अश्वमेध पर्यन्त कर्मकाण्ड कहा है अब इसमें आकाङ्क्षा होती है कि धर्म और धर्मी किसको कहते हैं तब इसी को वैशेषिक दर्शन में स्पष्ट व्याख्या की है कि जो द्रव्य है सो तो धर्मी है और गुणादिक सब धर्म हैं फिर भी आकाङ्क्षा होती है कि गुण को क्यों नहीं द्रव्य और द्रव्य को क्यों नहीं गुण कहते उसका विचार न्यायदर्शन में किया है कि जिन प्रमाणों से द्रव्य गुणादिक सिद्ध होते हैं उसको द्रव्य और उन्हीं को गुण मानना चाहिये सो तीनों शास्त्रों से श्रवण नाम सुनना और मनन नाम उसी का विचार करना इस बात तक लिखा उससे आगे जितने पदार्थ अनुमान से सिद्ध होते हैं उतने प्रत्यक्ष से जैसा तीन शास्त्रों में कहा है वैसाही है अथवा नहीं उसको विशेष विचार से और योगाभ्यास से उपासना काण्ड जो कि चित्तवृत्ति के निरोध से लेके कैवल्य पर्यन्त उपासना काण्ड कहाता है उसकी रीति योगशास्त्र में लिखी है जो देखना चाहै सो उसमें देख लेवै सब के तत्त्व को यथावत् जानना चाहिये इस लिये योगशास्त्र है फिर कितने भूत और तत्त्व हैं उसकी भिन्न २ गणना और वैसाही निश्चय का होना उस लिये सांख्य शास्त्र का आवश्यक रचन हुआ इन पांच शास्त्रों का महाप्रलय तक व्याख्यान है जिसमें कि स्थूल भूतों का नाश होता है और सूक्ष्मों का नहीं फिर उसी सूक्ष्म भूतों से जैसी उत्पत्ति स्थूल की होती है और जिस प्रकार से प्रलय होता है वह बात सब लिखी है महाप्रलय तक परमाणु और प्रकृत्यादिक सूक्ष्म भूत बने रहते हैं उनका लय नहीं होता फिर कार्य और परम कारण का विचार वेदान्त शास्त्र में किया कि सब प्रकृत्यादिक भूतों का एक अद्वितीय अनादि परमेश्वरही कारण है और परमेश्वर से भिन्न सब कार्य हैं क्योंकि परमेश्वरही में सब

प्रकृत्यादिक सूक्ष्म भूत रचे हैं सो परमेश्वर के सामने तो संसार सब आदि है और अन्य जीवों के सामने अनादि परमाणु प्रकृत्यादिक भूत भी अनित्य हैं क्योंकि परमाणु और प्रकृति इनका ज्ञान अनुमान से होता है वैसा नाश भी अनुमान से हम लोग जान सक्ते हैं परमेश्वर तो सब जगत का रचने वाला है अन्य ब्रह्मादिक देव और सब मनुष्य शिल्पी हैं क्योंकि नवीन पदार्थ रचने का किसी का सामर्थ्य नहीं है बिना परमेश्वर के जगत् का रचने वाला कोई नहीं है सो वेदान्त शास्त्र में ज्ञान काण्ड का निश्चय किया है जो कि निष्काम कर्म से लेके परमेश्वर की प्राप्ति पर्यन्त ज्ञानकाण्ड है निष्काम कर्म यह है कि परमेश्वर की प्राप्ति जो मोक्ष उसके बिना भिन्न फल कर्मों से नहीं चाहना सो निष्काम कर्म कहाता है इससे बिचारना चाहिये कि षट्शास्त्रों में कुछ भी विरोध नहीं है किन्तु परस्पर सहायकारी शास्त्र हैं सब शास्त्र मिलके सब पदार्थविद्या छः शास्त्रों में प्रकाश कर दी है और उक्त जो जाल पुस्तक हैं उनमें केवल विरोधही है उनका पढ़ना और पढ़ाना व्यर्थही है किन्तु सत्य शास्त्रों के पठन न होने से और जाल ग्रन्थों के पढ़ने से आर्य्यावर्त्त देश के लोगों की बड़ी हानि हो गई है इससे सज्जन लोगों का ऐसा करना उचित है कि आज तक जो कुछ भ्रष्टाचार भया सो भया इससे आगे हमलोगों के ऋषि मुनि और श्रेष्ठ राजा लोग जो कि पहिले भये थे उनकी जो मर्यादा और वेदादिक सत्यशास्त्रोक्त जो मर्यादा उसी पर चलने से और सब पाखण्डों को छोड़नेही से आर्य्यावर्त्त देश की बड़ी उन्नति होगी अन्य प्रकार से कभी न होगी, इन सब शास्त्रों को पढ़के ऋग्वेद को पढ़े उसका आश्वलायनकृत जो श्रौत सूत्र बह्वृच जो ऋग्वेद का ब्राह्मण और कल्पसूत्र इनके साथ २ मन्त्रों का अर्थ पढ़े और स्वर को भी पढ़े सो दो बर्ष

के भीतर सब ऋग्वेद को पढ़ लेगा तथा (यजुर्वेद की संहिता उसके साथ २ कात्यायन, श्रौतसूत्र, तथा गृह्यसूत्र तथा शतपथ ब्राह्मण स्वर अर्थ और हस्तक्रिया के सहित यथावत् पढ़ै) डेढ़ वर्ष तक यजुर्वेद को पढ़ लेगा इसके पीछे सामवेद को पढ़ै गोभिल श्रौतसूत्र तथा राणायनश्रौतसूत्र और कल्पसूत्र साम ब्राह्मण तथा गोभिल राणायन गृह्यसूत्र के साथ २ पढ़ै दो वर्ष में सब सामवेद को पढ़लेगा इसके पीछे अथर्ववेद को पढ़ै शौनकश्रौतसूत्र, शौनकगृह्यसूत्र, अथर्वब्राह्मण और कल्पसूत्र के साथ २ को एक वर्ष में पढ़लेगा ऐसे साढ़े छः वा सात वर्ष में चारो वेदों को पढ़लेगा चारो वेदों की जो संहिता है उन्हीं का नाम वेद है फिर उन्हीं वेदों की जितनी अन्य २ शाखा हैं वे सब वेदों के व्याख्यान हैं बिना पढ़े सब बिचार मात्र से आजांयगी तथा आरण्यक बृहदारण्यकादिक व्याख्यान हैं उनको भी बिचार करने से जानलेगा चारों वेदों को पढ़ के आयुर्वेद को पढ़ै जो कि ऋग्वेद का उपवेद है उसमें धन्वन्तरिकृत निघण्टु, चरक और सुश्रुत इन तीनों ग्रन्थों को शस्त्रक्रिया, हस्तक्रिया और निदानादिक बिषयों को यथावत् पढ़ै सो तीन वर्ष में पढ़लेगा और वैद्यकशास्त्र के बिषय में शार्ङ्गधरादिक जाल ग्रन्थों को पढ़ना और पढ़ाना व्यर्थही जानना इसके पीछे यजुर्वेद का जो उपवेद धनुर्वेद उसको पढ़ै उसमें शस्त्र बिद्या जो कि शस्त्रों का रचना और शस्त्रों का चलाना और अस्त्र बिद्या जो कि आग्नेयास्त्रादिक पदार्थ गुणों से होते हैं उनको यथावत् रच लेना अग्न्यादिक अस्त्रों के बिषयों का बिस्तार राजधर्म में लिखेंगे और युद्ध समय में व्यूह की रचना यथावत् जान लेवै जैसे कि सूची व्यूह सूई का अग्र भाग तो बहुत सूक्ष्म होता है और उस अग्र भाग से पूर्विले २ स्थूल होता है उससे सूत स्थूल होता है इसी प्रकार से सेना

को रचके शत्रु की सेना वा दुर्ग वा नगर में प्रवेश करें तब उसके विजय का सम्भव होता है ऐसेही शकटव्यूह, मकरव्यूह और गरुड़व्यूहादिकों को जान लेवे उसको दो वा तीन वर्ष में पढ़लेगा उसके आगे सामवेद का जो उपवेद गान्धर्व वेद उसको पढ़ै उसमें वादित्रराग, रागिणी, काल-ताल स्वरपूर्वक गान विद्या का अभ्यास करै दोवर्ष में उसको पढ़लेगा इसके आगे अथर्ववेद का जो उपवेद अर्थवेद नाम शिल्पशास्त्र उसमें नाना प्रकार कला यन्त्र और नाना प्रकार के द्रव्यों को मिलाने से नाना प्रकार व्यवहारों के यानों की और दूरवीक्षण, अणवीक्षण, नाम दूरस्थित पदार्थों को निकट देखे और अणवीक्षण नाम सूक्ष्म पदार्थ भी स्थूल देख पड़ें इत्यादिक पदार्थों को रचले जैसे कि अग्नि का ऊर्द्ध गमन स्वभाव है और जल का नीचे जाने का स्वभाव है सो किसी पात्र में जल को करके चूल्हे के ऊपर रखदे और उसके नीचे अग्नि करै फिर उतनेही भार वाले पात्र से उस पात्र का मुख बन्द करै जब अग्नि से जल ऊपर उड़ेगा तब इतना बल होजायगा कि ऊपर का पात्र नाचने लगेगा वा गिर पड़ेगा इसी प्रकार से पदार्थों के अनुकूल गुणों को और विरुद्ध गुणों को जानने से पृथिवीयान, जलयान और आकाश यानादिक पदार्थों को रच लेगा जैसे कि महाभारत में उपरिचरवसु राजा इन्द्रादिक देव तथा राम लङ्का से अयोध्या को आकाश मार्ग से आया उपरिचरादिक राजा लोग और इन्द्रादिक देव वे भी आकाश मार्ग से जाते और आते थे तथा जैसे कि आज काल अङ्गरेज लोगों ने रेल तारादिक बहुत से पदार्थ रचे हैं वे सब शिल्प शास्त्र के विषय हैं और उनसे बहुत से उपकार हैं उसको भी तीनवर्ष में पढ़लेगा पढ़के पीछे अपनी बुद्धि से बहुत सी शिल्प विद्या की उन्नति करलेगा पीछे ज्योतिश्शास्त्र को पढ़ै उसमें

गणित विद्या यथावत् जानै उस्से बहुत सा उपकार होता है दो वा तीन वर्ष में उसको पढ़लेगा और ज्योतिश्शास्त्र में जो फल विद्या है सो व्यर्थ ही है भृग्वादिक मुनियों के किये सूत्र और भाष्यों को पढ़ैं मुहूर्त्त चिन्तामण्यादिक जालग्रन्थों को कभी न पढ़ै इस प्रकार से साढ़े २७॥ वा २८ वर्ष तक पढ़लेगा संपूर्ण विद्या उसको आजायगी फिर उसको पढ़ने की आवश्यकता कुछ न रहेगी सब विद्याओं से वह पूर्ण होके पुरुषों में पुरुषोत्तम होजायगा और उसके शरीर से संसार में बड़ा उपकार होगा क्योंकि जैसे अपने विद्या को पढ़ा है वैसेही पढ़ावेगा इस्से जैसा मनुष्यों का उपकार होता है वैसा किसी प्रकार से नहीं होता ऐसे ३६ वर्ष की जब आयु होगी तबतक पुरुषों को विद्या भी पूर्ण हो जायगी और जो पुरुष ४०, ४४, और ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य्य रक्खेगा उस पुरुष के भाग्य और सुख को हम लोग नहीं कह सक्ते कि कितना होगा जिस देश में राज्याभिषेक जिसका होना होय वह तो सब विद्या से युक्त होवै और ३६, ४०, ४४ वा ४८ वर्षतक अवश्य ब्रह्मचर्याश्रम करै उसी को राजा होना उचित है क्योंकि जितने उत्तम व्यवहार हैं वे सब राजाही के आधीन हैं और सब दुष्ट व्यवहारों का बंध करना सो भी राजाही के आधीन है इस्से राजा और धनाढ्य लोगों को तो अवश्य सब विद्या पढ़नी चाहिये क्योंकि जो वे सब विद्याओं को न पढ़ेंगे तो अपने शरीर की भी रक्षा न कर सकेंगे फिर धर्मराज्य और धन की रक्षा तो कैसे करेंगे और जितनी कन्या लोग हैं वे भी पूर्वोक्त व्याकरण, धर्मशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, गानविद्या और शिल्पशास्त्र इन पांच शास्त्रों को तो अवश्य पढ़ैं और जो अधिक पढ़ैं तो उनका सौभाग्य बड़ा होगा १६ वर्ष से न्यून ब्रह्मचर्य कन्या लोग कभी न करैं और जो १८, २० वा २४ वर्षतक ब्रह्मचर्य्याश्रम करेंगी तो उनको

अधिक २ सौभाग्य और सुख होगा जबतक स्त्री और पुरुष लोग उक्त रीति पर ब्रह्मचर्य्य से विद्या प्राप्त न करेंगे तो उनका अभाग्य और दुःखही जानना परस्पर स्त्री और पुरुषों का विरोध और भ्रान्ति होगी जिन व्यवहारों से सुख वृद्धि होती है उनको भी न जानेंगे सर्वदा दीन रहेंगे और प्रमाद से धनादिकों का नाश करेंगे कहीं प्रतिष्ठा और आजीविका भी उनकी न होगी परस्पर व्यभिचारी होंगे उस्से वीर्य्य का नाश होगा फिर बहुत से शरीर में रोग होंगे रोगों से सदा पीड़ित रहेंगे वे मूर्ख होंगे इस्से कभी सुख न पावेंगे इस्से सब स्त्री और पुरुष लोग सब पुरुषार्थ से अवश्य विद्याही को पढ़ें इस्से मनुष्यों को अधिक लाभ कोई नहीं है क्योंकि आपही अपना उपदेष्टा, रक्षक, धर्मग्राहक और अधर्म त्याग करनेवाला होता है इस्से बड़ा कोई लाभ नहीं है विद्या के पढ़ने और पढ़ाने में जितने विघ्न रूप व्यवहार हैं उनको जब तक मनुष्य नहीं छोड़ता तब तक उसको विद्या कभी नहीं होती प्रथम विघ्न बाल्यावस्था में जो विवाह का करना सोई बड़ा विघ्न है क्योंकि शीघ्र विवाह करने से विषयी होगा और विषयही की चिन्ता करेगा शरीर में धातु पुष्ट तो होंगे नहीं और सब धातुओं का सार जो कि सब धातुओं का राजा घर में जैसा कि दीपक प्रकाशक होता है जैसा ब्रह्माण्ड में सूर्य प्रकाशक है वैसाही शरीर में वीर्य है इस अपरिपक्व वीर्य और अत्यन्त वीर्य के नाश से बुद्धि, बल, पराक्रम, तेज और धैर्य का नाश हो जाता है आलस्य, रोग, क्रोध और दुर्बुद्धि इत्यादि ये सब दोष उस्में हो जायगे फिर कैसे उसको विद्या होसक्ती है कभी न होगी क्योंकि जितेन्द्रिय, धैर्यवान्, बुद्धिमान्, शीलवान्, विचारवान्, जो पुरुष होता है उसी को विद्या होती है अन्य को नहीं इस्से ब्रह्मचर्य्य का अवश्य करना उचित है दूसरा विद्या का

नाशक विघ्न पाषाणादिक मूर्त्तिपूजन, जट्टू पुंड्र, त्रिपुंड्रादिक तिलक, एकादशी, त्रयोदश्यादिकव्रत, काश्यादिक तीर्थों में विश्वास, राम, कृष्ण, नारायण, शिव, भगवती और गणेशादिक नामों से पाप नाश होने का विश्वास यह भी विद्या धर्म और परमेश्वर की उपासना का बड़ा भारी विघ्न है क्योंकि विद्या का फल यही है कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना जो कि धर्म रूप है परमेश्वर को यथावत् जानना, मुक्ति का होना यथावत् व्यवहार और परमार्थ का धर्म से अनुष्ठान करना यही विद्या होने का फल है सोई फल मिथ्या बुद्धि से पाषाणादिक मूर्त्ति में और तिलकादिकोंही में मान लेते हैं और सम्प्रदायी लोग मिथ्या उपदेश करके धूर्त्तता और अधर्म का निश्चय करा देते हैं पीछे वे सम्प्रदायी लोग ऐसे कहते और उनके चेले सुनते हैं कि मूर्त्ति पूजादिक प्रकारही से आप लोगों को मुक्ति होगी यही परम धर्म है ऐसा सुनके उन विद्याहीन मनुष्यों को निश्चय होजाता है कि यही बात सत्य है सब कहने और सुनने वाले वैसे हैं जैसे कि पशु हैं वे ऐसा भी कहते हैं कि सम्प्रदायी और नाममात्र से जो पण्डित लोग आजीविका के लोभ से यही बात वेद में लिखी है ऐसी बात कहने वाले और सुनने वाले ने वेद का दर्शन भी कभी नहीं किया वेद में इन बातों का सम्बन्ध लेशमात्र भी नहीं है परन्तु अन्धपरंपरा की नांई कहते और सुनते चले जाते हैं उनको सुख वा सत्य फल कुछ भी नहीं होता क्योंकि बाल्यावस्था से लेके यही मिथ्याचार करते रहते हैं कि इसका दर्शन अवश्य करैं और तिलक माला धारण करैं काश्यादिक तीर्थों में जाके बास करैं और नाम स्मरण करैं एकादश्यादिक व्रत करैं और पुष्प ले आवैं चन्दन घसैं धूप दीप करैं नैवेद्य धरैं परिक्रमा करैं पाषाणादिक मूर्त्ति का प्रक्षालन करके जल ग्रहण करैं और कूदैं नाचैं

कूदैं और बाजे बजावैं रथ याचादिकों का मेला करैं और परस्पर व्यभिचार करैं मेले में उन्मत्तवत् होके घूमते घुमाते इत्यादिक मिथ्या व्यवहारोंही में फसे रहते हैं फिर उनको विद्या लेशमात्र भी न आवैगी क्योंकि मरणतक उनको अवकाशही न मिलेगा फिर कैसे वे पढ़ें और पढ़ावेंगे यह विद्या का नाशक दूसरा विघ्न है तीसरा विघ्न यह है कि माता, पिता और आचार्य्यादिक पुत्र और कन्याओं को लाड़न मेंही रखते हैं कुछ शिक्षा वा ताड़न नहीं करते इस्से भी विद्या का नाशही होता है चौथा विघ्न यह है कि गुरु, पण्डित और पुरोहित ये तीनों विद्या तो पढ़ते नहीं फिर वे हृदय से यही चाहते हैं कि मेरे चेले और मेरे यजमान मूर्खही बने रहैं क्योंकि वे जो पण्डित हो जांयगे तो हम लोगों का पाखण्ड उनके सामने न चलेगा इस्से हम लोगों की आजीविका नष्ट हो जायगी इस लिये वे सदा पढ़ने पढ़ाने में विघ्नही करते हैं धनाढ्य और राजा लोगों के ऊपर अत्यन्त विघ्न करते हैं कि ये लोग विद्याहीन बने रहैं इनसे हम लोगों की आजीविका बड़ी है धनाढ्य और राजा लोग भी आलस्य और विषय सेवा में फस जाते हैं इस्से वे भी पढ़ना नहीं चाहते धनाढ्य वा राजपुत्र पढ़ना भी चाहैं तो बैरागी आदि सम्प्रदायी और पण्डित लोग छल और कपट रखते हैं यथावत् पढ़ाते भी नहीं यहांतक वे छल और विघ्न करते हैं कि चेला और पुत्र वा बन्धुपुत्र भी विद्यावान् न हो जाय क्योंकि उनकी प्रतिष्ठा होने से मेरी प्रतिष्ठा नष्ट होजायगी इस्से जो कुछ गुण जानते भी हैं उस को छिपा रखते हैं इस लिये विद्या लोप आर्य्यावर्त्त देश में होगया है सब लोगों को विद्या का प्रकाश करना उचित है किसी को भी विद्या गुप्त रखना योग्य नहीं और पांचवां विघ्न यह है कि भङ्गपान, अफीम और मद्यपान करने से बहुत सा प्रमाद

होता है और बुद्धि भी नष्ट होजाती है उस्से भी विद्या का नाश होता है छठवां विघ्न यह है कि राजा और धनाढ्य लोगों का घाट, मन्दिर, क्षेत्रों में सदावर्त, विवाह, त्रयोदशाह, व्यर्थस्थान, और बागों के रचने में बहुत धन नष्ट होजाता है किन्तु गृहस्थ लोगों को जितना आवश्यक हो उतनाही स्थान रचैं निर्वाह मात्र विद्या प्रचार में किसी का धन नहीं जाता और विचार के न होने से गुणवान पुरुषों की प्रतिष्ठा भी नहीं होती किन्तु पाखण्डींही की होती है इस्से मनुष्यों का उत्साह भङ्ग होजाता है सप्तम विघ्न यह है कि पांचवें वर्ष पुत्रों वा कन्याओं को पाठशाला में पढ़ने के लिये नहीं भेजते उनके ऊपर राजा का दण्ड न होने से भी विद्या का नाश होता है और विषय सेवा में अत्यन्त फसजाते हैं इस्से भी विद्या नहीं होती यह आठवां विघ्न विद्या का नाशक है इत्यादिक और भी विद्या नाश करने के विघ्न बहुत हैं उनको सज्जन लोग विचार करलेवैं जब सोलह वर्ष का पुरुष होय तब से लेके जबतक वृद्धावस्था न आवै तबतक व्यायाम करै बहुत न करै किन्तु ४० बैठक करै और ३० वा ४० दण्ड करै कुछ भीत खम्भे वा पुरुष से बल करै फिर लोट करै उस को भोजन से एक घण्टा पहिले करै सब अभ्यास जब कर चुकै उससे एक घण्टा पीछे भोजन करै परंतु दूध जो पीना होय तो अभ्यास के पीछे शीघ्रही पीवै उस्से शरीर में रोग न होगा जो कुछ खाया वा पीया सो सब परिपक्व हो जायगा सब धातुओं की वृद्धि होती है तथा वीर्य्य की भी अत्यन्त वृद्धि होती है शरीर दृढ़ होजाता है और हड्डियां बड़ी पुष्ट होजाती हैं जाठराग्नि शुद्ध प्रदीप्त रहता है और सन्धि से सन्धि हाड़ों की मिली रहती है अर्थात सब अङ्ग सुन्दर रहते हैं परन्तु अधिक न करना अधिक के करने से उतने गुण न होंगे क्योंकि सब धातु शुष्क

और कृश होजाते हैं उस्से बुद्धि भी वैसी कृश होजाती है और क्रोधादिक भी बढ़ते हैं इस्से अधिक न करना चाहिये यह बात सुश्रुत में लिखी है जो देखना चाहै सो देख लेवै उन बालकों के हृदय में वीर्य के रक्षण से जितने गुण लिखे हैं इस पुस्तक में और जितने दोष लिखे हैं वे सब माता पिता और आचार्य्यादिक निश्चय दृष्टान्त देदे के करा देवैं जैसे कि वीर्य की रक्षा में सुख लाभ होता है उसका हजारवां अंश भी विषय भोग में वीर्य के नाश करने से नहीं होता परन्तु जैसा नियम सत्यशास्त्रों में कहा है उसका कुछ अंश इसमें भी लिखा है उसप्रकार से जो वीर्य की रक्षा करेगा उसको बहुतसा सुख होगा जो प्रमाद और भांग आदिक नशा करेगा वह पागल भी होजाय तो आश्चर्य नहीं इस्से युक्ति पूर्वक विद्या और बल सेही वीर्य की रक्षा करनी चाहिये अन्यथा वीर्य की रक्षा कभी न होगी जब वीर्य की रक्षा न होगी तब विद्या भी न होगी जब विद्या न होगी तब कुछ भी सुख न होगा उसका मनुष्य शरीर धारण करनाही पशुवत होजायगा ॥ सैषानन्दस्यमीमांसाभवति युवास्यात्साधुयुवाध्यापकः आशिष्ठोदृढिष्ठोबलिष्ठः तस्येयंपृथिवीसर्वा-वित्तस्यपूर्णास्यात्सएकोमानुष आनन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंमानुषा आनन्दाः सएको मनुष्य गन्धर्वाणामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंमनुष्यगन्धर्वाणामानन्दाः सएको देवगन्धर्वाणामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंदेवगन्धर्वाणामानन्दाः सएकः पितॄणांचिरलोक लोकानामानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतं पितॄणां चिरलोकलोकानामानन्दाः सएकः आजानजानान्देवानामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतमाजानजानान्देवानामानन्दाः सएकः कर्मदेवानामानन्दः येकर्मणादेवानपियन्ति श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंकर्मदेवानामानन्दाः सएकोदेवानामानन्दः श्रोत्रियस्य चाका

महतस्य तेयेशतंदेवानामानन्दाः सएकइन्द्रस्यानन्दः श्रोत्रि-यस्य चाकामहतस्य तेयेशतमिन्द्रस्यानन्दाः सएकोबृहस्पतेरानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतंबृहस्पतेरानन्दाः सएकः प्रजापतेरानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतंप्रजापतेरानन्दाः सएकोब्रह्मणआनन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य सयश्चायंपुरुषेयश्चासावादित्येसएकः॥ यह तैत्तिरीयोपनिषद् की श्रुति है सो देखना चाहिये कि जैसा विद्या से आनन्द होता है वैसा कोई प्रकार से आनन्द नहीं होता इसमें इस श्रुति का प्रमाण है युवावस्था हो साधु युवा नाम उसमें कोई दुष्ट व्यसन न हो अध्यापक नाम सब शास्त्रों को पढ़के पढ़ाने का सामर्थ्य जिसको हो अर्थात सब विद्याओं में पूर्ण होय आशिष्ठ नाम सत्य जिसकी इच्छा पूर्ण हो दृढ़िष्ठ अतिशय नाम अत्यन्त जो शरीर और बुद्धि से दृढ़ हो अर्थात् कोई प्रकार का रोग जिसके शरीर में न होय बलिष्ठ नाम अत्यन्त बलवान् होवै और जिसकी वित्त नाम धनसे सब पृथ्वी पूर्ण होय अर्थात सार्वभौम चक्रवर्त्ती होवै इसको मनुष्य लोग के आनन्द की सीमा कहते हैं और जो कोई केवल विद्यावान्ही है और किसी प्रकार की कामना जिसको नहीं है अर्थात विद्या, धर्म और परमेश्वर की प्राप्ति के बिना किसी पदार्थ के ऊपर जिसको प्रीति न होवै ऐसा जो श्रोत्रिय॥ श्रोत्रियंछन्दोऽधीते। यह अष्टाध्यायी का सूत्र है व्याकरण पठन से लेके वेद पठन तक जिसका पूर्ण पठन होगया है उसको श्रोत्रिय कहते हैं उस श्रोत्रिय नाम विद्यावान् को वैसाही आनन्द होता है जैसा कि पूर्वोक्त चक्र-वर्त्ती को उस्से भी अधिक होने का सम्भव है क्योंकि चक्रवर्ती राजा को तो राज्य के अनेक कार्य रहते हैं इस्से चित्त की एकाग्रता नहीं होती और जो वह पूर्ण विद्वान् है सो तो सदा परमेश्वर के आनन्द में मग्न रहता है लेशमात्र भी दुःख का

उसको सम्भव नहीं है उस चक्रवर्त्ती के मनुष्यानन्द से शतगुण आनन्द मनुष्य गन्धर्वों को है मनुष्य गन्धर्वों के आनन्द से शतगुण अधिक आनन्द देवगन्धर्वों को है देवगन्धर्वों से पितृलोग वासियों को शतगुण आनन्द है और पितृलोगों से अधिक शतगुण आनन्द आजान नामक देवों को है आजान देवों से शतगुण आनन्द कर्म देवों को है जो कि कर्मों से देव होते हैं उनसे शतगुण आनन्द देवलोग वासी नाम देवों को है उन देवों से शतगुण आनन्द इन्द्र को है इन्द्र से शतगुण आनन्द बृहस्पति को है और बृहस्पति से प्रजापति को अधिक शतगुण आनन्द है और प्रजापति से ब्रह्मा को अधिक शतगुण आनन्द है जो २ आनन्द चक्रवर्त्ती और मनुष्य गन्धर्वों से शतगुण अधिक २ गणाते आये सो सब आनन्द विद्या वाले पुरुष को होता है क्योंकि जो आनन्द मनुष्य में है सोई सूर्य लोग में आनन्द है किन्तु एकही अद्वितीय परमेश्वर आनन्द स्वरूप सर्वत्र पूर्ण है उस परमेश्वर को विद्यावान् यथावत् जानता है उस परमेश्वर के जानने और उनका यथावत् योग होने से उस विद्वान् को पूर्ण अखण्ड आनन्द होता है उस आनन्द के लेशमात्र आनन्द में ब्रह्मादिक आनन्दित हो रहे हैं और उस आनन्द को जिस ने पाया है उस सुख को कोई गणना अथवा तौलना कभी नहीं कर सक्ता यह आनन्द विद्या के विना किसी को कभी नहीं होसक्ता इससे सब मनुष्यों को विद्या ग्रहण करने में अत्यन्त यत्न करना योग्य है यह ब्रह्मचर्य्याश्रम की शिक्षा तो संक्षेप से लिखी गई इससे आगे चौथे प्रकरण में विवाह और गृहाश्रम की शिक्षा लिखी जायगी॥

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते तृतीयः समुल्लासः सम्पूर्णः॥ ३॥

अथ विवाहगृहाश्रम विधिम्वक्ष्यामः ॥

—o—

पुरुषों का और कन्याओं का ब्रह्मचर्य्याश्रम और विद्या जब पूर्ण होजाय तब जो देश का राजा होय और अन्य जितने विद्वान् लोग वे सब उनकी परीक्षा यथावत् करें जिस पुरुष वा कन्या में श्रेष्ठ गुण, जितेन्द्रियता, सत्यवचन, निरभिमान, उत्तमबुद्धि, पूर्णविद्या, मधुरवाणी, कृतज्ञता, विद्या और गुण के प्रकाश में अत्यन्त प्रीति जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक, कृतघ्नता, छल, कपट, ईर्ष्या, इत्यादिक दोष न होवें कृपा से सब लोगों का कल्याण चाहें उसको ब्राह्मण का अधिकार देवें और यथोक्त पूर्वोक्त गुण जिसमें होंय परन्तु विद्या न्यून होय शूर, वीरता, बल और पराक्रम ये तीन गुण वाला जो ब्राह्मण भया उससे अधिक हो उसको क्षत्रिय करें और जिसको थोड़ी भी विद्या होवै परन्तु व्यापारादिक व्यवहारों में नाना प्रकारों के शिल्पों में देश देशान्तर से पदार्थों का लेआने और लेजाने में चतुर होवै और पूर्वोक्त जितेन्द्रियादिक गुण भी होवै परन्तु अत्यन्त भीरु होवै उसको वैश्य करना चाहिये और जो पढ़ने लगा जिसको शिक्षा भी भई परन्तु कुछ भी विद्या नहीं आई उसको शूद्र बनाना चाहिये इसी प्रकार से कन्याओं की भी व्यवस्था करनी चाहिये इसमें यह प्रमाण है ॥ शूद्रोब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैतिशूद्रताम् । क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैवच ॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि विद्यादिक पूर्वोक्त गुणों से जो शूद्र युक्त होवै सो ब्राह्मण होजाय और पूर्वोक्त विद्यादिक गुणों से जो ब्राह्मण रहित होजाय अर्थात् मूर्ख होय सो शूद्र होजाय और जिसमें क्षत्रिय का गुण होवै वह क्षत्रिय जिसमें

वैश्य का गुण होय वह वैश्य अर्थात् जो शूद्र के कुल में उत्पन्न भया सो मूर्ख होय तब तो वह शूद्रही बना रहै और वैश्य के जैसे गुण हैं वैसे गुण उसमें होने से वह शूद्र वैश्य होजाय क्षत्रिय के गुण होने से वह क्षत्रिय और ब्राह्मण के गुण होने से वह शूद्र ब्राह्मण होजाय तथा वैश्य कुल में उत्पन्न भया उसको वैश्य के गुण होने से वह वैश्यही बना रहै और मूर्ख होने से शूद्र होजाय तथा क्षत्रिय और ब्राह्मण के गुण होने से वह क्षत्रिय और ब्राह्मण भी वैसेही क्षत्रिय कुल में जो उत्पन्न भया उसको क्षत्रियवर्ण के गुण होने से वह क्षत्रिही बना रहै [illegible] वैश्य और शूद्र के गुण होने से ब्राह्मण वैश्य और शूद्र भी होजाय तथा ब्राह्मण के कुल में उत्पन्न भया ब्राह्मण के गुण होने से वह ब्राह्मणही रहै क्षत्रिय वैश्य और शूद्र के गुण होने से क्षत्रिय वैश्य और शूद्र भी वह ब्राह्मण हो जाय ऐसाही मनुष्य जाति के बीच में सर्वत्र जान लेना तैसे चारों वर्णों की कन्याओं में भी उन २ उक्त गुणों के होने से ब्राह्मणी, क्षत्रिया, वैश्या और शूद्रा होजांय उनको वर्ण क्रम से अधिकार भी दिये जांय॥ अध्यापनमध्ययनं यजनंयाजनंतथा। दानम्प्रतिग्रहंचैव ब्राह्मणानामकल्पयत्॥ अध्यापन नाम विद्याओं का प्रकाश करना नाम पढ़ाना अध्ययन नाम पढ़ना यजन नाम अपने घरमें यज्ञों का कराना याजन नाम यजमानों के घरमें यज्ञों का कराना दान नाम सुपात्रों को दान का देना प्रतिग्रह नाम धर्मात्माओं से दान का लेना इन षट्कर्मों को करने और कराने मे[illegible] को अधिकार देना उचित है प्रजानांरक्षणंदान मिज्याध्ययनमेवच। विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्यसमासतः॥ प्रजा को यथावत् रक्षा करना अर्थात् श्रेष्ठों का पालन और दुष्टों का ताड़न करना पक्षपात को छोड़ के सुपात्रों को दान देना अपने घरमें यज्ञों का करना और अध्य-

यन नाम सब सत्यशास्त्रों का पढ़ना विषयेषु अप्रसक्ति नाम विषयों में फस न जाना यह संक्षेप से क्षत्रियों का अधिकार कहा पूर्वोक्त क्षत्रियों को इस अधिकार को देवें ॥ पशूनांरक्षणं दान मिज्याध्ययनमेवच । वणिक्पथंकुसीदञ्च वैश्यस्यकृषिमेवच ॥ गाय आदिक पशुओं की रक्षा करना सुपात्रों को दान देना अपने घरमें यज्ञों का करना सत्यशास्त्रों का पढ़ना धर्म से व्यापार का करना धर्म से सूद नाम व्याज का लेना और कृषि नाम खेती का करना इन सात कर्मों का अधिकार वैश्यों को देना ॥ एकमेवहिशूद्रस्य प्रभुःकर्मसमादिशत् । एतेषामेववर्णानां शुश्रूषामनसूयया ॥ ये चार श्लोक मनुस्मृति के हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों की निन्दा को छोड़ के सेवा करना इस एक कर्म का शूद्रों को अधिकार देना कि तीनों वर्णों को यथावत् सेवा करे ॥ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्यःकृतः । ऊरूतदस्ययद्वैश्यः पद्भ्यांशूद्रोऽअजायत ॥ यह यजुर्वेद की संहिता का मन्त्र है ॥ वेदाहमेतंपुरुषंमहान्तमादित्यवर्णन्तमसःपरस्तात् । यह भी उसी अध्याय का वचन है पुरुष नाम है पूर्ण का पूर्ण नाम परमेश्वर का परमेश्वर के बिना पूर्ण कोई नहीं होसक्ता क्योंकि सावयव और मूर्त्तिमान् जो होता है सो एकही देश में रहता है सर्व देशों में व्यापक नहीं होसक्ता उस अध्याय में परमेश्वरही का ग्रहण होता है क्योंकि पुरुष से सब जगत् की उत्पत्ति लिखी है सो परमेश्वरही से सब जगत् की उत्पत्ति होती है अन्य से नहीं उस परमेश्वर को अवयव का लेशमात्र भी सम्बन्ध नहीं मुख, बाहू, ऊरू और पाद स्थूल २ इतने अवयवों की तो कभी संगति नहीं है क्योंकि सूक्ष्म भी अवयव का भेद परमेश्वर में नहीं होसक्ता फिर स्थूल अवयव का भेद परमेश्वर में कैसे होगा कभी न होगा और इस मन्त्र में तो मुखादिक शब्दों का ग्रहण किया है सो इस अभिप्राय से किया

है कि शरीर में मुख सब अङ्गों से उत्तम अङ्ग है वैसे उत्तम से भी उत्तम गुण जिस मनुष्य में होय वह ब्राह्मण होवै मुख के समीप अङ्ग जैसा कि बाहु वैसाही ब्राह्मण के समीप क्षत्रिय है और हाथ के बल आदिक गुण हैं जिस्से कि दुष्टों का दमन होता है और श्रेष्ठों का पालन अपने शरीर का भी रक्षण शत्रुओं और शस्त्रों के बल हाथ से होसक्ता है वैसाही प्रजा का पालन होगा और हाथ के विना कभी रक्षण जगत् का वा अपना युद्ध में वा दुष्टों से नहीं होसक्ता सो बलादिक गुण जिस मनुष्य में होंय वह क्षत्रिय होवै तथा जब नाम जङ्घा में जब बल होता है तब जहां तहां देशान्तरों में पदार्थों को उठा के लेजाना और देशान्तरों से लेआना हानि और लाभ में स्थिर बुद्धि होना जैसे कि जङ्घा के ऊपर स्थिर होके बैठना होता है इस प्रकार के वेगादिक गुण जिस मनुष्य में होवें वह वैश्य होय तथा पाद जैसे कि सब अङ्गों से नीचे का अङ्ग है जब मनुष्य चलता है तब कङ्कड़, पाषाण, कीच और कांटों पर पैर पड़ते हैं सब शरीर ऊपर रहता है पैरही विष्ठादिकों में पड़ते हैं वैसे मूर्खत्वादिक नीच गुण जिस मनुष्य में होवैं सो मनुष्य शूद्र होय इस मन्त्र से ऐसी परमेश्वर की आज्ञा है सो सज्जनों को मानना और करना भी चाहिये सो इस प्रकार से परीक्षा करके वर्ण व्यवस्था अवश्य करनी चाहिये वर्ण व्यवस्था बिना जन्म मात्रही से वर्णों के होने से बहुत दोष होते हैं इस्से गुणोंही से वर्णों का होना उचित है और जो वर्णों को न मानें तो विद्यादिक गुण ग्रहण में मनुष्य का उत्साह भङ्ग होजायगा क्योंकि उत्तम गुण वाले को उत्तम अधिकार की प्राप्ति न होगी और गुणहीन को नीच अधिकार की प्राप्ति न होगी तो कैसे मनुष्यों को उत्साह गुण ग्रहण में होगा अर्थात् कभी न होगा इस्से वर्ण व्यवस्था अ

मानना उचित है और जो गुणों के बिना वर्णों को जन्ममात्रही से मानें तो सब वर्ण और सब गुण नष्ट होजायगे क्योंकि जन्ममात्रही से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र होंगे तो कोई भी गुण ग्रहण की इच्छा न करेगा इससे सब विद्यादिक गुण नष्ट हो जायगे जैसे कि ब्राह्मण कुल सब कुलों से उत्तम है उस कुल में उत्तम पुरुषोंही का निवास होना उचित है क्योंकि वे उत्तम कर्मही करेंगे नीच कर्म कभी न करेंगे इससे उत्तम कुल की उत्तमता नष्ट कभी न होगी और जो ब्राह्मण कुल में मूर्ख और नीच पुरुषों के निवास होने से उत्तम कुल की उत्तमता नष्ट होजायगी क्योंकि वे अभिमान तो ब्राह्मणही का करेंगे और ब्राह्मण के गुणों को ग्रहण कभी न करेंगे सदा नीचही कर्म करेंगे इससे ब्राह्मण कुल की बड़ी निन्दा उस निन्दा से अप्रतिष्ठा होगी उससे ब्राह्मण कुल दूषित हो जायगा इससे उत्तम गुण वाले को उत्तमही कुल में रखना उचित है तथा भीरु नाम भयादिक गुण वाले पुरुष को क्षत्रिय कुल में कभी न रखना चाहिये क्योंकि जिसको भय होगा सो दुष्टों को कैसे दण्ड और प्रजा का पालन कैसे करेगा युद्ध भूमि से सदा वह भाग जायगा उसका राज्य शत्रु लोग लेलेंगे चोर और डांकू लोग सदा उस राजा और प्रजा को पीडा देंगे इससे उस राजा का राज्य और ऐश्वर्य्य नष्ट होजायगा इससे विद्या, बल, बुद्धि, पराक्रम और पूर्वोक्त निर्भयादिक गुण युक्तही को क्षत्रिय कुल में रखना चाहिये अन्य को नहीं तथा व्यापारादिक पशुपालनादिक में जो चतुर और पूर्वोक्त विद्यादिक गुण से युक्त होवै उसी को वैश्य होना उचित है जो मूर्खत्वादि गुण युक्त है उसी को शूद्र रखना चाहिये ऐसी जब व्यवस्था होगी तब ब्राह्मणादिक वर्णों में ब्राह्मणादिकों को भय होगा कि हम लोग उत्तम गुण ग्रहण न करेंगे और

उत्तम कर्म न करेंगे तो नीच अधिकार नाम शूद्रत्व को प्राप्त हो जांयगे अर्थात् शूद्र होजांयगे और शूद्रादिकों को विद्यादिक गुण ग्रहण में उत्साह होगा क्योंकि हम लोग जो उत्तम गुण वाले होंगे तो उत्तम अधिकार को प्राप्त होंगे अर्थात् द्विज हो जांयगे इस से उत्तमों को तो भय होगा और नीचों का उत्साह ही होगा इस से ऐसीही व्यवस्था सज्जनों को करना उचित है वर्ण शब्द के अर्थ से भी ऐसी व्यवस्था आती है ॥ प्रियन्तेवर्णाः । कि वर्ण नाम गुणों से जिसका स्वीकार किया जाय उसका नाम वर्ण है ऐसा दृष्टान्त भी सुन्ने में आता है कि विश्वामित्र क्षत्रिय से ब्राह्मण भया वत्स क्षत्रिय से ब्राह्मण भया और श्रवण, श्रवण का पिता, श्रवण की माता, वैश्य और शूद्र वर्ण से महर्षि भये मातङ्गऋषि का चांडाल कुल में जन्म था फिर ब्राह्मण होगया यह महाभारत में लिखा है और जाबाल वेश्या के पुत्र से ब्राह्मण होगया यह छान्दोग्य उपनिषद में लिखा है इत्यादिक और भी जान लेना चाहिये जैसी वर्णों की व्यवस्था गुणों से है वैसी विवाह में व्यवस्था करनी चाहिये ब्राह्मण का ब्राह्मणी, क्षत्रिय का क्षत्रिया, वैश्य का वैश्या और शूद्रका शूद्रा से विवाह होना चाहिये क्योंकि विद्यादिक उत्तम गुणवाले पुरुष से विद्यादिक उत्तम गुणवाली स्त्री का विवाह होने से परस्पर दोनों को अत्यन्त सुख होगा और जो उत्तम पुरुष से मूर्ख स्त्री वा पण्डित स्त्री का मूर्ख पुरुष से विवाह होगा तो अत्यन्त क्लेश होगा कभी सुख न होगा तथा क्षत्रियों के गुणवाले से क्षत्रिय गुणवाली स्त्री का वैश्य गुणवाले पुरुष से वैश्य गुणवाली स्त्री का विवाह होना चाहिये और जो मूर्ख पुरुष कोई शूद्र है उस से मूर्ख स्त्री का विवाह होना उचित है क्योंकि तुल्य स्वभाव के होने से सुख होता है अन्यथा दुःखही होता है रूप की भी परीक्षा होनी चाहिये परस्पर दोनों की

अर्थात् वर और कन्या की प्रसन्नता से विवाह का होना उचित है कन्या वर की परीक्षा करै और वर कन्या की दोनों को परस्पर प्रसन्नता जब होय फिर माता, पिता वा बन्धु विवाह कर देवें अथवा आपही दोनों परस्पर विवाह करलेवें पशुवत् विवाह का व्यवहार करना उचित नहीं जैसे कि गाय वा छेरी को पकड़ के दूसरे के हाथ में दे देते हैं वे लेके चले जाते हैं जैसी इच्छा होय वैसा करते हैं इस प्रकार का व्यवहार मनुष्यों को कभी न करना चाहिये पूर्वोक्त काल के नियमही से विवाह करना चाहिये बाल्यावस्था में नहीं ॥ गुरुणानुमतःस्नात्वा समावृत्तोयथाविधि । उद्वहेतद्विजोभार्यां सवर्णांलक्षणान्विताम् ॥ यह मनु का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि ब्रह्मचर्य्याश्रम से पूर्ण विद्या पढ़के गुरु की आज्ञा लेके जैसी विधि वेद में लिखी है वैसे सुगन्ध्यादिक द्रव्य से मन्त्र पूर्वक स्नान करके शुभ श्रेष्ठ लक्षण युक्त अपने वर्ण की कन्या को वह द्विज ग्रहण करै। महान्त्यपिसमृद्धानिगोऽजाविधनधान्यतः । स्त्रीसम्बन्धे दशैतानि कुलानिपरिवर्जयेत् ॥ बड़े भी कुल होंय गाय, छेरी, अवि नाम भेड़ धन और धान्य से सम्पन्न होवें तो भी दश कुलों की कन्याओं को न ग्रहण करै वे कौन से दश कुल हैं ॥ हीनक्रियं निष्पुरुषंनिश्छन्दोरोमशार्शसम् । क्षय्यामयाव्यपस्मारि श्वित्रि कुष्ठिकुलानिच ॥ ये दश कुल हैं हीनक्रिय नाम जिस कुल में यज्ञादिक क्रिया नहीं है और आलस्य भी बहुत सा जिस कुल में होय १ निष्पुरुष नाम जिस कुल में पुरुष न होवें स्त्री २ होवें २ निश्छन्द नाम जिस कुल में वेदादिक विद्या न होय ३ रोम नाम जिस कुल में भालू की नांई देह के ऊपर लोम होवें ४ शार्श नाम जिस कुल में ववांसिर रोग होय ५ क्षयि नाम जिस कुल में धातु क्षीणता दमा रोग होय ६ आमयाविनाम जिस कुल में आंव का विकार होय ७ अपस्मारि नाम जिस कुल

में मिर्गी रोग होय ८ श्वित्रि नाम जिस कुल में श्वेत कुष्ठ होय ९ और कुष्ठि नाम जिस कुल में गलित कुष्ठ रहै और आमय १० इन दश कुलों की कन्याओं को विवाह स्थान में ग्रहण न करैं क्योंकि जो रोग पिता माता के शरीर में होता है सोई संतानों में भी कुछ २ रोग आवैगा इस्से उनका ग्रहण करना उचित नहीं ॥ नोद्वहेत्कपिलांकन्यां नाधिकाङ्गीन्नरोगिणीम्। नालोमिकान्नातिलोमान्नवाचाटान्नपिङ्गलाम् ॥ नर्क्षवृक्षनदीनाम्नीन्नान्त्यपर्वतनामिकाम्। नपक्ष्यहिप्रेष्यनाम्नीन्नचभीषणनामिकाम् ॥ कपिला नाम बिलाई की नांई जिस कन्या के नेत्र होवैं उसके साथ विवाह न करै क्योंकि सन्तानों के भी वैसे नेत्र होंगे नाधिकाङ्गी नाम जिस कन्या के अङ्ग वर से अधिक होवैं अर्थात् कन्या का शरीर लम्बा चौड़ा वर का शरीर छोटा और दुबला होय उनका परस्पर विवाह न होना चाहिये अर्थात् दोनों के शरीर स्थूल अथवा दोनों के शरीर कृषित होवैं तब विवाह होना चाहिये परन्तु स्त्री के शरीर से पुरुष का शरीर लम्बा होना चाहिये हाथ के कन्धे तक स्त्री का सिर आवै उस्से अधिक स्त्री का शरीर न होना चाहिये न्यून होय तो होय अन्यथा गर्भ स्थिर न होगा और वंशच्छेद भी होजाय तो आश्चर्य नहीं इस्से स्त्री का शरीर पुरुष के शरीर से छोटाही होना चाहिये रोगिणी नाम स्त्री के शरीर में कोई रोग न होना चाहिये और स्त्री भी पुरुष की परीक्षा करै कि उसके शरीर में स्थिर रोग कोई न होवै कोई महारोग न होय इस प्रकार की कन्या से विवाह न करै कि जिसके शरीर में सूक्ष्म भी लोम न होय और जिसके शरीर के ऊपर बड़े २ लोम होवैं उस्से भी विवाह न करै वा चाटां नाम बहुत बोलने वाली जो स्त्री है उसके साथ विवाह न करै अर्थात् परिमित भाषण करै अधिक बकवाद न करै जिसका पीतवर्ण हर्दी की नांई

होय करै और जिसका नक्षत्र के ऊपर अश्विनी, भरणी, इत्यादिक तथा वृक्ष के कि आम्रा, अश्वत्था, इत्यादिक और नदी के ऊपर जैसा कि नर्मदा, गङ्गा, इत्यादिक अन्त्य नाम चांडाली, चर्मकारिणी, इत्यादिक पर्वत के ऊपर जिसका नाम होवै जैसे कि हिमालया, विन्ध्याचला, इत्यादिक जिसका पक्षी के ऊपर होय जैसा कि हंसी, काकी, इत्यादिक जिसका सर्प के ऊपर होय जैसे कि सर्पिणी इत्यादिक जिसका दासी इत्यादिक नाम होय जिसका भयङ्करी, चण्डी और भैरवी, काली, इत्यादिक नाम होवै इस प्रकार के नाम वाली स्त्री से विवाह न करना चाहिये नक्षत्रादिक जितने नाम हैं वे सब अयुक्त हैं मनुष्यों के न रखना चाहिये कैसी स्त्री का विवाह होना चाहिये कि ॥ अव्यङ्गाङ्गींसौम्यनाम्नीं हंसवारणगामिनीम् । तनुलोमकेशदशनां मृद्वङ्गीमुद्वहेत्स्त्रियम् ॥ अव्यङ्गाङ्गी नाम जिसके टेढ़े अङ्ग न होवैं अर्थात् सब अङ्ग सूधे होवैं सौम्य जिसका नाम सुन्दर होवै जैसा कि यशोदा, कामदा, धर्मदा, कलावती, सुखवती, सौभाग्यवती, इत्यादिक हंसवारणगामिनीम् जैसे कि हंस और हाथी चलता है वैसी चाल जिसकी होवै ऐसी चलने वाली स्त्री न होय कि ऊंट और काक की नांई चलै तनु नाम सूक्ष्म लोम केश और सूक्ष्म दांतवाली होय जिसके अङ्ग कोमल होवैं ऐसी स्त्री के साथ पुरुष विवाह करै ब्राह्मादिक ८ आठ विवाह मनुस्मृति में लिखे हैं वे कौन हैं कि ॥ ब्राह्मोदैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः । गान्धर्वोराक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोधमः ॥ ये सब श्लोक मनुस्मृति के हैं ब्राह्म विवाह उसको कहते हैं कि कन्या और वर का सत्कार करना यथावत् होमादि करके और विद्या शीलादिकों की परीक्षा

करके कन्यादान देना उसका नाम ब्राह्म विवाह है मास वा दोमास पर्यन्त होम होता रहै और जामाताही ऋत्विक् होवै यज्ञ के अन्त दक्षिणा स्थान में कन्या देना उसका नाम दैव विवाह है एक गाय और एक बैल वा दो गाय और दो बैल बर से लेके कन्या को देना उसका नाम आर्ष विवाह है प्राजापत्य नाम बर और कन्या से प्रतिज्ञा का होना अर्थात् कन्या बर से प्रतिज्ञा करै कि मैं आप से व्यभिचार, अधर्म और अप्रियाचरण कभी न करूंगी तथा बर कन्या से प्रतिज्ञा करै कि मैं तुमसे व्यभिचार अधर्म और अप्रियाचरण कभी न करूंगा पीछे विधि पूर्वक बिवाह होना उसका नाम प्राजापत्य बिवाह है आसुर नाम अपने कुटुंबियों को थोड़ा सा धन देना और बर के कुटुंबियों को भी थोड़ा सा धन देना सत्कार के लिये कन्या और बर कों भी थोड़ा २ धन देना होमादिक बिधि से बिवाह करना उसका नाम आसुर बिवाह अर्थात् दैत्यों का बिवाह है कन्या और बर के परस्पर प्रसन्न होने से बिवाह का होना उसको गान्धर्व बिवाह कहते हैं इसमें माता, पिता और बंध्वादिकों का कुछ प्रयोजन नहीं कन्या और बर ये दोनों आपही से स्वतन्त्र होके सब बिधि कर लेवें इसी का नाम गान्धर्व बिवाह है कोई कन्या अत्यन्त रूपवती और सब गुणों से जिसकी प्रशंसा अर्थात् हजारहों कन्याओं के बीच में श्रेष्ठ होवै और कहने सुनने से उसका पिता न देता होय कन्या को भी बन्ध करके रक्खै तब वहां जाके बल से कन्या का ले लेना है उसको राक्षस बिवाह कहते हैं फि र होमादिक बिधि कर के बिवाह करलेवें अर्थात् जैसे कि राक्षस लोग बल से परपदार्थों को छीन लेते हैं वैसा यह बिवाह है अष्टम बिवाह यह है कि कहीं एकान्त में कन्या सूती अथवा मत्त अथवा

भांग वा मद्यादिक पीके प्रमत्त हो अथवा कोई रोग से पागल भई होय उस्से समागम करै विवाह के पहिलेही समागम का होना है वह पैशाच विवाह कहाता है वह सब विवाहों से नीच विवाह है इन आठ विवाहों में ब्राह्म, दैव और प्राजापत्य ये तीन विवाह सर्वोत्तम हैं इन तीनों में भी ब्राह्म अति उत्तम है और गान्धर्व भी श्रेष्ठ है उस्से नीच आसुर, उस्से नीच राक्षस, और सब से नीच पैशाच विवाह है उसको कभी न करना चाहिये ॥ अनिन्दितैःस्त्रीविवाहैरनिन्द्या भवतिप्रजा । निन्दितैर्निन्दितानॄणां तस्मान्निन्द्यान्विवर्जयेत् ॥ मनुष्यों को निन्दित विवाह कभी न करना चाहिये जैसी परीक्षा और जो काल लिखा है उस्से विरुद्ध विवाहों का करना वे निन्दित नाम भ्रष्ट विवाह हैं और भ्रष्ट विवाहों के करने से उनके सन्तान भी भ्रष्ट होते हैं जैसे कि बाल्यावस्था में विवाह का करना उस्से जो सन्तान होता है वह सन्तान रोगादिक पूर्वोक्त दूषितही होगा श्रेष्ठ कभी न होगा जो परीक्षा के विना विवाह का करना उस्से बहुत क्लेश होंगे और सन्तान भी बहुत क्लेशित होजायंगे उनके धनादिकों का नाश भी हो जायगा इस्से निन्दित विवाह मनुष्यों को कभी न करना चाहिये और जो ब्राह्मादिक उत्तम विवाह हैं उनका काल तथा परीक्षा लिखी है उस रीति से जो विवाह होते हैं वे अनिन्दित अर्थात् श्रेष्ठ विवाह हैं उन विवाहों के करने से स्त्री पुरुष और कुटुंबियों को सदा सुखही होगा और उनकी प्रजा भी अनिन्दित अर्थात् श्रेष्ठही होगी सदा माता, पिता और कुटुंबियों को वे पुत्रादिक सन्तान सुखही देवेंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं महाभारत में जितने विवाह लिखे हैं वे युवावस्थाही में लिखे हैं परस्पर परीक्षा और परस्पर प्रसन्नताही से विवाह होते थे जैसे कि द्रौपदी,

कुन्ती, गान्धारी, दमयन्ती, लोपामुद्रा, अरुन्धती, मैत्रेयी, कात्यायनी और शकुन्तलादिकों के विवाह इसी प्रकार से हुये थे तथा मनुस्मृति में भी लिखा है ॥ बाल्येपितुर्वशेतिष्ठेत्पाणिग्राहस्ययौवने। पुत्राणांभर्त्तरिप्रेते नभजेत्स्त्रीस्वतन्त्रताम् ॥ बाल्यावस्था न्यून से न्यून षोडश वर्ष पर्यन्त होती है तब तक पिता के वश में कन्या रहै और षोडश वर्ष से लेके २४ वर्ष पर्यन्त जिस वर्ष में विवाह होय तब अपने पति के वश में रहै जब पति न रहै तब पुत्रों के वश में स्त्री रहै स्त्री स्वतन्त्र न होवै क्योंकि स्त्री का स्वभाव चञ्चल होता है इससे आप कुमार्ग में चलेगी और धनादिकों का नाश भी करेगी इससे स्त्री को स्वतन्त्र न रखना चाहिये और जो लोग यह बात कहते हैं कि पिता के घरमें कन्या रजस्वला जो होय तो पितादिकों का धर्म नष्ट हो जायगा और पितादिक सब नरक में जांयगे यह बात सत्य है वा नहीं यह बात मिथ्याही है क्योंकि कन्या के रजस्वला होने से पितादिक अधर्मी हो जांयगे और नरक में जावेंगे यह बड़ा आश्चर्य है पितादिकों का क्या अपराध है कि रजस्वला का होना तो स्त्री लोगों का स्वाभाविक है तो सदा होहीगा इसमें पितादिकों का क्या सामर्थ्य है कि बन्द करदेवैं सो यह बात प्रमाणशून्य है बुद्धिमान् इस बात को कभी न मानैं इसमें मनु भगवान का प्रमाण भी है ॥ त्रीणिवर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतुमतीसती। ऊर्ध्वन्तुकालादेतस्माद्विन्देत सदृशंपतिम् ॥ पिता के घरमें कन्या जब रजस्वला होय तब से लेके तीन वर्ष तक विवाह करने के लिये पति की परीक्षा करै तीन वर्ष के पीछे जैसी वह कन्या है वैसेही अपने तुल्य सवर्ण पति को ग्रहण करै कन्या के शरीर में धातु क्षीणादिक रोग न होवैं तो सोलहवें वर्ष रजस्वला होगी इससे पहिले नहीं और जो उक्त रोग होगा तो १५ पन्दरहवें वा १४

चौदहवें अथवा १३ तेरहवें वर्ष कोई कन्या रोगी रजस्वला होजाय तो भी तीनवर्ष पीछे विवाह करेंगे तो १६ सोलहवें १७ सतरहवें वा १८ अठारवें वर्ष विवाह करना उचित है और जब सोलहवें वर्ष रजस्वला होय तो १६ वा २० बीसवें वर्ष विवाह होना चाहिये क्योंकि शरीर से जो रज निकलता है सो स्त्री के शरीर की शुद्धि होती है इस कारण रजस्वला स्त्री के साथ ४ दिन तक सङ्ग करने का निषेध है कि स्त्रीके शरीर से एक प्रकार की उष्णता निकलती है उसके निकलने से नाड़ी और उसका शरीर शुद्ध होजाता है इससे रजस्वला होने के पीछेही विवाह का करना उचित है जो जन्मपत्र देखके विवाह करते हैं सो बात सत्य है वा मिथ्या। यह बात मिथ्याही है क्योंकि जन्मपत्र को तो मिलाते हैं परंतु उनके स्वभाव, गुण, आयु और बल को न मिलाने से सदा उनको क्लेशही होता है इसलिये वह बात मिथ्याही है जन्मपत्र मिलाने का बुद्धिमान लोग सत्य कभी न जानें इसमें प्रमाण भी है॥ उत्कृष्टायाभिरूपाय वरायसदृशायच। अप्राप्तामपितांतस्मै कन्यान्दद्याद्यथाविधि॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि उत्कृष्ट नाम उत्तम विद्यादिक गुणवान् अभिरूप अर्थात् जैसी कन्या रूपवती होय वैसा वर भी होवै और श्रेष्ठ स्वभाव दोनों का तुल्य होय अप्राप्त नाम निकट सम्बन्ध में भी होय तो भी उसी को कन्या देवै अर्थात् दोनों तुल्य गुण और रूपवाले होंय तब विवाह का करना उचित है अन्यथा नहीं इसमें यह मनुस्मृति का प्रमाण है॥ काममामरणात्तिष्ठे द्गृहेकन्यर्त्तुमत्यपि। नचैवैनांप्रयच्छेत्तु गुणहीनाय-कर्हिचित्॥ इसका यह अभिप्राय है कि ऋतुमती कन्या अपने पिता के घरमें मरण तक भी बैठी रहै यह बात तो श्रेष्ठ है परन्तु गुणहीन अर्थात् विद्याहीन पुरुष को कन्या कभी

न देवै अथवा कन्या आप भी दुष्ट पुरुष से विवाह न करै तथा पुरुष भी मूर्ख वा दुष्ट कन्या से विवाह न करै यही गृहस्थों को यथोक्त प्रकार से जैसा कि कहा वैसा विवाह करना सब सुखों का मूल है अन्यथा दुःखही है कभी सुख न होगा जो शीघ्रबोध में ये दो श्लोक लिखे हैं कि ॥ अष्टवर्षाभवेद्गौरी नववर्षाचरोहिणी। दशवर्षाभवेत्कन्या तत‌ऊर्द्ध्वं रजस्वला १। माताचैवपिताचैव ज्येष्ठभ्रातातथैवच। त्रयस्तेनरकंयान्ति दृष्ट्वा कन्यांरजस्वलाम्॥ २॥ ये दोनों श्लोक मिथ्याही हैं क्योंकि आठवें वर्ष विवाह करने से जो कृष्णवर्ण वाली स्त्री गौरवर्ण वाली कैसे होगी वा महादेव की स्त्री उसका गौरी नाम है उस्से विवाह कैसे हो सकेगा वैसे रोहिणी नक्षत्र लोक है सो आकाश में रहती है वह जड पदार्थ है उस्से विवाह कैसे होगा कभी नहीं होसक्ता जो रोहिणी बलदेव की स्त्री थी वह तो मर गई मरी हुई का विवाह कभी नहीं होसक्ता और दशवर्ष में कन्या होती है यह भी मिथ्याही है क्योंकि जब तक विवाह नहीं होता तब तक कन्याही कहाती है और पिता के सामने तो सदा कन्याही और बन्धु के सामने भगिनी रहती है फिर उसका जो नियम है कि दश वर्ष में कन्या होती है सो बात काशिनाथ की मिथ्याही है जो कहता है कि दशवर्ष के आगे रजस्वला होती है यह भी मिथ्याही है सुश्रुत में १६ वर्ष के आगे धातुओं की वृद्धि लिखी है सो ठीक है उस समय में सोलह वर्ष से लेके आगेही रजस्वला होने का संभव है सो सज्जनों को यही बात मानना चाहिये और काशिनाथ की बात कभी न मानना चाहिये जो उसने यह बात लिखी है कि कन्या रजस्वला होने से पितादिक नरक में जायंगे सो मनुस्मृति वा वेदादिक सत्यशास्त्रों और प्रमाणों से विरुद्ध है इस बात में तो

उसकी बड़ी भारी मूर्खता है क्योंकि माता पितादिकों का क्या दोष है कन्या रजस्वला होने से वे नरक में जांय यह कहना उसका बड़ा पामरपन है पूर्वपक्ष पिता ने काल में विवाह न किया इस्से उनको दोष होता होगा और दश वर्ष के आगे उसको विवाह का फल न होता होगा इस्से उस काशिनाथ ने लिखा होगा उत्तर यह बात भी उसकी मिथ्या है क्योंकि सोलहवर्ष के पहिले कन्या और २५ वर्ष के पहिले पुरुष का विवाह करने से अवश्य पितादिकों को पाप का संभव होता है अथवा उन स्त्री पुरुषों को तो पाप होने का सम्भव होता है किन्तु पाप का फल दुःख है सो बाल्यावस्था में विवाह करने से वीर्य्यादिक धातुओं के नाश और विद्यादिक गुण न होने से अवश्य वे दुःखी होते हैं और होंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं है इस्से इस काशिनाथ का नाम काशिनाश रखना चाहिये क्योंकि काशि नाम प्रकाश का है इसने विद्यादिक गुणों का नाश कर दिया इस्से इसका नाम काशिनाशही ठीक है जो इसने ग्रन्थ का नाम शीघ्रबोध रक्खा है उसका नाम शीघ्रनाश रखना चाहिये क्योंकि बाल्यावस्था में विवाह करने से शीघ्रही रोग होंगे और बहुत रोग होने से शीघ्रही मर जांयगे इस्से इसका नाम शीघ्रनाशही ठीक है इस प्रकार से श्लोक हम लोग भी रच ले सक्ते हैं ॥ ब्रह्मोवाच । एकवर्षाभवेद्गौरी द्विवर्षाचैवरोहिणी । त्रिवर्षातुभवेत्कन्या तत‌ऊर्द्ध्वंरजस्वला ॥ १ ॥ मातातस्याःपिताचैव ज्येष्ठोभ्रातातथानुजः । एतेवैनरकंयान्ति दृष्ट्वाकन्यांरजस्वलाम् ॥ २ ॥ पूर्वपक्ष ये दो श्लोक कौन शास्त्र के हैं तो मैं पूछता हूं कि काशिनाथ के श्लोक कौन शास्त्र के हैं वे काशिनाथ के ग्रन्थ के हैं तो यह श्लोक मेरे ग्रन्थ के हैं आप के ग्रन्थ का क्या प्रमाण है तो काशिनाथ के ग्रन्थ का क्या प्रमाण है काशिनाथ के ग्रन्थ को तो

बहुत लोग मानते हैं जिसको बहुत मनुष्य मानें वही श्रेष्ठ होय तो जैन यसूमसी और महम्मद के मत को मानने वाले बहुत हैं उनी को मानना चाहिये वे हम लोगों के मत से विरुद्ध हैं इससे हम लोग नहीं मानते तो आपलोगों का कौन मत है जो वेदोक्त और धर्मशास्त्रोक्त है सोई तो हम लोगों का मत से काशिनाथ का मत विरुद्ध हुआ क्योंकि आप लोगों का मत वेद और मनुस्मृत्युक्तही हुआ उस धर्मशास्त्र में मनुस्मृति भी है इससे विरुद्ध होने से आप लोगों को काशिनाथ का मत मानना उचित नहीं और आप ने जो श्लोक बनाये उसके आगे ब्रह्मोवाच क्यों लिखा यह दृष्टान्त के लिये लिखा इससे क्या दृष्टान्त हुआ कि इसी प्रकार से ब्रह्मोवाच, विष्णुरुवाच, नारदउवाच, नारायणउवाच, पाराशरउवाच, वसिष्ठउवाच, याज्ञवल्क्यउवाच, अत्रिरुवाच, अङ्गिराउवाच, युधिष्ठिरउवाच, व्यासउवाच, शुकउवाच, परीक्षितउवाच, कृष्णउवाच, अर्जुनउवाच, इत्यादिक नाम लिखके अष्टादश पुराण अष्टादश उपपुराण, १७ सतरह पाराशरादिक स्मृतियां, निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु, नारदपंचरात्र, काशिखण्ड, काशिरहस्य, और सत्यनारायणकथा, इत्यादिक ग्रन्थ सम्प्रदायी लोग और पण्डित लोगों ने रच लिये हैं तथा महादेवउवाच, पार्वत्युवाच, भैरवउवाच, भैरव्युवाच, दत्तात्रेयउवाच, इत्यादिक लिख के बहुत तन्त्रग्रन्थ लोगों ने रच लिये हैं यह तो दृष्टान्त भया जैसे कि मैंने अपने श्लोकों के पहिले अपनी इच्छा से ब्रह्मोवाच लिखा वैसेही इनों ने ब्रह्मोवाच इत्यादिक रख के ग्रन्थ रच लिये हैं इस लिये कि श्रेष्ठों के नाम लिखने से ग्रन्थों का प्रमाण होजाय प्रमाण के होने से सम्प्रदायों और आजीविका की वृद्धि होवै उससे विना परिश्रम से धन आवै और बहुत सुख होवैं इस लिये धूर्त्तता रची है जैसा कि ब्रह्मोवाच मेरा लिखना वृथा है वैसा

उनका भी ब्रह्मोवाच इत्यादिक लिखना वृथाही है और जैसे मेरे श्लोक दोनों मिथ्या हैं वैसे उनके पुराणादिक ग्रन्थ और काशिनाथ का ग्रन्थ आर्य्यावर्त्त देशवासी लोगों के सत्यानाश करने वाले हैं इनको सज्जन लोग मिथ्याही जानैं इस्से क्या आया कि मरण तक भी कन्या विवाह के विना घरमें बैठी रहै तो भी पितादिकों को कुछ दोष नहीं होता परन्तु दुष्ट पुरुष के साथ श्रेष्ठ कन्या अथवा दुष्ट कन्या के साथ श्रेष्ठ पुरुष का विवाह कभी न करना चाहिये किन्तु तुल्य श्रेष्ठ गुण वालों का परस्पर विवाह होना चाहिये जो दुष्ट पुरुष के साथ श्रेष्ठ कन्या वा श्रेष्ठ के साथ दुष्ट कन्या का विवाह होगा तो परस्पर दोनों को दुखही होगा इस्से दोनों का परस्पर विचार करके वर और कन्या का विवाह करैं क्योंकि श्रेष्ठ विवाह से उन्हीं को सुख और दुष्ट विवाह से उन्हीं को दुःख होगा इसमें माता पितादिकों का कुछ भी अधिकार नहीं उन दोनों के विचार और प्रसन्नताही से विवाह होना चाहिये विवाह में बहुत धन का नाश करना अनुचितही है क्योंकि वह धन व्यर्थही जाता है इस्से बहुत राज्य नष्ट होगये और वैश्य लोगों का भी विवाह में धन के व्यय से दिवाला निकल जाता है सब लोगों का मिथ्या धन का व्यय करना अनुचित है इस्से धन का नाश विवाह में कभी न करना चाहिये एकही स्त्री से विवाह करना उचित है बहुत स्त्री के साथ विवाह करना पुरुषों को उचित नहीं स्त्री को भी बहुत विवाह करना उचित नहीं क्योंकि विवाह सन्तान के लिये है सो एक स्त्री एक पुरुष को बहुत है देखना चाहिये कि एक व्यभिचारिणी स्त्री अथवा वेश्या वे बहुत पुरुषों को वीर्य्य के नाश से निर्बल कर देती हैं इस्से एक पुरुष के लिये एक स्त्री क्या थोड़ी है अर्थात बहुत है एक स्त्री के साथ भी सर्वथा वीर्य्य का नाश करना

उचित नहीं क्योंकि वीर्य के नाश से पूर्वोक्त सब दोष हो जांयगे इस से विवाहिता उस के साथ भी वीर्य का नाश बहुत न करना चाहिये केवल सन्तान के लिये वीर्य्य का दान करना चाहिये अन्यथा नहीं और स्त्री भी केवल सन्तान ही की इच्छा करै अधिक नहीं दोनों परस्पर सदा प्रसन्न रहैं पुरुष स्त्री को सदा प्रसन्न रक्खै और स्त्री पुरुष को विरोध वा क्लेश परस्पर कभी न करैं ॥ संतुष्टोभार्य्ययाभर्त्ता भर्त्रा भार्य्यातथैवच। यस्मिन्नेवकुलेनित्यं कल्याणंतत्रवैध्रुवम् ॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि स्त्री प्रियाचरण से पुरुष को सदा प्रसन्न रक्खै और पुरुष भी स्त्री को जिस कुल में इस प्रकार की व्यवस्था है उस कुल में दुःख कभी नहीं होता किंतु सदा सुखही रहता है और जो परस्पर अप्रसन्न रहेंगे तो यह दोष आवेगा ॥ यदिहिस्त्रीनरोचेत पुमांसन्नप्रमोदयेत्। अप्रमोदात्पुनःपुंसः प्रजननंनप्रवर्त्तते॥१॥ स्त्रियान्तुरोचमानायां सर्वन्तद्रोचतेकुलम्। तस्यान्त्वरोचमानायां सर्वमेवनरोचते ॥ २ ॥ ये दोनों मनुस्मृति के श्लोक हैं इनका यह अभिप्राय है कि जो स्त्री प्रीति और सेवा से पुरुष को प्रसन्न न करेगी तो पुरुष की अप्रसन्नता से हर्ष न होगा जब हर्ष न होगा तब प्रजनं नाम वीर्य की अत्यन्त उत्पत्ति और गर्भस्थिति भी न होगी तो स्त्री को पुरुष के अप्रीति से कुछ भी सुख न होगा और जो पुरुष स्त्री को प्रसन्न न रक्खेगा तो उस पुरुष को कुछ भी गृहाश्रम करने का सुख न होगा स्त्री को जो प्रसन्न रक्खेगा उसको सब आनन्द होगा तथाच ॥ पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा पूज्याभूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः॥ १ ॥ यत्रनार्य्यस्तुपूज्यन्ते रमंतेतत्रदेवताः। यत्रैतास्तुनपूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाःक्रियाः ॥ २ ॥ शोचन्तिजामयोयत्र बिनश्यत्याशुतत्कुलम्। नशोचन्तितुयत्र

चैता वर्द्धन्तेतद्धिसर्वदा ॥ ३ ॥ जामयोयानिगेहानि शपन्त्यप्रतिपूजिताः । तानिकृत्याहतानीव विनश्यन्तिसमन्ततः ॥ ४ ॥ तस्मादेताःसदापूज्या भूषणाच्छादनाशनैः । भूतिकामैर्नरैर्नित्यं सत्कारेषूत्सवेषुच ॥ ५ ॥ ये सब मनुस्मृति के श्लोक हैं इनका यह अभिप्राय है कि पिता, भ्राता, पति और देवर ये सब लोग स्त्रियों की पूजा करें देखना चाहिये कि पूजा का अर्थ घण्टा, झांझ, झालरी, मृदङ्ग, धूप, दीप और नैवद्यादिक षोड़शोपचारों को पूजा शब्द से जो लेते हैं सो मिथ्याही लेते हैं क्योंकि स्त्रियों की ऐसी पूजा करनी उचित नहीं और न कोई ऐसी पूजा करता है इस्से पूजा शब्द का अर्थ सत्कारही है सत्कार जो होता है सो चेतनही का होता है जो सत्कार को जाने इस्से स्त्री लोगों का सदा सत्कार करना चाहिये जिस्से कि वे सदा प्रसन्न रहैं और उनको यथाशक्ति आभूषणों से प्रसन्न रक्खैं जिन गृहस्थों का बड़ा भाग्य होता है और बहुत कल्याण की जिनको इच्छा होवै वे इस प्रकार से स्त्रियों को प्रसन्नही रक्खैं ॥ १ ॥ जिस कुल में नारी लोग रमण नाम आनन्द से क्रीड़ा करती और प्रसन्न रहती हैं तिस कुल में देवता नाम विद्यादिक गुण जिनों से कि वह कुल प्रकाशित होजाता है वे गुण सदा उस कुल में बढ़ते रहते हैं जिस कुल में स्त्रियों का सत्कार और उनको प्रसन्नता नहीं होती उस गृहस्थ की सब क्रिया निष्फल होती है और दुर्दशा भी होती है इस्से स्त्रियों को प्रसन्नही रखना चाहिये ॥ २ ॥ और जिस कुल में जामय नाम स्त्री लोग शोक से दुःखित रहती हैं उस कुल का नाश शीघ्रही होजाता है जिस कुल में स्त्री लोग शोक नहीं करतीं अर्थात् प्रसन्न रहती हैं उस कुल की वृद्धि और आनन्द सदा होता है और आज काल आर्य्यावर्त्त में कोई एक राजा वा धनाढ्य विवाहिता स्त्री को तो कैद की नाई

बन्द करके रखते हैं और आप वेश्या और पर स्त्री के पास गमन करते हैं उसमें अपने धन और शरीर का नाश करते हैं और उनकी विवाहित स्त्रियां रोती और बड़ी दुखित रहती हैं परन्तु उन मूर्ख पुरुषों को कुछ भी लज्जा नहीं आती कि यह स्त्री तो मेरे साथ विवाहित है इसको छोड़ के मैं अन्य स्त्री गमन करता हूं यह मैं न करूं ऐसा विचार उन पुरुषों के मन में कभी नहीं आता अन्य स्त्री और वेश्या गमन जो करते हैं सो तो बुराही काम करते हैं परन्तु बालकों से भी बुरा काम करते हैं यह बड़ा आश्चर्य है कि स्त्री का काम पुरुषों से करते हैं इनको तो अत्यन्त भ्रष्ट बुद्धि सज्जनों को जाननी चाहिये ३ जिन पुरुषों को स्त्री दुःखित होके श्राप देती हैं उन कुलों का नाशही होजाता है जैसे कि कोई बिषदान करके कुल का नाश कर देवै वैसेही उन कुलों का नाश हो जाता है इससे सज्जनों को स्त्रियों का सत्कार सदा करना चाहिये जिस्से कि स्त्री लोग प्रसन्न होके गृह का कार्य धर्माचरण और मङ्गलाचरण सदा करैं ४ तिस्से स्त्रियों का सत्कार सदा करना चाहिये आभूषण, वस्त्र, भोजन और मधुर वाणी से स्त्रियों को प्रसन्न रक्खैं जिनको कि ऐश्वर्य की इच्छा होय वे यज्ञादिक उत्सवों में स्त्रियों का बहुत सत्कार करैं अर्थात् स्त्रियों को प्रसन्नही रक्खैं तथा स्त्री लोग भी सब प्रकार से पुरुषों को प्रसन्न रक्खैं ॥ ५ पाणिग्राहस्य साध्वीस्त्री जीवतोवामृतस्यवा। पतिलोकमभीप्सन्ती नाचरेत्किञ्चिदप्रियम् ॥ १ ॥ जिसके साथ विवाह होय उसको स्त्री सदा प्रसन्न रक्खै जिस्से वह अप्रसन्न होय ऐसी बात कभी न करै सोई स्त्री श्रेष्ठ कहाती है यहां तक कि पति मर भी गया होय तो भी अप्रियाचरण न करै उस स्त्री को सदा श्रेष्ठ पति इस जन्म वा जन्मान्तर में भी प्राप्त होता है ॥ १ ॥ अनृतावृतुकालेच मन्त्रसंस्कारकृत्पतिः। सुखस्यनित्यंदातेह परलो

कयोषितः ॥ २ ॥ वेद मन्त्रों से जिस पुरुष से विवाह का संस्कार भया वही ऋतु काल वा अऋतु काल और इस लोक वा परलोक में नित्य सुख देने वाला है और कोई नहीं इसे विवाहित पुरुष की स्त्री सदा सेवा करै जिस्से कि वह प्रसन्न रहै और घर का जितना कार्य है वह स्त्री के अधिकार में रहै। सदाप्रहृष्टयाभाव्यं गृहकार्येषुदक्षया । सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्तहस्तया ॥ ३ ॥ सदा स्त्री प्रसन्न होके गृह कार्य चतुरता से करै पाक को अच्छी प्रकार से संस्कार करै जिस्से कि औषधवत् अन्न होय और गृह में जो पात्र लवणादिक पदार्थ और अन्न सदा शुद्ध रक्खै जितने घर हैं उन्हको सब दिन शुद्ध रक्खै जाला धूली वा मलिनता घरमें कुछ भी न रहै घर में लेपन प्रक्षालन और मार्जन करै जिस्से कि घर सब दिन शुद्ध बना रहै और घर के दास दासी नोकर इत्यादिकों पर सब दिन शिक्षा की दृष्टि रक्खै जो पाक करने वाला पुरुष वा स्त्री होवै उसके पास पाक करने समय बैठ के शिक्षा करै जैसी पाक की रीति वैद्यकशास्त्र में लिखी है उस रीति से पाक करै और करावै नये घर को बनाना वा सुधारना हो [illegible] उस को स्त्रीही करावै शिल्पशास्त्र की रीति से यथो[illegible] जितना घर का जो कार्य है सो स्त्रीही के आधीन रहै [illegible] में जो नित्य नित्य वा मास २ में खर्च होय वह पति को समझा देवें और जितना बाहर का कार्य होय सो सब पुरुष के आधीन रहैं परस्पर सदा प्रसन्न से घर के कार्यों को करैं घर इस प्रकार का बनावै कि जिसमें सब ऋतु में सुख होय और जिस स्थान में वायु शुद्ध होय चारो ओर पुष्पों की सुगन्ध वाटिका लगावै जिस्से कि सदा चित्त प्रसन्न रहै और व्यर्थ धन का नाश कभी न करैं धर्मही से धन का संग्रह करैं अधर्म से कभी नहीं अच्छे से अच्छा भोजन करैं जो विद्या पढ़ी होवै उसको सदा पढ़ावैं और

विचारते रहैं आज काल के लोग कहते हैं कि स्त्री लोगों को पढ़ना न चाहिये ऐसा विद्याहीन पुरुष कहते हैं वे पाखण्डी और धूर्त्त हैं क्योंकि स्त्री लोग जो पढ़ेंगी तो उनके सामने हमारी धूर्त्तता न चलेगी फिर उनसे धन भी न मिलेगा और वे जब विद्या से धर्मात्मा होंगी तब हम लोगों से व्यभिचार भी न करेंगी बिना व्यभिचार से वे स्त्री धन भी न देंगी फिर हम लोगों का व्यवहार न चलेगा ऐसे आर्य्यावर्त्त देश में गोकुलस्थ गुसांई आदिक सम्प्रदाय हैं कि जिन की व्यभिचार और स्त्रीही लोगों से बढ़ती होती है वे इस प्रकार का उपदेश करते हैं कि स्त्री लोगों को कभी न पढ़ना चाहिये परन्तु देखना चाहिये कि मनु भगवान ने यथावत् आज्ञा दी है ॥ वैवाहिकोविधिःस्त्रीणां संस्कारोवैदिकस्मृतः । पतिसेवागुरौवासो गृहार्थोग्निपरिक्रिया ॥ ३ ॥ विवाह की जितनी विधि है सो वेदोक्तही है स्त्रियों का विवाह वेद की रीति से होना चाहिये और पति की सेवा अत्यन्त करनी चाहिये यही स्त्री का मुख्य कर्म है और विवाह के पहिले गुरौ वास नाम स्त्री लोग पढ़ने के लिये ब्रह्मचर्य्याश्रम करैं और गृह कार्य जानने के लिये अवश्य विद्या पढ़ें अग्नि परिक्रिया नाम अग्निहोत्रादिक यज्ञ करने के लिये अवश्य वेदों को पढ़ें अन्यथा कुछ भी न जानेंगी नित्य स्त्री और पुरुष मिलके अग्निहोत्र प्रातः और सायंकाल करैं अन्य यज्ञों की भी सामर्थ्य के अनुकूल करैं और जो विद्या न पढ़ी वा आप न जानती होगी तो अग्निहोत्रादिक यज्ञ और घर के सब कार्य को कैसे करेगी विद्या अन्य के पास होय तो उस विद्या को जिस प्रकार से मिलै उस प्रकार से लेवै क्योंकि मरण तक भी गुण ग्रहण करने की इच्छा मनुष्यों को करनी चाहिये उसी से मनुष्यों को सुख होता है ॥ ४ ॥ स्त्रियोरत्नान्यथोविद्या सत्यंशौचंसुभाषितम् । वि

विद्यानिचशिल्पानि समादेयानिसर्वतः॥ ५॥ ये पांच मनुस्मृति के श्लोक हैं स्त्री हीरादिक रत्न सत्यविद्या, सत्यभाषण, पवित्रता, मधुरवाणी, नाम भाषण करने की रीति और विविध अर्थात् अनेक प्रकार के शिल्प ये सब जिस में होवैं उससेही लेना चाहिये भाषण की रीति यह है कि॥ सत्यंब्रूयात्प्रियंब्रूया नब्रूयात्सत्यमप्रियम्। प्रियंचनानृतंब्रूयादेषधर्मःसनातनः॥ १॥ भद्रभद्रमितिब्रूया द्भद्रमित्येववावदेत्। शुष्कवैरंविवादञ्च नकुर्य्यात्केनचित्सह॥ २॥ ये दो श्लोक मनुस्मृति के हैं इसका यह अर्थ है कि सत्यही कहै मिथ्या कभी न कहै सदा सब जनों को जो प्रिय लगे वैसाही कहै पूर्वपक्ष प्रिय तो वेश्यागामी पर स्त्रीगामी और चोरी करने वाले आदि पुरुषों से उनी बातों को कहै तब उनको अनुकूल प्रिय होता है अन्यथा प्रिय नहीं होता इस्से ऐसाही कहना चाहिये वा नहीं उत्तरपक्ष इसको प्रियवचन न कहना चाहिये क्योंकि वेश्यादिक गमन की इच्छा जब वे करते हैं तभी उनके हृदय में शङ्का भय और लज्जा हो जाती है वह काम तो उनके हृदय को प्रियही नहीं है और उनका आचरण करना भी अधर्म है किन्तु उनका जो निषेध करना है वही ठीक २ प्रिय है जैसे कोई बालक अग्नि पकड़ने को चलै उसको उसकी माता कहै कि तू अग्नि पकड़ वह वचन बालक को प्रिय न होगा किन्तु आगी में हाथ नावेगा तब हाथ जल जायगा उस्से बालक को अप्रिय होगा अर्थात दुःखही होगा किन्तु बालक को निषेध जो करना है कि तूं आग को मत पकड़ वही वचन उसको प्रिय है प्रिय उसका नाम है कि कभी जिस वचन से किसी का अहित न होय उसको प्रियवचन कहते हैं और सत्य होय वह अप्रिय होय तो उसको न कहै जैसे किसी ने किसी से पूछा कि विवाह किस लिये करना होता है और तेरा जन्म किस प्रकार भया तब उसको इतनाही

कहना उचित है कि विवाह का करना सन्तान के लिये है और मेरा जन्म मेरी माता और पिता से हुआ है जो गुप्त क्रिया है सो मे और माता पिता को उसको कहना उचित नहीं यद्यपि यह बात सत्यही है तो भी सब लोगों को अप्रिय के होने से उस बात का कहना उचित नहीं तथा दश पांच पुरुष कहीं बैठे होवैं और उस समय में काना, अन्धा, मूर्ख वा दरिद्र पुरुष आवैं उनसे वे पुरुष कहैं कि काना आओ अन्धा आओ मूर्ख आ वा दरिद्र आओ ऐसा कहना उचित नहीं यद्यपि यह बात सत्य है तो भी अप्रिय के होने से न कहना चाहिये किन्तु देवदत्त आ यज्ञदत्त आओ ऐसा उनसे कहना उचित है फिर आप के आंख में कुछ रोग भया था वा जन्म से ऐसी ही है तब वह प्रसन्नता से सब बात कह देगा जैसी की भई थी इससे इस प्रकार का सत्य होय और वह अप्रिय भी होय तो कभी न कहै । प्रियचनानृतंब्रूयात् । और जो बात अन्य को प्रिय होय परन्तु वह अनृत अर्थात मिथ्या होय तो उसको कभी न कहै जैसे कि आज काल इन राजा और धनाढ्य लोगों के पास खुशामदी लोग बहुत से धूर्त रहते हैं वे सदा उनको प्रसन्न करने के लिये मिथ्याही कहते रहते हैं आप के तुल्य कोई राजा वा अमीर न हुआ न है और न होगा और जो राजा मध्य दिवस के समय में कहै कि इस समय में आधी रात है तब वे शुश्रूषु लोग कहते हैं कि हां महाराजाधिराज हां देखिये चांद और चांदनी भी अच्छी खिल रही है फिर वे कहते हैं कि महाराज के तुल्य कोई बुद्धिमान् न भया न है न होगा तब तो वह मूर्ख राजा और धनाढ्य प्रसन्नता से फूल के ढोल हो जाते हैं फिर वे ऐसी बात कहते हैं कि महाराज आप के प्रताप के सामने किसी का प्रताप नहीं चलता है आप का प्रताप कैसा है जैसा कि सूर्य और

आदि ऐसा कह २ के बहुत धन हरण कर लेते हैं वे राजा और धनाढ्य लोग उन्हीं से प्रसन्न रहते हैं क्योंकि आप जैसा मूर्ख वा पण्डित होता है उसको वैसेही पुरुष से प्रसन्नता होती है कभी उनको सत्पुरुषों का सङ्ग नहीं होता और कभी सत्पुरुषों का सङ्ग होजाय तो भी वे खुशामदी धूर्त्त राजा और धनाढ्य लोगों को मूर्खता के होने से उनको प्रसन्नता सत्य बात के सुनने से कभी नहीं होती क्योंकि जैसा जो पुरुष होता है उसको वैसाही संग मिलता है ऐसे व्यवहार के होने से आर्य्यावर्त्त देश के राज्य और धन बहुत नष्ट होगये और जो कुछ है उसकी भी रक्षा इस प्रकार से होनी दुर्लभ है जब तक कि सत्य व्यवहार सत्यशास्त्र और सत्सङ्गों को न करेंगे तब तक उनका नाशही होता जायगा कभी बढ़ती न होगी खुशामदी लोगों के विषय में यह दृष्टान्त है कि कोई राजा था उसके पास पण्डित वैरागी और नौकर वे खुशामदी लोग बहुत से रहते थे किसी दिवस राजा के रसोई में बैंगन का शाक मसाले डालने से बहुत अच्छा बना फिर राजा भोजन करने को जब बैठा तब स्वाद के होने से उस शाक को अधिक खाया राजा भोजन करके सभा में आया जहां कि वे खुशामदी लोग बैठे थे उन से राजा ने कहा कि बैंगन का शाक बहुत अच्छा होता है तब वे खुशामदी लोग सुन के बोले कि वाहवा महाराज की नांई कोई बुद्धिमान् नहीं है महाराज आप देखिये कि जब बैंगन उत्तम है तब तो परमेश्वर ने उसके ऊपर मुकुट रख दिया तथा मुकट के चारों ओर कलंगीं रख दी है और बैंगन का वर्ण श्रीकृष्ण के शरीर का जैसा घनश्याम है वैसाही बनाया है और उसका गूदा मक्खन की नांई परमेश्वर ने बनाया है इससे बैंगन का शाक उत्तम क्यों न बनै फिर जब उस शाक ने बादी की तब रात भर नींद भी न आई और ८

दश बार शौच भी गया उस से राजा बड़ा क्रोधित भया फिर जब प्रातःकाल भया तब भीतर से राजा बाहर आया वे खुशामदी लोग भी आये जब राजा का मुख बिगड़ा देखा तब उन खुशामदी लोगों ने भी उनसे अधिक मुख बिगाड़ लिया फिर वे सब खुशामदी लोग राजा के पास जाके बैठे राजा बोले कि बैंगन का शाक तो अच्छा होता है परन्तु बादी करता है तब वे बोले कि वाहवा महाराज के तुल्य कोई बुद्धिमान् नहीं है एकही दिन में बैंगन की परीक्षा कर ली देखिये महाराज कि जब बैंगन भ्रष्ट है तब तो उसके ऊपर परमेश्वर ने खूंटी गाड़ दी है उस खूंटी के चारो ओर कांटे लगा दिये हैं उस दुष्ट का वर्ण भी कोइले के तुल्य रक्खा है तथा परमेश्वर ने उस का गूदा भी श्वेतकुष्ठ के नांई बना दिया है तब उन खुशामदीयों से राजा ने पूछा कि शाम को तुम लोगों ने मुकुट, कलंगी, घनश्याम और मक्खन के तुल्य बैंगन के अवयव वर्णन किये उसी बैंगन के अवयवों को खूंटी. कांटे, कोइला और कुष्ठ के नांई बनाये हम कौन बात को सत्य मानें कि जो कल शाम को कही थी उसको मानें वा आज के कहे को मानें वाहवा महाराज किस प्रकार के विवेकी हैं कि विरोध को शीघ्रही जान लिया सुनिये महाराज जिस बात से आप प्रसन्न होंगे उसी बात को हम लोग कहेंगे क्योंकि हम लोग तो आप के नौकर हैं सो आप झूंठी वा सच्ची बात कहेंगे उसी बात को हम लोग पुष्ट करेंगे और हम लोग वह साले बैंगन के नौकर नहीं हैं कि बैंगन की स्तुति करैं हम को बैंगन से क्या लेना है हम को तो आप की प्रसन्नता से प्रसन्नता है आप असत्य कहो तो भी हम को सत्य है वे इस प्रकार की सम्मति रखते हैं कि राजा सब दिन नशा करै और मूर्खही बना रहै फिर जब वे और कोई राजा वा धनाढ्य के पास जाते हैं तब उसी की

खुशामद करते हैं जिसके पास पहिले रहते थे उसको निन्दा करते हैं इस प्रकार से खुशामदी मनुष्यों ने राजाओं की और धनाढ्यों की मति भ्रष्ट कर दी है जो बुद्धिमान् राजा और धनाढ्य लोग हैं इस प्रकार के मनुष्यों को पास भी नहीं बैठने देते न आप उनके पास बैठते तथा न उनकी बात सुनते हैं और जो कोई मिथ्या बात उनके पास कहता है उसी समय उसको उठा देते हैं और सदा बुद्धिमान्, सत्यवादी, विद्यावान् पुरुषों का सङ्ग करते हैं जो कि मुख के ऊपर सत्य २ कहैं मिथ्या कभी न कहैं उन राजाओं और धनाढ्यों को सदा बढ़ती ऐश्वर्य और सुख होता है इससे सज्जनों को श्रेष्ठही पुरुषों का संग करना चाहिये दुष्टों का कभी नहीं सत्य बात के आचरण में निन्दा वा दुःख होय तो भी न भय करना चाहिये भय तो एक परमेश्वर और अधर्मही से करना चाहिये और किसी से नहीं क्योंकि परमेश्वर सब काल में सब बातों को जानता है कोई बात परमेश्वर से गुप्त नहीं रहती इससे सज्जनों को परमेश्वरही से भय करना चाहिये कि परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध हम लोग कुछ भी कर्म न करैं तथा अधर्म के आचरण से भय करना चाहिये क्योंकि अधर्म से दुःखही होता है सुख कभी नहीं और एक पुरुष की सब लोग स्तुति करैं अथवा निन्दा करैं ऐसा कोई भी नहीं है निन्दा इसका नाम है कि॥ गुणेषुदोषारोपणमसूया तथादोषेषुगुणारोपणमप्यसूयार्थापत्त्या वेद्या ॥ जो कि गुणों में दोषों का स्थापन करना उसका नाम निन्दा है वैसेही अर्थापत्ति से यह आया कि दोषों में गुणों का आरोपण भी निन्दा होती है इससे क्या आया कि ॥ गुणेषुगुणारोपणंस्तुतिः दोषेषुदोषारोपणंचतद्विरोधत्वात् । गुणों में गुणों का जो स्थापन करना और दोषों में दोषों का उसका नाम स्तुति है जो जैसा पदार्थ है उसको वैसाही जानैं अर्थात्

यथावत् सत्यभाषण करना स्तुति है और अन्यथा अर्थात् मिथ्या भाषण करना निन्दा है इसलिये सज्जन लोगों को सदा स्तुतिही करनी चाहिये निन्दा कभी नहीं मूर्ख लोग सत्यबात कहने और सत्याचरण के करने में निन्दा करैं तो भी बुद्धिमान लोगों को दुःख वा भय न मानना चाहिये किन्तु प्रसन्नताही रखनी चाहिये क्योंकि उनकी बुद्धि भ्रष्ट है इसलिये भ्रष्ट बात भी सदा कहते हैं जैसे वे भ्रष्ट लोग भ्रष्टता को नहीं छोड़ते हैं तो श्रेष्ठ लोग श्रेष्ठता को क्यों छोड़ैं किन्तु भ्रष्टता भ्रष्ट लोगों को भी अवश्य छोड़नी चाहिये यदि सब भ्रष्ट लोग विरोध भी अत्यन्त करैं यहां-तक कि मरण की भी अवस्था आजाय तोभी सत्यवचन और सत्याचरण सज्जनों को कभी न छोड़ना चाहिये क्योंकि यही मनुष्यों के बीच में मनुष्यत्व है और इसको छोड़ने से मनुष्यत्व तो नष्टही हो जाता है किन्तु पशुत्व भी आजाता है आजीविका भी सत्य से करनी चाहिये असत्य से कभी नहीं इसमें यह मनु भगवान का प्रमाण है । नलोकवृत्तंवर्त्तेतवृत्तिहेतोःकथंचन । इसका यह अभिप्राय है कि संसार में बहुत धूर्त्तलोग असत्य और पाखण्ड से आजीविका करते हैं वैसे आचरण कभी न करै वृत्ति अर्थात् आजीविका के हेतु भी असत्य भाषणादिक न करै किन्तु सत्यही भाषण से आजीविका करै यही धर्म सनातन है कि अनृत अर्थात् मिथ्या बही दूसरे को प्रिय होय तो कभी न करै किंच सदा सत्य भाषणही करै दूसरा मनु भगवान का श्लोक है कि भद्रंभद्रमित्यादि । भद्र है कल्याण का नाम सोतीन बार श्लोक में पाठ किया है इसी हेतु कि कल्याण कारक वचनसदा कहै जिसको सुनके मनुष्य धर्मनिष्ठ होयऔर अधर्म त्याग करै शुष्कवैर अर्थात् मिथ्या वैर और विवाद किसी से न करना चाहिये जैसे कि आजकाल के पण्डित और विद्यार्थी लोग हठ दुराग्रह और क्रोध से बाद विबाद करतेर लड़ पड़ते हैं उनके हाथ सिवाय दुःख के कुछ

भी नहीं लगता है इससे जो कुछ अपने को अज्ञात होय उस विषय को प्रीति पूर्वक विवाद छोड़ कर पूछने आप जो सत्य २ जानता होय सो औरों से कह दे ॥ परित्यजेदर्थकामौयौस्यातां धर्मवर्जितौ। यह मनुस्मृति का वचन है इसका यह अभिप्राय है कि स्वाध्याय अर्थात् विद्या पठन पाठन और धन उपार्जन यदि धर्म से विरुद्ध होवें तो उनको छोड़ दे परन्तु विद्या प्रचार और धर्म को कभी न छोड़े। संतोषंपरमास्थायसुखार्थीसंयतोभवेत् संतोषमूलंहिसुखंदुःखमूलंविपर्ययः। इत्यादिक सब मनुस्मृति के श्लोक लिखेंगे सोजान लेना। संतोष इसका नाम है कि सब्यक प्रसन्न रहैं सदा अत्यन्त पुरुषार्थ रक्खें आलस्य और पुरुषार्थ का छोड़ना संतोष नहीं किन्तु सब दिनपुरुषार्थ में तत्पर रहै सब दिन सुखार्थी और जितेन्द्रिय होवे कभी हर्ष और शोक न करै किंच जितना सुख है सो संतोष से ही है और जितना दुःख होता है सो लोभ होने से होता है॥ इन्द्रियार्थेषुसर्वेषुनप्रसज्येत कामतः अतिप्रसक्तिंचैतेषां मनसासन्निवर्तयेत्॥ २ ॥ श्रोत्रादि इन्द्रियों के शब्दादिक जो विषय हैं उन में कामातुर हो के प्रवृत्त कभी न होवै किन्तु धर्म के हेतु प्रवृत्त होवै और मन से उन में अत्यन्त प्रीति छोड़ता जाय धर्म और परमेश्वर में प्रीति बढ़ाता जाय॥ २ ॥ बुद्धिवृद्धिकराण्याशुधन्यानिचहितानिच नित्यंशास्त्राण्यवेक्षेतनिगमांश्चैववैदिकान्॥ ३ ॥ जो शास्त्र शीघ्रही बुद्धि धन और हित को बढ़ाने वाले हैं उन शास्त्रों को नित्य विचारै जैसे कि छः दर्शन चारों उपवेद और वेदों को नित्य विचारै उनके विचार से अनेक पदार्थविद्या को प्रकाश करै। किञ्चयथायथाहिपुरुषःशास्त्रंसमभिगच्छति तथातथाविजानातिविज्ञानंचास्यरोचते ॥ ४ ॥ जैसे २ पुरुष शास्त्र का विचार कर्ता है तैसे२ उसका विज्ञानबढ़ता जाताहै फिर विज्ञान होने उसको प्रीति होती है और में नहीं॥ ४ ॥ ऋषियज्ञंदेव-

यज्ञंभूतयज्ञंचसर्वदा नृयज्ञंपितृयज्ञंचयथाशक्तिनहापयेत् ॥ ५ ॥ ऋषियज्ञ अर्थात् पठन पाठन और संध्योपासन १ देवयज्ञ अर्थात् अग्नि होत्रादिक २ भूतयज्ञ अर्थात् बलिवैश्वदेव ३ नृयज्ञ अर्थात् अतिथि सेवा ४ और पितृयज्ञ नाम श्राद्ध और तर्पण अपने सामर्थ्य के अनुकूल यथा शक्ति करै उन्हें कभी न छोड़ै इतने सब कर्म अविद्वान् पुरुषों के वास्ते हैं और जो ज्ञानी हैं वे तो यथावत् पदार्थविद्या और परमेश्वर को जानते हैं। योगाभ्यास करैं सब शास्त्रों को विचारैं ब्रह्म विद्या की प्राप्ति और उपदेश भी करैं इसमें मनु भगवान् का प्रमाण है। एतानेकेमहायज्ञान्यज्ञशास्त्रविदोजनाः अनीहमानाःसततमिन्द्रियेष्वेवजुह्वति ॥ ६ ॥ जितने ज्ञानी हैं वे पांच महायज्ञों को ज्ञान क्रिया होम करते हैं वाह्य चेष्टा से नहीं क्योंकि वे यज्ञशास्त्र के तत्वों को जानते हैं उनको अनीहमान अर्थात् बाहर की चेष्टा न देख पड़ै ज्ञान और योगाभ्यास से विषयों को इन्द्रियों में होम करदेते हैं तथा इन्द्रियों को मनमें मनको आत्मा में और आत्मा का परमेश्वर से योग करते हैं उनको बाहर की चेष्टा करना आवश्यक नहीं ॥ ६ ॥ वाच्येकेजुह्वतिप्राणं प्राणेवाचंचसर्वदा वाचिप्राणेच पश्यन्तो यज्ञनिर्वृत्तिमक्षयाम् ॥ ७ ॥ कितने योगी और ज्ञानी लोग वाणी में प्राण का होम करते हैं कितने प्राण में वाणी का होम करते हैं सदा वाणी और प्राण में यज्ञ की सिद्धि अक्षय अर्थात् जिसका नाश नहीं होता उसको देखते हैं अर्थात् वाणी तो प्राणही से उत्पन्न होती है और प्राण आत्मा से आत्मा अविनाशी है उसको परमात्मा से युक्त कर देते हैं इससे उनको मुक्तिही हो जाती है फिर कभी उनको दुःख का संग नहीं होता है इससे उन को वाह्य क्रिया का करना आवश्यक नहीं ॥ ७ ॥ ज्ञानेनैवापरेविप्रा यजन्त्येतैर्मखैः सदा ज्ञानमूलांक्रियामेषां पश्यन्तोज्ञानचक्षुषा ॥ ८ ॥ आ-

ज्ञान चक्षु से सब पदार्थों को यथावत् जानते हैं वे ज्ञान ही से ब्रह्म यज्ञादिक पांच महायज्ञों को करते हैं क्योंकि ज्ञानयज्ञों से उनका सब प्रयोजन सिद्ध है एव क्रिया उन को ज्ञानमूलक हो है क्योंकि उनके हृदय मन और आत्मा सब शुद्ध हो गये हैं उन का बाह्य अडंबर करना आवश्यक नहीं बाह्य क्रिया तो उन लोगों के लिये है कि जिनका हृदय और आत्मा शुद्ध नहीं वे अग्नि होमादिक यज्ञों को बाह्य क्रिया से अवश्य करें क्योंकि उनके करने विना हृदय शुद्ध नहीं होगा उन ज्ञानियों की सेवा और सङ्ग से ज्ञानोपदेश लेवें जिस्से कि कर्मियों की भी बुद्धि बढ़े ॥ ८ ॥ आसनाशनशय्याभिरद्भिर्मूलफलेनवा नास्यकश्चिद्वसेद्गेहे शक्तितोनर्चितोतिथिः ॥ ९ ॥ गृहस्थ के घर किसी समय कोई अतिथि आवै तो असत्कृत अर्थात् सत्कार बिना न रहै जैसा अपना सामर्थ्य हो वैसा सत्कार करना चाहिये आसन भोजन शय्या जल कंद और फल से अवश्य सत्कार करे ॥ ९ ॥ परन्तु ऐसे मनुष्य का सत्कार कभी न करे । पाखण्डिनोविकर्मस्थान् वैडालव्रतिकाञ्छठान् हैतुकानबकवृत्तींश्च वाङ्मात्रेणापिनार्चयेत् ॥ १० ॥ पाखंडि अर्थात् वेद विरुद्ध मार्ग में चलने वाले चक्रांकितादिक वैरागी और गोकुलिये गोसाईं आदिकों का वचन से भी सत्कार गृहस्थ लोग कभी न करें वैसे चोरी वेश्या गमनादिक विरुद्ध कर्म करने वाले पुरुषों का भी सत्कार न करें वैडाल व्रतिक नाम परकार्य के नाश करने वाले अपने कार्य में तत्पर हैं जैसे कि बिलार मूसे का तो प्राण हरले और अपना पेट भरले ऐसे पुरुषों का वचनसेभी गृहस्थ लोग सत्कार न करें शठनाम मूर्खों का भी सत्कार न करें शठ वे होते हैं कि उन्हें बुद्धि न होय और अन्य का प्रमाण भी न करें हैतुका नाम वेद शास्त्र विरुद्ध कुतर्क के करने वाले उनका भी वचन से सत्कार न करें

बकहत्ति अर्थात् जैसे वैरागियों में खाखी लोग भस्म लगा लेते जटा बढ़ालेते और काठ की कौपीन धारण कर लेते हैं फिर ग्राम वा नगर के समीप जाके ठहरते और शंखादिक बजादेते हैं अर्थात् सूचना कर देते हैं कि गृहस्थ लोग आवें और हमको धन आदिक पदार्थ देवें जब गृहस्थ लोग आते हैं तब दूर से देख के ध्यान लगाते हैं प्रमाद में छिप भी देखते हैं और उनका धन सब हरण कर लेते हैं उनका गृहस्थ लोग वचन से भी सत्कार न करें ऐसे जितने मंडली बांध के फिरते हैं वैरागी और साधु इत्यादिक उनको साधु न जानना चाहिये, किन्तु बड़ा ठग जानना चाहिये और जितने गृहस्थ लोग सदावर्त्त और छेत्र करते हैं वे अनुचित करते हैं क्योंकि बड़े धूर्त गांजा और भांग पीने वाले तथा चोर और डांकू वैसेही लुच्चे सदाव्रतों से अन्न लेते और छेत्रों में भोजन कर लेते हैं फिर कुकर्मही करते रहते और हरामी हो जाते हैं बहुत से लोग अपना काम काज छोड़ सदावर्तों और छेत्रों के ऊपर घर के सब काम और नौकरी चाकरी छोड़ के साधु वा भिखारी बन जाते हैं फिर मंतका अन्न खाते और सोते पड़े रहते हैं अथवा कुकर्म करते रहते हैं इससे संसार की बड़ी हानि होती है सो जो कोई सदावर्त्त छेत्र करता है उसमें सज्जन वा सत्पुरुष कोई नहीं जाता इससे उन गृहस्थों का पुण्य कुछ नहीं होता किन्तु पापही होता है इससे गृहस्थ लोग अन्नादिक दान करना चाहैं तो पाठशाला रचलेवें उसी में सब दान करैं अथवा जो श्रेष्ठ धर्मात्मा गृहस्थ और विरक्त होवैं उन को अन्नादिक देवैं और यत्न करैं तब उनको बड़ा पुण्य होय पाप कभी न होवै तथा मनु भगवान् का वचन है। वेदविद्याव्रतस्नातान् श्रोत्रियानगृहमेधिनः। पूजयेद्धव्यकव्येन विपरीतांश्चवर्जयेत् ॥ ११ ॥ जिनों ने ब्रह्म चर्य्याश्रम करके

वेदविद्या अर्थात् सब विद्या को पढ़ा है और धर्माचरण से शुद्ध होवें ऐसे श्रोत्रिय अर्थात् विद्वान् और गृहस्थ लोगों का हव्य नाम देवकार्य औ कव्यनाम पितृकार्य में गृहस्थ लोग सत्कार करैं उन से विपरीत लोगों का सत्कार कभी न करैं। ११॥ शक्तितोऽपचमानेभ्यो दातव्यं गृहमेधिना संविभागश्च भूतेभ्यः कर्तव्योऽनुपरोधतः॥ १२॥ जो संन्यासी ब्रह्मस्थ विद्यावान् और धर्मात्मा होवें उन की भी गृहस्थ लोग सेवा करैं और भी जितने अनाथ होवें अर्थात अन्धे लंगड़े लूले और जिनका कोई पालन करने वाला न होवे उनका भी गृहस्थ लोग पालन करैं॥ १३॥ नोपगच्छेत्प्रमत्तोऽपि स्त्रियमार्त्तवदर्शने। समानशयने चैव न शयीत तया सह॥ १३॥ जब स्त्री रजस्वला होय उस दिन से लेके चार दिन तक काम पीड़ा से प्रमत्त भी होय तो भी स्त्री का संग न करै और एक शय्या में स्त्री के साथ कभी न सोवै। १३॥ रजसाभिप्लुतां नारीं नरस्य ह्युपगच्छतः। प्रज्ञा तेजो बलं चक्षुरायुश्चैव प्रहीयते॥ १४॥ जो पुरुष रजस्वला स्त्री से समागम कर्ता है उसकी बुद्धि तेज बल नेत्र और आयु ये पांच नष्ट हो जाते हैं क्योंकि स्त्री के शरीर से एक प्रकार का अग्नि निकलता है उससे पुरुष का शरीर रोगयुक्त होता है रोग युक्त होने से बुद्ध्यादिक नष्ट हो जाते हैं॥ १४॥ तां विवर्जयतस्तस्य रजसा समभिप्लुताम्। प्रज्ञा तेजो बलं चक्षुरायुश्चैव प्रवर्द्धते॥ १५॥ जो पुरुष रजस्वला स्त्री का संग नहीं कर्ता उस पुरुष के बुद्धि तेज बल नेत्र और आयु ये सब बढ़ते हैं॥ १५॥ ब्राह्मे मुहूर्त्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत्। कायक्लेशांश्च तन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेव च॥ १६॥ एक प्रहर रात जब रहै तब सब मनुष्य उठें उठके प्रथम धर्म का विचार करैं कि यह २ धर्म की बात हमको करनी होगी तथा यह २ अर्थ नाम व्यवहार की बात अवश्य करना होगा उस धर्म और अर्थ के आचरण में विचार करैं कि परीश्रम थोड़ा होय और

वह कार्य सिद्ध हो जाय और जो शरीर में रोगादि क्लेश हों उनका औषध पथ्य और निदान का इससे यह रोग भया है इन सबको विचारै विचार के उनके निवारण का विचार करै फिर वेदतत्त्वार्थ नाम परमेश्वर को प्रार्थना करै और उठ के मल मूत्रादिक त्याग करै हस्त पाद का प्रक्षालन करें फिर जो वृक्ष दूध वाले होवें उनसे दन्त धावन करें अथवा खैर के चूर्ण वा सूंघनी से युक्त करके दन्त धावन से दांतों को मले और स्नान करै सूर्योदय से पहिले १ वा दो कोस भ्रमण करै एकान्त में जाके संध्योपासन जैसा कि लिखा है वैसा करै सूर्योदय के पीछे घरमें आके अग्निहोत्र जैसा जिस वर्ण का व्यवहार पूर्वक लिखा है वैसा करै जब तक पहर दिनन चढ़ै तबतक दूसरे प्रहर के प्रारंभ में तर्पण बलिवैश्वदेव और अतिथि सेवा करके भोजन करै तब जो जिसका व्यवहार है उस व्यवहार को यथावत् करैं ग्रीष्मऋतु को छोड़के दिवस में न सोवै क्योंकि दिन को सोने से रोग होते हैं और ग्रीष्म में अर्थात् वैशाख और ज्येष्ठ में थोड़ा सोने से रोग नहीं होता क्योंकि निद्रा से शरीर में उष्णता होती है सो ग्रीष्म में उष्णताही अधिक होती हैं जल भी अधिक पीने में आता है फिर जब मनुष्य सोता है तब सब द्वार अर्थात् लोम द्वार से भीतर से जल बाहर निकलता है उससे सब मार्ग शुद्ध हो जाते हैं इससे ग्रीष्म ऋतुमें सोने से रोग नहीं होता है अन्यऋतु में सोनेसे होता है और जो कुछ आवश्यक कार्य होय तो ग्रीष्म ऋतु में भी न सोवै तो बहुत अच्छा है फिर जब चार वा पांच घड़ी दिन रहै तब सबकार्यों को छोड़के भोजन के लिये जावै पहिले शौच स्नानादिक क्रिया करै तदनन्तर बलिवैश्वदेव फिर अतिथि सेवा करके भोजन करै भोजन करके फिर भी संध्योपासन के वास्ते एकान्त में चला जाय संध्योपासन करके फिर अपने अग्निहोत्र स्थान में आके अग्नि-

होच करै जब २ अग्निहोच करै तब २ स्त्री के साथही करै फिर जो जिसका व्यवहार होय वह उसको करै अथवा भ्रमण करै निदान एक प्रहर रात तक व्यवहार करै फिर सोवै दोप्रहर अथवा डेढ़ प्रहर तक फिर उठके वैसेही नित्य क्रिया करै सो मध्यराचि के मध्य दो प्रहर में जब २ वीर्य दान करै उसके पीछे कुछ ठहर के दोनों स्नान करैं पीछे अपने २ शय्या में पृथक २ जाके सोवैं जो स्नान न करेंगे तो उनके शरीर में रोगही हो जांयगे क्योंकि उस्से बड़ी उष्णता होती है इसलिये स्नान करने से वह विकार न होगा और वीर्यतेज भी बढ़ेगा इस्से उस समय स्नान अवश्य करना चाहिये इसमें मनुभगवान् के वचन का प्रमाण है। भोजनंहिगृहस्थानांसायंप्रातर्विधीयते स्नानंमैथुनिनःस्मृतम्॥ इसका अर्थ यह है कि दो वेर गृहस्थ लोगों को भोजन करना चाहिये सायं और प्रातः काल जो मैथुन करै तो उसके पीछे स्नान अवश्य करै तथाचश्रुतिःअहरहःसंध्यामुपासीतअहरहरग्निहोचंजुहुयात्। इनका यह अभिप्राय है कि सायं और प्रातः काल में दो वेर संध्योपासन और अग्निहोच करै दोई संध्या हैं प्रातः और सायंकाल मध्यान संध्या कहीं नहीं क्योंकि संध्या नाम है सन्धिका सन्धि दो काल होती है प्रातःकाल प्रकाश और अन्धकार की संधि होती है तथा सायंकाल प्रकाश और अन्धकार की सन्धि होती है मध्यान में केवल प्रकाशही है इस्से मध्यान्ह में संध्या नहीं हो सकी। संध्यायन्तिपरंतत्त्वं नामपरमेश्वरंयस्यांसासंध्या। इस समय परमेश्वर का ध्यान कर्ते हैं इस्से इसका नाम संध्या है अथवा संधयेहितासंध्या मन और जीवात्मा का परमेश्वर से जिस कर्म से सन्धान होय उसका नाम सन्धि है संधि के लिये जो अनुकूल कर्म होता है उसका नाम संध्या है सो दोई हैं। तस्मादहोरात्रस्यसंयोगेब्राह्मणः संध्यामुपासीत॥ यह

सामवेद के ब्राह्मण की श्रुति है। (उद्यन्तमस्तंयान्तमादित्यम-भिध्यायन् ब्राह्मणोविद्वान्सकलंभद्रमश्नुते) यह यजुर्वेद के ब्राह्मण की श्रुति है इसका यह अभिप्राय है कि जिस्से अहोरात्र अर्थात रात्रि और दिवस के संयोग में संध्या करैं जब जीवात्मा बाहर व्यवहार करने को चाहता है तब बहिर्मुख होता है मन और इन्द्रियों को भी बहिर्मुख कर्ता है और जीव भी नेत्र ललाट और श्रोत्र ऊपर के अंगो में विहार कर्ता है जैसे कि सूर्यउदय होकर ऊपर २ विहार कर्ता है वैसे जीव भी जब सोना चाहता है तब हृदय पर्यन्त नीचे के अंगो में चला जाता है रात्रि की नांई अन्धकार हो जाता है विना अपने स्वरूप के किसी पदार्थ को नही देखता जैसे कि सूर्य जब अस्त हो जाता है तब अन्धकार होने से कुछ नहीं देख पड़ता है ऐसही जीव के ऊपर आने और नीचे जाने का व्यवहार उसका सन्धान दोनों संध्याकाल में करैं इसके सन्धान करने से परमेश्वर पर्यन्त का कालान्तर में मनुष्यों को बोध हो जाता है और जीवका कभी नाश नहीं होता इस्से इसका नाम आदित्य है इस श्रुतिका अर्थ हो गया अर्थात। उद्यन्तमस्तंयान्तमादित्यमभिध्यायन् ब्राह्मणः सकलंभद्रमश्नुते। इसहेतु उदय और सायंकाल की दो संध्या नि-कलती हैं सो जान लेना तथा मनुस्मृति के श्लोक भी हैं। नति-ष्ठतितुयःपूर्वान् नोपास्ते यश्चपश्चिमाम्। सशूद्रवद्बहिष्कार्यः स-र्वस्माद्द्विजकर्मणः॥ १॥ प्रातःसंध्यांजपंस्तिष्ठेत्सावित्रीमार्कदर्शना-त्। पश्चिमांतुसमासीनः सम्यगृक्षविभावनात्॥ २॥ जो प्रातः और सायम् काल की संध्या नहीं करता उसको श्रेष्ठ द्विज लोग सब द्विज कर्माधिकारों से निकाल देवैं अर्थात् यज्ञो-पवीत को तोड़ के शूद्र कुल में कर देवैं वह केवल सेवाही करै जो कि शूद्र का कर्म है॥ १॥ इस्से दो सन्ध्या निकलती हैं दूसरे श्लोक में सन्ध्या के काल का नियम और दोनों सन्ध्या

हैं दो घड़ी रात से लेके सूर्योदय पर्यन्त प्रातः संध्या के काल का नियम है तथा एक वा आध घड़ी दिन से लेके जब तक तारा न निकलैं तब तक सायं सन्ध्या के काल का नियम है और गायत्री का अर्थ और जैसा ध्यान उसका कहा है वैसाही दोनों काल में करैं और जो कहता है कि मध्यान संध्या क्यों न होय तो उनसे पूंछना चाहिये कि मध्य रात्रि में संध्या क्यों न होय और दो पहर के दो मुहूर्त्त और दो क्षण में संध्या क्यों न होजाय ऐसा कहने से तो हजारों संध्या हो जांयगी और उसके मत में अनवस्था भी आजायगी इससे उसका कहना मिथ्याही है ॥ २ ॥ अधार्मिकोनरोयोहि यस्यचाप्यनृतंधनम् । हिंसारतश्चयोनित्यं नेहासौसुखमेधते ॥ ३ ॥ जो नर अधार्मिक अर्थात अधर्म का करने वाला है और जिसका धन भी अनृत अर्थात असत्य से आया होय और नित्य हिंसारत अर्थात पर पीड़ाही में नित्य रहता होय वह पुरुष इस संसार में सुख को कभी नहीं प्राप्त होता ॥ ३ ॥ नसीदन्नपिधर्मेण मनोऽधर्मेनिवेशयेत् । अधार्मिकाणांपापानामाशुपश्यन्विपर्ययम् ॥ ४ ॥ यदि मनुष्य बहुत क्लेशित भी होय और धर्म के आचरण से भी बहुत दुःख पावै तो भी अधर्म में मनको प्रविष्ट न करै क्योंकि अधर्म करने वाले मनुष्यों का शीघ्रही विपर्यय अर्थात नाश हो जाता है ऐसा देखने में भी आता है इससे मनुष्य अधर्म करने की इच्छा कभी न करै ॥ ४ ॥ नाधर्मश्चरितोलोके सद्यःफलतिगौरिव । शनैरावर्त्तमानस्तु कर्तुर्मूलानिकृन्तति ॥ ५ ॥ जो पुरुष अधर्म करता है उसको उसका फल अवश्य होता है जो शीघ्र न होगा तो देर में होगा जैसे कि गाय जिस समय उसको सेवा करते हैं उस समय दूध नहीं देती किन्तु कालान्तर में देती है वैसेही अधर्म का भी फल कालान्तर में होता है धीरे २ जब अधर्म पूर्ण होजायगा तब उसके करने वालों का मूल अर्थात सुख

के कारणों को छेदन कर देगा इससे वे दुःख सागर में गिरेंगे॥ ५ ॥ अधर्मेणैधतेतावत्ततोभद्राणिपश्यति । ततःसपत्नान्जयति समूलस्तुविनश्यति ॥ ६ ॥ जब मनुष्य धर्म को छोड़ के अधर्म में प्रवृत्त होता है तब छल कपट और अन्याय से पर पदार्थों को हरण कर लेता है हरण करके कुछ सुख भी करता है फिर शत्रु को भी अधर्म छल और कपट से जीत लेता है परंतु उसके पीछे जैसा मूल सहित वृक्ष उखड़कर गिर जाता है वैसा मूल सहित उस अधर्म करनेवाले पुरुष का नाश होजाता है ॥६॥ इससे किसी मनुष्य को अधर्म करना न चाहिये किन्तु । सत्यधर्मार्यवृत्तेषु शौचेचैवारमेत्सदा । शिष्यांश्चशिष्याद्धर्मेण वाग्बाहूदरसंयतः ॥ ७ ॥ सत्य धर्म और आर्य जो श्रेष्ठ मनुष्य हैं उनमें और उनके आचरण में सदा स्थित हो शौच पवित्रता अर्थात हृदय की शुद्धि और शरीरादिक पदार्थों की शुद्धि करने में सदा रमण करें तथा अपने शिष्य पुत्र और विद्यार्थियों को यथावत धर्म से शिक्षा करें और वाणी बाहु उदर इनका संयम करें अर्थात् वाणी से वृथा भाषण, बाहु से अन्यथा चेष्टा, और उदर का संयम अर्थात भोजन का बहुत लोभ न रक्खें ॥ ७ ॥ नपाणिपादचपलो ननेत्रचपलोऽनृजुः । नस्याद्वाक्चपलश्चैव नपरद्रोहकर्मधीः ॥ ८ ॥ पाणि हाथ पाद अर्थात पैर उनसे चपलता नाम चंचलता न करै तथा नेत्र से भी चपलता न करै अनृजु अर्थात अभिमान कभी न करै सदा सरल होय और वाक् चपल न होवै अर्थात बहुत न बोलै जितना उचित हो उतनाही भाषण करै और पराये का द्रोह अर्थात ईर्ष्या कभी न करै और कर्मही परम पदार्थ है उपासना और ज्ञान कुछ भी नहीं ऐसी बुद्धि कभी न करै किन्तु कर्म से उपासना और उपासना से ज्ञान श्रेष्ठ है ऐसी बुद्धि सदा रक्खै ॥८॥ येनास्यपितरोयाताः येनयाताःपितामहाः । तेनयायात्सतांमार्ग-

तेनगच्छन्नरिष्यते ॥ ६ ॥ जिस मार्ग से उसके पिता और पितामह गये हों उसी मार्ग से आप भी जावै उस मार्ग पर जाने से मनुष्य नष्ट नहीं होता किन्तु सुखीही होता है और दुःख कभी नहीं पाता (पूर्वपक्ष) यदि पिता और पितामह कुकर्मी होंय तो भी उनकी रीति से चलना चाहिये वा नहीं (उत्तर) नहीं क्योंकि इसी लिये मनु भगवान ने सतामिति विशेषण दिया है कि यदि पिता और पितामह सत्पुरुष अर्थात् धर्मात्मा होवैं तो उनकी रीति से चलना और यदि अधर्मी होवैं तो उनकी रीति से कभी न चलना चाहिये ॥ ६ ॥ ऋत्विक्पुरोहिताचार्यैर्मातुलातिथिसंश्रितैः। बालवृद्धातुरैर्वैद्यैर्ज्ञातिसम्बन्धिबान्धवैः ॥ १० ॥ मातापितृभ्यांयामीभिर्भ्रात्रापुत्रेणभार्यया। दुहित्रादासवर्गेण विवादंनसमाचरेत् ॥ ११ ॥ ऋत्विक्, पुरोहित, आचार्य, मातुल अर्थात मामा, अतिथि, तथा संश्रित अर्थात मित्र, बालक, वृद्ध, आतुर, नाम दुःखी, वैद्य, ज्ञाति, संबधी अर्थात श्वसुरादिक, बान्धव अर्थात कुटुम्बी, माता, पिता, तथा दमाद, भ्राता, पुत्र, तथा भार्या अर्थात स्त्री, दुहिता अर्थात कन्या, दासवर्ग अर्थात सेवकलोग इनसे विवाद कभी न करै और औरों से भी विवाद न करै विवाद का करना दुःख मूलही है इसे सज्जनों का किसी से विरुद्ध वाद करना न चाहिये ॥ ११ ॥ प्रतिग्रहसमर्थोपिप्रसङ्गन्तत्रवर्जयेत्। प्रतिग्रहेणह्यस्याशु ब्राह्मंतेजःप्रशाम्यति ॥ १२ ॥ प्रतिग्रह लेने में समर्थ अर्थात गुणवान भी होय और उसको लोग देते भी होंय तो भी किसी से दान न लेवै किंतु अध्यायन नाम पढ़ाना याजन नाम यज्ञ का कराना अथवा अपने परीश्रम से आजीविका को करै और जो पुरुष प्रतिग्रह लेता है उसका ब्राह्म तेज अर्थात् विद्या नष्ट हो जाती है क्योंकि वह खुशामदी होजायगा इसे दान का लेना उचित नहीं ॥ १२ ॥ अतपास्त्वनधीयानः प्रतिग्रहरुचिर्द्विजः। अम्भस्यश्मप्लवेनेव सहतेनैवमज्ज-

ति ॥ १३ ॥ जो पुरुष तपस्वि और विद्वान् नहीं और प्रतिग्रह में रुचि रखता है वह उसीदान के साथ पाप समुद्र में डूब मरेगा जैसे कोई पाषाण की नौका से समुद्र वा नदी को तरे वह तरेगा तो नहीं परंतु डूब के मर जायगा वैसेही प्रतिग्रह लेनेवाले मूर्ख की गति होगी ॥ १३ ॥ त्रिष्वप्येतेषुदत्तंहि विधिनाप्यर्जितंधनम्। दातुर्भवत्यनर्थाय परत्रादातुरेवच ॥ १४ ॥ एक तो अविद्वान् दूसरा वैडालव्रतिक तीसरा बकव्रतिक इन तीनों को तो जल का भी दान न देवे और जिसने विधि अर्थात धर्म से धन का संचय किया होय उस धन को तीनों को कभी न देवे जो कोई दाता देगा उसको बड़ा दुःख होगा और परलोक में उन तीन पुरुषों को इस लोक में भी बड़ा दुःख होगा ॥ १४ ॥ यथाप्लवेनौपलेननिमज्जत्युदकेतरन्। तथानिमज्जतोधस्तादज्ञौदातृप्रतीच्छकौ ॥ १५ ॥ जैसे कोई पाषाण की नौका पर चढ़ के उदक में तरा चाहै वह तर तो नहीं सकेगा परंतु डूब के मर जायगा तैसेही परीक्षा के बिना दुष्टों को जो दान देता है और जो दुष्ट लेने वाले हैं वे सब अज्ञान के होने से अधोगति को जायंगे अर्थात् दुःख और नरक को प्राप्त होंगे उनको कभी कुछ सुख न होगा इस्से परीक्षा करके श्रेष्ठ और धर्मात्माओंही को दान देना चाहिये अन्य को नहीं वैडालव्रतिक और बकव्रतिक मनुष्यों का यह लक्षण है ॥ १५ ॥ धर्मध्वजीसदालुब्धश्छाद्मिकोलोकदम्भकः। वैडालव्रतिकोज्ञेयोहिंस्रःसर्वाभिसन्धकः ॥ १६ ॥ अधोदृष्टिर्नैष्कृतिकः स्वार्थसाधनतत्परः। शठोमिथ्याविनीतश्चबकव्रतचरोद्विजः ॥ १७ ॥ जो मनुष्य धर्मध्वजी अर्थात धर्म तो कुछ न करै अथवा कुछ करै भी तो फिर अपने मुख से कहै कि मैं बड़ा पंडित वैराग्यवान् योगी तपस्वी और बड़ा धर्मात्मा हूं इसको धर्मध्वजी कहते हैं जो बड़ा लोभी होय अर्थात् जो कुछ पावै सो भूमि में अथवा

जहां तहां रख छोड़े खाने में भी लोभ करै और बड़ा कपटी छली होय लोगों को दंभ का उपदेश करै अर्थात् जैसे कि संप्रदायी लोग उपदेश करते हैं कि तुलसी की माला धारण करने से वैकुंठ को जाता है और सब पापों से छूट जाता है तथा रुद्राक्ष माला धारण करने से कैलास को जाता है और सब पापों से दूर हो जाता है और गङ्गादिक तीर्थ राम शिवादिक नाम स्मरण और काश्यादिकों में मरण से मुक्ति होजाती है इस प्रकार के उपदेश करके दंभ और अभिमान में लोगों को गिरा देते हैं और आप भी गिरे रहते हैं इससे दुःख और बन्धन तो होहोगा और मुक्ति कभी न होगी किंतु धर्माचरण विद्या और ज्ञान इनके विना मुक्ति कभी नहीं होसक्ती हिंस्रः नाम रात दिन जिसका चित्त प्राणियों को पीड़ा देने में नित्य प्रवृत्त रहै उसको हिंस्र कहते हैं सर्वाभिसन्धक अर्थात् अपने प्रयोजन के लिये दुष्ट तथा श्रेष्ठों से मेल रक्खै सो मेल धर्म से नहीं किन्तु अधर्मी से धनादिक हरण करने के लिये प्रीति करै उनको सर्वाभिसन्धक कहते हैं यह वैडालव्रतिक का लक्षण है ॥ क्रोध के मारे वा कपट छल से अधोदृष्टि नाम नीचे देखता रहै कोई जाने कि वह बड़ा शान्त और वैराग्यवान् है नैष्कृतिक नाम यदि कोई एक कठिन बचन उसे कहै और उसके बदले में दस कठिन बचन भी उसको कहै तो भी उसकी शान्ति न होय उस्को नैष्कृतिक कहते हैं स्वार्थ साधन तत्पर अर्थात अपने स्वार्थ साधन में जो तत्पर अर्थात् किसी को पीड़ा तथा हानि होजाय और वह अपने स्वार्थ के आगे कुछ न गिनै शठ अर्थात मूर्ख जो हठ दुराग्रह से निर्बुद्धि होय और अन्य का उपदेश न मानैं उसको शठ कहते हैं मिथ्या विनीत नाम विनय तथा नम्रता करै सो कुटिलता से करै शुद्ध हृदय से नहीं ऐसे लक्षण वाले को वकव्रतिक कहते हैं अर्थात जैसे बक नाम बकुला जल

के समीप ध्यानावस्थित होके खड़ा रहता है और मत्स्य को देखता भी रहता है जब मत्स्य उसके पेच में आता है तब उस को उठा के खा लेता है तथा जितने धूर्त पाखण्डी होते हैं व दूसरे का प्राण भी हरण कर लेते हैं तिसपर उनको कभी दया नहीं आती ऐसेही जितने शैव शाक्त गाणपत्य वैष्णवादिक सम्प्रदाय वाले हैं, इनमें कोई लाखों में एक अच्छा होता है और सब वैसेही होते हैं इससे गृहस्थ लोग इनकी सेवा कभी न करें १७ ॥ सर्वेषामेवदानानांब्रह्मदानंविशिष्यते। वार्यन्नगोमहीवासस्तिलकाञ्चनसर्पिषाम् ॥ १८ ॥ वारि नाम जल अन्न गाय मही अर्थात पृथिवी वास नाम वस्त्र तिल कांचन नाम सुवर्ण सर्पि नाम घी ८ इन सब दानों से ब्रह्म अर्थात वेद विद्या का दान सब से श्रेष्ठ दान है ऐसा अन्य कोई दान नहीं है इससे सब गृहस्थों को अर्थ सहित वेद पढ़ने और पढ़ाने में शरीर मन और धन से अत्यन्त पुरुषार्थ करना उचित है ॥ १८ ॥ धर्मंशनैस्सञ्चिनुयाद्वल्मीकमिवपुत्तिका:। परलोकसहायार्थं सर्वभूतान्यपीड़यन् ॥ १९ ॥ सब भूतों को पीड़ा के बिना धीरे धीरे धर्म का संचय मनुष्यों को करना उचित है जैसे कि चींटी धीरे २ मिट्टी को बाहर निकाल के संचय कर देती है तथा धान्य कणों का भी धीरे २ बहुत संचय कर देती हैं वैसेही मनुष्यों को धर्म का संचय करना उचित है क्योंकि धर्मही के सहाय से मनुष्यों को सुख होता है और किसी के सहाय से नहीं ॥ १९ ॥ नामुत्रहिसहायार्थंपितामाताचतिष्ठतः। नपुत्रदारंनज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठतिकेवलः ॥ २० ॥ परलोक में सहाय के करने को पिता माता पुत्र तथा स्त्री ज्ञाति नाम कुटुम्बी लोग कोई समर्थ नहीं है केवल एक धर्मही सहायकारी है और कोई नहीं ॥ २० ॥ एकःप्रजायतेजन्तुरेकएवप्रलीयते। एकोऽनुभुंक्ते सुकृतमेकएवचदुष्कृतम् ॥ २१ ॥ देखना चाहिये कि जब

जन्म होता है तब एकही का होता है और मरण होता है तो भी एकही का होता है तथा सुख का भोग करता है तो एकही करता है अथवा दुःख का भोग करता है तो एकही करता है इसमें संग किसी का नहीं इससे सब मनुष्यों को यह उचित है कि अपना पालन वा माता पितादिकों का पालन धर्मही से जितना धनादिक मिलै उतनेही से व्यवहार और पालन करैं अधर्म से कभी नहीं क्योंकि ॥ एकःपापानिकुरुते-फलंभुङ्क्ते महाजनः। भोक्तारोविप्रमुच्यन्ते कर्त्तादोषेणलिप्यते ॥ यह महाभारत का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि जो अधर्म करेगा उसका फल वही भोगेगा और माता पितादिक सुख के भोग करने वाले तो हो जायंगे परंतु दुःख जो पाप का फल उसमें से भाग कोई न लेगा किन्तु जिसने किया वही पाप का फल भोगेगा और कोई नहीं ॥ २१ ॥ मृतंशरीरमुत्सृ-ज्य काष्ठलोष्ठसमंक्षितौ। विमुखाबान्धवायान्ति धर्मस्तमनुगच्छ-ति ॥ २२ ॥ देखना चाहिये कि जब कोई मर जाता है तब काष्ठ वा लोष्ठ जैसा कि मिट्टी के ढेले को पृथिवी में फेंक के चले जाते हैं वैसे मरे हुए शरीर को अग्नि वा पृथिवी में डाल के विमुख नाम पीठ करके कुटुम्बी लोग चले आते हैं कुछ सहायता नहीं करते ॥ २२ ॥ तस्माद्धर्मंसहायार्थं नित्यंसंचिनु-याच्छनैः। धर्मेणहिसहायेन तमस्तरतिदुस्तरम् ॥ २३ ॥ तिससे नित्यही सहाय के लिये धीरे २ धर्मही का संचय करैं क्योंकि धर्मही के सहाय से दुस्तर जो तम अर्थात् जन्म मरणादिक दुःखसागर का जो संयोग उसका नाश और मुक्ति अर्थात् पर-मेश्वर की प्राप्ति और सर्व दुःख की निवृत्ति धर्मही से होती है अन्यथा नहीं ॥ २३ ॥ धर्मप्रधानंपुरुषं तपसाहतकिल्बिषम्। परलोकंनयत्याशुभास्वन्तंखशरीरिणम् ॥ २४ ॥ जिस पुरुष को धर्मही प्रधान है अधर्म में लशमात्र भी जिसकी प्रवृत्ति नहीं

तथा तप जो धर्म का अनुष्ठान है और पाप का त्याग इससे जिस का पाप नष्ट होगया है उसको वही धर्म परलोक अर्थात् स्वर्ग लोक अथवा परमानन्द परमेश्वर को प्राप्त कर देता है वह किस प्रकार का शरीरवाला होता है भास्वन्त अर्थात तेजोमय वा ज्ञान युक्त, और आकाशवत् अदृष्ट, अच्छेद्य काटने वा दाह करने में न आवै ऐसा उसका सिद्ध शरीर होता है जैसा कि योगियों का ॥ २४ ॥ दृढकारी मृदुर्दान्तः क्रूराचारैरसंवसन्। अहिंस्रोदमदानाभ्यां जयेत्स्वर्गं तथाव्रतः॥ २५॥ म० दृढ़कारी अर्थात् जो कुछ धर्म कार्य अथवा धर्म युक्त व्यवहार को करै सो दृढ़ही निश्चय से करै और मृदु अर्थात अभिमानादिक दोष से रहित होय दान्त अर्थात जितेन्द्रिय होय और क्रूराचार अर्थात् जितने दुष्ट हैं उनका साथ कभी न करै किन्तु श्रेष्ठ पुरुषोंही का संग करै दम अर्थात जिसका मन वशीभूत होय दान अर्थात वेद विद्या का नित्य दान करना और अहिंस्र अर्थात किसी से वैर बुद्धि नहीं ऐसाही लक्षणवाला पुरुष स्वर्ग को प्राप्त होता है अन्य नहीं॥ २५ ॥ वाच्यर्था नियताः सर्वे वाङ्मूला वाग्विनिःसृताः। तांस्तु यः स्तेनयेद्वाचं स सर्वस्तेयकृन्नरः॥ २६ ॥ जिस पुरुष को प्रतिज्ञा मिथ्या होती है अथवा जो मिथ्या भाषण कर्त्ता है उसने सब चोरी करली क्योंकि वाणीही में सब अर्थ निश्चित रहते हैं केवल वचनहीं व्यवहारों का मूल है उस वाणी से जो मिथ्या बोलता है वह सब चोरी आदिक पापों को अवश्य कर्त्ता है इससे मिथ्या भाषण करना उचित नहीं॥ २६ ॥ आचाराल्लभते ह्यायुराचारादीप्सिताः प्रजाः। आचाराद्धनमक्षय्यमाचारो-हन्त्यलक्षणम्॥ २७॥ जो सत्पुरुषों के श्रेष्ठ आचार के करने से आयु, श्रेष्ठ, प्रजा और अक्षय्यधन प्राप्त होते हैं और पुरुष में जितने दुष्ट लक्षण हैं वे सब सत्पुरुषों के आचरण

और संग करने से नष्ट होजाते हैं और श्रेष्ठ लक्षण भी उसमें आजाते हैं इससे श्रेष्ठही आचार को करना चाहिये २७ ॥ दुराचारोहिपुरुषोलोकेभवतिनिन्दितः। दुःखभागीचसततंव्याधितोऽल्पायुरेवच ॥ २८ ॥ दुष्ट आचार करनेवाला पुरुष लोक में निन्दित होता है निरन्तर दुःखीही रहता है अनेक काम क्रोधादिक हृदय के रोग और ज्वरादिक शरीर के रोगों से शीघ्र मर भी जाता है इससे दुष्टों का आचार कभी न करना चाहिये ॥ २८ ॥ यद्यत्परवशंकर्मतत्तद्यत्नेनवर्जयेत्। यद्यदात्मवशंतुस्यात्तत्तत्सेवेतयत्नतः ॥ २९ ॥ जो जो पराधीन कर्म होय उनको यत्न से छोड़ देवै और जो स्वाधीन होंय उनको यत्न से कर्त्ता जाय ॥ २९ ॥ सर्वंपरवशंदुःखसर्वमात्मवशंसुखम्। एतद्विद्यात्समासेनलक्षणंसुखदुःखयोः ॥ ३० ॥ जो जो पराधीन कर्म हैं वे सब दुःख रूपही हैं और जो २ स्वाधीन कर्म हैं सो २ सब सुख रूप हैं सुख और दुःख का समास अर्थात संक्षेप से यही लक्षण है सो जान लेवें ॥ ३० ॥ यमान्सेवेतसततंननियमान्केवलान्बुधः। यमान्पतत्यकुर्वाणोनियमान्केवलान्भजन् ॥ ३१ ॥ यमों का निरन्तर सेवन करना चाहिये वे यम पूर्व कह दिये हैं वहीं जान लेना और यमों को छोड़ के पांच जो नियम हैं उनका सेवन करैं वे नियम ये हैं। शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानियमाः। यह योगशास्त्र का सूत्र है शौच नाम पवित्रता रात दिन नहाने धोने में लगा रहै सन्तोष अर्थात् केवल आलस्य से दरिद्र बना रहै तप नाम निरन्तर कृच्छ्र चांद्रायणादिकों में प्रवृत्त रहै स्वाध्याय अर्थात केवल पढ़ने और पढ़ानेही में प्रवृत्त रहै धर्मानुष्ठान अथवा विचार कभी न करै और ईश्वर प्रणिधान अर्थात् स्वार्थ के लिये ईश्वर की प्रसन्नता चाहै ये अर्थ व्यवहारों की रीति से पांच नियमों के किये गये और योगशास्त्र की रीति

से नियमों के इस प्रकार के अर्थ हैं मृत्तिका और जलादिकों से बाह्य शरीर की शुद्धि और शान्त्यादिकों के ग्रहण और ईर्ष्यादिकों के त्याग से चित्त की शुद्धता इसका नाम शौच है धर्मयुक्त पुरुषार्थ करने से जितने पदार्थ प्राप्त होंय उतनेही में संतुष्ट रहै और पुरुषार्थ का त्याग कभी न करै इसका नाम सन्तोष है क्षुधा, तृषा, शीत और उष्ण इत्यादिक द्वंद्वों को सहै और कृच्छ, चांद्रायणादिक व्रत भी करै इसका नाम तप है मोक्ष शास्त्र अर्थात उपनिषदों का अध्ययन करै ऊंकार के अर्थ का विचार और जप करै उसका नाम स्वाध्याय है पाप कर्म कभी न करै यथावत् पुण्यकर्मों को करके सिवाय परमेश्वर की प्राप्ति के फल की इच्छा न करै इसका नाम ईश्वर प्रणिधान है इनको तो करता रहै परन्तु यमों को न करै उस को उत्तम सुख नहीं होता किन्तु यमों का करना उनके साथ गौण नियमों का भी करनाहीं उचित है और केवल नियमों का करना उचित नहीं ऐसे यथावत् विवाह करके गृहस्थ लोग वर्तमान करैं यह जितनी विद्यावाली स्त्री और पुरुष द्विज अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य पूर्वोक्त नियम से करैं विवाह का विधान संक्षेप से लिख दिया और सब मनुष्यों के बीच में स्त्री और पुरुष जो मूर्ख होंय उनका यज्ञोपवीत भी हुआ होय तो उसको तोड़ के शूद्र कुल में करदें उनका परस्पर यथायोग्य विवाह भी होना चाहिये वे सब द्विजों की सेवा करैं और द्विज लोग उनको अन्न वस्त्रादिक उनके निर्वाह के लिये देवें और यह बात भी अवश्य होना चाहिये कि देश देशान्तर से विवाह का होना उचित है क्योंकि पूर्व, उत्तर, दक्षिण और पश्चिम देशों में रहने वाले मनुष्यों में परस्पर विवाह के करने से प्रीति होगी और देश देशान्तरों के व्यवहार भी जाने जांयगे बलादिक गुण भी तुल्य होंगे और भोजन व्यवहार भी एकही होगा

इस्से मनुष्यों को बड़ा सुख होगा जैसे कि पूर्व दक्षिण देश की कन्या और पश्चिम उत्तर देश के पुरुषों से बिवाह जब होगा और पश्चिम उत्तर देश के मनुष्यों की कन्या और पूर्व तथा दक्षिण देश में रहने वाले पुरुषों से बिवाह होगा तब बल बुद्धि पराक्रमादिक तुल्य गुण हो जांयगे पत्र द्वारा और आने जाने से परस्पर प्रीति बढ़ेगी और परस्पर गुण ग्रहण होगा और सब देशों के व्यवहार सब देशों के मनुष्यों को बिदित होंगे परस्पर बिरोध जो है सो नष्ट होजायगा इस्से मनुष्यों को बड़ा आनन्द होगा पूर्वपक्ष जैसे स्त्री मर जाती है तब पुरुष का दूसरो बार बिवाह होता है वैसे स्त्री का पति मरने से बिधवाओं का बिवाह होना चाहिये वा नहीं उत्तर बिवाह तो न होना चाहिये क्योंकि बहुत बार बिवाह की रीति जो संसार में होगी तो जब तक पुरुष के शरीर में बल होगा तब तक वह स्त्री उसके पास रहेगी जब वह निर्बल होगा तब उसको छोड़ के दूसरे पुरुष के पास जायगी जब दूसरा भी बल रहित होगा तब वह तीसरे के पास जायगी जब तीसरा भी बल रहित होगा तब चौथे के पास जायगी ऐसी स्त्री जब तक वृद्धा न होगी तब तक बहुत पुरुषों का नाश कर देगी जैसे कि एक वेश्या बहुत पुरुषों को नष्ट कर देती है वैसे सब स्त्री हो जांयगी और विषदानादिक भी होने लगेंगे इस्से द्विज कुल में दोबार बिवाह का होना उचित नहीं स्त्रियों का और पुरुषों का भी बहुत बिवाह होना उचित नहीं क्योंकि पुरुषों को भी वीर्य की रक्षा करनी उचित है जिस्से शरीर में बल पराक्रमादिक भी मरण तक बने रहैं और एक पुरुष बहुत स्त्री के साथ बिवाह करता है यह तो अत्यन्त दुष्ट व्यवहार है इस को कभी न करना चाहिये तथा कन्या और बर का पिता जो धन लेके बिवाह करते हैं यह भी अत्यन्त दुष्ट व्यवहार है जैसे कि आज

काल कान्यकुब्जों में है बहुत गृहस्थ इससे दरिद्र होजाते हैं धन के नाश होने से दरिद्र लोग बिवाह करने में बड़ा दुःख पाते हैं बहुत कन्या वृद्ध होजाती हैं और बिवाह के बिना वृद्ध होके मर भी जाती हैं इससे इस दुष्ट व्यवहार को छोड़ना उचित है और बंगाले में कुलीन लोगों में बहुत स्त्रियों के साथ एक पुरुष बिवाह कर लेता है एक जो वह मर जाय तो एक के मरने से वे सब स्त्री बिधवा होजाती हैं यह भी अत्यन्त दुष्ट व्यवहार है इसको सज्जनों को छोड़नाही चाहिये और जो बिधवा होजाती हैं उनका कुछ आधार नहीं होने से भी बहुत अनर्थ होते हैं वे कन्या बाल्यावस्था वा युवावस्था में बिधवा होजाती हैं बहुत दुःखी होती और वे कुकर्म भी करती हैं बहुत गर्भहत्या और बालहत्या भी होती है इससे बिधवाओं का पति के बिना रहना भी उचित नहीं क्योंकि इससे बहुत अनर्थ होते हैं इससे इस व्यवहार का रहना भी उचित नहीं फिर क्या करना चाहिये कि प्रथम तो जब पूर्ण युवावस्था होय तब बिवाह होना चाहिये जिस्से कि बिधवा भी बहुत न होंगी फिर जब कोई बिधवा होय तब छः पीढ़ी अथवा अपने गोत्र और अपनी जाति में देवर अथवा ज्येष्ठ जो संबंध से होय उस्से बिधवा का पाणिग्रहण होना चाहिये परन्तु स्त्री की इच्छा से जब (जिस स्त्री का पति मर जाय और मरने का शोक भी निवृत्त होजाय अर्थात् त्रयोदश दिवस के अनन्तर जब कुटुम्ब के श्रेष्ठ मनुष्य बिधवा स्त्री के पास जाके उससे पूछें कि तेरी क्या इच्छा है जो वह बिधवा कहै कि मेरी इच्छा न सन्तान और न नियोग की है तब तो वह स्त्री चांद्रायणादिक ब्रत तथा परमेश्वर का ध्यान और धर्म का अनुष्ठान करै ऐसेही मरण तक धर्म का आचरण करै दूसरे पुरुष का मन से भी चिन्तन न करै और जो बिधवा कहै कि मेरा पुत्र के बिना निर्वाह न

होगा तब सब पुरुषों के सामने देवर वा ज्येष्ठ का पाणिग्रहण करले उससे एक वा दो पुत्र उत्पादन करले अधिक नहीं इसमें ऋग्वेद के मन्त्र का प्रमाण है॥ कुहस्विद्दोषाकुहवस्तोरश्विना-कुहाभिपित्वङ्करतः कुहोषतुः कोवांशयुत्राविधवेवदेवरंमर्यंनयो-षाकृणुतेसधस्थआ। इसका यह अभिप्राय है कि स्त्री और पुरुष ये दोनों के प्रति प्रश्न की नाईं कहा है आप दोनों दोषा अर्थात रात्रि कुह नाम कौन स्थान में बास करते भये और किस स्थान में अश्विं नाम दिवस में बास किया था किस स्थान में इन दोनों ने अभिपित्वं अर्थात प्राप्ति इन पदार्थों की की थी इन दोनों का निवासस्थान किस देश में था और शयुत्रा नाम शयनस्थान इन दोनों का किस स्थान में है यह दृष्टान्त भया और इससे यह अभिप्राय भी आया कि स्त्री और पुरुष का बियोग कभी न होना चाहिये सब दिन स्थान और सब देशों में संगही संग रहैं अब यह दृष्टान्त है कि जैसे विधवा देवर के साथ रात्रि दिवस और प्राप्ति का करना एक देश में बास एक स्थान में शयन और संग २ रहती है और देवर को सधस्थ अर्थात स्थान में आकृणुते अर्थात स्वीकार करके रमण और सन्तानोत्पत्ति करती है वैसे उन दोनों से भी वेदमन्त्र से पूंछा गया और देवर शब्द का निरुक्त में भी अर्थ लिखा है कि॥ देवरःकस्मातद्वितीयोवरउच्यते। देवर अर्थात विधवा को जो दूसरा वर पाणिग्रहण करके होता है उस पुरुष को देवर कहते हैं इस निरुक्त से वर का बड़ा भाई अथवा छोटा भाई वा और कोई भी विधवा का जो दूसरा वर होय उसी का नाम देवर आया इस मन्त्र से विधवा का नियोग अवश्य करना चाहिये यह अर्थ आया और (मनुस्मृति में भी लिखा है)॥ देवराद्वासपिण्डाद्वास्त्रियासम्यङ्नियुक्तया। प्रजेप्सिताधिगन्तव्या-सन्तानस्यपरिक्षये॥ १॥ देवर अथवा छः पीढ़ी देवर वा

ज्येष्ठ के स्थान में कोई पुरुष होय उससे विधवा स्त्री का नियोग करना चाहिये और जिसका उस स्त्री के साथ नियोग भया वह उस स्त्री के साथ गमन करे परन्तु जिस स्त्री को सन्तान की इच्छा होय और सन्तान के अभाव में भी नियोग का होना उचित है ॥ १ ॥ विधवायांनियुक्तस्तुघृताक्तोवाग्यतोनिशि। एकमुत्पादयेत्पुत्रंनद्वितीयंकथंचन ॥ २ ॥ द्वितीयमेकेप्रजनंमन्यन्तेस्त्रीषुतद्विदः। अनिर्वृत्तंनियोगार्थंपश्यन्तोधर्मतस्तयोः ॥ ३ ॥ जो विधवा के साथ नियुक्त होय सो रात्रि के दोनों मध्य प्रहरों में घृत का शरीर में लेपन करके ऋतुमती विधवा को वीर्य प्रदान करै मौन करके अर्थात बहुत मोहित होके क्रीड़ाशक्त न होय किन्तु सन्तानोत्पत्ति मात्र प्रयोजन रक्खै ॥ २ ॥ कोई एक आचार्य ऋषि लोग ऐसा कहते हैं कि दूसरा भी पुत्र विधवा को होना चाहिये क्योंकि एक पुत्र जो हो जाता है उससे नियोग का प्रयोजन सब सिद्ध नहीं होता ऐसेही धर्म से विचार करके कहते हैं कि दो पुत्र का होना उचित है ॥ ३ ॥ विधवायांनियोगार्थेनिर्वृत्तेतुयथाविधि। गुरुवच्चस्नुषावच्चवर्तेयातांपरस्परम् ॥ ४ ॥ विधवा में नियोग का जो प्रयोजन कि दो पुत्र का होना सो विधि पूर्वक जब होगया उसके पीछे वह विधवा नियुक्त पुरुष को गुरुवत् मानै और वह पुरुष उस विधवा को पुत्र की स्त्री की नांई मानै अर्थात फिर समागम कभी न करै और जैसे कि पहिले सब कुटुम्बियों के साम्हने पाणिग्रहण किया था और नियम भी किया था कि जब तक दो पुत्र न होवें तब तक नियोग रहै फिर वैसे फिर भी सब कुटुंबियों के साम्हने दोनों कह देवें कि हम लोगों का नियम पूर्ण होगया अब हम लोग वैसा काम न करेंगे ॥ ४ ॥ नियुक्तौयौविधिंहित्वावर्त्तेयातांतुकामतः। तावुभौपतितौस्यातांस्नुषागगुरुतल्पगौ ॥ ५ ॥ फिर जो वे दोनों विधि अर्थात उस

मर्यादा को छोड़ के कामातुर होके समागम करैं तो पतित होजांय क्योंकि ज्येष्ठ और कनिष्ठ इन दोनों को जैसे पुत्र वा गुरु की स्त्री से गमन करने का पाप होता है वैसाही पाप होता है अर्थात फिर कभी परस्पर कामक्रीड़ा न करैं ॥५॥ नान्यस्मिन्विधवानारीनियोक्तव्याद्विजातिभिः । अन्यस्मिन्हिनियुंजानाधर्मंहन्यु:सनातनम् ॥ ६ ॥ उक्त प्रकार से भिन्न पुरुष के साथ विधवा का नियोग कभी न करैं अपने कुटुम्बही में करैं जिस्से स्त्री जहां की तहां बनी रहै और सन्तान से भी कुल की वृद्धि बनी रहै क्षय कभी न होय जो और किसी पुरुष के साथ नियोग करेंगे तो स्त्री हाथ से जायगी और सन्तान की हानि होने से कुल की भी हानि होगी फिर जो कुल की वृद्धि करना सो सनातन धर्म नष्ट होजायगा इस्से अपनेही कुटुंब में नियोग करना उचित है इस बात की सज्जन लोग शीघ्रही प्रवृत्ति करैं क्योंकि इसके बिना बिधवा लोगों को अत्यन्त दुःख होता है और बड़ा पाप होता है संसार में इस बात के करने से यह दुःख और पाप कभी न होंगे ॥५॥ ज्येष्ठोयवीयसोभार्यांयवीयान्वाग्रजस्त्रियम् । पतितौभवतोगत्वा नियुक्तावप्यनापदि ॥ ६ ॥ ज्येष्ठ कनिष्ठ की तथा कनिष्ठ ज्येष्ठ की स्त्री से नियुक्त भी होवें तो भी आपत्काल के बिना अर्थात दो पुत्र होने के पीछे जो गमन करैं तो पतित होजांय इस्से आपत्कालही में नियोग का बिधान है ॥ ६ ॥ यस्याम्रियेतकन्यायावाचासत्येकृतेपतिः । तामनेनविधानेननिजोविंदेतदेवरः ॥७॥ जिस कन्या का पाणिग्रहण मात्र तो होजाय और पति का समागम न होय तो उस स्त्री का देवर के साथ बिवाह होना उचित है ॥ ७ ॥ परंतु इस प्रकार से दोनों बिधान करैं ॥ यथाविध्यधिगम्यैनांशुक्लवस्त्रांशुचिव्रताम् । मिथोभजेताप्रसवात्सकृत्सकृदृतावृतौ ॥ ८ ॥ यथाबिधि बिधवा से देवर बिवाह करके

परस्परऋतु२ मेंएक२ वारसमागमकरैं परंतुवहस्त्रीशुक्लवस्त्रधारण करैपरंतुजिसकाश्रेष्ठआचारहोयउसीकातोऔरदुष्टाचारवालेका नहीं ८ ॥ साचेदक्षतयोनिःस्याद्गतप्रत्यागतापिवापौनर्भवेनभर्त्रासा पुनःसंस्कारमर्हति॥ ९ ॥ जोस्त्रीअक्षतयोनिअर्थातविवाहतथाजाने आनेमात्रव्यवहारतोहुआहो परंतुपुरुषसेसमागमनभयाहोय तो पौनर्भवपुरुषअर्थात(विधवाकेनियोगसे)जोउत्पन्नभयाहोय उसके साथउसविधवाकाविवाहहीहोनाउचितहै ॥ ९ ॥ यहविधवानि-योगकाप्रकरणपूराहोगया(जोविधवानहींहै औरकिसीप्रकारका आपत्कालहै उनकेलियेऐसाविधानहै किजिसकापतिपरदेशचला जाय औरसमयकेऊपरनआवै उसस्त्रीकेलियेइसप्रकारकाविधान शास्त्रमेंहैऔरपुरुषकेलियेभीहै(प्रोषितोधर्मकार्यार्थंप्रतीक्ष्योऽष्टौ-नरःसमाः। विद्यार्थंषट्यशोर्थंवाकामार्थंत्रींस्तुवत्सरान्॥ १० ॥ जो पुरुषस्त्रीकोछोड़केपरदेशकोजाय औरजोधर्महीकेलियेगयाहो तो आठवर्षपर्यन्तस्त्री पतिकीमार्गप्रतीक्षाकरै, औरजोउससमयवह नआवै तोस्त्रीपूर्वोक्तप्रकारसेनियोगकरकेपुत्रोत्पत्तिकरै, औरजो पतिवीचमेंआजाय तोनियोगछूटजाय जिससेविवाहकियागयाथा उसीकेपासस्त्रीरहैऔरकिसीउत्तमविद्यापढ़नेवाकीर्तिकेलियेगया होय तोछःवर्षतक परीक्षाकरै तथाकामवाधनकेलियेगयाहोय किमैंधनलाकेखूबविषयभोगकरूंगा उसकीतीनवर्षतकस्त्रीप्रतीक्षा करै फिरउक्तप्रकारसे नियोगकरके पुत्रोत्पत्तिकरलेवै ॥ १० ॥ संवत्सरंप्रतीक्षेतद्विषन्तीयोषितंपतिः। ऊर्द्ध्वं संवत्सरात्त्वेनांदायं-हृत्वानसंवसेत्॥ ११ ॥ जोदुष्टताकरकेस्त्रीप्रतिकूलहोजाय अर्थात अपनेपितावाभाईकेपास रुष्टहोकेचलीजाय तोपतिएकवर्षपर्यन्त राहदेखै फिरदायअर्थातजोकुछस्त्रीकोगहनादिकदियाथाउसको लेकेउसकासङ्गनकरै अर्थातदूसराविवाहकरलेवै॥ ११ ॥ मद्यपा-साधुवृत्ताचप्रतिकूलाचयाभवत्। व्याधितावाधिवेत्तव्याहिंस्रार्थ-घ्नीचसर्वदा ॥ १२ ॥ जोस्त्रीमद्यपीतीहोय तथाविपरीतहीचलै कि

आज्ञाकोनमानै व्याधिनामरोगयुक्तहोजाय वाविषादिकदेकेकोई मनुष्यकोमारडालै औरघरकेपदार्थोंकोसदानाशकतीहोय तो उसस्त्रीकोछोड़केदूसराविवाहकरलेवै ॥ १२ ॥ वन्ध्याष्टमेधिवेद्याऽब्देदशमेंतुमृतप्रजा। एकादशेस्त्रीजननीसद्यस्त्वप्रियवादिनी॥१३॥ विवाहकेपीछे८आठवर्षतकगर्भनरहै, औरवैद्यकशास्त्रकीरीतिसे परीक्षाभीकरले फिरअष्टमेवर्षदूसराविवाहकरले औरवन्ध्याका यथावत्पालनकरैपरंतुसमागमनकरै औरजिसकेसंतानहोकेमर जांय औएकभीनजीयेतो१०मेवर्षदूसराविवाहकरलेवै औरउसको अन्नवस्त्रादिकदेवै औरजिसस्त्रीसेकन्याहीबहुतहोवें पुत्रएकभीनहो यतो ११ग्यारहवेंवर्षदूसराविवाहकरले औरउसस्त्रीकापालनकरै जोदुष्टस्त्रीहोय औरअप्रियवचनबोलै तोउसकोशीघ्रहीछोड़केदू-सराविवाहकरलेवै १३ वैसापुरुषभीदुष्टहोजाय, तोस्त्रीभीउसको छोड़केधर्मसेनियोगकरकेपुत्रोत्पत्तिकरलें औरएकयहभीव्यवहार है इसकोजाननाचाहिये किअपनेशरीरसेपुत्रनहोय अर्थातरोग सेवीर्यहीनहोगयाहोयअथवापीछेकिसीरोगसेनपुंसकहोगयाहोय तोअपनेस्वजातिकेपुरुषसेवीर्यलेकेपुत्रोत्पत्तिकरालेवै परन्तुधर्ममें व्यभिचारसेनहीं इसीप्रकारसे १२ पुत्रमनुस्मृतिमेंलिखेहैं जिसकोदे खनेकीइच्छाहोयसोदेखलेवैनियोगमेंऔरक्षेत्रजादिकपुत्रोंकेहो-नेमें महाभारतमें दृष्टान्तभीहै जैसेकिचित्रांगदऔरविचित्रवीर्य दोनोंजबमरगए तबबड़ेभाईजोव्यासजीउनकेवीर्यसे तीनपुत्रउ-त्पन्नकरालिये एकधृतराष्ट्र,दूसरापाण्डु,तीसराविदुर येतीनपुत्र सबसंसारमेंप्रसिद्धहैं औरयुधिष्ठिर,भीम,अर्ज्जुन,नकुलऔरसह-देवयेपांचऔरोंकेनियोगसेउत्पन्नभयेहैं यहबातसंसारमेंप्रसिद्धहै, इससेनियोगकाकरना औरक्षेत्रजादि पुत्रोंकाहोना शास्त्रकीरीति और युक्तिसेठीकहै इसमेंसबश्लोक मनुस्मृतिकेलिखेहैं (पूर्वपक्ष) औरस्मृतिकेश्लोकक्योंनहीलिखे (उत्तरपक्ष) अन्यस्मृतियोंका वेदोंसे विरोध औरवेदमें प्रमाणभीकिसीकानहीहै ऋषिमुनियोंकीकिई

भीकोई स्मृतिनहीं (सिवायमनुस्मृतिके) ॥ यह किस्नमनुरवदत्त-
द्वैषजंभेषजतायाः ।(यहछांदोग्यउपनिषदकीश्रुतिहै) इसकायह
अभिप्रायहै किजोकुछमनुजीनेउपदेशकियाहै सोयथावतवेदोक्त
है औरसत्यहीहै जैसेकिरोगकेनाशकरनेकाऔषधवैसाहोहै यह
एकमनुस्मृतिहीकावेदमेंप्रमाणमिलताहै औरकिसीस्मृतिकानहीं
औरसबलोगोंकोभीयहबातसम्मतहै ॥(किवेदार्थोपनिबन्धृत्वात्प्रा-
धन्यंहिमनोस्मृतम् । मन्वर्थविपरीतायायास्मृतिर्नप्रशस्यते ॥)
इसश्लोकके सबपंडितलोगकहतेहैं किमनुस्मृतिके अनुकूलजोस्मृति
उसकोमाननाचाहिये औरउससेविरुद्धकिसीस्मृतिकानहीं सोएक
बातमें तोपंडितोंकीऔरमेरीसम्मतहोगई परन्तुएकबातमें विरो-
धहोताहै किमनुकेअनुकूलस्मृतियोंकोवेमानतेहैं औरमैंनहीं
मानता क्योंकिमनुस्मृतिकेअनुकूलतोतबकोईस्मृतिहोगीजबमनु-
स्मृतिकेअर्थहीकोकहै फिरमनुजीनेतोवहअर्थकहदियाहै उसका
कहनादूसरीबारव्यर्थहै, क्योंकिपीसेभयेपिसानकाजोपीसना सो
व्यर्थहीहोताहै औरमनुस्मृतिमें जोउपदेशकरनाथा सोसबकर
दियाहै कुछबाकीनहींरक्खा इससेभीअन्यस्मृतिकाहोनाव्यर्थहीहै
इसबातकोपंडितलोगविचारकरलेवें तोबहुतअच्छीबातहै और
महाभारतमेंभीजहांश्प्रमाणलिखातहांश्मनुस्मृतिहीकालिखा
और किसीस्मृतिका नहीं इससे जानाजाताहै किमनुष्योंने ऋ-
षियोंकेनामप्रमाणकेवास्ते लिख २ के शालअपनेप्रयोजनकेवास्ते
बनालियाहै औरजोयहबातकहतेहैं कि कलौपाराशरीस्मृतिः।।
सोतोअत्यन्तअयुक्तहै क्योंकिद्वापरकेअन्तमें व्यासजीने मनुस्मृति
काहीप्रमाणलिखा सोक्योंलिखा शङ्कराचार्यजीनेभीमनुस्मृतिका
हीप्रमाणलिखाहै औरजोसत्यबातहै उसकासबदिनप्रमाणहोता
है इसमें कुछशङ्कानहीं इससेजोपुरुषकहतेहैंकिकलौमें पाराशरी
स्मृतिकाप्रमाणहैसोमिथ्याबातहै औरपाराशरीस्मृतिकेआरंभमें
यहबातलिखोहैकिऋषिलोगोंनेव्यासजीकेपासजाकेपूछाआपहम

सेवर्णाश्रमयथावत्कहैं तबउनसेव्यासजीनेकहाकिमैंयथावत्वर्णा-श्रमधर्मोंकोनहींजानता इससे मेरेपिताजोपाराशरउनसेचलके पूछें वेसबधर्मोंकोयथावत्कहैंगे फिरउनकेपासजाके तबलोगोंने प्रश्नकिया औरपाराशरजोउनसेकहनेलगे उसमेंहोपाराशरजोने कहाकि कलौपाराशराःस्मृताः इसमेंविचारनाचाहिये किव्यास जीवेदादिकसबशास्त्रजाननेवाले वर्णाश्रमधर्मकोक्यानहीजानतेथे किन्तु अवश्यहीजानतेथे औरपाराशरअपनेमुखसेकैसेकहेंगे कि कलौमेंपाराशरउक्तधर्मोंकोमाननायहअयुक्तहै औरउसीमेंऐसे२ अयुक्तश्लोकलिखेहैं किकोईबुद्धिमानउनकाप्रमाणभीनकरै जैसे कि। पतितोपिद्विजश्रेष्ठोनचशूद्रोजितेन्द्रियः। निर्दुग्धावापिगौः-पूज्यानचदुग्धवतोखरी ॥ १ ॥ अश्वालम्भङ्गवालम्भंसन्यासंपलपैतृ-कम्। देवराच्चसुतोत्पत्तिं कलौपंचविवर्जयेत्॥ नष्टे मृतेप्रव्रजिते-क्लीवेचपतितेपतौ। पञ्चस्वापत्सुनारीणां पतिरन्योविधीयते ३ ॥ इनमेंदेखनाचाहिये किकुकर्मीजोहैसोईपतितहोताहै वहश्रेष्ठ कैसेहोगाकभीनहोगा औरजितेन्द्रियअर्थात्श्रेष्ठकर्मकरनेवाला पुरुषहै सोश्रेष्ठकैसेहोगा किन्तु कभीनहोगा औरगायतोपशु है, सोपशुकोक्यापूजाकरनाउचितहै कभीनहीं किन्तुउसकोतो यहीपूजाहै किघास,जलइत्यादिकसेउसकीरक्षाकरना सोभीदु-ग्धादिकप्रयोजनकेवास्ते अन्यथानहीं औरगधेकीभीपूजावैसीही होतीहै जिसकोप्रयोजनरहताहै वहप्रयोजनकेवास्ते कर्ताहीहै ॥ १॥ औरदूसराश्लोकअश्वालम्भनामअश्वमेधगवालम्भनामगोमेध औरसन्यासग्रहण औरमांसकापिण्डदान औरविधवासेदेवरके नियोगसे पुत्रोत्पत्ति येपांचसबकालमेंकरनाचाहिये इनकात्याग कभीनहीं इनसेबड़ासंसारकाउपकारहै औरकुछपापनहीं इसके कहनेसेअजामेधादिकोंकात्यागनहींआया अश्वमेधऔरगोमेधका गोमारनाउसमें बड़ासंसारकाउपकारहै सोमलिनलोकहदिया।और संन्यासकात्यागकरैतोअर्थात्पाखण्डकरेगा जैसेकिवैरागीआदिक

उस्से तोसंसारकीबड़ीहानिहोती इस्से संन्यासकाहोनाअवश्यहै,+ ~~औरमांसकेपिण्डदेनेमेंकुछपापनहीं~~ क्योंकि यदन्नाःपुरुषालोकेतदन्नाःपितृदेवता ॥ १ ॥ यहमहाभारतकावचनहै । मधुपर्केतथायज्ञेपित्र्यदैवतकर्मणि । अत्रैवपशवोहिंस्यानान्यत्रेत्यब्रवीन्मनुः । २ ॥ जोपदार्थआपखायउसीसेपञ्चमहायज्ञकरै अर्थात्पितृदेवपूजाभीउसीसेकरै अर्थात्श्राद्धऔरहोमउसीकाकरै मधुपर्कविवाहादिक औरगोमेधादिकयज्ञ औरदेवपितृकार्य इनमेंमांसकोजोखाताहोय तोउसकेवास्ते मांसकेपिण्डकरनेका विधान है इस्से ~~मांसकेपिण्ड देनेमेंभीकुछपापनहीं~~/ देवराज्ये ष्टमे नियोगकाविधिलिखदिया सोवहीजानलेना कलिमेंपाचोंकानकरनाभीयहबातमिथ्याहीहै २ अर्थातपरदेशकोपतिचलागयाहोय तोस्त्रीदूसरापतिकरले फिरजोपूर्वविवाहितपतिआजायतोदोनोंमेंबड़ाबखेड़ाहोगा क्योंकिएककहेगामेरीस्त्रीहै दूसराकहेगामेरीस्त्रीहै फिरक्यावआधी २ स्त्रीकोकरलेंवापारीलगालें सोइसप्रकारकाकहनामिथ्याहीहै औरपांचप्रकारकेआपत्कालमेंछटहीआपत्आवैगीतावहस्त्रीक्याकरैगीइस्सेयतीनोंश्लोकमिथ्याहीहैंवैसेहीपाराशरीमेंमिथ्याअयुक्तबहुतश्लोककहेहैं औरजोकोईसत्यहैसोमनुस्मृतिहीकाहै इस्से पाराशरीकाप्रमाणकरना सज्जनोंको उचितनहीं औरजैसीपाराशरीवैसीयाज्ञवल्क्यादिकस्मृतियांहैं इस्से मनुस्मृतिकोछोड़केऔरकिसीकाप्रमाणकरनाउचितनहीं इसवास्तेजहां२ प्रमाणलिखावहां २ मनुस्मृतिहीकालिखागया।जबजिसदिनस्त्रीरजस्वलाहोय उसदिनसेलेके१६सोलहदिनतकऋतुकालहै उसमेंसेपहिलेकेचारदिनत्याज्यहैं और११ग्यारहवां,और१३तेरहवांदिनछोड़देना औरअमावस्याऔरपौर्णमासीभीत्याज्यहै अर्थातसोलहमेंसे८आठदिनबाकीरहे उनमेंसेभीछठवां,आठवां,दशवांऔर१२वांदिन वीर्यदानकरनेमेंअच्छेहैं क्योंकिइनदिनोंमेंस्त्रीकेशरीरकोधातु स्वस्वभावसेतुल्यवर्तमानरहतेहैं और५वां,७वां

और८वां येतीनदिनमध्यमहैं क्योंकिउसदिनस्त्रीकेधातुओंकाअधिकबलहोताहै सोपहिले ४ चार दिनोंमें वीर्यदान करेगा तो प्राय:पुत्रहीहोगा अथवा कन्या होगी तो श्रेष्ठही होगी औरजो तीन दिनोंमें वीर्यदान करेगा तो प्राय: कन्या होगी औरनपुंसकभीहोजायतोआश्चर्यनहीं इस्से ४चारदिनअथवा७सातदिन वीर्य्यदानकेउत्तमऔरमध्यमहैं, अन्यदिनमेंसमागमकरेगा तो क्षीणबलसन्तानहोगा इस्से ११ग्यारहवांवा१३तेरहवांअमावस्या औरपौर्णमासीदिनमेंवीर्यदानकरेगातोवीर्यनष्टहोजायगा और जोसन्तानहोगासोभीनष्टहोगा रोगकेहोनेसे क्योंकिउनदिनोंमें स्त्रीकीधातुविषमहोजातीहैं एक २ मासमेंस्त्रीस्वभावसेरजस्वला होतीहै, सोउक्तप्रकारकेसोलहदिनकेपीछेस्त्रीकासमागमकभीन करै क्योंकिमिथ्यावीर्यनष्टहोगा औरगर्भकभीनरहेगा इस्से मिथ्यावीर्यकानाशकभीनकरनाचाहिये जिसदिनसेगर्भहोवैउसदिन सेलेके एकवर्षतकस्त्रीकात्यागकरनाअवश्यचाहिये क्योंकिगर्भका नाश औरपुरुषकाबलभीनष्टहोजाताहै इस्से एकवर्षतकत्यागअवश्यकरनाचाहिये जोपुरुषपरस्त्री अथवावेश्या गमनसे वीर्यनाश कर्तेहैं वेबड़ेमूर्खहैं क्योंकिउनकावीर्यमिथ्याहोजायगा औरबड़े रोगहोंगेजोकभीगर्भरहेगातोभीउसकाकुछफलनहीं क्योंकिजिसकीस्त्रीहै उसीकासन्तानहोगा औरवीर्यदेनेवालेकानहीं और वेश्यासेजोपुत्रहोगा सोभडुआहीहोगा औरजोकन्याहोगी तो वहवेश्याहीहोगी इस्सेवीर्यदेनेवालेंकोकुछलाभनहीं सिवायहानि केऔररोगभीउनकोबड़े२होतेहैं जिस्सेकीबड़ादु:खपातेहैंक्योंकि जबपरस्त्री गमनकोइच्छाकर्ताहै अथवाजिसवक्तसमागमकर्ताहै, तबउसके हृदयमेंभय,शंका औरलज्जापूर्णहोतीहै किइसकर्मको कोईनजानैं जोकोईजानेगातोमेरीदुर्दशाहोजायगी एकतोयहअग्नि,दूसरामैथुनकाअग्निऔरतीसराचिन्ताग्नि किरातदिनउसी चिन्तासेजलताजायगा येतीनोंअग्निसेउसकीधातुसबदग्धहोजा-

तीहैं इस्से महारोगीहोकेमरजाताहै औरयहबड़ापापभीहै इस्से मनुष्यवासोअल्पायुहोजातेहैं औरजोवेश्यागमनकर्ताहै कुत्ताकी नांईवहपुरुषहै क्योंकिजैसेकुत्तासबकाजूंठ औरछांटकियेअन्नको खालेताहै उसकोघृणानहींहोती वैसेहीघृणाकेनहोनेसेसज्जनलोग उसपुरुषकोकुत्तेकेनांईजानैं औरजोव्यभिचारिणीस्त्री औरवेश्या उनकोभीकुत्तीकीनांईजानैं क्योंकिइनकोभीघृणानहींहोतीहै और देखना चाहिये किमालीऔरखेतीकरनेवालेलोग अपनेबागमें औरअपनेहीखेतमेंदृक्षवाअन्नबोतेहैं अन्यकेबागवाक्षेत्रमेंनहीं ये मूर्खभीहैं तौभीपराएबागवाखेतमेंकभीकुछनहींबोतेऔरजोलौंडे बाजीकरतेहैं वेतोसूवरवाकौवेकीनांईहैं क्योंकिजैसेसूवर वा कौवे विष्टासेबड़ीप्रीतिरखतेहैं औरअरुचिकभीनहींकरतेवैसेवेभीपुरुष विष्टाजिसमार्गसेनिकलतीहै उसमार्गमेंबड़ीप्रीतिरखतेहैं, इस्से इसप्रकारकेजोमनुष्यहैंवेमूर्खसेबढ़करहैं किवीर्यजोसबवीजोंसेउत्तमबीजहै उसकोव्यर्थनष्टकरतेहैं औरकेवलपापहीकमातेहैं जो युक्तिसेवीर्यकेरखनेमेंसुखहोताहै उतनासुखलाखवक्तस्त्रीकेसमागमसेभीनहींहोताऔरजब४८वा४४वा४०वा३६वर्षतकब्रह्मचर्याश्रमसेवीर्यकोरक्षाकरैं फिरजबपूर्णबलशरीरमेंहोजायऔरस्त्रीभी ब्रह्मचर्य्याश्रमकरकेपूर्णयुवतीहोजाय तबजोउनदोनोंकोएकवार विषयभोगमेंसुखहोताहै सोबाल्यावस्थामेंविवाहकरनेसेलाखवक्त समागममेंभीसुखनहींहोता औरसंतानभीरोगयुक्तनष्टभ्रष्टहोते हैं जोब्रह्मचर्याश्रमकरनेवालेकेसन्तानहोंगे तोबड़े सामर्थ्यवान् धनवान्शूरवीरविद्यावान्औरसुशीलहीहोंगे इस्से बारंबारलिखनेकायहीप्रयोजनहै किब्रह्मचर्याश्रमतथाविद्याकेबिनामनुष्यशरीरधारनाहीनष्टहै सदाधर्मयुक्तपुरुषार्थसेविद्या,धनतथाशरीर औरनानाप्रकारकेशिल्प इनोंकोवृद्धिहीकरनीउचितहै औरस्त्री लोगोंकेछः दूषणहैं उनकोस्त्रीलोगछोड़दें औरसबपुरुषछोड़ादेवैं । पानन्दुर्जनसंसर्ग:पत्याचविरहोटनम् । स्वप्नोन्यगेहवासश्चनारी-

संदूषणानिषट्॥ यहमनुकाश्लोकहै इसकायहअभिप्रायहै किपानं अर्थातमद्यऔरभंगादिकनशाकाकरना दुर्जनसंसर्गअर्थातदुष्टपुरुषोंकासंगहोना पत्याविरहअर्थातपति औरस्त्रीका वियोगनाम स्त्री अन्यदेश में और पुरुषअन्यदेश में रहै अटन अर्थातपतिको छोड़केजहांतहांस्त्रीभ्रमणकरै जैसेकिनानाप्रकारकेमंदिरोंमेंतथा तीर्थोंमेंस्नानकेवास्ते औरबहुतपाखण्डियोंकेदर्शनकेवास्तेस्त्रीका भ्रमणकरना स्वप्नोन्यगेहवासश्च अर्थातअत्यन्तनिद्राअन्यकेघरमें स्त्रीकासोनाऔरअन्यकेघरमेंवासकरै पतिकेबिनाऔरअन्यपुरुषों केसंगकाहोना येछःअत्यन्तदूषणस्त्रियोंकेभ्रष्टहोनेकेवास्तेहैं किइन छःकर्मोंहीसेस्त्रीअवश्यभ्रष्टहोजायगी इसमेंकुछसंदेहनहीं औ पुरुषोंकेवास्ते भीऐसेबहुतदूषणहैं॥ मात्रास्वस्रादुहित्रावानवि- क्तासनोभवेत्। बलवानिन्द्रियाग्रामो विद्वांसमपिकर्षति॥ माताऔरस्वसा अर्थातभगिनी दुहितानामकन्या इनकेसाथभी एकान्तमें निवासकभीनकरै औरअत्यन्तसंभाषणभीनकरै और नेत्रसेउनकास्वरूपऔरउनकीचेष्टानदेखै जोकुछउनसेकहनावा सुननाहोय सोनीचेदृष्टिकरकेकहैवासुनै इसमेंक्याआयाकिजितनी व्यभिचारणीस्त्रीवावेश्या औरजितनेवेश्यागामीवापरस्त्रीगामीपुरुषहैं उनमेंप्रीतिवासंभाषणअथवाउनकासंगकभीनकरै इसप्रकार केदूषणोंसेहीपुरुषभ्रष्टहोजाताहै क्योंकियहजोइन्द्रियग्रामअर्थात मनऔरइन्द्रियांयेबड़े प्रबलहैं जोकोईविद्वानअथवाजितेन्द्रियवा योगीवेभीइसप्रकारकेसंगोंसेभ्रष्टहोजातेहैं तोसाधारणजोगृहस्थ वामूर्ख वहतोअवश्यभ्रष्टहीहोजायगा इसवास्ते स्त्री वा पुरुषसदा इनदुष्टसङ्गोंसेबचेरहैं औरजोस्त्रियोंकोअत्यन्तबन्धनमेंरखतेहैं यह भीबड़ाभ्रष्टकामहै क्योंकिस्त्रियोंकोबड़ादुःखहोताहै श्रेष्ठपुरुषों कातोदर्शनभीनहींहोता औरनीचपुरुषोंसेभ्रष्टहोजातीहैं देखना चाहिये किपरमेश्वरनेतो सबजीवोंकोस्वतन्त्रबनायेहैं औरउनको मनुष्यलोग बिनाअपराधसेपरतन्त्र अर्थातबन्धनमेंरखदेतेहैं। वे

बड़ापापकर्ते हैं सो इसबातको सज्जनलोगकभीनकरैं यहबातमुसल्मानोंके राज्यसेप्रवृत्तभई है आगेनथी कौन्ती,गान्धारी और द्रौपद्यादिक,स्त्रियां राजसभामें जहांकि राजालोगोंकी सभाहोती थी औरवार्तासंभाषणकरतीथीं अपनेपतिको पंखा और जलादिकोंसे सेवाभीकरतीथीं औरगामोंमें जैयीइत्यादिक ऋषिलोगोंकीस्त्रियां भीसभामेंशास्त्रार्थकरतीथीं यहबातमहाभारत और बृहदारण्यक उपनिषद्में लिखीहै इसकोअवश्यकरनाचाहिये, मुसल्मानलोगों काजबराज्यभयाथा तबजिसकिसीकी कन्या वा स्त्री कोपकड़लेते, औरभ्रष्टकरदेतेथे उसीदिनसेश्रेष्ठआर्य्यावर्त्तदेशवासीलोगस्त्रियों कोघरमेंरखनेलगे औरस्त्रीलोगभीमुखकेऊपरवस्त्ररखनेलगीं सो इसबातकोछोड़देनाचाहियेक्योंकि इसव्यवहारमेंसिवायदुःखके सुखकुछनहीं जैसेदाक्षिणात्यलोगोंकीस्त्रियांवस्त्रधारणकर्ती हैं वैसा हीपहिरनेथा क्योंकिकभीवस्त्र अशुद्धनहीं रहता सबदिनजैसेपुरुषों केवस्त्रशुद्धरहतेहैं वैसेस्त्रीलोगोंकेभीशुद्धरहतेहैं इससे इसप्रकारका वस्त्रधारणकरनाउचितहै, स्त्रीलोगों कोपतिकीसेवा औरतीर्थ के स्थानमें सास,श्वसुर इनतीनोंकीसेवाजोहै सोई उत्तम कर्म है और अपने घरका कार्य और धनादिकोंकी रक्षा करना और सबकुटुंबमेंपरस्परप्रीतिकाहोना सबदिनविद्या औरनानाप्रकार केशिल्पोंकीउन्नतिस्त्रीलोगकरैं औरपुरुषलोगभीघरमेंकलहनकरैं परस्परप्रसन्नहोकेरहना यहीगृहस्थलोगोंकाभाग्यऔरसुखकोउन्नतिहै यहगृहस्थलोगोंकोशिक्षासंक्षेपसेलिखदिया औरजोविस्तारसेदेखनाचाहै तोवेदादिकसत्यशास्त्रऔरमनुस्मृतिमेंदेखलेवै इसकेआगेवानप्रस्थ औरसन्यासियोंकेविषयमें लिखाजायगा॥

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषा विरचिते चतुर्थः समुल्लासः संपूर्णः॥ ४॥

अथवानप्रस्थसन्यासविधिंवच्यामः । ब्रह्मचर्याश्रमंसमाप्यगृही
भवेत् गृहीभूत्वावनीभवेत् वनीभूत्वाप्रव्रजेत् यहबृहदारण्यकउप-
निषद्कीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहैकिब्रह्मचर्याश्रम अर्थात्य-
यावत् विद्याओंकोपढ़के फिरगृहाश्रमीहोय फिरवानप्रस्थहोय
औरवानप्रस्थहोकेसन्यासीहोय ऐसाक्रमहैकिइसमेंजितनेंश्लोक
लिखेंगेवेसबमनुस्मृतिहीकेजानलेउसकेआगेम०ऐसाचिन्हलिख
देंगे । एवंगृहाश्रमेस्थित्वाविधिवत्स्नातकोद्विजः । वनेवसेत्तुनिय-
तोयथावद्विजितेन्द्रियः ॥ १ ॥ इसप्रकारसेविधिवत्गृहाश्रममेंरह
केस्नातकद्विज अर्थात्विद्यावाले ब्राह्मण,चत्रियऔरवैश्य,येतीनों
वानप्रस्थहोवें सोवनमेंजाकेवासकरें यथावत्निश्चयकरकेऔरजि-
तेन्द्रियहोकेसोकिससमयवानप्रस्थहोयकि १॥गृहस्थस्तुयदापश्येत-
वलीपलितमात्मनः । अपत्यस्यैवचापत्यं तदारण्यंसमाश्रयेत् २
म०जबगृहस्थावलीअर्थातशरीरकाचर्मढीलाहोजाय पलितनाम
केशश्वेतहोजांयऔरउसकापुत्रब्रह्मचर्यसेसबविद्याओंकोपढ़केवि-
वाहकरलेवे फिरजबपुत्रकाभीपुत्रहोय तबवहगृहस्थवनकोचला
जाय ॥ २ ॥ संत्यज्यग्राम्यमाहारंसर्वंचैवपरिच्छदम् पुत्रेषुभार्यां-
निक्षिप्यवनंगच्छेत्सहैववा ॥ ३ ॥ म०ग्रामोंकेजितनेपदार्थहैं उन
सभोंकोछोड़देऔरअच्छेवस्त्रादिकभीछोड़दे अर्थातनिर्वाहमात्र
लेजाय उसकोभीछोड़दे वनमेंजाकेअपनीस्त्रीको पुत्रकेपासरखदे
अथवास्त्रीजोकहेकिसेवाकेवास्तेमैंचलूंगीतोसंगमेंलेकेवनकोदोनों
जाय जोस्त्रीकहैकिमैं पुत्रोंकेपासरहूंगी तोउनकोछोड़के एकाकी
जाय॥३॥अग्निहोत्रंसमादाय गृह्यंचाग्निपरिच्छदम्। ग्रामा-
दरण्यंनिःसृत्य निवसेन्नियतेन्द्रियः ॥ ४ ॥ म० अग्निहोत्रकोसब
सामग्रीअर्थातकुण्डऔरपात्रादिकोंकोलेके ग्रामसेनिकलकेजिते-
न्द्रियहोकेवनमेंवासकरै ॥ ४॥ मुन्यन्नैर्विविधैर्मेध्यैःशाकमूलफले
नवा । एतानेवमहायज्ञान् निर्वपेद्विधिपूर्वकम् ॥ ५॥ म०मुन्यन्न
नाममुनियोंकेविविधजोअन्नसांवाकाचावलजोकिवनमेंबिनाबोए

होतेहैं वेमेध्यहोतेहैं अर्थात बुद्धिवृद्धि करनेवालेहैं उनसेशाकजो कि पत्रऔरपुष्पमूलनामकन्द जोकिभूमिमेंसेनिकलतेहैं औरफल इनमेंपूर्वोक्तपंचमहायज्ञोंकोविधिपूर्वकनित्यकरै॥ ५ ॥ वसीतचर्मचीरंवासायंस्नायात्प्रगेतथा। जटाश्चविभृयान्नित्यं श्मश्रु लोमनखानिच ॥ ६॥ भ० मृगचर्मअथवाचीरजोकिवृक्षोंकेछालसेहोता है उसकोधारणकरै शरीरकीरक्षाकेवास्ते सायंकालऔरप्रातःकालदोवेरस्नानकरै जटादाढ़ीमोंछलोमऔरनखइनकोनित्यधारणकरै अर्थातगृहाश्रममेंइनकाधारणकरनाचाहिये सोईलिखा है ॥ ६ ॥ केशान्तःषोड़शेवर्षे ब्राह्मणस्यविधीयते। आद्वविंशात्क्षत्रबन्धोराचतुर्विंशतेर्विशः ॥ ७ ॥ भ०सोलहवर्षमेंब्राह्मण २२वर्षमेंक्षत्रिय२४वर्षमेंवैश्यऔरशूद्रभीदाढ़ीमोंछऔरनखकभीनरक्खें इसमेंयहांवानप्रस्थकेवास्तेधारणलिखा॥ ७ ॥ यद्भक्ष्यंस्यात्ततोदद्यात्बलिंभिक्षांचशक्तितः। अम्मूलफलभिक्षाभिरर्चयेदाश्रमागतान्॥ ८ ॥ भ०जोआपभक्षणकरैउसीसेपंचमहायज्ञसामर्थ्यकेअनुकूलकरै जलमूलनामकन्दफल औरभिक्षाइनसेअपने आश्रममें कोईअतिथिआवै उसकाभीसत्कारकरै॥ ८॥ स्वाध्यायेनित्ययुक्तःस्यादान्तोमैत्रःसमाहितः। दातानित्यमनादातासर्वभूतानुकम्पकः॥ ९ ॥ भ० स्वाध्याय अर्थातशास्त्रकेविचार अथवायोगाभ्यास मेंनित्ययुक्तहोय औरदान्तनामउदारतासेसबइन्द्रियोंकोजीतेसबसेमित्रतारक्खै समाहितनामशरीरऔरचित्तकासमाधानरक्खै अपनेयकर्मकाभीसमाधानरक्खै नित्यऔरोंकोदेवैआपकिसीसेन लेवै औरसबजीवोंकेऊपरकृपारक्खै पक्षपातरहितकभीयथावतकरै॥ ९॥ नफालकृष्टमश्नीयादुत्सृष्टमपिकेनचित्। नग्रामजातान्यार्तोऽपिमूलानिचफलानिच ॥ १० ॥ भ० फालकृष्टअर्थातहलकेजोतनेसे जो अन्नजोकुछहोताहै उसकोकभीनग्रहणकरै औरखेतवाखरिहानमेंकूड़ाभयाजोअन्न उसकाभीग्रहणनकरै औरजोग्रामकेमूल वाफलउनकोग्रहणकभीनकरै॥१०॥ अग्निपक्वाशनोवास्यात्कालपक्व-

भुगेचवा। अश्मकुट्टोभवेद्वापिदन्तोलूखलिकोपिवा॥ ११॥ भ० अग्निपक्वाशनअर्थातअग्निमेंपकाकेखावै कालपक्वभुग्अर्थातजोआप सेहवोंमेंफलपकजांय उनकोखावे अश्मकुट्टअर्थातपाषाणसेकूटर के फलादिकोंकोखाय दन्तोलूखलिकनाम दांततोमूसलकीनांई औरमुखउलूखलकीनांई वैसेहोहाथसे फलादिकलेके मुखऔर दांतोसेखालेवै ११॥ सद्यःप्रक्षालकोवास्यात्मासमंचयिकोपिवा। षण्मासनिचयोवास्यात्समानिचयएववा॥ १२॥ भ० एकतोयह दोचाहैकिजितनेसेअपनानिर्वाहहोयउतनाहीलेआवै दूसरेदिन केवास्ते नरक्खै दूसरीयहहैचाहैकिमासभरकेवास्ते फलादिकों कासंचयकरलेवै अथवाछःमासपर्यन्तकासंचयकरलेवै यहतीसरी दोचाहै चौथीदोचायहहैकिसालभरकासंचयकरले इत्यादिक ब- ज्ञतवानप्रस्थकेवास्ते व्रतलिखेहैं १२॥ ग्रीष्मेपंचतयास्तुवर्षास्वभ्रा- वकाशिकः। आर्द्रवासास्तुहेमन्तेक्रमसोवर्द्धयंस्तपः॥१३॥ भ० ग्रीष्मनामवैशाखज्येष्ठमेंजबसूर्यदशघंटाकेऊपरआवैतबचारोदि- शाओंमेंअग्निकरदे आपबीचमेंबैठे जबतकतीनतवजैतबतकऔर वर्षाकालमेंमैदानमेंबैठे औरअपनेऊपरछायाकुछनरहै शीतकाल मेंगीलेवस्त्रधारणकरै इत्यादिकप्रकारोंसेअत्यन्तउग्रतपकरै क्योंकि विनातपअन्तःकरण शुद्धनहीहोता और इन्द्रियोंकाजय भीनहीं होता इससेअवश्यतपकरनाचाहिये॥१३॥ अग्नीनात्मनिवैतानान्- समारोप्ययथाविधि। अनग्निरनिकेतःस्यान्मुनिर्मूलफलाशनः॥ २४॥ भ० जपतपसेमनऔरइन्द्रियांसववशीभूतहोजांय तबअग्नि आहवनीहगार्हपत्यदक्षिणात्यसभ्यऔरआवसथ्य यहपांचप्रकार का अग्नि होता है औरवैतान अर्थात इष्टियों की सामग्री और अग्निहोत्र की सामग्री उनको वाह्यक्रिया को छोड़दे क्योंकिजि तनीवाह्यक्रियाहैं वेमनकीशुद्धीकेलियेहैं, सोजबमनशुद्धहोजाय तबउनकेकरनेकाकुछप्रयोजननहीं किन्तुकेवलभीतरकीजोक्रिया अर्थातयोगाभ्यासऔरविचारइन्हीकोकरै॥ १४॥ अप्रयत्नःसुखा-

र्थेषुब्रह्मचारीशराश्रयः । शरणेष्वममश्चैववृक्षमूलनिकेतनः १५ ॥ म॰ शरीरवा इन्द्रियोंके सुखकी कुछ इच्छा न करै किन्तु उनका त्याग ही करै और ब्रह्मचारी रहै अर्थात् अपनी स्त्री संग में भी होय तो भी उस्से संग कभी न करै किन्तु स्त्री तो वन में सेवा के वास्ते ही है और भूमि में शयन करै शरण अर्थात् जहां२ रहै अथवा बैठे उस में ममता कि यह मेरा ही है ऐसा अभिमान कभी न करै किन्तु वहां से कोई उठा दे तो उठ के चला जाय दूसरी जगह जाके बैठे क्रोधादिक कुछ भी न करै, किन्तु प्रसन्न ही रहै ॥ १५ ॥ तापसेष्वेव विप्रेषु याचिकं भैक्षमाहरेत् । गृहमेधिषु चान्येषु द्विजेषु वनवासिषु ॥ १६ ॥ वन में अन्य जितने वानप्रस्थ लोग होवें उनसे अपने निर्वाहमात्र भिक्षा कर ले अधिक नहीं अथवा ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य ये तीनों गृहाश्रमी वन में रहते होवें उनसे अपने निर्वाहमात्र भिक्षा कर ले ॥ १६ ॥ ग्रामादाहृत्य वाश्नीयादष्टौग्रासान्वने वसन् । प्रतिगृह्य पुटेनैव पाणिना शकलेन वा ॥ १७ ॥ म॰ जब दृढ़जितेन्द्रिय हो जाय तो भी वन में रहै परंतु कभी२ ग्राम में चला आवै भिक्षा करने के वास्ते अपने दोना वा एक हाथ में जो गृहस्थों को घर में अन्न भया होय उसको प्रीति से जितना कोई दे वै उतना ले लवै परन्तु आठ ग्रास मात्र ले फिर उसको लेके वन में चला जाय जहां कि जल होय वहां बैठ के आठ ग्रास खा ले अधिक नहीं ॥ १७ ॥ एताश्चान्याश्च सेवेत दीक्षा विप्रो वने वसन् । विविधाश्चौपनिषदीरात्मसंसिद्धये श्रुती ॥ १८ ॥ म॰ ऋषिभिर्ब्राह्मणैश्चैव गृहस्थैरेव सेविताः । विद्यातपोविवृद्ध्यर्थं शरीरस्य च शुद्धये ॥ १९ ॥ म॰ इन दीक्षाओं को और अन्य दीक्षाओं को भी वन में रहना भया वहु वानप्रस्थ सेवन करै नाना प्रकार की जो उपनिषदों की श्रुति उनको आत्मज्ञान अर्थात् ब्रह्मविद्या के वास्ते नित्य विचारै ॥ १८ ॥ ऋषियों ने अर्थात् यथावत् वेद के मन्त्रों के अर्थ जानने वाले और ब्राह्मणों ने अर्थात् ब्रह्मविद्या के जानने वालों ने और गृहस्थों ने अर्थात् पूर्ण विद्या वाले धर्मात्माओं ने जिन स्मृतियों का सेवन किया होय उनको नित्य योगाभ्यास और ज्ञानदृष्टि से

विचारकरैं क्योंकिविद्या अर्थातब्रह्मविद्या औरतप अर्थात योग सिद्धिइनकीवृद्धिके औरशरीरको शुद्धिकेवास्ते अर्थात दशेन्द्रियां पांचप्राण मन,बुद्धि,चित्तऔरअहंकार इन १९ सतत्त्वोंके मिलनेसेलिंगशरीरकहाताहै इसकेशुद्धिकेवास्ते ॥ १९ ॥ आसांमहर्षिचर्य्याणांत्यक्त्वान्यतमयातनुम्। वीतशोकभयोविप्रोब्रह्मलोकेमहीयते॥२०॥ भ० इनमहर्षियोंकीक्रियाओंकेमध्यकिसीक्रियाको करकेशरीरछूटजाय तोभीवहविद्वानशोकभयादिकदुःखोंसे छूटके ब्रह्मलोकअर्थात परमेश्वरकोप्राप्ति अथवाउत्तमस्वर्गकीप्राप्तिउसे होतीहै।२० वनेषुचविहृत्यैवंतृतीयंभागमायुषः।चतुर्थमायुषोभागं त्यक्त्वासंगान्परिव्रजत्॥२१॥ भ० इसप्रकारसेवानप्रस्थाश्रमकोयथावत् आयुकेतीसरेभागकोसमाप्तिपर्यन्त वनोंमेंविहारकरकेजब आयुकाचतुर्थभाग अर्थात७० सत्तरवर्षकेऊपर आयुकेचतुर्थभाग मेंसबसंगोंका अर्थातस्त्रीयज्ञोपवीत शिखादिककोछोड़के परिव्राट् अर्थातसबदेशान्तरमेंभ्रमणकरैंकिसीपदार्थमेंमोहवापक्षपातकभी नकरैं वहस्त्रीअपनेपुत्रोंकेपासचलीजाय अथवावनमेंतपश्चर्य्याकरै ॥ २१ ॥ इसमेंकोईशंकाकरै कियज्ञोपवीतादिकचिन्होंकेछोड़नेसे क्याहोताहै अर्थातइनकोनछोड़नाचाहिये उत्तर अच्छायज्ञोपवीतादिकचिन्होंकेरखनेसेक्याहोताहै पूर्वपक्षयज्ञोपवीतादिकोंसे द्विजदेखपड़ताहै औरविद्याकेचिन्हसे विद्याकीपरीक्षाभीहोतीहै उत्तर किजबसंसारकेव्यवहार औरअग्निहोत्रादिक बाह्यक्रियां जिनमेंउपवीतिनिवीति औरप्राचीनावीति यज्ञोपवीतसेक्रियाकरनीहोतीहैं उनअग्निहोत्र बाह्यक्रियाओंकोतोछोड़दिया और कहींप्रतिष्ठाविद्यासेकरानीउसकोनहीं फिरयज्ञोपवीतादिकका रखनाउसकोव्यर्थहीहै इसमेंयहप्रमाणहै। प्राजापत्यांनिरूप्येष्टिं तस्यांसर्ववेदसंहुत्वाब्राह्मणःप्रव्रजेत्॥ यहयजुर्वेदकेब्राह्मणकीश्रुति है इसकायहअभिप्रायहै किप्राजापत्यइष्टिकोकरकेउसमें सर्ववेद सर्वेदसविहलाभे शौरयज्ञोपवीतादिक बाह्यचिन्हप्राप्तहुयेथे उन

सभोंको छुत्वा नामं त्यक्त्वा अर्थात छोड़के ब्राह्मणविद्वान्। नत्वा नतया वैराग्य इत्यादिक गुणवाला परिव्रजेत् परितः सर्वतः व्रजेत् सब संसार के बन्धनों से मुक्त होके सन्यासी होजाय। लोकैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च पुत्रैषणायाश्चोत्थायाथ भिक्षाचर्यं चरति। यह बृहदारण्यक उपनिषद्‌की श्रुति है इसका यह अभिप्राय है कि लोकैषणा अर्थात लोक को जन निन्दा करैं वा स्तुति करैं और अप्रतिष्ठा करैं तो भी जिसके चित्त में कुछ हर्ष और शोक होय और जितने लोकके विषयभोग हैं, सो धन हस्ती अश्व चन्द्रनादिक इनसे उठके अर्थात इनको तुच्छ जानके जैसे वे हर्ष शोकके देने वाले हैं वैसे यथावत समझके सत्यधर्म और मुक्ति अर्थात सब दुःखोंकी निवृत्ति और परमेश्वरकी प्राप्ति इनमें स्थिर होके आनन्द में रहै और किसीका पक्षपात अथवा किसी से भय कभी न करै वित्तैषणा अर्थात धनकी इच्छा और धनकी प्राप्ति में प्रयत्न और लोभ कि सुभको धन अधिक होय और जितने धनाढ्य हैं उनसे धन प्राप्तिके वास्ते बहुत प्रीति करै द्रव्यको बड़ा पदार्थ जानके संचय करना और दरिद्रों से धनके नहीं होनेसे प्रीति का न करना और धनाढ्यों की स्तुति न करना इन सब बातोंका जो छोड़ना उसका नाम वित्तैषणाका त्याग है पुत्रैषणा अर्थात अपने पुत्रोंमें मोहका करना वा जे सेवक लोग हैं उनसे मोह अर्थात प्रीति करना और उनके सुखमें हर्षका होना और उनके दुःखमें शोकका होना उसका पुत्रैषणा नाम है एषणा नाम इच्छाका तीन पदार्थोंमें होना इन तीनों एषणाओंसे जो बहुत हो है वही सन्यासी होता है और पक्षपात रहित भी सन्यासी यथावत् होता है क्योंकि जितने ब्रह्मचारी, गृहस्थ और वानप्रस्थ हैं उनको बहुत व्यवहारोंके होनेसे बुद्धिमान होय तो भी भय, शंका और लज्जा कुछ किसी व्यवहारमें रहती ही है और जो सन्यासी होता है उसको किसी संसार सम्बन्धी व्यवहारका करना आवश्यक नहीं वा किसी मनुष्यसे शंका, लज्जा, भय और पक्षपात कभी नहीं होता। आश्रमादाश्रमं गत्वा हुतहोमो जितेन्द्रियः। भिक्षाबलिपरिश्रान्तः प्रव्रजन्त्यत्य-

ई ते ॥ २२ ॥ भा० आश्रमसे आश्रमकोजाके अर्थात् क्रमसे ब्रह्मचर्या-
श्रमादिकतीनोंकोकरके यथावत् अग्निहोत्रादिक यज्ञोंकोकरके
जितेन्द्रियजबहोजाय भिक्षादेदे औरबली अर्थात्बलीवैश्वदेवकरके
परिश्रान्त अत्यन्तश्रमयुक्तजबहोय तबसन्यासलेतोउसका सन्यास
यथावत्बढ़ताजायखंडितनहोय ॥ २२ ॥ ऋणानित्रीण्यपाकृत्यम-
नोमोक्षेनिवेशयेत्। अनपाकृत्यमोक्षन्तुसेवमानोव्रजत्यधः ॥ २३ ॥
भा० तीनऋण अर्थात् ऋषिपितृ और देवऋण इनकोकरके मोक्षके
वास्तेसन्यासमेंचित्तप्रविष्टकरै और इनतीनोंकोनकरके जोसन्यास
कोइच्छाकताहै सोनीचेगिरपड़ताहै उसकोमोक्षनहीप्राप्तहोता
२३ ॥ वेकौनतीनऋणहैं अधीत्यविधिवद्वेदान्पुत्रांश्चोत्पाद्यधर्मतः।
इष्ट्वाचशक्तितोयज्ञैर्मनोमोक्षेनिवेशयेत्॥ २४॥ भा० विधिवत् अर्था-
त्उक्तप्रकारसे ब्रह्मचर्याश्रमकोकरके सबवेदोंकोपढ़ै अर्थसहित
और अङ्गउपवेद और छःशास्त्रसहितपढ़ै फिरपढ़केयथावत्पढ़ावे,
क्योंकिविद्याकालोपइसप्रकारसेकभीनहोगा यहप्रथमऋषिऋण
है इसमें जपऔरसंध्योपासनभीजानलेना सबमनुष्योंकेऊपरयह
परमेश्वरकीआज्ञाहै किब्रह्मचर्याश्रमसेविद्याओंकोपढ़नाऔरप-
ढ़ाना इसकेबिनासबआश्रमनष्टहैं जैसेकिमूलकेबिना वृक्षनष्टहो
जाताहै उक्तप्रकारसेपुत्रोंकोशिक्षा धर्मकीविद्यापढ़ने औरपढ़ाने
कोकरै अपनीकन्याअथवाअपनापुत्र विद्याकेबिनाकभीनरहै सब
श्रेष्ठगुणवालेहोवैं ऐसाकर्ममातापिताकोकरनाउचितहै औरजो
अपनेसन्तानोंकोश्रेष्ठगुणवालेनकरेंगे तोउनमातापिताओंनेबा-
लककोजैसामारडाला फिरमारनातोअच्छा परन्तु मूर्खरखना
अच्छानहीं इसीमेंउक्तप्रकारसेतर्पण औरश्राद्धभीजानलेना यह
दूसरापितृऋणहै फिरगृहाश्रममेंयथावत्अग्निहोत्रादिकोंकाअ-
नुष्ठानकरै जिस्सेकिसबसंसारकाउपकारहोय इस्से उसकाभीबड़ा
उपकारहै अर्थात्पुण्यसेसुखपाताहै सोइनतीनऋणोंकोउतारके
मोक्षअर्थात्सन्यासकरनेमेंचित्तदेवैं अन्यथानहीं ॥ २४ ॥ अनधी-

त्यद्विजोवेदानधीत्योत्पाद्यतथासुतान्। अनिष्ट्वाचैवयज्ञैश्चमोक्षमिच्छन्-व्रजत्यधः॥ २५॥ भ० द्विजअर्थातब्राह्मणक्षत्रियऔरवैश्यवेदोंकोन पढ़के यथावतधर्मोंसे पुत्रोंकाउत्पादनभीनकरैं अग्निहोत्रादिक यज्ञभीनकरैं फिरजोमोक्षअर्थात्सन्यासकीइच्छाकरै सन्यासतो उसकानहोगाकिन्तुसंसारहीमेंगिरपड़ेगा॥ २५॥ एकबाततोसन्यासकेक्रमकीहोगई दूसरीयहबातहैकि प्राजापत्यांनिरूप्येष्टिं सर्ववेदसदक्षिणाम्। आत्मन्यग्नीन्समारोप्य ब्राह्मणःप्रव्रजेगृहात्॥ २६॥ भ० प्राजापत्यइष्टिकासबयथावत्निरूपणकरके उसमेंसर्ववेदसअर्थातयज्ञोपवीतादिकजितनेचिन्हप्राप्तभयेथे उनकोदक्षिणा मेंदेकेऔरपूर्वोक्तपांचअग्नियोंकोआत्मामेंसमारोपणकरकेब्राह्मणअर्थातविद्वानवानप्रस्थकोभीनकरै अर्थात्गृहाश्रमहीसेसन्यास लेलेवै॥ २६॥ योदत्वासर्वभूतेभ्यःप्रव्रजत्यभयंगृहात्। तस्यतेजोमयालोकाभवन्तिब्रह्मवादिनः॥ २७॥ भ० जोसबभूतोंकोअभयदान अर्थात ब्रह्मविद्यादानदेके घरसेहीसन्यास लेताहै तिसको तेजोमयलोकप्राप्तहोताहै अर्थातपरमेश्वरहीप्राप्तहोतेहैं फिरकभीजन्ममरणमेंवहपुरुषनहीआता सदाआनन्दमेंहीपरमेश्वरको प्राप्त होकेरहताहै॥२७॥ आगारादभिनिष्क्रान्तःपवित्रोपचितोमुनिः। समुपोढेषुकामेषुनिरपेक्षःपरिव्रजेत्॥ २८॥ भ० आगारअर्थात ब्रह्मचर्याश्रमसेभीसन्यासलेले परंतुअभिनिष्क्रान्तजबअन्तर्मुखमन होजाय किविषयसेवाकी इच्छाथोड़ीभीनहोय औरपवित्रगुणोंसे अर्थात शमदमादिकोंसे उपचित नाम जबयुक्त होय और मुनि अर्थात मनन शील सत्य२ विचार वाला होय और सब कामों कोजीतले कोईकामउसकेमनको अधर्ममेंनलगासके स्थिरचित्त होय निरपेक्षकिसीसंसारकेपदार्थकी सिवायपरमेश्वरकीप्राप्तिकी अपेक्षानहो यतबब्रह्मचर्याश्रमसेभीसन्यासलेवैतोभीकुछदोषनहीं २८॥ इसमेंश्रुतियोंकाभीप्रमाणहै यदहरेवविरजेततदहरेवप्रव्रजेद्वनाद्वागृहाद्वा१ ब्रह्मचर्यादेवप्रव्रजेत् २॥ यहयजुर्वेदकेब्राह्मण

कोश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहैकिजिसदिनपूर्णवैराग्यहोय उसी
दिन सन्यासीहोजाय वानप्रस्थाश्रम अथवा गृहाश्रमसे औरजब
पूर्णविद्याऔरपूर्णवैराग्यऔरपूर्णज्ञान, औरविषयभोगकीइच्छा
कुछभीनहोय तोब्रह्मचर्याश्रमसेहीसन्यासलेलेवैतोभीकुछदोषन-
नीं पूर्वपक्षयहबातपरमेश्वरकीआज्ञासेविरुद्धहै क्योंकिपरमेश्वर
काअभिप्रायप्रजाकीवृद्धिकरनेमेंजानाजाताहै औरप्रजाकीहानिमें
नहीं जोकोईसन्यासलेगा सोविवाहनकरेगा इस्से संसारकीवृद्धि
नहोगी इसवास्ते सन्यासकालेनाउचितनहीं जबतकजियेतबतक
गृहाश्रममें रहकेसंसारकेव्यवहार औरशिल्पविद्याओंकोउन्नति
करै इस्से सन्यासकाकरना उचितनहीं किन्तु ब्रह्मचर्याश्रमसेवि-
द्यापढ़केगृहाश्रमहीमेंरहनाउचितहै उत्तरपक्षऐसाकहनाउचि
तनहींक्योंकिब्रह्मचर्याश्रमनहोगातोविद्याकीउन्नतिनहोगी और
गृहाश्रमनकरनेसे आगेमनुष्यकीउत्पत्ति संसारकाव्यवहारयेसब
नष्टहोजांयगे औरबानप्रस्थके नहोनेसे मनभी शुद्धनहोगा और
सन्यासकेनहोनेसे सत्यविद्या औरसत्योपदेशकी उन्नति नहोगी
पाखंडऔरअधर्मका खण्डनभीनहोगा इस्से संसारकी उन्नतिका
नाशहोगा क्योंकिज्ञानकीवृद्धिहोनेसे सबसुखोंकीवृद्धिहोतीहै अ-
न्यथानहीं इसमेंदेखनाचाहिए।ब्रह्मचारीकोपढ़नेसेरातदिनअ-
वकाशहीनहीरहताऔरगृहस्थकोभीबहुतव्यवहारकेहोनेसेचित्त
फसाहीरहताहै औरबानप्रस्थकातपहीमेंचित्तरहताहै औरकुछ
विचारभीकताहै जोसन्यासीहोगा वह बिचारकेबिना अन्यव्यव-
हारहीनरहेगा इस्से पृथ्वीसेलेकेपरमेश्वरपर्यन्तपदार्थोंकायथा-
र्थविचारकरकेऔरोंकोभीउपदेशकरेगा सबदेशोंमेंभ्रमणकरेगा
इस्से सबदेशोंकेमनुष्योंकोउसकेसंग औरसत्यउपदेशके सुननेसेब-
हुतलाभहोगा जोगृहस्थहोगा उसकाजहां २घरहै वहां २ प्रायः
रहेगाअन्यत्रभ्रमणनकरसकेगा इस्से सन्यासकाहोनाभीउचितहै
परमेश्वरन्यायकारीहै औरविद्याकीउन्नतिभीचाहताहै जिसको

विषयभोगकीइच्छानहोगी उसकोपरमेश्वरकैसेआज्ञादेगें कितू विवाहकर जैसेकिकोईपुरुषको रोगकुछनहीं उससे वैद्यकहैकितू कुछऔषधखा वहऔषधक्योंखायगा औरजिसकोभोजनकरनेकी इच्छानहोय उसकोकोईबलसे कहेकितू अवश्यभोजनकर तोवह विनाक्षुधाकेभोजनकैसेकरेगाकिन्तु कभीनकरेगा ऐसेहोजिसको विषयभोग औरसंसारकेव्यवहारोंकीइच्छानहीं वहविवाह और संसारकेव्यवहारकैसेकरेगा कभीनकरेगा संसारकेजनोंमेकुछप्रयोजन न होने से सबके मुख पर सत्यही कहेगा अपने सामने जैसा राजा वैसोही प्रजा को समुझेगा इसवास्ते जिस पुरुषको विद्या, ज्ञान, वैराग्य, पूर्णजितेन्द्रियता होय और विषय भोग कीइच्छानहोय उसीको सन्यासलेना उचितहै अन्यको नहीं जैसे किआजकालआर्यावर्त्तदेशमेंबहुतसंप्रदायीलोगहोगयेहैंवेकेवल धूर्त्तासेपराधनहरणकरलेतेहैं औरपराईस्त्रीकोभ्रष्टकरदेते हैं औरमूर्खतातथापक्षपातकेहोनेसे मिथ्याउपदेशकरके मनुष्यों कीवुद्धिनष्टकरदेतेहैंऔरअधर्ममेंप्रवृत्तकरादेतेहैंइस्सेइनकातोबन्दहीहोनाउचितहै क्योंकिइनकेहोनेसेसंसारकाबहुतअनुपकार होताहै ॥ कपालंवृक्षमूलानिकुचैलमसहायता। समताचैवसर्वस्मिन्नेतन्मुक्तस्यलक्षणम् ॥ २८ ॥ म० कपालअर्थातभिक्षापात्रवृक्षके जडमेंनिवास औरकुत्सितवस्त्र औरसबकेऊपरसमबुद्धि नकिसीमे प्रीति औरनकिसीसेवैर यहमुक्तपुरुष अर्थातसन्यासीका लक्षण है ॥ २८ ॥ नाभिनन्देतमरणंनाभिनन्देतजीवितम। कालमेवप्रतीक्षेतनिर्द्देशंभृतकोयथा ॥ ३० ॥ म० जोसन्यासीहोयसोमरने औरजीनेमेंशोकवाहर्षनकरै किन्तु कालकोप्रतीक्षाकियाकरै जब मरणसमयआवैतबशरीरछोड़दे शरीरसेमोहकुछनकरै जैसाकि छोटानौकरस्वामीकीआज्ञाजबहोतीहै तभीवहकामकरनेलगता है जहांकहैवहांचलाजाताहै औरसन्यासीकिसीपदार्थसे सिवाय परमेश्वरकेमोहवाप्रीतिनकरै ॥ ३०॥ दृष्टिपूतंन्यसत्पादंवस्त्रपूतंज-

लंपिवेत्। सत्यपूतांवदेद्वाचंमनःपूतंसमाचरेत्॥ ३१॥ भ० इसका अर्थतो पहिलेकरदियाहै परन्तु सन्यासधर्मकेप्रकरणमें लिखनेका यहप्रयोजनहै किवहुतलोगकहतेहैं किसन्यासीकिसीकोउपदेशन करै इनसेपूछनाचाहिएकि सत्यपूतांवदेद्वाक्यं सत्यअर्थातप्रमाण औरविचारसे यथावत निश्चयकरके सत्यउपदेशकरै सबबिद्यासे जोपूर्ण बिद्वान् सन्यासी सोतो उपदेश न करै और जितने पाखण्डो मूर्खलोग हैंवे उपदेश करैं तभोतो संसार का सत्यानाश होताहै जितनेमूर्खपाखण्डी उनकातो ऐसाप्रबन्धकरनाचाहिए कि वेउपदेशहीनकरनेपावैं औरजितने बिद्वानसन्यासी लोगहैं वे सदाउपदेशकियाकरैं अन्यकोईनहीं अन्यथामूर्खपाखण्डियोंकेउपदेशसेदेशकानाशहोताहै जैसेकिआजकालआर्यावर्त्तदेशकीअवस्थाभईहै ॥ ३१ ॥ क्रुध्यन्तंप्रतिनक्रुध्येदाक्रुष्टःकुशलंवदेत्। सप्तद्वारावकीर्णाञ्चनवाचमनृतांवदेत्॥ ३२॥ भ० जोकोईक्रोधकरै उससे सन्यासीक्रोधनकरै औरकोईनिन्दाकरैउसकोभीकल्याणकाउपदेशकरै किञ्चसप्तद्वारमुखनाशिकाकेदोछिद्रदोछिद्रआंखके औरकानकेइनसातद्वारोंमेंजोवाणीबिखररहीहै उससेमिथ्याकभीनकहै अर्थातसन्यासीसदासत्यहीबोलै॥ ३२ ॥ कॢप्तकेशनखश्मश्रुःपात्रीदण्डीकुसुम्भवान्। विचरेन्नियतोनित्यं सर्वभूतान्यपीडयन् ॥ ३३ ॥ भ० केशसिरकेसबबालनखऔरश्मश्रु अर्थातदाढ़ीमोंछइनकोकभीनरक्खै अर्थातछेदनकरादेवैपात्रीएकहीपात्ररक्खै और एकही दंड रक्खै इससे तीनदण्डोंका धारना पाखण्डही है जैसाकिचक्रांकितोंका कुसुंवा रंगसेरंगेबस्त्रपहिरैं औरगेरूवाम्रत्तिकाकेरंगेनहीं अथवाश्वेतबस्त्रधारणकरैं निश्चयबुद्धिहोकेसबभूतोंसेरागद्वेषछोड़केअपनेब्रह्मानन्दमेंबिचरै ॥ ३३॥ एककालंचरेद्भैक्षंनप्रसज्जेतबिस्तरे। भैक्षेप्रसक्तोहियतिर्बिषयेष्वपिसज्जति ॥ ३४ ॥ एकवेरभिक्षाकरै अत्यन्तभिक्षामेंआसक्तनहोय क्योंकिजो भोजनमेंआसक्तहोगा सोविषयमेंभीआसक्तहोगा ॥ ३४॥ विधूमे-

सन्नमुसले व्यङ्गारे भुक्तवज्जने । वृत्ते शरावसंपाते भिक्षां नित्यं य-
तिश्चरेत्॥ ३५ ॥ भ० जबगांवमें धूम न देखपड़े मूसल वा चक्की का श-
ब्द न सुनपड़े किसी के घरमें अंगार न देखपड़े सब गृहस्थ लोग भोजन
करचुकें और भोजन करके पत्तों और सकोरे बाहर को फेंकदेवें उस
समय सन्यासी गृहस्थ लोगों के घरमें भिक्षा के वास्ते नित्य जांय और
जो ऐसा कहते हैं कि हम पहिले ही भिक्षा करेंगे यह उनका पाखंड ही
जानना क्योंकि गृहस्थ लोगों को पीड़ा होती है और जो विरक्त हो के
वैरागी आदिक अपने हाथमें ले के करते हैं वे बड़े पाखण्डी हैं ॥ ३५ ॥
अलाभे न विषादीस्यात् लाभेचैव न हर्षयेत् । प्राणयात्रिकमात्रःस्या-
न्मात्रासंगाद्विनिर्गतः ॥ ३६ ॥ भ० जब भिक्षा का लाभ न होय तब वि-
षाद न करै और लाभ में हर्ष न करै प्राण रक्षण मात्र प्रयोजन रक्खै
भिक्षा में प्रसक्त न होय और विषयों के संगों से पृथक रहै ॥ ३६ ॥ अभि-
पूजितलाभांस्तु जुगुप्सेतैव सर्वशः । अभिपूजितलाभैश्च यतिर्मुक्तो-
पि बध्यते ॥ ३७ ॥ भ० अत्यन्त श्रेष्ठ पदार्थ स्तुत्यादिक उनकी निंदा
ही करै क्योंकि स्तुत्यादिक बन्धन ही करनेवाले हैं मुक्त भी होय तो
भी इस से बद्ध ही होजाता है ॥ ३७ ॥ अल्पान्नाभ्यवहारेण रहःस्था-
नासनेन च । ह्रियमाणानि विषयैरिन्द्रियाणि निवर्तयेत् ॥ ३८ ॥ इ-
न्द्रियाणि निरोधेन रागद्वेषक्षयेण च । अहिंसया च भूतानाम् अमृत-
त्वाय कल्पते ॥ ३९ ॥ भ० इन्द्रियों का निरोध रागद्वेष और अहिंसा
इन चारों का जो त्याग कर्ता है सोई मोक्ष का अधिकारी होता है अन्य
कोई नहीं ॥ ३९ ॥ दूषितोपि चरेद्धर्मं यत्र तत्राश्रमे रतः । समस-
र्वेषु भूतेषु न लिंगं धर्मकारणम् ॥ ४० ॥ भ० जिस किसी आश्रम में दोष
युक्त पुरुष भी होय परन्तु धर्म ही को करै और सब भूतों में समबुद्धि अ-
र्थात रागद्वेष रहित होय सोई पुरुष श्रेष्ठ है जितने बाह्य चिन्ह हैं य-
ज्ञोपवीत दंड दोनों को धारण करै और धर्म न करै तो धारणमात्र ही
से कुछ नहीं होसक्ता और तिलक, छापा, माला ये तो सब पाखण्डों ही
के चिन्ह हैं इनको तो कभी न धारना चाहिये ॥ ४० ॥ फलंकतकवृक्ष-

स्वयद्यप्यंबुप्रसादकम् । ननामग्रहणादेवतस्यवारिप्रसीदति ४१।
म० यद्यपिकतकनामनिर्मलीहृचकाफल जलकोशुद्धकरनेवालाहै
सोजबउसकोपीसकेजलमेंडाले तबतोजलशुद्धहोजाताहै औरजो
पीसकेनडाले कतकद्दचस्यफलायनमः ऐसा माला लेकेजप कि
याकरै वाउसकानाम जलकेपासलियाकरै, उस्से जलकभीनशुद्ध
होगावैसेहीनाममात्रसेकुछनहीं होताजबतकधर्मनहींकरता ४१
प्राणायामाब्राह्मणस्य त्रयोपिविधिवत्कृताः । व्याहृतिप्रणवैर्युक्ता-
विज्ञेयंपरमंतपः ॥ ४२ ॥ म० ओमभूः,ओमभुवः,ओमस्वः,ओम्
महः,ओम्जनः,ओमतपः,ओम्सत्यं इसमन्त्रकाहृदयमेउच्चारण
करै पूर्वोक्तरीतिसे तीनबारभीप्राणोंका निग्रहकरै तोभी उससं-
न्यासीकापरमतपजानना ॥ ४२ ॥ दह्यन्ते ध्यायमानानांधातूनां-
हियथामलाः । तथेन्द्रियाणांदह्यन्ते दोषाःप्राणस्यनिग्रहात् ४३ ॥
म० जैसेसुवर्णादिकधातुओंको अग्निमेंतपानेसेमैलनष्टहोजाताहै
वैसेहीप्राणकेनिग्रहमेइन्द्रियोंकेमलभस्महोजातेहैं । ४४ ॥ प्राणा-
यामैर्दहेद्दोषान्धारणाभिश्चकिल्बिषम् । प्रत्याहारेणसंसर्गान्ध्या-
नेनानीश्वरान्गुणान् ॥ ४५ ॥ म० प्राणायामोंसेसबइन्द्रियऔरश-
रीरकेदोषोंकोभस्मकरदे औरधारणयोगशास्त्रकोरीतिसकरै उस्से
विरागऔरइसजोहृदयमेंपापउसकोछोड़ादे प्रत्याहारसेइन्द्रियों-
काविषयोंसेनिरोधकरकेसबदोषोंकोजीतले औरध्यानसेअल्पज्ञा-
दिकअनीश्वरके जितनेगुणउनकोछोड़ादे अर्थातसर्वज्ञादिकगुण
सम्पादनकरै ॥ ४५ ॥ उच्चावचेषुभूतेषु दुर्ज्ञेयामकृतात्मभिः । ध्यान
योगेनसंपश्येद्गतिमस्यांतरात्मनः ॥ ४६ ॥ म० स्थूलऔरसूक्ष्मउ-
नमेंजोपरमेश्वरव्याप्तहै औरअपनेशरीरमेंजोअपनाआत्मा और
परपरमात्माउनकोजोगतिनामज्ञान उसकोसमाधिसेसम्यकदेख
ले जोदुष्टलोगोंकोदेखनेमेंकभीनहींआती ॥ ४६ ॥ सम्यक्दर्शनस-
म्पन्नःकर्मभिर्ननिबध्यते । दर्शनेनविहीनस्तु संसारंप्रतिपद्यते ॥
४७ ॥ म० जबसन्यासीसम्यकज्ञानसेसम्पन्नहोताहै तबकर्मोंसेबद्ध

नहीं होता और जो ज्ञान से हीन संन्यासी है सो मोक्ष को तो नहीं प्राप्त होता किन्तु संसार ही में गिर पड़ता है ॥ ४७ ॥ अहिंसयेन्द्रियासंगैर्वैदिकैश्चैव कर्मभिः। तपसश्चरणैश्चोग्रैः साधयन्तीह तत्पदम् ॥ ४८॥ म० वैर इन्द्रियों से विषयों का असंग वैदिक कर्म का करना अत्यन्त उग्र तप इन्हों से मोक्षपद को सिद्ध लोग प्राप्त होते हैं अन्यथा नहीं ॥४८॥ अस्थिस्थूणं स्नायुयुतं मांसशोणितलेपनम्। चर्मावनद्धं दुर्गन्धिपूर्णं मूत्रपुरीषयोः ॥ ४९ ॥ म० जराशोकसमाविष्टं रोगायतनमातुरम्। रजस्वलमनित्यं च भूतावासमिमं त्यजेत् ॥ ५०॥ म० हाड़ जिसका खंभा है नाड़ियों से बांधा भया मांस, और रुधिर का ऊपर लेपन चाम से ढपा हुवा दुर्गन्ध मूत्र और विष्टा से पूर्ण ॥ ४९ ॥ जरा और शोक से युक्त रोग का घर क्षुधा तृषादिक पीड़ाओं से नित्य आतुर और नित्य ही रजस्वल अर्थात जैसे रजस्वला सी नित्य जिसकी स्थिति नहीं और सब भूतों का निवास ऐसा जो यह देह इसको संन्यासी योगाभ्यास से छोड़दे ॥ ५० ॥ नदीकूलं यथा वृक्षो वृक्षं वा शकुनिर्यथा। तथा त्यजन्निमं देहं कृच्छ्राद्ग्राहाद्विमुच्यते ॥ ५१ ॥ म० जैसे वृक्ष जब नदी के तट से जल में गिर के चला जाय वैसे ही समाधियोग से इसको छोड़े तब बड़ा भारी जन्म मरण रूप संसार के सब दुःख से छूट के मुक्त हो जाय ॥ ५१ ॥ प्रियेषु स्वेषु सुकृतमप्रियेषु च दुष्कृतम्। विसृज्य ध्यानयोगेन ब्रह्माप्येति परं पदम् ॥ ५२ ॥ म० जितने अपने सेवा करने वाले उन में ध्यानयोग से सब पुण्य को छोड़दे और दुःख देनेवाले पुरुषों में सब पापों को छोड़दे इस से पापपुण्यरहित अतिशुद्ध होता है तब सनातन परमोत्कृष्ट ब्रह्म उसको प्राप्त होता है फिर कभी दुःखसागर में नहीं आता ॥ ५२ ॥ यदा भावेन भवति सर्वभावेषु निस्पृहः। तदा सुखमवाप्नोति प्रेत्य चेह च शाश्वतम् ॥ ५३ ॥ म० जब सब प्रकार से संन्यासी का अन्तःकरण और आत्मा शुद्ध होजाता है, उसका यह लक्षण है कि किसी पदार्थ में मोह नहीं होता तब वह पुरुष जीता भया और मृत्यु हो के निरन्तर ब्रह्म सुख उसको प्राप्त होता है अन्यथा नहीं ॥ ५३ ॥ अ-

नेनविधिनासर्वान्स्त्यक्त्वासंगान्शनैःशनैः। सर्वद्वन्द्वविनिर्मुक्तोब्रह्मण्येवावतिष्ठते॥ ५४॥ भ० इसविधिसेजितनेदेहादिक अनित्यपदार्थहैं इनकोधीरे २छोड़ औरहर्ष,शोक,सुख,दुःख,शीत,उष्ण रागद्वेष,जन्ममरणादिकसबद्वन्द्वोंसेछूटकेशीतभया अथवाशरीर छोड़केब्रह्महीमेंसदारहताहै फिरदुःखसागरमेंकभीनहींगिरता क्योंकि पूर्व सबदुःखों कोभोगसे अनुभव किया है फिरबड़े भाग्य और अत्यन्तपरिश्रमसेपरमेश्वरकीप्राप्तिभई क्यावहमूर्खहै किपरमानन्दकोछोड़केफिरदुःखमेंगिरैकभीनगिरेगा ॥ ५४ ॥ ध्यानिकं सर्वमेवैतद्यदेतदभिशब्दितम्। नह्यनध्यात्मवित्कश्चित्क्रियाफलमुपाश्नुते॥ ५५। भ० सन्यासकायहीमार्गहै किनित्यध्यानावस्थित होके एकान्तमेंसबपदार्थोंकायथावतज्ञानकरना सोइसप्रकरणमेंसबध्याननाममात्रसेकहदिया परन्तु इसकायथावतविधानपातञ्जलदर्शनमेंलिखाहै वहांसबदेखलेवें अन्यथासिद्धकभीनहोगा क्योंकिप्राणायामादिकअध्यात्मविद्याजोकोईनहींजानता उसको सन्यासग्रहणका कुछफलनहींहोता उसकासन्यासग्रहणहीव्यर्थ है ॥ ५५ ॥ अधियज्ञंब्रह्मजपेदाधिदैविकमेवच। आध्यात्मिकञ्चसततंवेदान्ताभिहितंचयत्॥ ५६ ॥ भ० अधियज्ञब्रह्मजोओंकारउसकाजपउसकाअर्थजोपरमेश्वरउसमेंनित्यचित्तलगावै औरअधिदैविकइन्द्रियांऔरअन्तःकरणउसकेदिशादिकदेवताओंचाटिकों केउनकाजोपरस्परसंबंधउसकोयोगसेसाक्षात्करै औरअध्यात्मिक जीवात्मा औरपरमात्माका यथावतज्ञान औरप्राणादिकोंकानिग्रहइसकोयथावतकरै तबउसपुरुषकामोक्षहोसक्ताहै अन्यथानहीं ॥ ५६ ॥ एषधर्मोऽनुशिष्टो वोयतीनांनियतात्मनाम्। वेदसन्यासिकानांतुकर्मयोगंनिबोधत ॥ ५७ ॥ भ० मुख्य सन्यासीनियतात्मानामजिनकाआत्मास्थिरशुद्धहोगयाहै उनकाधर्मऋषिलोग सेमनुजीकहतेहैं मैंनेकहदिया औरजोवेदसन्यासिकअर्थातगौण सन्यासीउसकाकर्मयोगमुझसेआपसुनलेवें॥ ५७ ॥ ब्रह्मचारीह-

हस्थस्त्वानप्रस्थोयतिस्तथा। एतेगृहस्थप्रभवाश्चत्वारःपृथगाश्रमाः ॥५८॥ भ० ब्रह्मचारीगृहस्थवानप्रस्थऔरसन्यासी येचारोंगृहस्थाश्रमसेउत्पन्नहोतेहैं, पृथक२क्योंकिगृहाश्रमनहोय तोमनुष्यकीउत्पत्तिहीनहोय फिरब्रह्मचर्यादिक आश्रमकभीनहोंगे इससे उत्पत्तितथासबआश्रमोंकाअन्नवस्त्रस्थान औरधनादिकदानोंसेगृहस्थलोगहीपालनकर्तेहैं इनदोबातोंमेंगृहस्थहीमुख्यहैं विद्याग्रहणमेंब्रह्मचारीतपमेंवानप्रस्थविचारयोगऔरज्ञानमेंसन्यासीश्रेष्ठहैं॥५८॥ सर्वेपिक्रमशस्त्वेतेयथाशास्त्रंनिषेविता। यथोक्तकारिणंविप्रंनयन्तिपरमाङ्गतिम्॥५९॥ भ० सबआश्रमीयथावत् शास्त्रोक्तक्रमजोधर्माचरणउससेचलनेवालेपुरुषोंकोवेआश्रमोंकेजितनेव्यवहारश्रेष्ठहैं उनसेसबआश्रमीलोगमोक्षपासकतेहैं परन्तु बाहरदेखनेमात्रभेदरहेगा उनकाभीतरव्यवहारसन्यासवत एक हीहोगा॥५९॥ चतुर्भिरपिचैवैतैर्नित्यमाश्रमिभिर्द्विजैः। दशलक्षणकोधर्मःसेवितव्यःप्रयत्नतः॥६०॥ भ० ब्रह्मचारीआदिकसब आश्रमीलक्षणहैंजिसधर्मकेउसधर्मकानित्यसेवनकरैं वे लक्षणये हैं॥६०॥ धृतिःक्षमादमोऽस्तेयंशौचमिन्द्रियनिग्रहः। धीर्विद्यासत्यमक्रोधोदशकंधर्मलक्षणम्॥६१॥ भ० धर्महैनामन्यायका न्यायहैनामपक्षपातकाछोड़ना उसकापहिलालक्षणअहिंसाकिसीसे वैरनकरना दूसरालक्षणधृतिकिअधर्मसेचक्रवर्तीराज्यभीमिलता होय तोभीधर्मकोछोड़केचक्रवर्तीराज्यकाग्रहणनकरना तीसरा लक्षणक्षमाकोईस्तुतिवानिन्दाअथवावैरकरै तोभीसबकोसहले परन्तुधर्मकोनछोड़ै तथासुखदुःखादिकभीसबसहले परन्तुअधर्म कभीनकरैदमनामचित्तसेअधर्मकरनकोइच्छानकरै इसकानाम हैदमअस्तेयअर्थातचोरीकात्याग किसीकापदार्थआज्ञाकेविनाले लेनाइसकानामचोरीहै इसकाजोसदात्यागउसकानामहैअस्तेय शौचनामपवित्रतासदाशरीरवस्त्रस्थानअन्नपात्र औरजलतथाघृतादिकशुद्धदेशमेंनिवासरागद्वेषादिककात्यागइसकानामशौचहै

इन्द्रियनिग्रह श्रोचादिकइन्द्रियवे अधर्ममेंकभीनजावैं औरइन्द्रियों कोसदाधर्ममेंस्थिररक्खैं तथापूर्वोक्तजितेन्द्रियताकाकरनाइसका नामइन्द्रियनिग्रहहैं शास्त्रपठन,सत्पुरुषोंकासंगयोगाभ्याससु- बिचारएकान्तसेवनपरमेश्वरमेंविश्वास औरपरमेश्वरकीप्रार्थना स्तुतिऔरउपासनाशीलसंतोषकाधारणइनसेसदाबुद्धिवृद्धिकरनी इसकानामधीहै विद्यानामपृथिवीसेलेके परमेश्वरपर्यन्त पदार्थों काज्ञानहोना जोजैसापदार्थहैउसकोवैसाहोजाननाउसकानाम विद्याहै सत्यसदाभाषणकरनापूर्वोक्तनियमसे अक्रोधनाम क्रोध कामलोभमोहशोकभयादिकोंकात्यागउसकानामक्रोधकात्यागहै इतनेसंक्षेपसेधर्मके ग्यारहलक्षणलिखदिये परन्तु वेदादिक सत्य शास्त्रोंमेंधर्म इत्यादिक सहस्रों लक्षणलिखेहैं जिसकोइच्छाहोय उनशास्त्रोंमेंदेखलेवेंअबइसकेआगेअधर्मकेलक्षणलिखेजातेहैं अ- धर्मनामअन्यायका अन्यायनामपक्षपातकानछोड़ना इसकेभीए- कादशलक्षणहैं पहिलालक्षणअहिंसा अर्थातवैरबुद्धिकाकरना ॥ ९२ ॥ परद्रव्येष्वभिध्यानंमनसानिष्टचिन्तनम्। वितथाभिनिवेश- श्चत्रिविधंकर्ममानसम् ॥ ९२ ॥ म० पारुष्यमनृतंचैवपैशून्यमपिस- र्वशः। असंबद्धप्रलापश्चवाङ्मयंस्याच्चतुर्विधम् ॥ ९३ ॥ म० अदत्ता- नामुपादानंहिंसाचैवाविधानतः। परदारोपसेवाचशारीरंत्रिवि- धंस्मृतम् ॥ ९४ ॥ म० परद्रव्यहरणकरनेकीछलकपटऔरअन्याय सेइच्छायहदूसरालक्षणअधर्मकाहै औरतीसरालक्षण परकाअ- निष्टचिन्तनअन्यजीवोंकोदुःखदेनाअपनासुखचाहना चौथावित- थाभिनिवेशअर्थातमिथ्यानिश्चयजोजैसापदार्थहैउसकोवैसानजा- नना किन्तु विपरीतहीजानना जैसेकिविद्याको अविद्याऔरअ- विद्याकोविद्याजानना सत्यअचौरश्रेष्ठसाधु इनकोअसत्यचौरअ- श्रेष्ठअसाधुजानना औरपाषाणादिकमूर्त्तिऔरउनकेपूजनेसेदेव बुद्धिऔरमुक्तिकाहोना इत्यादिकमिथ्यानिश्चयसेजानलेना येतीन मनसेअधर्मके लक्षणउत्पन्न होतेहैं पारुष्यनाम कठोरबचनबो-

लना जैसेकिआगच्छकाणइत्यादिक इसकानामपारुष्यहै मिथ्या
भाषणनामअसत्यकाबोलनादेखनेसुननेऔरहृदयसेविरुद्धबोलना
उसकानामअसत्यभाषणहैपैशून्यनामचुगलीखानाजैसेकिकिसीने
धनदेनेकोकहावादिया उससे राजाकेवाअन्यकेसमीपजाकेउसकी
कार्यकोहानिकरनी औरउनकेसामनेउसकीनिन्दाकरनीअर्थात
अन्यपुरुषकोप्रतिष्ठावासुखदेखकेहृदयसेबड़ादुःखितहोयफिरजहां
तहांचुगलीखाताफिरै इसकानामपैशून्यहै असंबद्धप्रलापनामपू-
र्वापरविरुद्धभाषणऔरप्रतिज्ञाकोहानि जैसेकिभागवतादिकऔर
कौमुद्यादिकग्रन्थोंमें पूर्वापरविरुद्धऔरमिथ्याभाषणहैं इसकाना-
मअसंबद्धप्रलापहै अदत्तानामुपादानं बिनाआज्ञासेपरपदार्थका
ग्रहणकरना अर्थातचोरीविधानकेबिना हिंसानामपशुओंकाह-
ननकरना अपनीइन्द्रियोंकीपुष्टकेवास्ते मांसकाखाना औरपशु-
ओंकामारना यहराक्षसविधानहै औरयज्ञकेवास्ते जोपशुओंको
हिंसाहैसोविधिपूर्वकहननहै औरजिनपशुओंसेसंसारकाउपका
रहोताहै उनपशुओंकोकभीनमारनाचाहिए क्योंकिइनकोमा-
रनेसे आगेपशुदूधऔर घीकी उत्पत्तिहो मारीजातीहै औरइ-
न्होंसेसंसारका पालनहोताहै इससेपशुओंकी स्त्रियोंकोतो कभीन
मारनाचाहिए औरजोइनपशुओंकोमारनाहै इसकानामअवि-
धानसेहिंसाहै परदारोपसेवनपरस्त्रीगमन अर्थातवेश्या वा अन्य
किसीकीस्त्रीकेसाथगमनकरनाऔरअन्यपुरुषोंकेसाथस्त्रीलोगोंका
गमनकरनादोनोंकोतुल्यपापहै यएकादशअधर्मकेलक्षणकहदिये
इनसेअन्यभी वेदादिकशास्त्रोंमें अभिमानादिक सहस्रों अधर्मके
लक्षणलिखेहैं सोउनकेबिनापठनऔरअधर्मनजाननेमेंकभीज्ञान
नहोहीसक्ता धर्मऔरअधर्मसबमनुष्योंकेवास्तेएकहीहैं इनमेंभेद
नही जितनेभेदहैं वेसबभ्रमहीसेहैं क्योंकिसबका ईश्वरएकहीहै
इससे उसकी आज्ञाभी सबकेवास्ते एकरसहीं निश्चित होनीचा-
हिए किन्तु जोसत्यबातवाअसत्यबातहै सोतोसर्वत्रएकहीहोतीहै

उसीको जितने बुद्धिमान लोगजानतेहैं वेकिसी जालवा बन्धनमें नहींगिरते किन्तु धर्महोकर्तेहैं औरअधर्मको छोड़देतेहैं यही बुद्धिमानोंकामार्गहै औरजितनेसंप्रदायजाल,पाखण्डहैं वेमूर्खों हीकेहैं चारोंआश्रमवाले पुरुषधर्महीकासेवनकरैं अधर्मकाकभी नहीं॥ दशलक्षणकंधर्ममनुतिष्ठन्समाहितः। वेदान्तंविधिवच्छ्रुत्वासन्यासेदनृणोद्विजः॥ ९५॥ म० दशलक्षणऔरएकयोगशास्त्रकीरीतिसेएवंग्यारहलक्षणजिसधर्मकेलक्षणकहदिये उसधर्मका अनुष्ठानयथावत्करैं समाहितचित्तहोकेवेदान्तशास्त्रकोविधिवत् सुनके अनृणजोद्विजनामब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य,येतीनविद्वानहोके यथाक्रमसेसन्यासग्रहणकरैं॥ ९५॥ सन्यस्यसर्वकर्माणि कर्मदोषानपानुदन्। नियतोवेदमभ्यस्यपुत्रैश्वर्येसुखंवसेत्॥ ९६॥ म० बाह्यजितनेकर्मउनकात्यागकरै औरआभ्यन्तरयोगाभ्यासादिकजितनेकर्मउनकोयथावतकरै इससे सबकर्मदोषअर्थातअन्तःकरणकी मलिनतारागद्वेषइत्यादिकोंकोछोड़ादे निश्चितहोके वेदकाअभ्यासदाकरै औरअपनेपुत्रोंसेअन्नवस्त्रशरीरनिर्वाहमात्रलेलेवे नगरकेसमीपएकान्तमेंजाकेवासकरै नित्यघरसेभोजन आच्छादन करै हानिवालाभमेंकुछदृष्टिनदेकिसीकाजन्मवामरणहोय घरमें तोभीकुछउसमेंमोहवाद्वेषनकरै अपनीमुक्तिकेसाधनमेंसदातत्पर रहै॥ ९६॥ एवंसन्यस्यकर्माणि स्वकार्यपरमोस्पृहः। सन्यासेनापहत्यैनःप्राप्नोतिपरमाङ्गतिम्॥ ९७॥ म० इसप्रकारसेसबबाह्यकर्मोंकोछोड़दे स्वकार्यजोमुक्तिकाहोना अर्थातसबदुःखोंसेछूटकेपरमेश्वरकोप्राप्तहोना इसकार्यमेंतत्परहोय इससे भिन्नपदार्थकीइच्छाकभीनकरै इसप्रकारकेसन्यासमे सबपापोंकानाशकरदे औरपरमगतिजोमोक्षउसकोप्राप्तहोजाय पूर्वपक्षसन्यासीधातुओं कास्पर्शकरैवानहींउत्तरअवश्यधातुओंकास्पर्शकविनाकिसीकानिर्वाहनहींहोसक्ता क्योंकिभूआदिकधातुओंकास्पर्शभाषावासंस्कृत बोलनेमेंनिश्चितहोकरेगा औरवियादिक७सातधातुओंकाभोस्प-

र्थनिश्चितहोगा औरसुवर्णादिकजितनीधातुहैं उनकाभीस्पर्शहो-
गापूर्वपक्ष ॥ यतीनांकांचनंदद्यात्तांबूलंब्रह्मचारिणाम्। चौराणा-
मभयंदद्यात्सनरोनरकंब्रजेत्॥ इसश्लोकसेयहआपकाकथनविरुद्ध
हुआ सन्यासीकोसुवर्णब्रह्मचारीकोतांबूल चौरोंकोअभयकादेने
वालापुरुषनरकमेंजाताहै ॥ उत्तरपक्ष ब्रह्मोवाच गृहीणांकाञ्चनं
दद्याद्वस्त्रंवैब्रह्मचारिणाम्। चौराणांमासनन्दद्यात्सनरोनरकंव्रजे-
त्॥ इससे आपकाकहनाविरुद्धहुवा जैसाकिमेराबचनउसश्लोकसे
यहकौनशास्त्रकाश्लोकहै अच्छावहकौनशास्त्रकाहै यहतोपद्धतिका
है अच्छातोयहहमारीपद्धतिकाहै औरब्रह्माकाकहाहै ऐसाश्लोक
ब्रह्माजीकभीनरचेंगे अच्छातोयहमैंनेरचाहै जैसाकिवहकिसीने
रचलियाहैयदोनोंश्लोकअर्थविचारनेमेंमिथ्याहीहैं क्योंकिसन्यासी
कोकाञ्चननामसुवर्णकेदेनेसेइननेनरकलिखा इससेपूछनाचाहिए
किचांदीहीरादिकरत्नभूमिराज्यऔरस्थानदेनेसतोनरककोनहीं
जायगाऔरब्रह्मचारीकेविषयमेंभीजानलेनाचोरकेविषयमेंजोइ
सनेलिखासोतोठीकहीहैऔरसर्वमिथ्याकथनहै अच्छातोश्लोकका
ऐसापाठहै॥ यदिहस्तेधनन्दद्यात्तांबूलंब्रह्मचारिणाम्। अन्यत्पूर्ववत्
यहभीमिथ्याश्लोकहै क्योंकियतीकेपात्र औरआगेवावस्त्रसेबांधके
धनदेनेमेंतो पापनहोगा इससे ऐसीजोबातकहना सोमिथ्याहीहै
औरजोधनमेंदोषअथवागुणहै सोसर्वत्रतुल्यहीहै जैसाउपद्रवधन
केरखनेमेंगृहस्थोंकोहोताहै इससे सन्यासीकोधनकेरखनेमेंकुछअ-
धिकउपद्रवहोगा क्योंकिगृहस्थोंकेस्त्रीपुत्रऔरभृत्यादिकरक्षाकर-
नेवालेहैं उसकोकोईनहीं शरीरकेनिर्वाहमात्रधनरखले तबतो
बिरक्तकोभीकुछदोषनहीं औरजोअधिकरक्खेगा सोतोमोक्षपद
कोप्राप्तहोकेसंसारमेंगिरपड़ेगा जैसेकिवैरागी,गुसांईबहुतसेम-
हन्तऔरमठधारीहोगयेहैंजैसेकिगृहस्थोंसेभीनीचहोजातेहैंऔर
सांईधनकोपाके अमीरहोजाताहै इससे क्याआयाकिपहिलेतोअ-
धिकारकेबिना सन्यासग्रहणहीनहींकरनाचाहिए जबतकविद्या

ज्ञान, वैराग्य, और जितेन्द्रियता, पूर्ण न होजाय तबतक गृहाश्रम ही में रहना उचित है इससे धातुस्पर्श धनदेने और लेने में दोष करते हैं यह बात मिथ्या होहै उनको कोई दे और विरक्त लेवे अथवा न लेवै अपनी २ इच्छा के आधीन व्यवहार है एक बात देखना चाहिए कि जो विद्वान सो सब पदार्थों का गुण और दोष जानता है उसको देने वाला स्वर्ग जाय सो तो ठीक बात है परन्तु नरक को वह जाता है यह बात अत्यन्त नष्ट है वह विद्वान जो सन्यासी सत्कार और उत्तम पदार्थों की प्राप्ति में हर्ष कभी न करेगा अस्तकार और अनिष्ट पदार्थों की प्राप्ति में शोक न करेगा सो देने लेनेवाले दोनों धर्मात्मा और विद्यावान होंगे तब तो उभय च सुख ही सक्ता है और जो दोनों कुकर्मी हैं तो पाप ही है जैसे कि चक्रांकितादिक वैरागी और गोकुलिये, गुसांई और नान्हक, कबिरादिकों के सम्प्रदायी लोग हैं और मूर्ख ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ और सन्यासी इनको देने में पाप ही होगा पुण्य कुछ नहीं क्योंकि पुण्य तो विद्वान और धर्मात्माओं को देने में है अन्यथा नहीं चार वर्ण और चार आश्रम इनकी शिक्षा संक्षेप से लिखदिया और विस्तार से जो देखना चाहै सो वेदादिक सत्यशास्त्रों में देखलेवै इससे आगे राजा और प्रजा के विषय में लिखा जायगा॥

इति श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषा विरचिते पंचमस्समुल्लासः संपूर्णः॥ ५॥

अथराजाप्रजाधर्मान्व्याख्यास्यामः॥ राजधर्मान्प्रवक्ष्यामि यथावृत्तोभवेन्नृपः। सम्भवश्चयथातस्य सिद्धिश्चपरमोयथा॥ १॥ म० राजधर्मों को मनु भगवान कहते हैं कि मैं कहूंगा जिस प्रकार से राजा को वर्तमान करना चाहिए जिन गुणों से राजा होता है और जिन

कर्मोंकेकरनेसेपरमसिद्धिहोतीहै किराज्यकरैऔरसङ्गतिभीउसकोहोय इसकोयथावतप्रतिपादनआगे२कियाजायगा ॥ १ ॥ ब्राह्मं प्राप्तेनसंस्कारंक्षत्रियेणयथाविधि । सर्वस्यास्ययथान्यायंकर्त्तव्यंपरिरक्षणम् ॥ २ ॥ भ० जैसाब्राह्मणोंका संस्कारहोताहै वैसाही सबसंस्कारयथाविधिजिसकाहोताहै अर्थातसबविद्याओंमेंपूर्णबल बुद्धि,पराक्रम,तेज,जितेन्द्रियताऔरशूरबीरता जिसमनुष्यमेंइस प्रकार केगुणहोवैं औरकोईमनुष्य उसदेशमें विद्यादिकगुणोंमें उससे अधिकनहोय ऐसेपुरुषकोदेशकाराजाकरनाचाहिए तबवह देशआनन्दितऔरअत्यन्तसुखीहोताहै अन्यथानहीं उसराजाका मुख्ययहीधर्महै किअपनीप्रजाकीयथावत्रक्षाकरै ॥ २ ॥ अराजकेहिलोकेस्मिन्सर्वतोविद्रुतेभयात् । रक्षार्थमस्यसर्वस्य राजानमसृजत्प्रभुः ॥ ३ ॥ भ० जिसदेशमेंधर्मात्माराजाविद्वाननहींहोता उसदेशमेंभयादिकदोष संसारमेंबहुतहोजातेहैं इसवास्ते राजाको परमेश्वरनेउत्पन्नकियाहै कियहसबजगत्कोरक्षाकरै औरजगतमें अधर्मनहोनेपावै ॥३॥ इन्द्रानिलयमार्काणामग्नेश्चवरुणस्यच चंद्रवित्तेशयोश्चैवमात्रा निर्हृत्यशाश्वतीः ॥ ४ ॥ भ० इन्द्रअनिलनाम वायुअर्कनामसूर्य,अग्नि,वरुण,चन्द्र,वित्तेशअर्थातकुवेर इनआठ राजाओंकीनीतिऔरगुणोंसे मनुष्यराजाहोनेकाअधिकारीहोता है तैसेहीइन्द्रकागुण शूरवीरतादाताकाहोना इन्द्रजैसाप्रजाकी रक्षा सबप्रकारसेकरताहै तैसेहीराजा,वायुकागुण,बल औरदूत द्वारासबप्रजाकोवर्तमानकाजाननाजैसाकिवायुसबकेहृदयमेंव्याप्त होकेधारणकर्ताहै औरसबमर्मोंकोजानताहै यमकागुणपक्षपातको छोड़ना सदान्यायहीकरनाअन्यायकभीनहीं जैसाकिभरतराजा नेअपनेपुत्रजोअन्यायकारी ९ नवउनकाखड्गसेशिरच्छेदनकर दिया औरसगरनेअपनाएकजोपुत्रअसमंजा थोड़ेअपराधसेवनमें निकालदिया यहबातमहाभारतमेंविस्तारसेलिखीहै किअपनेपुत्र काजबपक्षपातनकिया तोऔरका कैसेकरेंगे अर्कनामसूर्य जैसा

कि सब पदार्थों को तुल्य प्रकाश करता है और अन्धकार का नाश कर
देता है ऐसे ही राजा सब राज्य में प्रजा के ऊपर तुल्य प्रकाश करै और
अधर्म करनेवाले जितने दुष्ट अन्धकार रूप उनका नाश करदे और
जैसे अग्नि में प्राप्त भया पदार्थ दग्ध होजाता है वैसे ही धर्मनीति से विरु-
द्ध करनेवाले पुरुषों को दग्ध अर्थात् यथावत् दण्ड देवै जैसा कि अग्नि सूखे
वा गीले पदार्थों को भस्म करदेता है और मित्र शत्रु जब २ अधर्म करैं
तब २ कभी दण्ड के विना न छोड़ै वरुण का गुण ऐसे पाश अर्थात् बन्धनों से
दुष्टों को बांधै कि फिर छूटने न पावें और कभी छूटैं तो ऐसा दुःख पावें कि
उस दुःख का विस्मरण कभी न होय जिससे अधर्म में उनका चित्त कभी
न जाय चन्द्र का गुण जैसे कि चन्द्रमा सब प्राणियों को तथा स्थावर औष-
धियों को शीतल प्रकाश और पुष्टि से आनन्दयुक्त करदेता है और
राजा अपनी प्रजा के ऊपर कृपादृष्टि रक्खै और प्रजा की पुष्टि कि किसी
प्रकार से प्रजा दुःखित न होवै सदा प्रसन्न हो रहै कुबेर का गुण जैसे कि
कुबेर बड़ा धनाढ्य है धन की वृद्धि और धन की रक्षा यथावत् करता है
वैसे राजा भी धन की रक्षा सदा करै जिससे कि राजा के ऊपर ऋण वा द-
रिद्र कभी न होवै अपने वा प्रजा के ऊपर जब आपत्काल आवै तब
उस धन से अपनी वा प्रजा की रक्षा कर लेवैं इन आठ गुणों से राजा हो-
ता है अन्यथा नहीं ॥ ४ ॥ सोऽग्निर्भवति वायुश्च सोऽर्कः सोमः स धर्म-
राट्। स कुबेरः स वरुणः स महेन्द्रः प्रभावतः ॥ ५ ॥ म० प्रभाव अर्थात्
गुणों ही से अग्नि, वायु, आदित्य, सोम, धर्मराज, कुबेर, वरुण और
महेन्द्र नाम इन्द्र राजा हो इन गुणों से जब युक्त होता है तब वही राजा ये
आठ नामवाला होता है ॥ ५ ॥ कार्यं सोऽवेक्ष्य शक्तिञ्च देशकालौ च
तत्त्वतः। कुरुते धर्मसिद्ध्यर्थं विश्वरूपं पुनः पुनः ॥ ६ ॥ म० सो राजा
कार्य और शक्ति नाम सामर्थ्य देश और काल तत्त्व अर्थात् यथावत् इन-
को विचार के करै कि र के वास्ते कि धर्मसिद्धि के वास्ते वारंवार विश्व-
रूप धारण करता है ॥ ६ ॥ यस्य प्रसादे पद्मा श्रीर्विजयश्च पराक्रमे।
मृत्युश्च वसति क्रोधे सर्वतेजोमयो हि सः ॥ ७ ॥ म० जिसको कृपा से

दरिद्रजोहैसोधनाढ्यहोजाय औरअल्पसेदुष्टदरिद्रहोजाय और
पराक्रममेंनिश्चयकरकेविजयहोय इस्से राजासर्वतेजोमयहोता है
औरजिसकेक्रोधमेंदुष्टोंकामृत्युहीवासकरताहोयअर्थातसबप्रकार
केगुणबलपराक्रमजिसमेंहोवेंवहीराजाहोसक्ता है अन्यथानहीं ७।
तस्माद्धर्मंयमिष्टेषुसव्यवस्येन्नराधिपः। अनिष्टंचाप्यनिष्टेषुतधर्मं-
नविचालयेत् ॥ ८ ॥ म० जोराजाधर्मकोइष्टअर्थातधर्मात्मा और
विद्वानोंकेऊपरनिश्चितकरै तथाअनिष्ट अर्थातमूर्ख औरदुष्टोंके
बीचमेंदण्डकीव्यवस्थाकरैउसधर्मकोकोईमनुष्यनछोड़ै किन्तुसब
लोगकरैं जिस्सेधर्मात्माऔरविद्वानोंकीबढ़तीहोय औरमूर्खऔर
दुष्टोंकी घटी इसहेतु अवश्य इसव्यवस्थाकोकरै ॥ ८ ॥ तस्यार्थे-
सर्वभूतानांगोप्तारंधर्ममात्मजम्। ब्रह्मतेजोमयंदंडमसृजत्पूर्वमी-
श्वरः ॥ ९॥ म० उसराजाकेलियेदण्डकोपरमेश्वरनेपूर्वहीसेउत्प-
न्नकियावहदण्डकैसाहैकिब्रह्मतेजोमयब्रह्मपरमेश्वरऔरविद्याका
नामहैउनकाजोतेजअर्थातसत्यव्य२वस्थावहीदण्डकहलाताहैफिर
वहदण्डकैसाहैकिपरमेश्वरहीसेउत्पन्नभया क्योंकिपरमेश्वरन्या-
यकारीहै उसकोआज्ञा न्यायहीकरनेकीहै उसीकानाम दण्डहै
औरजोन्यायहैकिपक्षपातकाछोड़नासोईधर्महै जोधर्महैसोईसब
भूतोंकीरक्षाकरनेवालाहैअन्यकोईनहीं औरवहदण्डराजाकेआ-
धीनरक्खागयाहै क्योंकिवहीराजासमर्थहैइसदण्डकेधारणकरने
मेंअन्यकोईनहींजोकोईराजाकहैकिधर्मकीबातहमनहींसुनते तो
उसकाकहनामिथ्याहैक्योंकिधर्मनकरेगातोराजाऔरधर्मकास्था-
पनतथापालनभीनकरेगा वहराजाहीनहीं राजातोवहहोताहै
किधर्मकायथावतस्थापन और अधर्म काखण्डन करै यहीराजा
का मुख्य पुरुषार्थ है ९ ॥ तस्यसर्वाणिभूतानिस्थावराणिचराणि-
च। भयाद्भोगायकल्पन्तेस्वधर्मान्नचलन्तिच ॥१०॥ म० उसदण्डके
भयसेही जितनेजड़ औरचेतनभूतहैं दंडकेनियमसे वसबभोगमें
आतेहैं अपना२जोपुरुषार्थ अर्थातअधिकार उसमेंयथावतचलते

हैं अपनेस्वधर्म अर्थात जो२ जिसकाव्यवहारकरनेकाअधिकारउससे भिन्नमार्गमेंकभीनहींचलते॥१०॥ तं देशकालौ शक्तिंच विद्यांचा-वेक्ष्यतत्वतः। यथार्हतःसंप्रणयेन्नरेष्वन्यायवर्त्तिषु॥११ म० उस दण्डको अन्यायकरनेवाले जोमनुष्यहैं उनमेंयथावतस्थापनकरें अ-र्थात्यथावतदण्डदेवै परन्तु देशकालसामर्थ्य औरविद्याइनसेय-थावतत्त्वका विचारकरकेदण्डदे क्योंकिअदण्ड्यपुरुष अर्थातध-र्मात्माको कभीनदण्डदियाजाय औरअधर्मात्मा पुरुषदण्डकेबि-नात्यागकभीनकियाजाय॥११॥ सराजापुरुषोदण्डःसनेताशासि-ताचसः। चतुर्णामाश्रमाणांचधर्मस्यप्रतिभूःस्मृतः॥१२॥ राजा पुरुषनेताअर्थात व्यवस्थामें सबजगत्को चलानेवाला शासिताअ-र्थातयथावतशिक्षकदण्डहीहै किन्तुराजाऔरप्रजास्थ मनुष्यसब तुल्यहीहैं जैसाराजामनुष्यहै वैसाहीऔरसबमनुष्यहैं इसवास्ते मनुभगवान्नेंलिखा किदण्डहीराजा,दण्डहीपुरुष,दण्डहीनेता औरदण्डहीशासिता,जिसमेंयथावतविद्यादिकगुण औरदण्डकी व्यवस्थाहोयसोईराजाहै, अन्यकोईनहीं औरब्रह्मचर्याश्रमादिक चारआश्रमऔरचारोवर्णोंकायथावतस्थापनतथाउनकारक्षनक-रनेवालादण्डहीहै किन्तुप्रतिभूःअर्थातजामिनहैइसकेविनाधर्म-यावर्णाश्रमव्यवस्थानष्टहोजातीहै कभीनहींचलती उसव्यवस्थाके विनाजितनेउत्तमव्यवहारहैंवेतोनष्टहीहोजातेहैंकिन्तुभ्रष्टव्यवहा-रभीहोजातेहैं जैसेकिआजकालआर्यावर्त्तदेशकीव्यवस्थाहै॥१२॥ दण्डःशास्तिप्रजाःसर्वादण्डएवाभिरक्षति। दण्डःसुप्तेषु जागर्त्ति-दण्डंधर्मंविदुर्बुधाः॥१३॥ म० सबप्रजाकोदण्डहीशिक्षाकरताहै औरदण्डहीसबजगत्कारक्षकहै जबप्राणीसोजातेहैंतबप्रायमृतक होजातेहैं परन्तुदण्डहीनहीसोताइससे सबआनन्दसेसोकेउठतेहैं उठकेअपना२कामकाजऔरआनन्दकरतेहैं औरजोदण्डसोजाय तोजगत्कानाशहीहोजाय इससे जोदण्डहैसोईधर्महैऐसाबुद्धिमान लोगोंकादृढ़निश्चयहै॥१३॥ समीक्ष्यसधृतसम्यक्सर्वारञ्जयतिप्र-

का:। असमीक्ष्यप्रणीतस्तु विनाशयतिसर्वतः॥ १४॥ भ० उसदण्ड कोसम्यक् विचारकरकेजोधारणकरताहै वहराजासबप्रजाकोप्रसन्नकरदेताहैऔरजोविचारकेविनादण्डदेताहै वाआलस्य,मूर्खता सेदण्डकोछोड़देताहै वहीराजासबजगत्कानाशकरनेवालाहोता है राजृदीप्तौइसधातुसेराजाशब्दसिद्धहोताहै दीप्तिनामप्रकाशका है जोसबधर्मोंकाप्रकाश औरअधर्म माचकानाश करै उसका नामराजाहै औरजोऐसानहींहैउसकानामराजातोनहींरखना चाहिए किन्तुउसकानामडांकूऔरअन्धकाररखनाचाहिये।१४। दुष्येयु:सर्ववर्णाश्चभिद्येरन्सर्वसेतवः। सर्वलोकप्रकोपश्चभवेद्दण्डस्यविभ्रमात्। १५॥ भ० दण्डकेनाशसेसबवर्णाश्रमनष्टहोजातेहैं तथाधर्मकीजितनीमर्यादाहैंभीसबनष्टहोजातीहैं औरसबलोगोंमें प्रकोपअर्थातअधर्मपूर्णहोजाताहै इससे दण्डकोकभीनछोड़नाचाहिए॥ १५॥ यत्रश्यामोलोहिताक्षोदण्डश्चरतिपापहा। प्रजास्तत्रनमुह्यन्तिनेताचेत्साधुपश्यति॥ १६ ॥ भ० जिसदेशमेंश्यामवर्णरक्तजिसकेनेत्र ऐसाजोपापनाश करनेवालादण्डविचरताहै उस देशमेंप्रजामोहवादुःखकोनहीप्राप्तहोती परन्तु दण्डकाधारणकरनेवालाराजाविद्वानऔरधर्मात्माहोयतोअन्यथानहींकैसाराजा होयकि॥ १६॥ तस्याहु:संप्रणेतारंराजानंसत्यवादिनम्। समीक्ष्यकारिणंप्राज्ञंधर्मकामार्थकोविदम्॥ १७॥ भ० इसदण्डका सम्यक्चलानेवालासत्यवादीकिकभीमिथ्यानबोलै औरजोकुछकरैसोविचारकेसेसत्य२करै असत्यकभीनहींप्राज्ञअर्थातपूर्णविद्या औरपूर्णबुद्धिजिसकीहोय धर्मअर्थऔरकाम इनकोयथावतजानताहोय उसकोदण्डचलानेका अधिकारीकहतेहैं औरकिसीको नहीं॥ १७॥ तंराजाप्रणयनसम्यक्त्रिवर्गेणाभिवर्द्धते। कामात्मा विषमःक्षुद्रोदण्डेनैवनिहन्यते॥ १८ ॥ भ० उसदण्डअर्थातधर्म कोराजायथावतनिश्चयमेंकरेगा तोधर्मअर्थऔरकामयेतीनराजाकेसिद्धहोजायगेऔरजोकामात्माअर्थातवेश्या,परस्त्री,लौंडे,इत्या-

दिकों के साथ फंसा रहता है तथा नम्रता, शील, नीति, विद्या, धैर्य, बुद्धि, बल, पराक्रम तथा सत्य पुरुषों का संग इन को छोड़ के विषम नाम कुटिल अर्थात् अभिमान ईर्ष्या, द्वेष, मात्सर्य और क्रोध इन से युक्त होके कर्म विपरीत करने से वह राजा विषम पुरुष होजाता है नीचबुद्धि नीच संग नीच कर्म और नीच स्वभाव इत्यादिक दोषों से पुरुष जब युक्त होगा तब वह पुरुष नाम राजा क्षुद्र होजायगा जब धर्म नीति से दण्ड यथावत् न कर सकेगा तब उसी के ऊपर दण्ड आके गिरेगा सो दण्ड से हत हो जायगा जैसे कि आजकाल आर्यावर्त्त देश के राजाओं की दशा नित्य देखने में आती है ॥ १८ ॥ दण्डो हि सुमहत्तेजो दुर्द्धरश्चाकृतात्मभिः। धर्माद्विचलितं हन्ति नृपमेव सबान्धवम् ॥ १९ ॥ ततो दुर्गं च राष्ट्रं च लोकं च सचराचरम्। अन्तरिक्षगतांश्चैव मुनीन्देवांश्च पीडयेत् ॥ २० ॥ भ० दंड जो है सो बड़ा भारी तेज है उसका धारण करना मूर्ख लोगों को कठिन है जब वे दण्ड अर्थात् धर्म से विचल जाते हैं तब कुटुम्ब सहित राजा का वह दण्ड नाश कर देता है ॥ १९ ॥ तदनन्तर दुर्ग जो किला राष्ट्र नाम राज्य चर अचर लोग अन्तरिक्ष में रहने वाले अर्थात् सूर्य चन्द्रादिक लोकों में रहने वाले अथवा मुनि नाम विचार करने वाले देव नाम पूर्ण विद्या वाले उनका नाश और अत्यन्त पीड़ा करता है इस से क्या आया कि पक्षपात को छोड़ के यथावत् दण्ड करना चाहिए तभी सुख की उन्नति होगी और जो दण्ड को यथावत् न्याय से न करेंगे तो उनका ही नाश होजायगा ॥ २० ॥ सोऽसहायेन मूढेन लुब्धेनाकृतबुद्धिना। न शक्यो न्यायतो नेतुं सक्तेन विषयेषु च ॥ २१ ॥ भ० सो अ॰ष्ठ पुरुषों के सहाय से रहित मूढ नाम मूर्ख, लुब्ध नाम बड़ा लोभी, अकृतबुद्धि जिसको बुद्धि नहीं है सो राजा मूर्ख है वह न्याय से दंड कभी न दे सकेगा क्योंकि जो जितेन्द्रिय होता है वही राज्य करने का अधिकारी होता है और जो विषयासक्त तथा मूढ़ सो कभी दण्ड देने वा राज्य करने को समर्थ नहीं होता ॥ २१ ॥ राजा कैसा होना चाहिए कि ॥ शुचिना सत्यसन्धेन यथाशास्त्रानुसारि-

था । प्रणेतुं शक्यते दण्डः सुसहायेन धीमता ॥ २२ ॥ भ० शुचि जो बाहर भीतर अत्यन्त पवित्र होय सत्य धर्म से सदा जिस का स्थान रहै तथा जैसो शास्त्र में परमेश्वर की आज्ञा है वैसा ही करै सुसहाय अर्थात सत्य पुरुषों का सङ्ग जो करता है और बड़ा बुद्धिमान वही राजा दण्ड व्यवस्था करने को समर्थ होता है अन्यथा नहीं ॥ २२ ॥ वृद्धांश्च नित्यं सेवेत् विप्रान्वेदविदः शुचीन् । वृद्धसेवी हि सततं रक्षोभिरपि पूज्यते २३ ॥ भ० जितने ज्ञान वृद्ध विद्या वृद्ध तपो वृद्ध, पवित्र विचक्षण वेद वित धर्मात्मा धैर्यवान् होवैं उन को ही राजा नित्य सेवा और सङ्ग करै जो इन पुरुषों का राजा संग करैगा तो उस का राक्षस अर्थात दुष्ट पुरुष भी सत्कार और आज्ञा करैंगे ॥ २३ ॥ एभ्योऽधिगच्छेद्धि नियं विनीतात्मापि नित्यशः । विनीतात्मा हि नृपतिर्न विनश्यति कर्हिचित् ॥ २४ ॥ जो राजा विनीतात्मा होवै अर्थात सब श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न भी होवै तो भी उत्तम पुरुषों से विनय को ग्रहण करै क्योंकि जो अभिमानादिक दोषों से रहित और विद्या नम्रतादिक गुणों से युक्त होता है उस राजा का कभी नाश नहीं होता ॥ २४ ॥ त्रैविद्येभ्यस्त्रयीं विद्यां दण्डनीतिं च शाश्वतीम् । आन्वीक्षिकीं चात्मविद्यां वार्त्तारम्भांश्च लोकतः ॥ २५ ॥ भ० तीनों वेदों को जो पाठ स्वर और अर्थ सहित पढ़ा होवै उस से तीन वेदों को राजा यथावत पढ़ै दण्डनीति जो कि सनातन राजधर्म शिक्षा अर्थात् देने की जो व्यवस्था है इस को भी पढ़ै तथा आन्वीक्षिकी जो न्याय शास्त्र, आत्मविद्या और श्रेष्ठ मनुष्यों से कहने पूंछने और निश्चय करने के वास्ते वार्त्ताओं का आरंभ इन को राजा यथावत् पढ़ै और पढ़ के यथावत करै ॥ २५ ॥ इन्द्रियाणां जये योगं समातिष्ठेद्दिवानिशम् । जितेन्द्रियो हि शक्नोति वशे स्थापयितुं प्रजाः ॥ २६ ॥ भ० राजा रात दिन इन्द्रियों के जीतने में नित्य ही प्रयत्न करै क्योंकि जो जितेन्द्रिय राजा होता है वही प्रजा को वश में स्थापन करने में समर्थ होता है और जो अजितेन्द्रिय अर्थात कामी सो तो आप ही नष्ट भ्रष्ट हो जाता है फिर प्रजा को वश कैसे करैगा इस से क्या आया कि जो शरीर, मन और इ-

न्द्रिय इनको वशमें रखता है सोई राजा प्रजा को वशमें करता है अ-
न्यथा कभी प्रजा वशमें राजा के नहीं होती जब तक प्रजावश में न-
होगी तबतक निश्चल राज्य कभी न होगा इस्से जो जितेन्द्रिय होय उ-
सको ही राजा करना चाहिए अन्यको नहीं ॥ २६ ॥ दशकामसमु-
त्थानितथाष्टौक्रोधजानिच । व्यसनानि दुरन्तानि प्रयत्नेन विवर्ज-
येत् ॥ २७ ॥ भ० जो राजा कामी होता है उसमें दश दुष्टव्यसन अवश्य
होंगे और जो राजा क्रोधी होगा उसमें आठ दुष्टव्यसन अवश्य होंगे
उनको अत्यन्त प्रयत्न से छोड़दे अन्यथा राजा ही राज्यसहित नष्ट हो
जाता है ॥ २७॥ फिर क्या होगा कि । कामजेषुप्रसक्तोहि व्यसनेषुम-
हीपतिः । वियुज्यतेऽर्थधर्माभ्यां क्रोधजेष्वात्मनैवतु ॥ २८ ॥ भ०
जो राजा कामसे उत्पन्न भये जो दश दुष्टव्यसन उनमें जब फसजायगा
तब उसका अर्थ नाम द्रव्य और राज्यादिक सब पदार्थ तथा धर्म इनसे
रहित होजायगा अर्थात दरिद्र और पापी होजायगा और क्रोध से
उत्पन्न होते हैं जो आठ दुष्टव्यसन उनमें फसजाने से वह आप राजा ही
मरजाता है इस्से इन अठारह दुष्टव्यसनों को राजा छोड़दे जो अपने
कल्याण की इच्छा हो वे कौन से १८ अठारह दुष्टव्यसन हैं ॥ २८ ॥ मृ-
गयाक्षोदिवास्वप्नःपरिवादःस्त्रियोमदः । तौर्यत्रिकंवृथाट्याचकाम
जोदशकोगणः ॥ २९ ॥ भ० मृगया नाम शिकार का खेलना अक्ष-
नाम फांसाओं से क्रीड़ा वा द्यूत का करना दिवास्वप्न दिवस में सोना
परिवाद नाम वृथा वार्त्ता वा किसी की निन्दा करना स्त्री नाम वेश्या औ-
र परस्त्री गमन तो अत्यन्त भ्रष्ट है किन्तु अपनी जो विवाहित स्त्री उस्से
भी काम से आसक्त होके अत्यन्त फसजाना वा स्त्रीमें अत्यन्त वीर्य का
नाश करना मदनाम भांग, गांजा, अफीम और मद्य इनका सेवन क-
रना तौर्यत्रिकं नृत्य का देखना और करना वादित्रों का बजाना वा सु-
नना गान का सुनना वा करना वृथाट्या नाम वृथा जहां तहां भ्रमण
करना अथवा वृथा वार्त्ता वा हास्य करना यह काम से दश व्यसन समू-
ह गण उत्पन्न होते हैं इसको प्रयत्न से राजा छोड़दे इसको जान छोड़े

गा तोधर्मऔरअर्थ अर्थातधनसहित राज्यनष्टहोजायगा इसमें कुछसन्देहनहीं क्रोधसेआठउत्पन्नजोदुष्टव्यसनवेयेहैं॥ २९ ॥ पैशुन्यंसाहसंद्रोहईर्ष्यासुयार्थदूषणम्। वाग्दण्डजंचपारुष्यंक्रोधजोपिगणोऽष्टकः ॥ ३० ॥ भ० पैशुन्यनाम चुगली करना साहस नामविचारकेबिनाअन्यायसेपरपदार्थकाहरणकरलेना अभिमानबलयुक्तहोके द्रोहनाम सज्जनों से भीप्रीति का न करना ईर्ष्या नाम पर सुख न सहना असूयानाम गुणोंमें दोष और दोषों में गुणोंका कहना अर्थदूषणनाम अपने पदार्थों का वृथा नाश करना अथवाअभिमानसेदूसरेकेकहेअर्थमेंअनर्थकालगाना वाग्दण्डज पारुष्यनामबिनाविचारेमुखसेबोलदेना अथवाकठोरवचन काकहनाइसकानामवाक् है पारुष्यबिनाविचारेदण्डकादेना वा अपराधकेविना किसीकोदण्डदेना अपराधकेऊपरभी पक्षपातमे मित्रादिकोंकोदण्डकानदेना यहक्रोधसेआठदुष्टव्यसनयुक्तगणउत्पन्नहोताहै इसकोअत्यन्तप्रयत्नमेराजाछोड़दे अन्यथाअपनेशरीरसहितशीघ्रहीराज्यकानाशहोजाताहै इनदोनोंगणोंकाजोमूल हैसोयहहै॥३०॥ द्वयोरप्येतयोर्मूलं सर्वेकवयोविदुः। तंयत्नेनजयेल्लोभंतज्जावेतावुभौगणौ॥ ३१॥ भ० जिस्सेकामजऔरक्रोधजदोनोंगणउत्पन्नहोतेहैं अर्थातसबपापऔरसबअनर्थोंकामूललोभहीहै ऐसासब विद्वान लोगजानतेहैं उसलोभको प्रयत्नसेराजा छोड़दे क्योंकिलोभहीसेदोनोंगणपूर्वोक्त कामजऔरक्रोधजउत्पन्नहोतेहैं इस्से राजाऔर सज्जनलोग जोसबपापोंकामूल उसीकोछेदनकर देवैं इसकेछेदनसेसबअनर्थऔरपापनष्टहोजांयगे जैसेकिमूलछेदनसेवृक्षनष्टहोजातेहैं॥ ३१॥ पानमक्षाःस्त्रियश्चैवमृगयाचयथाक्रमम्। एतत्कष्टतमंविद्याच्चतुष्कंकामजेगणे॥ ३२॥ भ० पाननाम मद्यादिकनशाकाकरना अक्षतथास्त्रीमृगया पूर्वोक्तसबजानलेना येचारकामजगणमेंअत्यन्तदुष्टहैं ऐसाराजाजानै॥ ३२॥ दण्डस्यपातनंचैववाक्पारुष्यार्थदूषणे। क्रोधजेपिगणेविद्यात्कष्टमेतत्त्रि-

कं सदा ॥ ३३ ॥ भा॰ दण्डकानिपातन वाक्पारुष्य और अर्थदूषण ये तीन क्रोधके गणमें अत्यन्तदुष्ट हैं १८ अठारहमेंसे ये सात अत्यन्तदुष्ट हैं ॥ ३३ ॥ सप्तकस्यास्यवर्गस्यसर्वत्रैवानुषंगिणः। पूर्वंपूर्वं गुरुतरं विद्याद्व्यसनमात्मवान् ॥ ३४ ॥ भा॰ चारकामके गणमें और तीन क्रोधके गणमें सब ये अनुसंगी हैं कि एक होवै तो दूसराभी होजाय इन सातोंमें पूर्व २ अत्यन्तदुष्ट हैं ऐसा विचारवान्को जाननाचाहिये जैसे कि अर्थदूषणसे वाक्पारुष्य दुष्ट है वाक्पारुष्यसे दण्डकानिपातन दंडके निपातनसे शिकार शिकारसे स्त्रियोंका सेवन इससे अक्षक्रीड़ा और सबसे मद्यादिकपानदुष्ट है ऐसा निश्चित सब सज्जनोंको जाननाचाहिए ॥ ३४ ॥ व्यसनस्यचमृत्योश्चव्यसनंकष्टमुच्यते। व्यसन्यधोऽधोव्रजतिस्वर्यात्यव्यसनीमृतः ॥ ३५ ॥ भा॰ व्यसन और मृत्यु इन दोनोंमें जो व्यसन है सो मृत्युसेभी बुरा है क्योंकि जो व्यसनी पुरुष है सो पापोंमें फसके नीच २ गतिको चलाजाता है और जो व्यसनरहित पुरुष है सो मरजाय तोभी स्वर्ग अर्थात सुखको प्राप्त होता है इससे जिसका बड़ा दुष्टभाग्य होता है वही दुष्ट व्यसनमें फसजाता है और जिसका भाग्य अच्छा होता है वह दुष्टव्यसनोंसे दूर रहता है ॥ ३५ ॥ मौलान्शास्त्रविदःशूरान्लब्धलक्ष्यान्कुलोद्गतान्। सचिवान्सप्तचाष्टौवा प्रकुर्वीतपरीक्षितान् ॥ ३६ ॥ भा॰ फिर राजा सात वा आठ पुरुषोंको अपने पास रखलेवे कैसे होवैं कि बड़े उदार सब शास्त्रके जाननेवाले शूर वीर, जिनोंने प्रमाणोंसे पदार्थविद्या पढ़लिया है श्रीमानोंके उत्तम कुलमें जिनका जन्म होय उनको यथावत्परीक्षा करके राजा रखले क्योंकि राज्यके कार्य एकसे कभी नहीं होसक्ते इससे जितने पुरुषोंसे अपना काम होसके उतने पुरुषोंकी परीक्षा कर २ के रखले उनसे यथावत काम लेवै परन्तु बिना परीक्षा मूर्खको कभी न रक्खै और बिना उन सभासदोंकी सम्मतिसे किसी छोटे कामको भी राजा स्वतन्त्र होके न करै और जो स्वाधीन होके कुकर्म राजा करै तो वे सभासद् पुरुष राजाको दण्ड दें फिर दण्डसे भी न मानै तो उसको निकालके

दूसरा राजा उसी बक्त बैठादें ॥३६॥ सेनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च । सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति ॥ ३७ ॥ भ० सेनापति राज्य करनेके योग्य राजा दण्ड देनेवाला सर्वलोकाधिपति अर्थात् राजाके नीचे मुख्य सर्वोपरि जिसका नाम दीवान कहते हैं ये चार अधिकार वेद और सब सत्यशास्त्र इनमें पूर्ण विद्वान् हों वें उनहीको देवें अन्यको नहीं क्योंकि ये चार अधिकार मुख्य हैं बिना विद्वानोंके ये चार अधिकार यथावत नहीं होते और जो मूर्ख काम, क्रोधादिक, दोषयुक्त इनको देने से ये चार अधिकार नष्ट होजांयगे इसवास्ते अत्यन्त परीक्षा करके चार पुरुष विद्वानोंको चार अधिकार देना चाहिए जिस्से कि विजय राज्य वृद्धि धर्म न्याय और सब व्यवहारोंकी यथावत व्यवस्था होय अन्यथा सब राज्य और ऐश्वर्य नष्ट होजाते हैं ॥३७॥ तेषामर्थे नियुञ्जीत शूरान्दक्षान्कुलोद्गतान् । शुचिनाकरकर्मान्तेभीरूनन्तर्निवेशने ॥ ३८ ॥ भ० उन अमात्योंके समीप राज्य कार्य करनेके वास्ते राजा शूर चतुर, कुलीन पवित्र जो होवें उनको राजा रखदेवै अमात्य उनसे सब राज्य कार्योंको सिद्ध करें उनमें से जितने शूर होवें उनको जहां२ शांका वा युद्ध वहां२ रखदे और जितने भीरु होंय उनको भीतर गृहके अधिकारमें रक्खै जहां कि स्त्री लोग और कोशवहां डरनेवालोंको रक्खै और जहां शूरवीर लोगोंका काम होय वहां शूरवीरोंको रक्खै । ३८॥ दूतं चैव प्रकुर्वीत सर्वशास्त्रविशारदम् । इङ्गिताकारचेष्टज्ञं शुचिन्दक्षं कुलोद्गतम् ३९॥ भ० फिर राजा दूतको रक्खै वह दूत कैसा होय कि सब शास्त्रविद्या से पूर्ण होय मनुष्यको हृदयकी बात गमन शरीरकी आकृति और चेष्टा इनसे जान लेना जो कि उसके हृदयमें होय पवित्र चतुर और बड़े कुलका जो पुरुष होय ऐसे पुरुषको राजा दूतका अधिकार देवै ३९॥ अनुरक्तः शुचिर्दक्षः स्मृतिमान्देशकालवित् । वपुष्मानभीर्वाग्मी दूतो राज्ञः प्रशस्यते ॥ ४० ॥ भ० फिर वैसेको दूत करै कि राजामें बड़ी प्रीति जिसकी होय दक्ष नाम बड़ा चतुर एकवक्त कही बातको कभी न भूलै और जैसा देश कैसा काल वैसी बातको जानै वपुष्मान् नाम रूप

बलऔरशूरवीरता जिसमेंहोय वीतभीनामकिसीसेजिसकोभयन होय वाग्मीवड़ावक्ताधृष्टऔरप्रगल्भहोवै ऐसाजोदूतराजाकाहोय सोअच्छाहोताहै ॥४०॥ अमात्येदण्डआयत्तोदण्डेवैनयिकीक्रिया। नृपतौकोशराष्ट्रेचदूतेसन्धिविपर्ययौ ॥ ४१ ॥ म० दण्डदेनेकाजितनाव्यवहारवहसर्वशास्त्रवितधर्मात्मापुरुषोंकेआधीनरक्खै और दण्डअन्यायसेनहोनेपावै किन्तु विनयपूर्वकहीहोवै कोशऔरराज्ययहदोनोंराजाकेअधिकारमेंरहैं सन्धिनाममिलापविपर्यनाम विरोधयेदोनोंदूतकेआधीनराजारक्खै ॥ ४१ ॥ तस्मादायुधसम्पन्नंधनधान्येनवाहनैः। ब्राह्मणैःशिल्पिभिर्यन्त्रैर्यवसेनोदकेनच ॥ ४२ ॥ म० तत्नामदुर्गकिलासबप्रकारकेआयुध धनधान्यनामअन्नवाहनसवारीब्राह्मणविद्वान शिल्पीनामकारीगरलोग नानाप्रकारकेयन्त्रतथाघासआदिकचारा औरउदकनामजल इनसेपूर्ण सदारहैकमतीकिसीबातकीनहोय॥ ४२ ॥ तस्यमध्ये सुपर्याप्तंकारयेद्गृहमात्मनः। गुप्तंसर्वर्तुकंशुभ्रंजलवृक्षसमन्वितम् ॥४३॥ म० उसअच्छेदुर्गमेंसबप्रकारसेश्रेष्ठअपनाघरराजारहनेकोबनवावैसब प्रकारसेउसस्थानकीरक्षाकरैऔरसबऋतुओंमेंजिसघरमेंसुखहोवै शुभ्रतामसुफेदवहघरहोवै चारोंओरघरकेजलऔरअच्छे २ वृक्ष हरे२पेड़रहैं उसमेंआपरहैसबराज्यकोदेखेभ्रमणकरै औरसबकेऊपरसदादृष्टिरक्खै जिस्से कोईअन्यायनकरनेपावै ॥ ४३ ॥ तदध्यास्योद्वहेद्भार्यांसवर्णांलक्षणान्विताम्। कुलेमहतिसम्भूतांहृद्यांरूपगुणान्विताम् ॥ ४४ ॥ म० उसस्थानमेरहकेअपनेवर्णकोसब अच्छेलक्षणोंसेयुक्तऔरबड़ेकुलमेंउत्पन्नभई अत्यन्तहृदयकोप्रसन्न करनेवाली उत्तमजिसकारूपऔरसवविद्यादिकअच्छेगुणोंसेसम्पन्नस्त्रीकेसाथराजाविवाहकरै देखनाचाहिएकिब्रह्मचर्याश्रमसेसब विद्याकापढ़ना सबराज्यकार्यका प्रबन्धकरना औरसबव्यवहारों कोयथावतजानना पीछेराजाकाबिवाहमनुभगवान्नेलिखा इस्से क्याआयाकि-४८,वा४४ वा४०चालीसवा३६सबर्षमें राजाकोवि-

बाहकरनाउचितहै इससेपहिलेकभीनहीं औरस्त्रीभी२०वर्षसेऊपर
२५वर्षतककीहोनाचाहिए तबराजाकासन्तानसर्वोत्तमहोय अ-
न्यथानष्टभ्रष्टहोजाताहै ॥ ४४ ॥ पुरोहितंचकुर्वीतवृणुयादेवच-
र्त्विजम्। तेऽस्यगृह्याणिकर्माणिकुर्युर्वैतानिकानिच॥ ४५ ॥ म०
सबशास्त्रोंमेंविशारदनामनिपुण धर्मात्माजितेन्द्रियऔरसत्यवादी
जोकिपूर्वोक्तलक्षणवालाकहाउसकोपुरोहितकरै औरऋत्विजभी
वैसेहीकोकरै एराजाकेजितनेअग्निहोत्रादिकगृह्यकर्मऔरइष्टि-
यांउनकोनित्यकरैं॥ ४५॥ यजेतराजाक्रतुभिर्विविधैराप्तदक्षिणैः। ध-
र्मार्थंचैवविप्रेभ्योदद्याद्भोगान्धनानिच ॥ ४६ ॥ म० अग्निष्टोमसे
लेकेजितने अश्वमेधतकयज्ञहैं उनमेंसेकोईयज्ञको राजाकरै सो
पूर्णक्रियाऔरपूर्णदक्षिणासेकरै जितनेविद्वान औरधर्मात्माहोवैं
उनकोनानाप्रकारकेभोजनकरावैऔरदक्षिणाभीदेवै॥ ४६ ॥ सां-
वत्सरिकमाप्तैश्च राष्ट्रादाहारयेद्बलिम्। स्याच्चाम्नायपरोलोकेवर्त्ते-
तपितृवन्नृषु ॥ ४७ ॥ म० श्रेष्ठपुरुषोंकेद्वारावर्ष२केप्रजासेकरोंको
राजालियाकरै केवलवेदविहितऔरधर्मशास्त्रोक्तआचारमेंतत्पर
होवै जितनीप्रजामेंकन्यायुवती औरवृद्धहोवैं इनकोकन्याभगिनी
औरमाताकीनांईराजाजाने जितनेबालकयुवाऔरवृद्धउनकोपुत्र
भाई औरपिताकीनांईराजाजानै अधिकक्याकिसबप्रजाकोपुत्रकी
नांईजानै औरअपनेपिताकीनांईवर्तमानकरै ॥४७॥ अध्यक्षान्वि-
विधान्कुर्यात्तत्रतत्रविपश्चितः। तेऽस्यसर्वाण्यवेक्षेरन्नृणांकार्या-
णिकुर्वताम् ॥४८ ॥ म० जहां२जैसा२कामहोय वहां२नानाप्र-
कारकेमन्त्रियोंकोरखदेवै सबप्रजाकेसुखकेवास्ते सबकार्योंकोदे-
खतेरहैं औरव्यवस्थाकर्त्तारहैं जिस्सेकिअधर्मनहोनेपावै परन्तुवे
मूर्खनहोवैंकिन्तु सबविद्वानहीहोवैं ॥४८ ॥ आवृत्तानांगुरुकुला-
द्विप्राणांपूजकोभवेत्। नृपाणामक्षयोह्येषनिधिर्ब्राह्मोऽभिधीयते॥
४९ ॥ म० नतंस्तेनानचामित्राहरन्तिनचनश्यति। तस्माद्राज्ञा-
निधातव्योब्राह्मणेष्वक्षयोनिधिः॥५०॥ म० नस्कन्दतेनव्यथतेनवि-

नव्यतिकर्हिचित्। परिष्टमग्निहोत्रेभ्योब्राह्मणस्यमुखेहुतम्॥ ५१॥
भा० जोब्रह्मचर्याश्रमसेगुरुकुलमेंगुरूकेपास विद्यापढ़केपूर्णविद्वान
होकेश्रावें उनकोराजायथायोग्यसत्कारकरै औरयथायोग्यउन-
कोश्रधिकारभीदेवै जिस्सेकिसत्यविद्याका लोपकभीनहोय किन्तु
सबविद्यासबमनुष्योंकेबीचमें सदाप्रकाशितरहै अर्थातपुरुषशास्त्रो
विद्यारहितनरहनेपावै यहीराजाश्रोंकाश्रक्षयनिधिश्रर्थातश्रक्षय
पुण्यहैजोकिब्रह्मनामवेदकायथावतपढ़नाश्रौरयथावतवेदोक्तकर्मों
काकरना इस्से आगेकोईपुण्यनहीहैक्योंकि॥ ४९ ॥ जितनेधनहैं
सुवर्णरजतादिकपुत्रदाराश्रौरशरीरउनकोचोरलेसक्ते हैं शत्रुभी
हरणकरसक्ते हैं श्रौरउनकानाश भीहोजाताहै परन्तुजोविद्या
निधिहैउसकोनचोरनशत्रुहरसक्ते हैं श्रौरनकभीउसकानाशहो
ताहै इस्से राजालोगोंको विद्याकाप्रकाशरूपजोनिधि उसकोवि-
द्वानोंकेबीचमेंस्थापनकरनाचाहिए श्रौरनित्यउसकाप्रचारकरना
चाहिए ॥५०॥ जोविद्यानिधिहैउसकोकोईउठाईगिराउठानहीं
सक्ता नउसकोव्यथाश्रर्थातकभीपीड़ाहोतीहै श्रग्निहोत्रादिकजि-
तनेयज्ञहैं उनसेयहजोविद्यारूपयोत्रश्रौरमुखमेंब्रह्मकेजाननेवाले
श्रथवापढ़नेवाले केमुखरूपवेदिमेंहोम श्रर्थातविद्याकाजो स्थापन
करनाहै सोविशिष्टश्रर्थातश्रेष्ठहै इस्से राजालोगोंकोश्रवश्य२चा-
हिए किशरीर,मन श्रौरधनसेश्रत्यन्तप्रयत्न विद्याकेप्रचारमेंकरैं
इसीसेराजालोगोंकाऐश्वर्यपूर्ण श्रायु,बल,बुद्धिश्रौरपराक्रमसदा
श्रधिकहोतेहैं ॥५१॥ संग्रामेष्वनिवर्त्तित्वं प्रजानांचैवपालनम्।
शुश्रूषाब्राह्मणानांच राज्ञांश्रेयस्करंपरम्॥ ५२ ॥ भा० संग्रामों
मेंकभीनिवृत्तनहोना किजबतकउसशत्रुकोनजीतले तबतकउपाय
मेंहीरहै किन्तुभागनेकेसमयमेंभागभीजाना श्रौरपराक्रमकेस-
मयमेंपराक्रमकरना इसकानामशूरवीरपनाहै जोकिपशुकीनांईं
मारखानावामरजाना इसकानामशूरवीरतानहीं किन्तुबुद्धिही
सेविजयहोताहै श्रन्यथाकधीनहीं प्रजाश्रोंकापालनकरना जितने

विद्वानसत्यवादीधर्मात्माब्राह्मण अर्थातब्रह्मवित्सबविद्याओंमेंपूर्ण
उनकायथावतसत्कारकरना यहीराजालोगोंकाकल्याणकरनेवा-
लापरमश्रेष्ठकर्महै अन्यकोईनहीं ॥ ५२ ॥ आहवेषुमिथोऽन्योऽ-
न्यंजिघांसन्तोमहीक्षितः । युध्यमानाःपरंशक्त्यास्वर्गंयान्त्यपरा-
ङ्मुखाः ॥ ५३ ॥ म० प्रजाकेपालनकरनेकेवास्तेश्रेष्ठधर्मात्माओंका
यथावतपालन औरदुष्टोंकाताड़नकरनेकेलिये जितनाअपनासा-
मर्थ्य उसेयथावतसबपुरुषमिलके परस्परजोराजालोगहननदुष्टों
काकतेहैं उसमेंअपनेभीमरणसे जोशंकानहींकरतेहैं औरयुद्धमें
पीठनहीदेखातेहैं अर्थातकभीयुद्धसेभागतेनहींपरमहर्षऔरशूर
वीरतासेजोयुद्धकरतेहैं उनकाइसलोकमेंअखण्डितराज्यहोताहै
औरमरजांयतोमरनेकेपीछे परमस्वर्गकोप्राप्तहोतेहैं क्योंकिउन
राजालोगोंकाजितनाकर्महै सोसबधर्मकेवास्तेहीहै औरशूरवी-
रतासेउत्साहपूर्वकनिर्भयसमयमेंदेहकाजोछोड़ना सोईस्वर्गजाने
काकारणहै ॥ ५३ ॥ युद्धमेंधर्मसेइतनेनियमराजालोगोंकोअवश्य
माननाचाहिए । नकूटैरायुधैर्हन्याद्युध्यमानोरणेरिपून् । नक-
र्णिभिर्नापिदिग्धैर्नाग्निज्वलिततेजनैः ॥ ५४ ॥ म० नचहन्यात्स्थ-
लारूढंनक्लीबंनकृताञ्जलिम् नमुक्तकेशंनासीनंनतवास्मीतिवा-
दिनम् ॥ ५५ ॥ नसुप्तंनविसन्नाहंननग्नंननिरायुधम् । नायुध्य-
मानंपश्यन्तंनपरेणसमागतम् ॥ ५६ ॥ म० नायुधव्यसनप्राप्तंना-
र्त्तंनातिपरीक्षतम् नभीतंनपरावृत्तंसतांधर्ममनुस्मरन् ॥ ५७ ॥
म० कूटआयुधअर्थातकपट, छल, सेकोईकोकभीयुद्धमेंनमारै रिपु
नामशत्रुओंकाकर्णिनामकुटिलशस्त्र विषसेयुक्तशस्त्रसेतथाअग्निसे
तपायेहुएनशस्त्रोंसेशत्रुकोकभीनमारै ॥ ५४ ॥ जोआसनमेंबैठाहोय
नपुंसकहाथकोजोड़ले जिसकेशिरकेबालखुलजांय मैंआपकाहूं
मुझकोमतमारोजोऐसाकहै ॥ ५५ ॥ जोसोताहोय जोयुद्धसेभाग
खड़ाहोय विषादकोप्राप्तभयाहोय वानग्नहोगयाहोय आयुधसर-
हित किजिसकेहाथमेंशस्त्रनहोय जोयुद्धनकरताहोय वादेखनेको

आयाहोय अथवा दूसरे के साथ आयाहोय मूर्छितहोगयाहोय शस्त्र के प्रहार से दुःखितहोगयाहोय और शस्त्रोंके लगनेसे शरीर में छेदन होगयाहोय भयभीतहोगयाहोय भूमिमेंखड़ाक्लीवनाम नपुंसक औरभयमें हाथजोड़ले इनको युद्धमें राजाकभीनमारे क्योंकि सत्पुरुषराजाओंकायहीधर्महै जोयुद्धकरनेकोआवै शूरवीरतासे उसीकोमारै अन्यकोनहीं किन्तु पकड़केसुखमें अपनेवशमें उसीवक्तकरले औरजोबालकहैं उनकोमारनेकीइच्छाभी राजालोगनकरैं क्योंकिजोयुद्धकीइच्छावायुद्धनहींकरते हैं उनकेमारनेमें बड़ापापहै इससे कभीइनकोनमारै ॥ ५७ ॥ औरजोराजाकाभृत्यहोय वहयुद्ध नकरैवायुद्धसेभागजाय अथवाछल,कपट,रक्खै युद्धमें उसकोबड़ा भारीपापहोताहै । यस्तुभीतःपराहृत्तःसंग्रामेहन्यतेपरैः । भर्त्तुर्यद्दुष्कृतंकिंचित्तत्सर्वंप्रतिपद्यते ॥ ५८ ॥ भ० जोभृत्यभययुक्तहोके युद्धसेभागजाताहै औरभागेहुएकोभीशत्रुलोगमारडालें तोबड़ी कृतघ्नताउसनेकिया क्योंकिराजानेउसकापालन औरसत्कारकियाथा सोयुद्धकेवास्तेहीकियाथा सोयुद्धउनसेकुछकियानहीं राजा केकियेकोनाशकरनेसे वहकृतघ्नहोताहै औरजोराजाकाकुछपाप उसकोवहीप्राप्तहोताहै ॥ ५८ ॥ यच्चास्यसुकृतंकिंचिदमुत्रार्थमुपार्जितम् । भर्त्तातत्सर्वमादत्ते पराहृत्तहतस्यतु ॥ ५९ ॥ भ० उसभृत्य मेंजोकुछपरलोककेवास्ते पुण्यकियाथा इससबपुण्यकोराजालेलेताहै औरउसभृत्यकोघोरनरकहोताहै सुखकभीनहीं यहीधर्मस्वामी औरसबसेवकोंकाभीहै किजोजिसकास्वामीवाजोजिसकाभृत्य वेपरस्पर हितकरनेहीमेंसदाप्रवृत्तरहैं छलऔरकपटमनसेभीन करैं अन्यथादोनोंअधर्मीहोतेहैं ॥ ५९ ॥ रथाश्वंहस्तिनंछत्रंधनंधान्यंपशून्स्त्रियः । सर्वद्रव्याणिकुप्यञ्चयोयज्जयतितस्यतत् । ६० ॥ भ० रथघोड़ाहाथीछाता,धनधान्यपशुगायछेरी,आदिकस्त्री और वस्त्रादिकसबद्रव्य घीवातेलकाकुप्पा इनकोजोयुद्धकरनेवालाजीते सोईलेवै उनमेंसेराजाकुछनले ॥ ६० ॥ राज्ञश्चदद्युरुद्धारमित्ये-

षावैदिकीश्रुतिः। राज्ञाचसर्वयोधेभ्योदातव्यमपृथग्जितम् ९१ ॥
भा० परन्तुसबभृत्यलोगजोलड़वाहिंसाउनद्रव्योंमेंसेराजाकोदे-
वें जोराजाऔरसेना मेंमिलकेजीताहोय द्रव्यमिलाभया उसमेंसे
राजाभीसोलहवाँहिस्साभृत्योंकोदेवे इसमेंराजाअधिकवान्यूनता
कभीनकरै क्योंकिइसकेविनायुद्धमेंउत्साहकभीकोईनकरेगा ९१।
अलब्धमिच्छेद्दण्डेन लब्धं रक्षेदवेक्षया। रक्षितंवर्द्धयेद्वृद्ध्यावृद्धं
दानेननिःक्षिपेत् ॥ ९२ ॥ भा० चारभेदहैंपुरुषार्थकेअलब्धजोरा-
ज्यादिकउनकोदण्डसेग्रहणकरै जोप्राप्तभयाउसकोखूबबुद्धिऔर
प्रीतिसेरक्षाकरै औररक्षितपदार्थोंकाव्याजादिकउपायोंसेबढ़ा-
वै औरजोबढ़ाभयाधन उसकोविद्यादान यज्ञधर्मात्माओंका पा-
लनऔरअनाथोंकेपालनमेंलगावै इनमेंसेभीवेदादिकसत्यशास्त्रों
केपढ़नेऔरपढ़ानेहीमें बहुधाधनखर्चकरै अन्यमेंनहीं ॥ ९२ ॥
बकवच्चिन्तयेदर्थान्सिंहवच्चपराक्रमेत्। वृकवच्चावलुम्पेत शशवच्च-
विनिष्पतेत्॥ ९३ ॥ भा० राजासबअर्थोंकेसंग्रहकरनेमेंअत्यन्तशुद्धि
सेविचारकरे जैसाकिमत्स्यादिकग्रहणकरनेकेवास्ते बकुलाध्याना
वस्थितहोकेविचारकरताहै वैसेराजाध्यानावस्थितहोकेसबअर्थों
काविचारकरै युद्धसमयमेंसिंहकी नाईंपराक्रमकरै जिस्से विजय
होवै औरपराजयकभीनहोय आपत्कालमेंअथवादुष्टोंकेनिग्रहक-
रनेकेवास्ते ऐसागुप्तरहै जैसाकिचीतावाभेड़ियाऔरखरहाजैसे
अपनेबिलसेनिकलकेकूदतादौड़ताचलाजाताहै वैसेहीराजाशत्रु
कोसेनासे निकलकेभागजाय वाछिपजाय अथवाकिला तोड़नेमें
औरशत्रुग्रहणकरनेमेंपराक्रमकरै ॥ ९३॥ शरीरकर्षणात्प्राणाः
क्षीयन्ते प्राणिनांयथा। तथाराज्ञामपिप्राणाः क्षीयन्ते राष्ट्रकर्ष-
णात् ॥ ९४॥ भा० जैसेशरीरदुर्बलकरनेसेबलादिकजोप्राणवेक्षीण
होजातेहैं वैसेहीराज्यकेनाश अर्थातअरक्षणसे राजालोगोंकेभी
प्राणक्षीणहोजातेहैं अर्थातराज्यसहितनष्टहोजातेहैं॥ ९४ ॥ य-
थाल्पाऽल्पमदन्त्याद्यं वार्योकोवत्सषट्पदाः। तथाल्पाऽल्पोग्रहो-

तथोराष्ट्रात्राष्ट्राद्धिकःकरः।६५॥ भ० जैसेजोंकबछवाऔरभौंरा थोड़ा२ग्रहणकरतेहैं वैसेराजाप्रजासेथोड़ा२करग्रहणकरैसाल२में॥ कभीनहोकरतेवैसेहीराजाप्रजासेथोड़ा२करग्रहणकरैसाल२में॥ ६५॥ परस्परविरुद्धानांतेषांचसमुपार्जनम्। कन्यानांसम्प्रदानांच कुमाराणांचरक्षणम्॥ ६६॥ भ० जबराजाअमात्योंकेसाथवाप्रजा- स्थपुरुषोंकेसाथकोईव्यवहारकेनिश्चयकेवास्ते राजाविचारकरै उ- नमें जिसबातमें परस्परविरोधहोय उसमेंसेविरुद्धांशको छोड़ाके सिद्धान्तमें सबकोजबएकताहोय उसबातकाआरंभकरै अन्यकान- हीं कन्याओंकासोलहवेंवर्षसेपहिलेविवाहकभीनहोनेपावै तथा चौबीसवर्षकेआगेकन्याविवाहकेबिनाकभीनरहनेपावै जिसकोकी विवाहकीइच्छाहोय तथाकुमारपुरुषोंका२५पर्षकेपहिले विवाह किसीकानहोनेपावै और४०,४४वा४८,वर्षकेआगेविवाहकेबिना पुरुषभीनरहैंतबतककन्याओरपुरुषोंकोविद्यादानराजाकरै और उनसेकरावै तथाउनकीरक्षाभीराजाकरावै जिससे किकोईभ्रष्टन होवै औरविद्याहीनभीकोईकन्या वापुरुषनरहै यहीराजालोगों कापरमधर्म औरपरमपुरुषार्थहै जिससेसबव्यवहारउत्तमहोतेहैं अन्यथानहीं औरजिसपुरुषवाकन्याको विवाहकीइच्छाहोनहोवै उसकेऊपरराजावाअन्यकाकुछबलनहीं॥ ६६॥ दूतसंप्रेषणंचैव- कार्यशेषंतथैवच। अन्तःपुरप्रचारञ्चप्रणिधीनांचचेष्टितम् ६७। दूतकोभेजना औरउससे सबयथावतव्यवहारोंकाजानना कार्यशेष नामदूतनाकार्यसिद्धिहोगया औरदूतनाकार्यसिद्धनाकोहै उसको विचारसेयथावतपूर्णकरै जिसनगरमें वाजिसस्थानमेंरहै उनम- नुष्योंकायथावतअभिप्रायजानले प्रणिधीनामदूतोंअथवादासी दू- तकोभीचेष्टाकोयथावतजानै जिससे किकोईविघ्ननहोनेपावै ६७॥ कृत्स्नंचाष्टविधंकर्मपञ्चवर्गंचतत्त्वतः। अनुरागापरागौचप्रचारं- मण्डलस्यच॥ ६८॥ भ० येआठविधजोकर्मराजाअमात्यसेनाकोश औरराज्ययेपांचवर्गहैं जिसमेंउसकर्मकोतत्त्वसेजानै औरउसकी

रक्षाभीकरै अपनेमेंसबकोप्रीति वाअप्रीति तथामण्डलके राजा
ओंकाव्यवहार औरउनकेमनकोइच्छाइसकोयथावत्राजाजान-
तारहै जिस्से आपत्कालअकस्मात्कभीनआवै ॥ ६८ ॥ मध्यमस्यप्र-
चारञ्च विजिगीषोश्चचेष्टितम् । उदासीनप्रचारंच शत्रोश्चैवप्रय-
त्नतः ॥ ६९ ॥ अपनेऔरपरराज्यकीसीमामें जोराजाहोय विजि-
गीषुनामशत्रुकेतरफसेजो जीतनेकोआवै उदासीनजोअपनेवाशत्रु
के पक्षमेनहोवैऔरशत्रु,इनचारोंकीचेष्टाऔरअभिप्रायकोयथा-
वत्राजाजानलेवै अन्यथासुखकभीनहोगा इस्सेअत्यन्तप्रयत्नपूर्वक
राज्यकेमूलजितनेहैं उनकोकहै औरतत्परहोकेजानेजानकेयथा-
वत्व्यवस्थाकरै ॥ ६९ ॥ इनकोसामअर्थातमिलाप.दानअर्थातधन
कादेना भेदनामपरस्परसभोंकोतोड़फोड़रक्खै औरदण्डयेचार
राजालोगोंकेसाधनहैं परन्तु उनचारोंमेंसेमिलापउत्तमहै उस्से
नीचेदाम औरभेदसबसेकनिष्टदण्डहै इस्से तीनउपायसेजबकार्य
सिद्धिनहोवैतबदण्डकरै इनकातत्वयहहै किजिस्से बहुतधर्मात्मा
होवैं औरदुष्टनहोवैं ऐसेउपाय विद्यादिकदानोंसे राजासदाक-
रतारहैएकतोउक्तप्रकारसेयुवावस्थामेंब्रह्मचर्याश्रमसेविद्याकोप-
ढ़केविवाहकाहोना औरपांचवेवर्षपुत्रवाकन्याको पढ़नेकेवास्ते न
भेजैं तोउनकेमातापितादिकोंकेऊपरराजाअवश्यदण्डकरै यथा-
वत्पठनऔरपाठन कीव्यवस्थाकरै जोकोईइसमर्यादाकोभङ्गकरै
विद्यादिकगुणग्रहणनकरै तबउसमनुष्यकोशूद्रकाअधिकारदेदे-
वै औरशूद्रादिकनीचोंमेंकोईउत्तमहोवै उसकोयथायोग्यद्विजका
अधिकारदेवै जैसेकिब्राह्मण,क्षत्रियवावैश्योंकेदुष्टपुत्रवाकन्यामूर्ख
होजांय तबउनकोशूद्रकुलमेंरखदे औरशूद्रादिकोंमेंजबद्विजत्वअ-
धिकारकेयोग्यहोवैं तबयथायोग्यद्विजकाअधिकारदेवै अर्थातद्विज
बनादेवै तबजिसब्राह्मणक्षत्रियवावैश्यकेपुत्रवाकन्या एकदोतीनवा
जितनेशूद्रहोगयेहोंय उनकेबदलेपुत्रवाकन्याओंकोराजागिन२के
देवै तथाशूद्रादिकोंकोभीक्योंकिजिसकोएकहीपुत्रवाकन्याहै और

वहशूद्रहोगया अथवाशूद्रकीपुत्र वाकन्याद्विजहोगई फिरउनका
वंशतोछिन्नहीहोगया दूसराराजालोगोंसेयथायोग्य गिन२केलिये
जांयऔरदियेभीजांयदूसरीबातयहहैकिवेदादिकसत्यशास्त्रोंकाअ-
त्यन्तप्रचारकरै औरजोकोईशास्त्रपुस्तकरचैवापढ़ैपढ़ावै उसकोरा-
जाशिरच्छेदनतकदण्डदेवै जिस्से किकोईमिथ्याशास्त्रपुस्तकनरचै
तीसरीबातयहहैकिजबकोईजितेन्द्रिय,पूर्णविद्यावान,पूर्णज्ञान-
वान,सत्यवादीदयालुऔरतीव्रबुद्धिवालाविवाहकरना औरविरक्त
होनाचाहैउसकोराजायथावत्परीक्षाकरकेआज्ञादेवै औरकहदे
किआपसत्यविद्यासत्यउपदेशकाप्रचारसंसारमेंकरैंउसकाआकार
स्वभावऔरगुणपत्रमेंलिखेऔरग्राम२नगर२मेंविदितकरदेजिस्से
किकोईपुरुषउसका अपमाननकरै औरउसके वेषवानामसे कोई
फिरनेनपावै चौथीबातयहहैकिकोईमूर्ख,धूर्त,अधर्मीऔरमिथ्या
वादीविरक्तनहोनेपावै क्योंकिउसकेविरक्तहोनेसेसबसंसारकोबुद्धि
भ्रष्टहोजातीहैजैसोउसकीभ्रष्टबुद्धिहोगीवैसाहीउपदेशकरेगा अ-
च्छाकहांसेकरेगाइस्सेऐसापुरुषविरक्तनहोनेपावैजोविरक्तहोयतो
उसकोपकड़केदण्डदे पांचवींबातयहहैकिजोकोईकर्मकाण्डकाअ-
धिकारीहोय उसकोकर्मकाण्डमेंरक्खै सोकर्मकाण्डवेदोक्तलेना
तन्त्रवापुराणकोएकबातभीनलेनी पूर्वमीमांसाअर्थातजैमिनिजो
व्यासजीकेसिष्यकेकियेसूत्रोंकेअनुसार कर्मकाण्डकीव्यवस्थाराजा
नित्यरक्खै संध्योपासन,अग्निहोत्रसेलेकेअश्वमेधतककर्मकाण्डहै
उसकेदोभेदहैं एकतोसकामदूसरानिष्काम सकाम यहकहताहै
किविषयभोगऐश्वर्यकेवास्ते कर्मकाकरना औरनिष्कामयहहैकि
कर्मोंसेमुक्तिहीकाचाहना उस्से भिन्नपदार्थोंकोचाहनानहींउ-
समेंवेदकेजोमन्त्रहैंवेहीदेवहैं इनसेभिन्नकोईदेवनहींऔरमन्त्रों
के कहनेवाले परमेश्वरपरमदेवहैं ऐसाहीनिश्चय पूर्वमीमांसा-
दिकों औरनिरुक्तादिकोंमेंकियाहै दूसराउपासनाकाण्डहैसोभी
वेदोक्तहीलेना उसकेव्यवस्थाकेनिमित्तपातञ्जलिमुनिकेसूत्रऔर

उसके ऊपर व्यासमुनिजीकाकियाभाष्य तथा दशउपनिषद् इन्होंको रक्खै इनमेंजैसी उपासना की व्यवस्थाहै उसी पूर्वक आप और अपनीप्रजाकोचलावै पाषाणादिकमूर्त्ति पूजनादिक उपासनाको नहीं इस्से इसकोछोड़नाछोडानाहीउचितहै तीसराज्ञानकाण्ड है उसमेंपृथ्वीसेलेकेपरमेश्वरपर्यन्त पदार्थोंकायथावततत्त्वज्ञान काहोना इसकाविधानवेदशउपनिषदऔरव्यासजीकाकिया शा- रीरकसूत्रउनकीरीतिसेज्ञानदण्डकीव्यवस्थाकरै उसमेंआपराजा चलै औरप्रजाकोभीचलावैऔरजितनेपूर्वोक्तशैववैष्णवशाक्तादिक पाखण्डलिखेहैं उनकोकभीनप्रचलितकरै क्योंकियेसबपाखण्डहै तीनोंकाण्डमेंनहींहै उनसेविरुद्धहीहैं इनपाखण्डोंकेचलनेंमेंराजा औरराज्यनष्टहोजातेहैं सोअत्यन्तप्रयत्नोंसेइनपाखण्डोंकाअंकुर मात्रभीनरहनेपावै जैसेकिआजकालआर्यावर्त्तदेशमें मण्डलीको मण्डलीफिरतीहैं लाखोंपुरुषोंमेंविरक्तताधारणकियाहै यहमि- थ्याजालहीहै इनलाखोंमें कोईएकपुरुषविरक्तताकेयोग्यहै और सब पाखण्डमेंरहेहैं इनकोराजा यथावतपरीक्षाकरै सत्यवादी, जितेन्द्रिय,सबविद्याओंमेंनिपुण औरशान्त्यादिकगुणजिसमेंहोय उसकोतोविरक्तहीरहनेदे इस्से जितनेविपरीतहोंय उनकोयथा- योग्य हलग्रहणादिककर्मोंमें राजालगादेवै इसव्यवस्थाको अ- वश्यकरै अन्यथाकभी सुखनहोगा॥ सन्धिंचविग्रहंचैव यानमा- सनमेवच। द्वैधीभावंसंश्रयञ्च षड्गुणांश्चिन्तयेत्सदा॥ ६५॥ स- न्धिनामसिलापविग्रहनामविरोधयाननामयात्रा किशत्रु केऊपर चढ़ना आसननामयुद्धकानकरना औरअपनेराज्यकाप्रबन्धकरके घरमेंबैठरहनाद्वैधीभावनामदोप्रकारकाबलअर्थातसेनारखलेना इनछ:गुणोंका विचारकियाहै सोमनुस्मृतिमें विचारलेना और भीबहुतप्रकारकेराजकर्मोंकाउसीमेंविचारकियाहैसो देखलेवें॥ प्रमाणानिचकुर्वीततेषांधर्म्यान्यथोदितान्। रत्नैश्चपूजयेदेनंप्रधा- नपुरुषैःसह॥ ६६॥ स० जिसराजाकोजीतलेउस्से नियमकरदे कि

अब हम तुमको बोलावैं वा जैसी आज्ञा करैं उसको यथावत करना और मेरे अमात्य के तुल्य हो के यथोक्त मेरी आज्ञा करो यथावत तुम धर्म से सब काम करो अन्याय मत करो पराजय के शोक निवारण के निमित्त राजा और राजा के सब पुरुष मिल के उनको रत्नादिक दे के उस राजा को प्रसन्न करैं जिस्से कि उसको पराजय से दुःख भया होय उसका सत्कार से निवारण होजाय फिर उनको यथावत आजीविका करदे जिस्से उनके भोजनादिकों का निर्वाह होसके उतनी जीविका करदे और जो राजा धर्म से राज्य करै विद्या, बुद्धि, बल, पराक्रम, और जितेन्द्रिय होय उस्से न युद्ध करै न उस्से राज्य लेने की इच्छा करै किन्तु उसको बन्धु और मित्रवत् जानै ॥ ६६ ॥ प्राज्ञं कुलीनं शूरं च दक्षं दातारमेव च । कृतज्ञं धृतिमन्तञ्च कष्टमाहुररिं बुधाः ॥ ६७ ॥ म० पण्डित, कुलीन, शूर, वीर, चतुर, दाता, कृतज्ञ और धैर्यवान पुरुष से वैर कभी न करै जो कभी वैर करैगा तो उसको दुःख ही होगा ऐसे पुरुष का पराजय कभी नहीं होसक्ता ॥ ६७ ॥ एवं सर्वमिदं राजा सह संमन्त्र्य मन्त्रिभिः । व्यायाम्याप्लुत्य मध्याह्ने भोक्तुमन्तःपुरं विशेत् ॥ ६८ ॥ म० इस प्रकार से सर्व राज सम्बन्धी जो कर्म उसका विचार मन्त्रियों के साथ करके व्यायाम नाम दण्ड मुद्गर करके सिंह की नांई अथवा नट की नांई अभ्यास करके मध्यान्ह समय के पहिले भोजन करै भोजन करके न्यायघर में जाके सब न्यायों को यथावत करै जितनी राजसम्बन्धी बातें लिखी हैं ये सब मनुस्मृति सप्तमाध्याय की हैं यहां तो संक्षेप से लिखी हैं विस्तार से देखा चाहै तो वहां देखलै एक यह बात अवश्य होनी चाहिए कि जो मनुष्य राजा हो उसी की आज्ञा में चलैं यह बात ठीक नहीं क्योंकि राजा तो प्रतिष्ठा और मान के वास्ते सर्वोपरि है परन्तु विचार करने को एक पुरुष समर्थ नहीं होता जितने देश वा अन्य देश में बुद्धिमान पुरुष होवें उन सब को राजा एक सभा रक्खे उस सभा में आप भी रहै फिर सब पुरुषों के विचार से जो बात ठीक २ ठहरे उस बात को सब करैं इस्से क्या आया कि जो राजा अन्यायकारी होजाय तो उस-

कोनिकालबाहरकरैं औरउसीकेस्थानमेंउत्तमलक्षणवालेक्षत्रियको बैठादेवैं क्योंकिराजातोप्रजाकेभयसेअन्यायनकरसकेगा औरप्रजा राजाकेभयसे अन्यायनकरसकैगी राजाजबअन्यायकरै तबउसको यथावत्दण्डदेदे॥कार्षापणंभवेद्दण्डोयत्रान्य:प्राकृतोजन:। तत्रराजाभवेद्दण्ड:सहस्रमितिधारणा ६८॥ भा० जिसअपराधमेंप्राकृत पुरुषकेऊपरएकपैसादण्डहोय उसीअपराधकोजोराजाकरैउसकेऊपरहजारपैसादण्डहोय यहकेवलउपलक्षणमात्रहै किप्रजासे हजारगुनोदंडराजाकेऊपरहोय क्योंकिराजाजोअधर्मकरेगा तो धर्मकापालनकौनकरेगा कोईभीनकरेगाइस्सेदोनोंकेऊपर दण्ड कोव्यवस्थाहोनीचाहिए ॥ ६८॥ अष्टापाद्यन्तुशूद्रस्यस्तेयेभवतिकिल्बिषम् । षोड्शैवतुवैश्यस्यद्वात्रिंशत्क्षत्रियस्यच ॥ ७० ॥ ब्राह्मणस्यचतु:षष्टि:पूर्णंवापिशतंभवेत् । द्विगुणावाचतु:षष्टिस्तद्दोषगुणवद्धि स: ७१॥ जितनापदार्थकोईचोरावैवहमूर्खवाबालकनहोय किन्तु गुणऔरदोषोंकोजानताहोवै सोजोशूद्रचोरहोयतोउस्से आठ गुणादण्डले वैश्यसेसोलहगुणा,क्षत्रियसे३२गुणा,और१०० वा१२८ गुणादण्डराजाब्राह्मणसेलेवै क्योंकिश्रेष्ठहोकेनीचकर्मकरै उसको अधिकहीदण्डहोनाचाहिए॥ ७१ ॥ पिताचार्य:सुहृन्माताभार्यापुत्र:पुरोहित: । नादण्ड्योनामराज्ञोस्तियस्स्वधर्मेनतिष्ठति ७२ ॥ भा० पिताआचार्यविद्यादातासुहृत्नाममित्रमाता भार्यानामस्त्री पुत्रऔरपुरोहितजब२ अपराधकरैं तब२कभीदण्डकेबिनानछोड़ै क्योंकिराजाकेसामनेकोई अपराधीअदण्ड्यनहीं क्योंकिस्वधर्ममें स्थितनरहै॥ ७२॥ अदण्ड्यान्दण्डयन्राजादण्ड्यांश्चैवाप्यदण्डयन्। अयशोमहदाप्नोतिनरकंचैवगच्छति ७३॥भा०जोराजाअन्याय करनेवालेकोदण्डनहींदेता औरअनपराधीकोदण्डदेताहै उसकोबड़ीअपकीर्त्तिहोतीहै औरनरककोभी वहजाताहै इस्से राजा कोअवश्यचाहिएकिपक्षपातकोछोड़के यथावत्दण्डव्यवस्थारक्खे किसीकापक्षपातकभीनकरै इस्से क्याआयाकि किसीनेंमनुष्य ति

वाअन्यजनसेऐसेश्लोकप्रक्षिप्तकियाहोय किब्राह्मणवासंन्यासीआदि-
कोदण्डनदेनाउसकोसज्जनलोगमिथ्याहीमानैं ॥ ७३ ॥ क्योंकि
धर्मोविद्धस्त्वधर्मेणसभांयत्रोपतिष्ठते । शल्यंचास्यनकृन्तन्तिविद्धा-
स्तत्रसभासदः ॥७४॥ म० धर्मऔरअधर्मसेविद्धअर्थातघायलभया
राजाऔरसभासदोंकेपासधर्मीऔरअधर्मीदोनोंआवैंफिरउसध-
र्मकाजोघावउसकोराजाऔरसभासदननिकालैंजसेकिघावकोऔ-
षध्यादिकयत्नोंसेअच्छाकरतेहैंवैसेहीधर्मात्माकासत्कारऔरदुष्टों
केऊपरदण्ड जिससभामें यथावत नहोगा उससभाके राजाऔर
सभासदसबमनुष्योंकोमुरदाहीजानना तथाजहां२शिष्टपुरुषोंको
अथवासत्यासत्य निश्चयकेवास्तेसभाहोवै फिरजिससभामें सत्यका
स्थापननहोयऔरअसत्यकाखण्डनवेभीसबसभासदमूढ़हीहैं और
मुरदेक्योंकि ॥७४॥ सभांवानप्रवेष्टव्यंवक्तव्यंवासमंजसम् । अब्रु-
वन्विब्रुवन्वापिनरोभवतिकिल्विषी ॥ ७५ ॥ म० पुरुषप्रथमतोस-
भामेंप्रवेशहीनकरै औरजोसभामेंप्रवेशकरै तोसत्यहीकहै मिथ्या
कभीनकहै क्योंकिजानताभयापुरुषसत्यासत्यकोनकहै अथवाजैसा
जानताहोय उससे विरुद्धकहैतोभीवहमनुष्यपापीहोजाताहै इससे
क्याआयाकिजैसाजोपुरुष हृदयरुजानताहोय वैसाहीकहै उससे
विरुद्धकभीनकरै क्योंकिसत्यबोलनाहीसबधर्मोंकामूलहै औरअ-
सत्यअधर्मकामूलहै इसमेंमहाभारतकाप्रमाणहै नसत्याद्विपरो-
धर्मोनानृतात्पातकंपरम् । इसकायहअभिप्रायहैकिसत्यबोलनेसे
बढ़करकोईधर्मनहींऔरमिथ्याबोलनेसेबढ़करकोईपापनहीं इससे
सत्यभाषणहीसदाकरनाचाहिए मिथ्याकभीनहीं ॥ ७५ ॥ यत्रध-
र्मोह्यधर्मेणसत्यंयत्रानृतेनच । हन्यतेप्रेक्षमाणानांहतास्तत्रस-
भासदः । ७६ ॥ म० जिसराजाकीसभामें धर्म अधर्मऔरसत्यका
राजातथाअमात्योंकेदेखतेभी अनृतनाशकरताहै फिरवेन्यायन-
करैं तथासर्वसभामें उनकोभीसज्जनलोग नष्टहीजानैं क्योंकि
॥ ७६ ॥ धर्मएवहतोहन्तिधर्मोरक्षतिरक्षितः । तस्माद्धर्मोनहन्त-

व्योमानोधर्मोहतोवधीत्॥ ७७॥ भ० जोपुरुषधर्मकानाशकरता है अर्थात्धर्मकोछोड़के अधर्मकरताहै उसकोअवश्यही धर्ममार डालताहै उसअधर्मीकीरक्षाकरनेको ब्रह्मादिकदेवभीसमर्थनहीं औरपरमेश्वरभीअपनीआज्ञाकोअन्यथानहींकरते क्योंकिपरमे-श्वरतोसत्यसङ्कल्पहीहै इस्से जैसीआज्ञाविचारकेयथावतकियाहै वहीरहतीहै किअधर्मकरैसो अधर्मकाफलपावै औरधर्मकरैसो धर्मका औरजोपुरुषधर्मकोरक्षाकरताहै उसकीधर्मभीसदारक्षा करताहैउसकानाशकरनेकोतीनोंलोकमेंकोईभीसमर्थनहीं इस्से सबसज्जनलोगधर्मकानाशऔरअधर्मकाआचरणकभीनकरैं ७७ वृषोहिभगवान्धर्मस्तस्ययःकुरुतेह्यलम् । वृषलन्तंविदुर्देवास्तस्मा-द्धर्मंनलोपयेत्॥ ७८॥ भ० जोमनुष्यधर्मकालोप अर्थात्धर्मको छोड़केअधर्मकरताहै वहीशूद्रवाभंडुवाहै क्योंकिवृषनामधर्मका है औरभगवान्भीतीनोंलोकमेंधर्महीहै जोआज्ञाकरनेवालाहै सोआज्ञासेभिन्ननहीं क्योंकिउसकेआत्मरूपहीआज्ञाहै उसधर्म कोजोत्यागकरताहै उसकोदेवनाम विद्वानलोगशूद्र वा भंडुवाको नांईजानतेहैं इस्से धर्मकात्यागकभीनकरनाचाहिए॥ ७८॥ एक एवसुहृद्धर्मो निधनेप्यनुयातियः । शरीरेणसमंनाशं सर्वमन्यद्धि-गच्छति॥ ७९ ॥ भ० देखनाचाहियेकिसबजगतमेंएकधर्महीसब मनुष्योंकामित्रहै अन्यकोईनहीं क्योंकिधर्ममरनेकपीछेभीसाथदे-ताहै औरधर्मसेभिन्न जितनेपदार्थहैं वेशरीरकेछोड़नेके साथही छूटजातेहैं परन्तु धर्मकासंगसदाबनारहताहै इस्सेधर्मकोकोईक-भीनछोड़ै ॥ ७९ ॥ पादोधर्मस्यकर्त्तारं पादःसाक्षिणमृच्छति । पादःसभासदःसर्वान्पादोराजानमृच्छति ॥ ८० ॥ भ० जिससभा मेंअन्यायहोताहै उससभामेंयहबातहोतीहै किजोअधर्मकोकरता है उसकोअधर्मकाचौथाहिस्साप्राप्तहोताहै उसकेजोमिथ्यासाक्षी हैं उनकोअधर्मकाहिस्सांशमिलताहै जितनेसभासदहैं कि राजा केअमात्य उनकोएकअंशअधर्मका राजाकोमिलताहै अर्थातउस

अधर्म के चार हिस्से होजाते हैं और चारों को उक्त प्रकार से एक२ हि-
स्सा मिलजाता है ॥ ८० ॥ राजा भवत्यनेनास्तु मुच्यन्ते च सभासदः ।
एनो गच्छति कर्त्तारं निन्दार्हो यत्र निन्द्यते ॥ ८१ ॥ म० जिस सभा में
धर्म और अधर्म का विवेक यथावत् होता है कि यथावत् पक्षपात को छो-
ड़ के सत्य२ ही न्याय होता है उस सभा के राजा साक्षी और अमात्य सब
धर्मात्मा होजाते हैं और जिसने अधर्म किया उसी के ऊपर सब अधर्म
होता है किन्तु वही अधर्म का फल भोगता है राजादिक आनन्द से पुण्य
का फल भोगते हैं दुःख कभी नहीं इससे राजा अमात्य और साक्षी प-
क्षपात से अन्याय कभी न करें ॥ ८१ ॥ बाह्यैर्विभावयेल्लिङ्गैर्भावमन्त-
र्गतन्नृणाम् । स्वरवर्णेङ्गिताकारैश्चक्षुषा चेष्टितेन च ॥ ८२ ॥ म०
जब कोई वादी प्रतिवादी को न्याय करने लगे तब बाहर के चिन्हों से भी-
तर के भाव को जान लेवे उसका शब्द रूप इङ्गित नाम सूक्ष्म हृदय औ-
र नाड़ी की चेष्टा आकृति तथा नेत्र की चेष्टा और बाह्य अंगों की भी चेष्टा
इन से सत्य२ निश्चय कर ले कि इनने अपराध किया है और इनने नहीं
किया एक बात यह भी परीक्षा की है जो हाथ के मूल में धमनी नाड़ी
और हृदय उनको वैद्यक शास्त्र की रीति से स्पर्श कर के यथावत् परीक्षा
करै फिर यथावत् दण्ड और अदण्ड करै इन १८ अठारह स्थानों में
विचार की व्यवस्था है ॥ ८२॥ तेषामाद्यमृणादानं निःक्षेपोऽस्वामि-
विक्रयः । संभूय च समुत्थानं दत्तस्यानपकर्म च ॥ ८३ ॥ वेतनस्यैव
चादानं संविदश्च व्यतिक्रमः । क्रयविक्रयानुशयो विवादः स्वामिपा-
लयोः ॥ ८४ ॥ सीमाविवादधर्मश्च पारुष्ये दण्डवाचिके । स्तेयं च
साहसं चैव स्त्रीसंग्रहमेव च ॥ ८५ ॥ स्त्रीपुंधर्मो विभागश्च द्यूतमाह्व-
यएव च । पदान्यष्टादशैतानि व्यवहारस्थिताविह ॥ ८६ ॥ एषु
स्थानेषु भूयिष्ठं विवादं चरतान्नृणाम् । धर्मं शाश्वतमाश्रित्य कुर्या-
त्कार्यविनिर्णयम् ॥ ८७ ॥ म० ऋण का लेना और देना १ नि-
क्षेप के दो भेद हैं जो गिनके तौलके वा किसी के पास पदार्थ रक्खे उस-
का नाम निक्षेप है दूसरा गुप्त बांध के किसी के पास धरावट रक्खो और

आधेर धनसे व्यवहारकरना २ अस्वामिविक्रयनाम अन्यकापदार्थकोईबेचले वाकिसीकापदार्थकोईदबाले३ संभूयसमुत्थाननाम धर्मार्थयज्ञार्थ वा दक्षिणाकेवास्ते धनदियाजाय इनमें विवादका होनावाअन्यथाकरना ४ औरदियेभयेपदार्थकोछिपाले ५ नौकरी काटदेनावानदेना अथवानलेना ६ प्रतिज्ञाकाभंगकरना ७ बेचनाऔरखरीदना ८ पशुओंकास्वामीऔरउनकेपालनेवालेमेंविवादकाहोना सोमामेंविवादकाहोना १० कठोरवचन औरबिना विचारे दण्डदेना ११ चोरी १२ साहसनामपरस्परस्त्रीपुरुषोंका व्यभिचारऔरडांकूपना १३ किसीकोस्त्रीकोबलसेवाफुसलाकरले लेना १४ स्त्रीऔरपुरुषोंकेपरस्परनियमउनकोभंगकरना १५ दायभाग १६ द्यूतनामजूवा १७ और जोप्राणिअर्थात स्त्रीपुत्रकुटुम्बगाय हस्ती, अश्वादिकपशुओंकोदबाकरद्यूतकाकरना उसकानामसमाह्वयहै १८ इनअठारहव्यवहारोंमें प्रजामेंअत्यन्तविवादहोता है इनकाउक्तलक्षणदूतप्रेषण औरपूछनेसेराजायथावत्न्यायकरे इनन्यायोंकाविधानयथावत्मनुस्मृतिके अष्टमाध्याय औरनवमाध्यायकीरीतिसेकरनाचाहिये॥ ८७॥ दातव्यं सर्ववर्णेभ्यो राज्ञा चौरैर्हृतं धनम्। राजातदुपयुञ्जानश्चौरस्याप्नोतिकिल्बिषम्॥ ८८॥ जोप्रजामेंचोरीहोयतोउसमेंजितनेपदार्थचोरीजांयउनसबपदार्थों कोचोरोंकानिग्रहकरके जोजिसकापदार्थ चोरीगयाहोय उसको चोरीमेंलेकेपदार्थकेस्वामीकोराजादेदे औरजोचोरनपकडाजाय औरपदार्थनमिले तोअपनेपाससेराजादेदेक्योंकिइसीवास्ते राजा काहोनाआवश्यकहै प्रजानित्यराजाकोदेतीहैइसवास्ते किअपना पालनराजायथावत्करै जोयथावत्पालननकरेगाऔरप्रजासेधनलेगातोवहीराजाचोरऔरडाकूकेपापकाभागीहोगाजोचोरोंसे मिलके चोरीकेधनकोग्रहण करनेकीइच्छाकरै वहराजानहीं है किन्तु वहीचोरऔरडांकूहै॥ ८८॥ यादृशाधनिभिःकार्याव्यवहारेषुसाक्षिणः। तादृशान्संप्रवक्ष्यामियथावाच्यमृतंचतैः॥ ८९॥

भ० राजाओरधनिकलोगोंकोजिसप्रकारकेसाक्षीव्यवहारोंमेंकरनाचाहिए उनकोयथावतकहतेहैं औरसाक्षियोंकोजैसासत्यर हीकहनाचाहिए ॥ ८९ ॥ गृहिणः पुत्रिणोमौलाःक्षत्रविट्शूद्रयोनयः। अर्थ्युक्ताःसाक्ष्यमर्हन्तिनयेकेचिदनापदि ॥ ९० ॥ भ० गृहस्थपुत्रवालेऔरवेउदारहोवें फिरक्षत्रिय,वैश्य,शूद्र,शूद्रवर्णोंमें सेकार्यवाला पुरुषजिनकोकहै कियेमेरेसाक्षीहैं औरकोईआपत् कालकेबिनानहोय ॥ ९० ॥ आप्ताःसर्वेषुवर्णेषु कार्याःकार्येषुसाक्षिणः। सर्वधर्मविदोऽलुब्धाविपरीतांस्तुवर्जयेत्॥ १०० ॥ भ० ब्राह्मणादिक सबवर्णोंमें जोआप्त बड़ाधर्मात्मा, सत्यवादी औरजितेन्द्रियहोवै तथासर्वधर्मको जानताहोय और काम,क्रोध,लोभ, मोह,भयशोकादिक दोषजिसमेंनहोवें सत्यबोलनेहीका जिसका नियमहोय ऐसेहीकोराजाऔरप्रजासाक्षीकरें इनसेविपरीतमनुष्योंकोकभीसाक्षीनकरैं॥ १०० ॥ नार्थसम्बन्धिनोनाप्तानसहायानवैरिणः। नदृष्टदोषाःकर्तव्यानव्याध्यार्त्तानदूषिताः॥ १०१ ॥ भ० जिननेपरस्परव्यवहारसेसबन्धरखतेहोंय अनाप्तनामजिनमेंकाम क्रोध,लोभ,मोह,भयमूर्खत्वादिदोषहोवें सहायकारीहोवेंवाशत्रु होवें जोवादीप्रतिवादीकेदोष वा गुणोंकोजानताहोय रोगसेआर्तहोय वादुष्टकर्मकोकरनेवाले इसप्रकारकेमनुष्योंकोराजावाप्रजासाक्षीकभीनकरैं॥ १०१ ॥ नसाक्षीनृपतिःकार्योनकारुककुशीलवौ। नश्रोत्रियोनलिंगस्थो नसंगेभ्योविनिर्गतः ॥ १०२ ॥ भ० राजाकारुकनामशिल्पी कुशीलवनामकुटारीसेआजीविकाकरनेवाले श्रोत्रियनामवेदपढ़ानेवाला लिंगस्थब्रह्मचारीऔरवानप्रस्थ संगेभ्योविनिर्मुक्तनामसन्यासीइनकोभीराजावाप्रजासाक्षीनकरैं क्योंकि कारुक और कुशीलव तो मूर्ख हैं राजा न्यायकरनेवाला होताहै वेदपाठी,ब्रह्मचारी,वानप्रस्थऔरसन्यासीइनकोसाक्षीकरनेसे पढ़नापढ़ानातपऔरविचारमें विघ्नहोगा इससेइनकोसाक्षी नकरनाचाहिये। १०२ ॥ नाध्यधीनोनवक्तव्योनदस्युर्नविकर्मकृत्।

नदृष्टोनर्षियुनैंकोनान्त्योनविकलेन्द्रियः ॥ १०३ ॥ भ० पराधीनवक्तव्यनाम लिखाने सेसाक्षीहोवै डांकू विरुद्ध कर्मकरनेवाला दुष्ट बालकनीचऔरअजितेन्द्रिय तथाएकहीपुरुषसाक्षी इनकोराजा वाप्रजाकभीसाक्षीनकरैं ॥ १०३ ॥ नार्त्तोनमत्तोनोन्मत्तोनक्षुत्तृष्णोपपीड़ितः । नश्रमार्त्तोनकामार्त्तोनक्रुद्धोनापितस्करः ॥ १०४ ॥ भ० दुःखीमत्तनाम भांगमद्यादिकपीनेवाला उन्मत्तनामपागल क्षुधा औरतृषासे जोपीड़ितहोवै श्रमकरकेदुःखीहोवै कामातुर क्रोधीऔरचोर इनकोराजाऔरप्रजासाक्षीकभीनकरैं ॥ १०४ ॥ स्त्रीणांसाक्ष्यंस्त्रियःकुर्युर्द्विजानांसदृशाद्विजाः । शूद्राश्चसन्तःशूद्राणामन्त्यानामन्त्ययोनयः ॥ १०५ ॥ भ० विद्यासत्यभाषणजितेन्द्रियजोस्त्रियांहोवें वेस्त्रियोंकोसाक्षीहोवें द्विजोंकेसदृशसत्यवादी द्विज शूद्रोंकेसत्यवादीशूद्र चांडालादिकोंकेसत्यवादी चांडालादिकसाक्षीहोवें अन्यकोईनहीं औरभीमनुस्मृतिकेअष्टमाध्यायमेंविस्तार सेसाक्षीकाविधानलिखाहै जोदेखाचाहैसोदेखले ॥ १०५ ॥ साहसेषुचसर्वेषुस्तेयसंग्रहणेषुच । वाग्दण्डयोश्चपारुष्येनपरीक्षेतसाक्षिणः ॥ १०६ ॥ जितनेबलात्कारकेकर्मचोरीपरस्त्रीसेव्यभिचारवा ग्रहणकठोरबचनवा विनाविचारेदण्डकादेना इनकर्मोंमेंसाक्षीकीपरीक्षाहीराजानकरै किन्तुयथावत्विचारकरके इनकोदण्ड देना उचित है ॥ १०६ ॥ सत्येनपूयतेसाक्षी धर्मःसत्येनवर्द्धते । तस्मात्सत्यंहिवक्तव्यंसर्ववर्णेषुसाक्षिभिः ॥ १०७ ॥ भ० सत्यबोलने सेसाक्षी पवित्र और मिथ्या बोलने से महापापी होता है धर्म भीसत्यबोलनेहीसे बढ़ताहै इससे सबमनुष्यों कोसत्यही साक्षी देनीचाहिए मिथ्याकभीबोलनानहीं ॥ १०७ ॥ आत्मैवह्यात्मनःसाक्षीगतिरात्मातथात्मनः । मावमंस्थाःस्वमात्मानंनृणांसाक्षिणमुत्तमम् ॥ १०८ ॥ भ० साक्षीसेपूछनाचाहिये कितेरेआत्माकासाक्षीतूंहीहै औरतेरीसद्गतिकाकरनेवालाभीतूंहीहै क्योंकिजोतूं सत्यबोलेगातोतुझकोकभीदुःखनहोगा औरमिथ्याबोलनेसेसदातूं

दुःखीहीरहेगा इसमेंकुछसन्देहनहीं इससे हेमित्रसबसाक्षियोंमें सेउत्तमजोसाक्षीअपनाआत्मा उसकामिथ्याबोलनेसे अपमानतू मतकर औरजोतू अपमानस्वात्माकाकरेगा तोकिसीप्रकारसेतेरीसद्गतिनहींहोगी किन्तु असद्गतिहीहोगी इससे सत्यहीसाक्षीबोले मिथ्याकभीनहीं ॥ १०८ ॥ ब्रह्मघ्नोयेस्मृतालोकायेचस्त्रीबालघातिनः । मित्रद्रुहःकृतघ्नस्य तेतेस्युर्ब्रुवतोमृषा ॥ १०९ ॥ म० ब्रह्मघ्न नामब्रह्मवित्पुरुषोंकामारनेवाला औरवेदोक्तकर्मोंकात्यागीस्त्री और बालकोंकामारनेवाला मित्रकाद्रोही कृतघ्नइनकोजैसेकुम्भीपाकादिकदुःखरूपीलोकऔरजन्मप्राप्तहोतेहैं वेतुझकोसबहोवेंजो तूंसत्यनबोले ॥ १०९ ॥ जन्मप्रभृतियत्किंचित्पुण्यंभद्रत्वयाकृतम् । तत्तेसर्वंशुनोगच्छेद्यदिब्रूयास्त्वमन्यथा ॥ ११० ॥ हेभद्रहेसाक्षिन् जोतूं मिथ्याकहेगा तोतैनेंजितनापुण्यजन्मभरकियाहैवहसबतेरा पुण्यकुत्तेकोप्राप्तहोय इससे तूं सत्यबोले ॥ ११० ॥ एकोऽहमस्मीत्यात्मानंयत्त्वंकल्याणमन्यसे । नित्यंस्थितस्तेहृद्येषपुण्यपापेक्षितामुनिः ॥ १११ ॥ हेकल्याणतूं जानताहैकिमैंएकहीहूं ऐसातूं मतजान क्योंकिन्यायकारीसर्वज्ञजोपरमेश्वरसबजगतमेंव्यापीनित्यस्थितहै सोईतेरेहृदयमेंभीव्यापकहै तेराजोपापवापुण्यइनसबकोयथावत्जानताहै इससे तूं परमेश्वर औरअधर्मसे भयकरकेसत्यहीबोल ॥ १११ ॥ यमोवैवस्वतोदेवोयस्तवैषहृदिस्थितः । तेनचेदविवादस्ते मागंगांमाकुरून्गमः ॥ ११२ ॥ म० जो यमनाम यथावत् न्यायसेव्यवस्थाकरनेवाला वैवस्वतनामसूर्यादिकसबजगत्काप्रकाशकरनेवाला देवनामस्वप्रकाश स्वरूपसर्वान्तर्यामी तेरेहृदयमें भीनित्यस्थितहै उसपरमेश्वरसे शत्रुतावाविवाद तुझकोनकरना होय तोतूं सत्यहीबोलऔरजोतूंपरमेश्वरहीसेविरोधरक्खेगातो तुझकोकभीसुखनहोगा औरजोतूं सत्यहीबोलेगा तोगङ्गावाकुरुक्षेत्रमेंप्रायश्चित्तकरना वाराजदण्डमेंदण्ड अथवापरलोक परजन्ममेंनरकादिकसबदुःखोंकीप्राप्तितुझकोकभीनहोगी इससे तुझकोअ-

वश्यसत्यहीबोलनाचाहियेमिथ्याकभीनहीं ॥ ११२ ॥ यस्यविद्वान्
हिवदतःक्षेत्रज्ञोनाभिशंकते । तस्मान्नदेवाःश्रेयांसंलोकेऽन्यंपु-
रुषंविदुः ॥ ११३ ॥ भ० जिसपुरुषकाक्षेत्रज्ञजोहृदयस्थआत्मा वि-
द्वान्नाम सबपापपुण्यकोजाननेवाला सोईअपनाआत्माजिसकर्म
मेंशंकानहींकरताहै जिसमेंभयशङ्का औरलज्जाहोवै उसकर्मको
कभीनहींकरता किसत्याचरणऔरसत्यबचनहीबोलताहै उससेअ-
धिकअन्यधर्मात्मापुरुषकोईनहीं ऐसादेवनामविद्वान्लोगनिश्चि-
तजानतेहैं औरभीमनुस्मृतिकेअष्टमाध्यायमें बहुतसाबिस्तारलि-
खाहै सोदेखलेना व्यवहारोंकोनिश्चयकरनेकेवास्तेदूतकाभेजना
औरउक्तप्रकारोंसेयथावत्निश्चयहीसत्ताहै अन्यथानहीं ॥ ११३ ॥
उपस्थमुदरंजिह्वाहस्तौपादौचपञ्चमम् । चक्षुर्नासाचकर्णौचधनं-
देहस्तथैवच । ११४ ॥ भ० उपस्थनामलिंगेन्द्रिय,उदर,जिह्वा,हस्त
पाद,चक्षु,नासिका,कान,धनऔरदेहयेदशदण्डदेनेकेस्थानहैं इ-
न्होंमेंदण्डका स्थापनहोताहै ॥ ११४ ॥ वाग्दण्डंप्रथमंकुर्याद्धिग्द-
ण्डंतदनन्तरम । तृतियंधनदण्डन्तुवधदण्डमतःपरम् ॥ १०५ ॥
भ० प्रथम तो वाग्दण्ड करै कि ऐसा काम कोईदुष्ट न करै दू-
सराधिक्दण्ड कितुझकोधिकारहै दुष्टतैंनेनीचकर्मकिया तीसरा
धनदण्डकिउससे धनलेलेना चौथाबधदण्डकिउसकोमारडालना
॥ ११५ ॥ अनादेयस्यचादानादादेयस्यचबर्जनात् । दौर्बल्यंख्या-
प्यतेराज्ञःसप्रेत्येहचनश्यति ॥११६॥ राजाजोनलेनेकीवस्तुहैउस-
कोकभीनले औरलेनेकाअपनाजोकरउसमेंसेएककौड़ीभीनछोड़ै
क्योंकिइससे राजाको दुर्बलताजानीजातीहै उसराजाकाइसलोक
वापरलोकमें नाशहोहोताहै इससे क्याआयाकि राजाअपने अं-
शोंकोप्रजासेयथावत्लेताहै औरप्रजाकेअंशकोकभीग्रहणनहींक-
रता सोईराजाश्रेष्ठहै ॥ ११६ ॥ यस्त्वधर्मेणकार्याणिमोहात्कुर्या-
न्नराधिपः । अचिरात्तंदुरात्मानंवशेकुर्वन्तिशत्रवः ॥ ११७ ॥ भ०
जो राजा अन्याय तथा मोहसे कार्योंको करताहै उसराजाका

शीघ्रहोनाग्रहोजाताहै क्योंकिउसकोग्रहलोग शीघ्रहीवशमें कर लेतेहैं ॥ ११७ ॥ संभोगोदृश्यतेयत्र नदृश्येतागमः क्वचित्। आगमः कारणंतत्र नसंभोगइतिस्थितिः ॥ ११८ ॥ प्रजामेंभोगनानाप्रकार का देखपड़े उसको राजा विचारकरै किआमदनी इनकोकहां से होतीहै जोआमदनी निश्चितहोय तोकुछ चिन्तानहीं और जोनौकरीव्यापारवाकुछउद्यमनकरै औरभोगनानाप्रकारकाकरताहोय उसकोपकड़केराजादण्डदे क्योंकिअवश्ययहचौर्यादिक कुकर्मकरताहोगा इसकेपासधनकहांसेआया भोगकाकारण आगमहीहै औरसंभोगकाकारण संभोगकभीनहीं ऐसीमर्यादा है इसकोराजाअवश्यपालनकरै ॥ ११८ ॥ धर्मार्थंयेनदत्तंस्यात्कस्मै विद्यावतेधनम्। पश्चाच्चनतथातत्स्यान्नदेयंतस्यतद्भवेत् ११९ ॥ भ० किसीनेकिसीकोपठनपाठनअग्निहोत्रादिकयज्ञसुपात्रोंकोदेने केवास्तेवाअपनभोजनादिकनिर्वाहकेनिमित्तधनदियागया किइतनेकामकेहेतु हमआपको धनदेतेहैं सोआपइतनाहो कामइससे करैं औरपुण्यकेवास्ते दानदियाहोय फिरवहवैसाकर्मनकरै कि वेश्यागमन,वानशादिकप्रमादउसधनसेकरै तोउससे सबधनलेलियाजाय जिसनेकिदियाथावहीलेलेऔरजोउसकोवहनदेतोराजा उसकोपकड़केदण्डसेदिलादे ॥ ११९ ॥ धनुःशतंपरीहारोग्रामस्यस्यात्समन्ततः। शम्यापातास्त्रयोवापि त्रिगुणोनगरस्यतु ॥ १२० ॥ भ० गांवकेचारोंओर१००सौधनुष्य परिमाणसेमैदानरक्खे धनुष्यहोताहै साढ़ेतीनहाथका अथवाकोईबलवानपुरुषएकदण्डाको लेके खूबबलसेफेंकेजहांवहदण्डापड़े उससे फिरफेंके उसस्थानसेभी तीसरीबारफेंकेजहांवहदण्डाजायवहांतकमैदानरक्खै इसमेंसौ धनुष्यसेकुछअधिकमैदानरहेगा औरनगरकेचारोंओरत्रिगुणमैदानरक्खे क्योंकिग्रामवानगरमें वायुशुद्धरहेगा इससे रोगथोड़े होंगे औरपशुओंकोसुखहोगा इसवास्तेअवश्यइतनामैदानरखनाचाहिए १२० ॥ परमंयत्नमातिष्ठेत्स्तेनानांनिग्रहेन्टपः। स्तेना-

नांनिग्रहादस्ययशोराष्ट्रंचवर्द्धते १२१॥ भ० चोरोंकेनिग्रहमेंराजा
अत्यन्तयत्नकरै क्योंकिचारोंऔरदुष्टोंके निग्रहसेराजाकीकीर्त्ति
औरराज्यनित्यबढ़तेचलेजातेहैं अन्यथानहीं ॥ १२१ ॥ रक्षन्धर्मे-
णभूतानि राजावध्यांश्चघातयन् । यजतेऽहरहर्यज्ञैः सहस्रशतद-
क्षिणैः ॥ १२२ ॥ भ० जोराजाधर्मनामन्यायसेसबभूतोंकोरक्षाक-
रताहै औरदुष्टोंकोदण्डसेमारताहै वहराजासहस्रोंप्रासैकड़ोंद-
क्षिणोंसे अर्थातलक्षऔरकोटिदक्षिणोंसेजानों किनित्ययज्ञहीकरता
है क्योंकिराजाकामुख्यधर्मयहीहै श्रेष्ठोंकापालनऔरदुष्टोंकाता-
ड़नकरना ॥ १२२ ॥ अरक्षितारंराजानं बलिंषट्भागहारिणम् ।
तमाहुःसर्वलोकस्यसमग्रमलहारकम् ॥ १२३ ॥ भ० जोराजाधर्म
सेयथावत्प्रजाकापालननहींकरता औरप्रजासेधान्यमें षष्ठांशइ-
त्यादिककरोंकोलेताहै वहराजाकरक्यालेताहैकिसबसंसारकेम-
लोंकोखाताहै औरसबकेजैसेविष्टादिकोंकोशुद्धिकरताहैचांडाल
वैसाहीवहराजाहै ॥ १२३॥ निग्रहेणचपापानांसाधूनांसंग्रहेणच ।
द्विजातयइवेज्याभिःपूयन्तेसततंनृपाः ॥ १२४ ॥ भ० जोराजापापी
पुरुषोंको अत्यन्तउग्रदण्डदेताहै औरश्रेष्ठोंकोरक्षा तथासन्मान
करताहैवहराजासदापवित्रहैऔरस्वर्गकाभागीहैजैसेकिद्विजाति
लोगविद्या,तपऔरयज्ञोंसेपवित्ररहतेहैं ॥ १२४ ॥ यःक्षिप्तोमर्षय-
त्यार्त्तैस्तेनस्वर्गेमहीयते । यस्त्वैश्वर्यान्नक्षमतेनरकंतेनगच्छति ॥
१२५ ॥ भ० जोराजाआर्त्तनामदुःखीलोगगालीतकभीदें तोभीस-
हनकरताहै सोईराजास्वर्गमेंपूज्यहोताहै औरजोऐश्वर्यकेअभि-
मानसेकिसीकासहननहींकरता इसीसेवहराजा नरककोजाता
है क्योंकिजोसमर्थहैउसीकोसहनकरनाचाहिए औरजोनिर्बलहै
सोतो अपनेहीसेसहनकरेगा ॥ १२५ ॥ राजभिर्धृतदण्डास्तुकृ-
त्वापापानिमानवाः । निर्मलाःस्वर्गमायान्तिसन्तःसुकृतिनोयथा
॥ १२६ ॥ भ० जिनकेऊपरअपराधकरनेसेराजाओंकादण्डहोता
है फिरवेइसलोकमें आनन्दपातेहैं औरमरनेकेपीछे उत्तमस्वर्ग

कोप्राप्तहोतेहैं जैसेकिधर्मात्मासुकृतिलोग ॥ १२६ ॥ येनयेनयथांगेनस्तेनोनृषुविचेष्टते । तत्तदेवहरेत्तस्य प्रत्यादेशायपार्थिवः ॥ १२७॥ भ० जिस२ अंगसेजैसा२ कर्ममनुष्योंकेबीचमेंकरैं चोरलोग उसअंगको अर्थातनेचसे चोरीकरनेकेवास्ते चेष्टाकरैं उसकानेत्र निकालदें जोजीभसेचोरीकाउपदेशकरैतोउसकोजीभकाटले पग औरहाथसे किसीकीवस्तुउठावै तोराजाउसकापग,हाथ काटले क्योंकिएककोदण्डदेनेसे सबलोगउसदुष्टकर्मको छोड़देतेहैं दण्ड जोहोताहै सोसबजगत्केमनुष्योंकेवास्ते उपदेशहै ॥ १२७ ॥ अनेनविधिनाराजाकुर्वाणस्तेननिग्रहम् । यशोऽस्मिन्प्राप्नुयाल्लोकेप्रेत्यचानुत्तमंसुखम् ॥ १२८ ॥ भ० इसविधिसेचोरोंकानिग्रहकरता है वहराजाइसलोकमेंअत्यन्तकीर्त्तिकोप्राप्तहोताहै औरमरकेअत्यन्तउत्तमस्वर्गकोप्राप्तहोताहै इससे चोरोंकानिग्रह अत्यन्तप्रयत्नसेराजाकरै ॥ १२८ ॥ वाग्दुष्टात्तस्कराच्चैव दण्डेनैवचहिंसतः । साहसस्यनरःकर्ता विज्ञेयःपापकृत्तमः ॥ १२९ ॥ भ० जोपुरुष दुष्टवचन कहना सिखलाता वा चोरीका उपदेश करताहै और किसीकोमरवाडालताहै छलकपटसेवहसाहसिक पुरुषकहाताहै जैसेकिगुंडेऔरवैराग्यादिकसंप्रदायवाले वेसबपापियोंमेंभी बड़े पापीहैं क्योंकिपापीतो आपहीदुष्टहोताहै औरजितनेदुष्टउपदेश करनेवालेहैं वेसबजगत्कोदुष्टकरदेतेहैं इससे ॥ १२९॥ नमित्रकारणाद्राजा विपुलाद्वाधनागमात् । समुत्सृजेत्साहसिकान्सर्वभूतभयावहान्॥ १३०॥ भ० जितनेपुरुषसाहसिकनाम दुष्टकर्मकरने औरकरानेवालेहोंय अर्थातअधर्मकाउपदेश,चोरी,परस्त्री,वेश्यागमनऔरजूवाइनकोकरनेवालेसबसाहसिकगिनलेनाउनकोमित्रकारणसे औरउनसेबहुतधनलाभहोताहोय तोभीइनकोराजा नछोड़ै क्योंकिसबभूतोंकोभय देनेवालेवेहीहैं ॥ १३० ॥ गुरुंवाबालवृद्धौवाब्राह्मणंवाबहुश्रुतम्। आततायिनमायान्तंहन्यादेवाविचारयन् ॥ १३१ ॥ गुरुवापुत्रअथवापितावालकवावृद्धवाब्राह्म-

थ कि सब शास्त्रोंको पढ़ाहुवा और बहुश्रुत नाम सब शास्त्रको सुनने
वाला वह जो आततायी नाम धर्मको छोड़के अधर्ममें प्रवृत्त भया होय
तो इन पुरुषोंको मारडालना उचित है इसमें कुछ विचार न कर-
ना क्योंकि दण्ड होसे सब शिष्ट होजाते हैं बिना दण्डको इन्हीं इसे
सबके ऊपर दण्डका होना उचित है कि कोई अपराधी पुरुष दण्डके बि-
ना रहने न पावै ॥ १३१ ॥ परदाराभिमर्षेषु प्रवृत्तान्नॄन्महीपतिः ।
उद्वेजनकरैर्दण्डैश्छिन्नयित्वा प्रवासयेत् ॥ १३२ ॥ भ० जो पुरुष पर
स्त्रीगमनमें प्रवृत्त होवै वा अन्यपुरुषोंसे स्त्रीलोग गमन करैं उनके ल-
लाटमें चिन्ह करके देशबाहर निकालदे जो पहिले चोरी करै उसके
ललाटमें कुत्ते के पंजाकोनांई लोहेका चिन्ह अग्निमें तपाके लगादे
कि मरणतक वह चिन्ह न बिगड़े फिर जो दूसरीबार वही पुरुष चोरी
करै तो हाथ वा पग उसका राजा काटडालै और फिर भी चोरी करै वा
करावै तो पहिले दिन नाक काटले दूसरे दिन कान तीसरे दिन जीभ
चौथे दिन नख निकालले पांचवें दिन आंख छठवें दिन शिरच्छेदन क-
रदे सब मनुष्योंके सामने जिस्से कि फिर चोरीकी इच्छा भी कोइ न क-
रै और जो परस्त्री वा वेश्याके पास गमन करै अथवा परपुरुषोंसे स्त्रीलोग
गमन करैं उनके ललाटमें पुरुषके लिंग इन्द्रियका चिन्ह अग्निमें तपाके
लगादे जिस्से कि मरणतक लज्जा और अप्रतिष्ठा उनको होवै उ-
नको देखके और कोई इन कर्मोंमें प्रवृत्त न होय क्योंकि ॥ १३२ ॥ तत्स-
मुत्थो हि लोकस्य जायते वर्णसंकरः । येन मूलहरोऽधर्मः सर्वनाशाय क-
ल्पते ॥ १३३ ॥ भ० इन्हीं कर्मोंसे प्रजाके मनुष्य वर्णसंकर और पापी
होजाते हैं जिस्से कि मूलसहित धर्म नष्ट होजाता है इस्से इनके नि-
ग्रहमें राजा अत्यन्त यत्न करै ॥ १३३ ॥ भर्त्तारं लंघयेद्यातु स्त्री ज्ञातिगु-
णदर्पिता । तां श्वभिः खादयेद्राजा संस्थाने बहुसंस्थिते ॥ १३४ ॥ भ०
जो स्त्री जाति और गुणोंके अभिमान अथवा मूर्खतासे बिबाहित पुरुष
को छोड़के अन्यपुरुषसे व्यभिचार करती है उसको नगर ग्राम वा देश
की स्त्रियों और पुरुषोंके सामने कुत्तोंसे चिथवाडालै इस रीतिसे उस-

कामरणहोजाय जिस्से किअन्यकोईस्त्रीऐसाकामकभीनकरै १३४॥ पुमांसंदाहयेत्पापं शयनेतप्तआयसे । अभ्यादध्युश्चकाष्ठानि तत्रद ह्येतपापकृत् ॥ १३५ ॥ भा० जोपुरुषपरस्त्रीसेगमनकरै उसकोलो- हेके पर्यंक अग्निसेतपा औरनीचेकाष्ठोंसे अग्निकरके व्यभिचार रूपपापकरनेवालेपुरुषकोसोलादे उसीकेऊपरउसकाशरीरदग्ध होजाय और मरजाय यह भी कर्म सबपुरुष और स्त्रियोंके सा- मनेही होना चाहिए जिस्से कि सबकोभय होजाय फिर ऐसा कामकोईपुरुषनकरै ॥ १३५ ॥ यस्यस्तेनःपुरेनास्तिनान्यस्त्रीगोनदु- ष्टवाक् । नसाहसिकदण्डघ्नौसराजाशक्रलोकभाक् ॥ १३६ ॥ भा० जिसराजाकेपुर वाराज्यमें चोर परस्त्रीगामी दुष्टवचनकाकहने- वाला साहसिकऔरदण्डघ्नअर्थातजोदण्डकोनमानै येसबनहींहैं वहराजाशक्रलोकअर्थातस्वर्गकेराज्यकाभागीहोताहै अन्यथान- हीं ॥ १३६ ॥ एतेषांनिग्रहोराज्ञः पंचानांविषयेस्वके । साम्राज्य कृत्स्वजात्येषुलोकेचैवयशस्करः ॥ १३७ ॥ भा० जिसराजाकेराज्य में पूर्वोक्तपांचदुष्टपुरुषनहींहोते वहराजासबराजाओंके बीचमें संम्राट्चक्रवर्तीहोनेकेयोग्यहै औरलोगोंमेंबड़ीकीर्तिकाकरनेवा- लाहै ॥ १३७ ॥ दास्यंतुकारयन्लोभाद्ब्राह्मणःसंस्कृतान्द्विजान् । अनिच्छतःप्राभवत्याद्राज्ञादण्ड्यःशतानिषट् ॥ १३८ ॥ भा० जोबा- ह्मणभीद्विजलोगोंसेसेवाकरातेहैंउनकोइच्छाकेविनाउनकोराजा छःसैमुद्रादण्डकरै क्योंकिसेवाकरनाबुद्धिमान् श्रेष्ठलोगोंकाधर्म नहीं वहव्यवहार शूद्रहीकाहै क्योंकिजोमूर्खपुरुषहै वहअन्यका कामविनासेवाकेक्याकरेगा १३८॥ अहन्यहन्यवेक्षेतकर्मान्तान्वा- हनानिच । आयव्ययौचनियतावाकरान्कोषमेवच ॥ १३९ ॥ भा० नित्य २ राजा सबराज कर्मोंमें अपने अधिकारी अमात्य चेष्टा वाकर्मवाहन, हस्ती,अश्व,रथ, औरनौकादिक आयनाम पदा- र्थोंकाआना व्ययनामपदार्थोंकाखर्च पदार्थोंकासमूहखानोंका समूहऔरधनकाकोश इनकोयथावत्देखतारहै किकोईपदार्थवा

कोई कर्म नष्टवा अन्यथा न होय ॥ १३९ ॥ एवं सर्वानिमान् राजाव्यव-हारान्समापयन्। व्यपोह्य किल्बिषं सर्वं प्राप्नोति परमां गतिम् १४०॥ भ० इस प्रकार से सब व्यवहारों को न्यायपूर्वक जो राजा करता है वह सब पापों से छूटके परम गति जो मोक्ष उसको प्राप्त होता है जिस व्यवहार को किया चाहै उसको सम्यक् विचार के करै जिस्से कि वह कार्य पूर्ण होजाय अपूर्ण कभी न रहै ॥ १४० ॥ अनंशौ क्लीवपतितौ-जात्यंधबधिरौ तथा। उन्मत्तजड़मूकाश्च येचकेचिन्निरिन्द्रियाः ॥ १४१ ॥ भ० क्लीव नाम नपुंसक पतित नाम पापी जन्म से अंध तथा बधिर उन्मत्त नाम पागल जड़ नाम मूर्ख, मूक और जो विद्या हीन वा अजितेन्द्रिय, काम, क्रोधादिकों में ये सब दाय भाग न पावें क्योंकि ये दाय भाग पावेंगे तो सब पदार्थों का व्यर्थ नाश कर देंगे इस्से राजा को यह बात अवश्य करनी चाहिए अपने पुत्र वा प्रजा के सन्तानों को जितने पदार्थ राज्य और धनादिक उनमें से कुछ न दिलावै और जो कोई मूर्ख-ता वा मोह से उनको दाय भाग देवै तो उसको राजा दण्ड दे और नपु-न्सकादिकों से दियेहुए पदार्थ को लेके यथावत् रक्षा करै क्योंकि मूर्खों के हाथ पदार्थ वा अधिकार आवेगा तो शीघ्र सब का नाश करके आप छोटे दरिद्र बन जांयगे फिर राजा के राज्य में सब दरिद्रता छाय जायगी फिर राजा को भी कुछ प्राप्ति प्रजा से न होसकेगी इस्से राज्य और धना-दिक जितने प्रजाओं के पदार्थ हैं उन पदार्थों को राजा कभी न दे और न दिलावै जो सम्यक् विद्या, बुद्धि और विचार में उन पदार्थों की रक्षा में योग्य होय उसको सम्यक् परीक्षा करके उन पदार्थों का स्वामी उ-सको करदे अन्यथा नहीं ॥ १४१ ॥ सर्वेषामपितुन्याय्यं दातुं शक्त्याम-नीषिणा। ग्रासाच्छादनमत्यन्तं पतितोह्यदद्भवेत् ॥ १४२ ॥ परन्तु उन नपुंसकादिकों को अपने सामर्थ्य के योग्य वह दायभाग लेने वाला भोजन, वस्त्र और उनका स्थानादिक से योग क्षेम यथावत् करै जो वह भोजनादिक भी उनको न दे तो पतित होजाय और राजा उसको दण्ड भी दे इस्से क्या आया कि भोजन और वस्त्रादिकों के विना वे दुःखी न र-

हैं औरजोउनकापुत्रयोग्यहोयतोउसकेपिताकेदायभागकोराजा दिलावै इसबातकोराजाप्रयत्नसेकरै अन्यथाराज्यवृद्धिनहींहोगी राजाअपनीप्रजाकीरक्षा औरहितमें सदाप्रवृत्तरहै औरप्रजाभी राजाकीरक्षातथाहितमेंप्रवृत्तरहै जोप्रजाकोआपत्कालआवै तो राजासबप्रयत्नोंसेप्रजाकीरक्षाकरै अर्थातराजाकोआपत्कालकि-सीप्रकारकाआवै तोप्रजाभीसबमनुष्यराजाकासबप्रकारसेसहाय करैं क्योंकिप्रजाराजाकेपुत्रकीनांईहोतीहै पिताकोअवश्यचाहि-एकिअपनीप्रजाकीसदारक्षाकरै तथाप्रजापुत्रकीनांईजैसेकिपिता कोपुत्ररक्षाकरताहै वैसोराजाकी प्रजारक्षाकरै औरजिसबातसे प्रजाकोपीड़ाहोय उसबातकोराजाकभीनकरै तथाराजाकोजिस बातमे दुःखहोय उसबातको प्रजाकभीनकरै जैसेकिजिनपशुओं काजिसपदार्थोंसे सबप्रजाकाउपकारहोताहै उसकाराजाकभीवि-नाशनकरै जैसेकिगाय,भैंस,छेरी,बैलऔरऊंटतथागधादिकइ-नकोकभीनमारै औरनमरवावै क्योंकिदुग्ध,घृत,अन्नादिकऔर सबव्यवहारइन्होंसे सब मनुष्योंकाचलताहै तथा राजाकाभी इ-नका मारना दोनों को अनुचितही है राजा भृत्य तथा युद्ध से निवृत्तकभीनहोवै क्योंकियुद्धसे निवृत्तहोगा तोउसीवक्तशत्रुलोग सबपदार्थोंकोछीनलेंगे तथामारडालेंगेवाअत्यन्तदुःखदेंगे जब युद्धकासमयआवै तबराजाजल,अन्न,मनुष्य,शस्त्र,यानसबपदार्थों कीपूर्त्तिरक्खै जिससे कि किसीपदार्थकेविना दुःखकिसीकोनहोवै औरयुद्धमेंयुद्धकाआचारविचाररक्खै युद्धकरतेभीजांयऔरखाते पीतेभीजांय कुछ शंका न रक्खै उस वक्त जूते, वस्त्र, शस्त्र, धा-रणकियेरहैं युद्धऔरभोजनभीकरतेजांय ऐसानकरैंकिवस्त्र,जूतेश-स्त्र इत्यादिक सबछोड़के हाथगोड़धोके भोजन करैं तबतक शत्रु लोगमारडालैं देखनाचाहिएकियुधिष्ठिरजीकेराज्यसूय औरअ-श्वमेधयज्ञमें सबसमुद्रपार टापूभूगोलकेसबराजाआयेथे वेसब ब्राह्मण,क्षत्रियोंकेसाथ एकपंक्तिमें भोजनकरतेथे औरविवाहभी

उनकापरस्परहोताथा जैसेकिकाबिलकन्धारकीकन्या गान्धारी, धृतराष्ट्रसे विवाहीगईथी तथामद्रोईरानदेशकीराजाकीकन्या मांडुसेविवाहीगईथी अर्जुनकेसाथनाग अर्थातअमेरीकाके लोगोंकी कन्या विवाही गई थी इत्यादिक व्यवहार महाभारतमें लिखेहैं औरशूद्रहीसबब्राह्मणऔरक्षत्रियादिकोंकेघरमें पाककरानेवाले थे जिनकानामसूदऐसाप्रसिद्धथा जोशूद्रपाककरनेवालाहोताहै उसकीसूदऐसीसंज्ञाहोतीथी क्योंकिब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य,वेतोविद्यापठन और पाठन तथा नाना प्रकार के पुरुषार्थ और शिल्पविद्यासे पदार्थोंका रचन इन्हींमें सदा प्रवृत्त रहैं रसोई आदिकसेवासबलोगोंकीशूद्रहीकरैं अर्थातब्राह्मण,क्षत्रिय,औरवैश्यइनको भोजन एकताही होनी चाहिए जिस्से कि परस्पर प्रीति होवै औरभोजनकेबड़े २ बखेड़े हैं वेसबनष्टहोजांय कोईपरदेश कोजाताहै तबपाचादिकोंकाभारगधेकीनांईउठायाकरताहै तथा मांजनाऔरचौकादेना अन्न,काष्ट,अग्न्यादिकको अपनेहाथसेले आना औरबनाना गमनसेबड़े पीड़ितहोकेआये फिरभीसमयके ऊपरभोजनकानहोना इस्से बड़े दुःखहोतेहैं इस्से ब्राह्मण,क्षत्रिय, औरवैश्यइनकेएकभोजनहोनेसेकिसीकोकिसीप्रकारकादुःखनहीं होगा क्योंकिशूद्रहीसबकरदेगा औरखिलावैपिलावैगा परन्तुब्राह्मणादिकोंहीके पदार्थसबपाचादिकहोवैं शूद्रकेघरकेनहीं शुद्धहोकेबनावै औरब्राह्मणादिकविद्यादिकअच्छपदार्थोंकी उन्नतिकरैं जिस्से किसबसुखहोवैं इस्से इसबातको राजालोग अवश्यकरैं इसकेविनाउनकोउन्नतिनहींहोनीहै देखनाचाहिएभोजनकेपाखण्डोंसेआर्यावर्त्त देशकानाशहोगया ब्राह्मणादिक चौकादेनेलगे ऐसाचौकादिया कि राज्य,धन औरस्वतन्त्रादिक सुखोंके ऊपर चौकाहीफेरदिया किसबआर्यावर्त्त देशको सफाचटकरदिया इस्से राजालोगोंकोचाहिएकिव्यर्थपाखण्डप्रजामेंनहोनेदेवैं विवाह काजिसकालमेंजैसापूर्वनियमलिखाहै औरपरोक्षाउसीप्रकारसे

राजाकरवावै ब्रह्मचर्याश्रमकन्या वा पुरुषकाजबहै।जाय तभीवि-वाहकोआज्ञाराजादे कियहीसब सुख औरधर्मका मूलहै अन्य-नही सबदेशदेशान्तरस्थपुरुषोंसेभोजनविवाह औरपरस्परप्रीति रक्खैं प्रजामें जितनेधर्मात्मा,बुद्धिमान्,पक्षपातरहितऔरसबवि-द्याओंमेंपूर्ण इनकीसम्मतिसेसबकामऔरसबनियमकियाकरें कि जिसकेऊपर सबप्रजाप्रसन्नहोवें वहीराजाहोय उसदेशकेसबप्र-जा उसराजाको प्रसन्नरक्खैं ऐसेसबपरस्पर विद्या और सबगु-णोंकीउन्नतिकरें अर्थात्राजाऔरसभाकीसम्मतिकेविना प्रजामें कुछकर्मनहोवै औरप्रजाकीसम्मतिकेविनासभाऔरराजाकुछकर्म नकरें किन्तुदोनोंकीसम्मतिकेबिनाकुछराजकार्यनहोनेपावै क्यों-किइसकेहोनेसे उसदेशमेंकभीदुःखके दिननआवेंगे सदाआनन्द होरहेगा ॥ १४२ ॥ चोरदोप्रकारकेहोतेहैं एकतोप्रसिद्धदूसराअ-प्रसिद्ध प्रसिद्धवेहोतेहैं किहाटधारीडांकू औरपाखण्डी जैसेकिवै-राग्यादिक मन्दिररचके सबमनुष्योंसफुसलाने वादुष्टउपदेशबु-द्धिभ्रष्टकरके धनादिकपदार्थोंकोहरणाकरलेतेहैं यहांतककिमनु-ष्योंकोमूडकेचेलाबनालेतेहैं इनकोराजादण्डसेनिवृत्तकरदे पूर्व-पक्षइनकोदण्डनदेनाचाहिए क्योंकिवेतोप्रसन्नतासेधनदेतेऔर लेतेहैं औरप्रसन्नतासेउनकोदेतेहैं इनकेऊपरदण्डकाहोनाउ-चितनहीं उत्तर इनकोअवश्यदण्डदेनाचाहिए क्योंकिजैसेकोई पुरुषछोटेबालककोफुसलाके वाकुछपुष्पफलवाखानेकोचीजहाथ मेंदेके वस्त्र,आभूषण,वाधनादिक पदार्थोंको प्रसन्नतासेलेलेता है औरबालकभीउसकोप्रसन्नतासेदेदेताहै फिरलेकेवहभागजा-है फिरउसकेऊपरराजादण्डकरताहीहै वैसेहीजितनेप्रजामेंवि-द्या, बुद्धि औरविचारहीन पुरुषहैं वेबालककीनांईहैं उनमेंसेभी प्रसादचरणोदक,कण्ठी,माला,छापाऔरतिलक एकादश्यादिक महात्म्यसुनाना तीर्थनामस्मरण औरस्तोत्र,पाठइत्यादिकोंकोसु-नाना इत्यादिकछलधनादिसेकपदार्थोंकोलेतेहैं फिरउनकेऊप-

रदण्डक्यों न करना चाहिए किन्तु अवश्य ही करना चाहिए जो राजा इनको दण्ड न देगा तो उसको प्रजा सब भ्रष्ट हो जायगी और राज्य का भी नाश हो जायगा क्योंकि वे अधर्म करते हैं और कराते हैं नाम रखते हैं धर्म और वेद का चलाते हैं पाखण्ड को इससे इस गाल को राजा अवश्य छेदन करदे कि कोई उसके देश में पाखण्डी न रहै और न होने पावै वे पाषाणादिकों की मूर्त्तियों को बना और मन्दिर को रचके उनमें उन मूर्त्तियों को बैठाके उनका नाम शिव नारायणादिक रखते हैं कलावत्त् झूठे वा सच्चे आभूषणों को पहिराके फिर घड़ी, घंटा, नगारा, रणसिंघा और शंख इत्यादिकों को बजाके मूर्खों को मोहित करके सब धनादिक पदार्थों को हरण कर लेते हैं जैसे कि डांकू लोग नगारादिक बजाके प्रसिद्ध धन हर लेते हैं इन ठगों को दण्ड के बिना कभी न छोड़ना चाहिए क्योंकि ॥ अज्ञो भवति वै बालः पिता भवति मन्त्रदः। अज्ञं हि बालमित्याहुः पितेत्येव च मन्त्रदम् ॥ १४३ ॥ म० इसमें मनु भगवान् का प्रमाण है कि जो अज्ञानी है सो ई बालक है और ज्ञानी अर्थात् सत्य उपदेश और विचार का करने वाला सो ई पिता होता है इससे क्या आया कि जो अज्ञानी है उसको बालक कहना चाहिए ॥ १४३ ॥ जितने दुकानदार प्रसिद्ध चोर उनके ऊपर भी राजा अत्यन्त दृष्टि रक्खै कि वे प्रसिद्ध चोरी कभी न करने पावैं ॥ तुलामानं प्रतीमानं सर्वं च स्यात्सुलक्षितम्। षट्सु षट्सु च मासेषु पुनरेव परीक्षयेत् ॥ १४४ ॥ म० तुला नाम तराजू को दण्डी और तराजू की परीक्षा करै पक्ष२ मास२ वा छठे२ मास क्योंकि दुकानदार लोग बीच का सूत और दोनों पल्ले दण्डी के बीच में छेद करके पारा भरदेते हैं उस से लेते हैं तब अधिक लेलेते हैं और देते हैं तब न्यून देते हैं जब बुद्धिमान् आय तब और भाव जब मूर्ख आय तब और भाव ऐसा करके मूड़ लेते हैं प्रतीमान अर्थात् प्रतिमा नाम छटांक आदिक उसको घटा बढ़ा लेते हैं उससे भी अधिक लेते हैं और न्यून देते हैं फिर महाजन और साहूकार बने रहते हैं परन्तु वे बड़े ठग हैं जैसे कि व्यास अर्थात् एकादशो भाग·

व्रतादिकोंकीकथाकरनेवाले औरमन्दिरोंकेपूजारीऔरसम्प्रदाय वाले,वैरागी,शैव,वाममार्गी,आदिकपण्डितमहात्मा औरसिद्ध बनेहोऊपरसेबनरहतेहैं परन्तुउनकोसबजगत्केठगनेवालेजानना वेश्याऔरयेसबप्रसिद्धचोरहैं इनकोदण्डसेराजाउपदेशकरदे ऐसा दण्डदे किकोईइसप्रकारकामनुष्य प्रजामेंनरहनेपावै तभीराजा औरप्रजाकीउन्नतिहोगी अन्यथानहीं पुराणशब्द विशेषणवाची सदाहै जैसेकिपुरातनप्राचीनसनातनशब्दहैं इनकेविरोधीनवीन अद्यतनअर्वाचीनइदानीन्तनशब्दविशेषणवाचीहैं कियहभोजन- बोहै अर्थात्पुरानानहीं ऐसेपरस्परविशेषणविरोधसेनिवर्तकहो- तेहैं तथादेवालय,देवमन्दिर,देवागार,देवायतन इत्यादिकनाम यज्ञशालाकेहैं क्योंकिजिसस्थानमेंदेवोंकीपूजाहोय उसीकेएनाम हैं देवहैंवेदकेसबमन्त्र औरपरमेश्वर क्योंकिपरमेश्वरसबकाप्र- काशकहैऔरवेदकेमन्त्रभीसबपदार्थविद्याओंकेप्रकाशनेवालेहैंइ- ससेइनकानामदेवहैसोईशास्त्रमेंलिखाहै ॥ यत्रदेवतोच्यतेतत्रतल्लि- ङ्गोमन्त्रः। यहनिरुक्तकावचनहै इसकायहअभिप्रायहैकिजहां२ देवताशब्दआवैवहां२मन्त्रहीकोलेना परन्तुकर्मकांडमेंउपासना और ज्ञानकांडमें परमेश्वरहीदेवहै जैसेकिअग्निमीळेपुरोहित मित्यादिकऋग्वेदकेमन्त्रहैं तथाअग्निर्देवताइत्यादिकयजुर्वेदकेम- न्त्रहैं इसमेंअग्निदेवताहै इससे अग्निशब्ददेवताविशेषणपूर्वकजिस मन्त्रमेंहोगा उससे जो अग्निशब्दवालामन्त्रहोवै उसको लेलेना जैसाकि अग्निमीळेपुरोहितमित्यादिक यहीबातव्यासजीकेशिष्य जैमिनीने कर्मकांडके ऊपर पूर्वमीमांसा एकदर्शन शास्त्रबनाया है उसमेंविस्तारसेलिखीहैकिमन्त्रहीदेवहैं औरकोईनहीं उसमें इसप्रकारकेदोषलिखेहैं जैसे ॥ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिध- र्माणिप्रथमान्यासन्। इत्यादिकमन्त्रोंसेभिन्नजोब्रह्मादिकदेव उ- नकेभीपूजनकाअत्यन्तनिषेधकियाहै सोठीकहीकियाहै क्योंकिब्र- ह्मादिकोंनेभीनित्यपञ्चमहायज्ञ औरअग्निष्टोमादिकयज्ञोंकोकरते

हैं तबवेयजमानहोतेहैं फिरउनसेअन्यदेवकौनहैं किब्रह्मादिकोंके यज्ञमेंजिनकीपूजाकीजाय वाभागलेवैंउनकेसिवायअन्यकोईदेवदेहधारीनहींहै औरकोईकहेकिउन्होंसेअन्यदेवहैं तौउनसेपूछाजाताहै किवेजबयज्ञकरेंगेतबउनसेआगेभीतीसरेदेवमानेंजांयगेतीसरेजबयज्ञकरेंगेतबचौथेइनसेआगेदेवमानेंजायगे ऐसेहीअनवस्थाउनकेमतमेंआवेगी इससेपरमेश्वरऔरमन्त्रोंहीकोदेवमानना चाहिए औरअन्यकोनहीं जबब्रह्मादिकविद्या,सिद्धज्ञान,योगऔर सत्यवचन,गुणग्राहोंकानिषेध जैमिनीजीनेकिया तोपाषाणादिक मूर्त्तियोंकीपूजाकानिषेधअत्यन्तहोगया क्योंकिपाषाणादिकमूर्त्तियोंमेंजोदेवभावकरनाहै सोतोअत्यन्तपामरपनाहै इसबातमेंकुछ सन्देहनहीं औरजोकहेकिवेहैतोपाषाणादिक परन्तु मेरेभावसे देवहोजातेहैंऔरफलभीदेतेहैं तोउनसेपूछनाचाहिए किआपका भावसत्यहैवामिथ्याजोवेकहैं किसत्यहैतोदुःखकाभावऔरसुखका- अभाव कोईनहींचाहता फिरउनकोदुःखकाभाव औरसुखकाअ- भावक्योंहोताहै जोअन्यपदार्थमेंअन्यकाभावकरनाहै सोमिथ्याही है जैसेकिअग्निमेंजलकाभावकरकेहाथडाले तोहाथजलहीजाय- गा इससे ऐसाभावमिथ्याहीहै औरजोपाषाणादिकोंको पाषाणा- दिकमानना औरदेवोंको देवमानना यहभावतोसत्यहै जैसाकि अग्निकोअग्निमानना औरजलकोजल इससे क्याआयाकि जोजै- सापदार्थहै उसकोवैसाहीमाननाअन्यथानहीं फिरउनसेपूछना चाहिएकिआपलोगभावसे पाषाणादिकोंकोदेवबनालेतेहो और उनसेअपनीइच्छाकेयोग्यफललेलेतेहो तोउसभावसेआपहीदेव क्योंनहींबनजाते औरचक्रवर्त्यादिक राज्यरूपफलको क्यों नहीं पातेतथासबदुःखोंकानाशरूपफल क्योंनहींहोता फिरवेऐसाकहैं कि सुखवादुःखऔरचक्रवर्त्यादिक राज्योंकापाना कर्मोंका फल है यहबाततोआपलोगोंकोसत्यहै किजैसाकर्मकरैवैसाहीफलहो- ताहै फिरआपलोगोंनेकहाथाकिपाषाणादिकमूर्त्तियोंसेफलमि-

लताहै यहबातआपलोगोंकीझूठीहोगई पूर्वपक्ष जबतकवेदमन्त्रों सेप्राणप्रतिष्ठानहींकरते तबतकतोवेपाषाणादिकहीहैं औरप्राण प्रतिष्ठाकेकरनेसे देवहोजातेहैं उत्तर यहबातभी आपलोगोंकी मिथ्याहै क्योंकिवेद वाऋषिमुनियोंकेकिये शास्त्रोंमें प्राणप्रतिष्ठा कापाषाणादिक मूर्त्तियोंमें एकअक्षरभीनहीं तोमन्त्र कैसेहोंगे जिस २ मन्त्रसेप्राणप्रतिष्ठाकर्तेकरातेहो उस२मन्त्रकाआपलोग अर्थभीनहींजानते जैसाकि प्राणदा,अपानदा,उद्बुध्यास्वाग्ने,इस सेकेओम् प्रतिष्ठयहांतकएकमन्त्रहै सहस्रशीर्षापुरुषः शन्नोदेवी-रभिष्टय प्राणंददातीतिप्राणदःपरमेश्वरः। इत्यादिकअर्थ मन्त्रों काहै इनपाषाणादिक मूर्त्तियोंमेंप्राण प्रतिष्ठाकरना इसकालेश मात्रभीसम्बन्धनहीं औरप्राणाइहागच्छन्तुसुखंचिरंतिष्ठन्तु स्वा-हा।यहतोमिथ्यासंस्कृतकिसीनेरचलियाहै औरवेदोंकेमन्त्रमेंभी आपलोगोंकेकहनेकीरीतिसेदोषआतेहैं किवेदकेमन्त्रोंसेतोप्राण प्रतिष्ठाकीजाय फिरप्राणोंका मूर्त्ति में लेशभी नहीं देखपड़ताहै इससेयहबातभीनकरनीचाहिए क्योंकिजोप्राणमूर्त्तिमेंआतेतोमूर्त्ति चेतनहीबनजातीसोतोजैसीपूर्वजड़थीवैसीहीजड़सदारहतीहैपा-षाणादिकमूर्त्तियोंमेंप्राणकेजाने औरआनेकाछिद्रभीनहींपरंतुमनु-ष्यजोमरजाताहै उसकेशरीरमेंसबछिद्रमार्गप्राणकेजानेऔरआने केयथावत्हैं उसमेंप्राणप्रतिष्ठाकरकेक्योंनहींजिलालेतेहैं किकोई मनुष्यकभी मरनेहीनपावैऐसाकिसीकाभीसामर्थ्य नहीं इससे यह बातअत्यन्तमिथ्याहै पूजानामसत्कारहै देवपूजाहोमहीसे होती है अन्यप्रकारसेनहीं क्योंकिमनुआदिकऋषिलोगोंकेग्रन्थोंमेंऔर वेदमेंयहीबातलिखीहै॥स्वाध्यायेनार्चयेतर्षीन्होमैर्देवान्यथाविधि इसपूर्वोक्तश्लोकसेहोमहीसेदेवपूजायथावत्करनीचाहिएऐसासि-द्धभयाकिहोमजोहैसोईदेवपूजाहै औरजिनस्थानोंमेंहोमहोवैउ-न्हींकादेवालयादिकनामजानना॥ यद्वित्तंयज्ञशीलानांदेवस्वंत-द्विदुर्बुधाः। अयज्वनान्तुयद्वित्तमासुरस्वंप्रचक्षते॥ म० जोवस्तु

कोनित्यकरताहै उसकाजोधन सोदेवशब्दवाच्यहै जोकोईयज्ञके
वास्ते अन्यपुरुषोंसेधनलेके भोजनक्षादनादिकउस्से करै औरयज्ञ
कोनकरै उसकानामदेवलहै ॥ कुत्सितोदेवलोदेवलकः कुत्सितइ-
त्यनेनकन्प्रत्ययः। जोयज्ञकेधनकीचोरीकरके भोजन,क्षादनादिक
करै उस्से परस्त्रीगमनवावेश्यागमनभीकरै उसकोदेवलककहतेहैं
यहदेवलसेभीदुष्टहै इनदोनोंकाश्रेष्ठकर्मोंमें देवपितृकर्मादिक
यज्ञोंमेंनिषेधहै किइनकोनिमन्त्रणवाअधिकारकभीनदेना ऐसे-
हीनामस्मरणएकादशीइत्यादिककाल काश्यादिकदेश, इनकाजो
माहात्म्यजिसकिसीनेलिखाहै वहसबमिथ्याहीहै क्योंकिवेदादिक
सत्यशास्त्रोंमेंइनकाकुछभीलेखनहीं देखनेमेंआता औरयुक्तिसेभी
यहप्रतिमापूजनादिकमिथ्याहीहै ऐसेव्यवहारोंमेंराजाऔरप्रजा
कोभ्रमहीसक्ताहै इसनिमित्त लिखागयाकि राजाऔरप्रजाइन
भ्रमोंमेंप्रवर्तनहोवें नकिसीकोहोनेदें जितनीयुद्धकीविद्या उसको
यथावत्जानै औरप्रजाकोजनावें नानाप्रकारकोपदार्थविद्या तथा
शिल्पविद्याकाभीराजा औरप्रजासदाअत्यन्तप्रकाशरक्खैं युद्धवि-
द्याकेदोभेदहैं एकशस्त्रविद्या,दूसरीअस्त्रविद्या शस्त्रविद्यायहकहा-
तीहै कितलवारबंदूकतोपलकड़ीपाषाण औरमल्लविद्याकिकोंका
यथावत्जानना औरचलानादूसरेकेशस्त्रोंकानिवारणकरना औ-
रअपनीरक्षाकरनी तथाशत्रुकोमारना औरअस्त्रविद्यायहकहा-
तीहै किजोपदार्थोंकेपरस्परमेलन औरगुणोंसेहोतीहै जैसाकि
अग्नेयास्त्र ऐसेपदार्थोंकारचनकरैं किवायुकेस्पर्शसे उस्से अग्नि
उत्पन्नहोवै फिरउसकोफेंकनेसजोपदार्थउसकेसमीपहोय उसको
वहभस्महीकरदेताहै जैसेदीपसलाकाकोघसनेसे अग्निउत्पन्नहो-
ताहै वैसेहीसबअस्त्रविद्याजाननी इसप्रकारकोआर्यावर्तमें पूर्वब-
हुतपदार्थरचनेकीउन्नतिथी जैसेकिविशल्याएकऔषधिराजालो-
गरचलतेथे कैसाहीघावशस्त्रसेहोजाय परन्तुउसकोघसकेलगा-
या उसीवक्तवहघावपूरजाय औरउसमेंपीड़ाभीकुछनहींहोतीथी

तथाविमानअर्थातआकाशयान बहुतप्रकारोंके औरजहाजसमुद्र पारजानेकेनिमित्त तथाद्वीप,द्वीपान्तरमेंजातेऔरआतेथे यहम-हाभारततथावाल्मीकीरामायणमेंलिखीहै आर्यावर्त्तकेराजाओं कीआज्ञा औरराज्यसबद्वीपद्वीपान्तरमेंथा क्योंकियुधिष्ठिरादिकों केराजसूयतथाअश्वमेधमें सबद्वीपद्वीपान्तरकेराजाआयेथे यहस-भाऔरआश्वमेधिकपर्वमेंमहाभारतमेंलिखीहै जैनऔरमुसल्मा-नोंनेबहुतसे इतिहासनष्टकरदिए इससेबहुतबातयथावत् मिलती भीनहीं बड़े बलवान्तथाविद्यावान् इसदेशमेंहोतेथे इसीदेशमें भूगोलमेंविद्यावाआचारसबमनुष्यसीखतेथे सबस्त्रियांभीआर्याव-र्त्तमेंविद्यावानहोतींथीं सोआजकालआर्यावर्त्तदेशवालोंकी जै-सीमूर्खताऔरदशाहै ऐसीकोईदेशकीनहोगी फिरभीवेदादिक सत्यविद्याओंकोयथावत्पढ़ैं औरपढ़ावें धर्माचरण औरश्रेष्ठआ-चारराजाऔरप्रजाकीपरस्परप्रीति तथापरस्परगुणग्रहणकरैं त-भीमनुष्योंकोआनन्दहोगाअन्यथानहीं ब्रह्मचर्याश्रम४८,४४.४०, ३६,३०,२५, वर्षतकहोगा सबविद्याओंकाग्रहणकरना वीर्यका निग्रहजितेन्द्रियताऔरयथावत्न्यायकाकरना पक्षपातछोड़केय-हीसबसुखोंकेमूलहैं मनुस्मृतिकेसप्तमअष्टमऔरनवम अध्यायोंमें राजाऔरप्रजाकेधर्मविस्तारसेलिखाहैमहाभारतऔरवेदादिकों मेंभीबहुतप्रकारसेलिखाहै राजाऔरप्रजाओंकाधर्मजोदेखाचाहै सोदेखले इसमेंतोहमने संक्षेपसेलिखाहै इसकेआगेईश्वरऔर वेदविषयमेंलिखाजायगा ॥

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते षष्ठः समुल्लासः संपूर्णः ॥ ६ ॥

अथेश्वरवेदविषयंव्याख्यास्यामः ॥ हिरण्यगर्भःसमवर्त्तताग्रे भूतस्यजातःपतिरेकआसीत् सदाधारपृथिवींद्यामुतेमांकस्मै-देवायहविषाविधेम ॥ १ ॥ अग्रे नामजबकुछजगत् उत्पन्नहोनहीं भयाथा तबएकअद्वितीयसच्चिदानन्दस्वरूपनित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभाव[illegible] अर्थातपरमेश्वरहीथा सोसबभूतोंकाजनकऔरपति है दूसराकोईनहीं सोईपरमेश्वरपृथिवीसेलेकेस्वर्गपर्य्यन्तजगत् कोरचके धारणकरताभया तस्मै एकस्मै परमेश्वरायदेवायहवि-नामप्राण चित्तमनादिकोंसेस्तुतिप्रार्थना औरउपासनाहमलोग नित्यकरें ॥ १ ॥(पूर्वपक्ष)ईश्वरकीसिद्धि किसीप्रकारसेनहीहोसकी और ईश्वरकेमाननेका प्रयोजनभीकुछनहीं क्योंकिहर्दीचूनाऔर जलकेमिलानेसेएकरोरीपदार्थहोजाताहै ऐसेहीपृथिव्यादिकस्थू-लभूत तथाइनकेपरमाणुऔरजीवपरस्परमिलनेसेसबपदार्थोंकी उत्पत्तिहोतीहै जैसेकिमिट्टीजलचाकऔरदण्डादिकसामग्रीसे कु-लालघटादिकपदार्थोंकोरचलेताहै इनसेभिन्नपदार्थकी अपेक्षा नहीं वैसेहीजीव औरपृथिव्यादिक भूतोंसेभिन्न कोईश्वर उसके माननेकाकुछ आवश्यकनहीं स्वभावहीसेसबजगतहोताहै और जगतनित्यभीहै कभीइसकानाशनहीहोता फिरजगतरूपकार्यको देखकेकारणकोईश्वरउसकाअनुमानकरतेहैं सोव्यर्थहोगया औ-रप्रत्यक्षईश्वरकाकोईगुणनहीहै इससेप्रत्यक्षभीईश्वरकेविषयमेंन-हींबनता जबईश्वरप्रत्यक्षनहीतोउपमानकैसेबनसकेगा किइस-केतुल्यईश्वरहै जबतीनप्रमाणनहींबनते तबशब्दप्रमाण कैसाब-नेगा शब्दप्रमाणमनुष्यलोगऐसेही परंपरासेकहतेऔरसुनतेच-लेआतेहैं किसीनेकिसीसेकहाकि मैनेंवन्ध्याकापुत्र सींगवालादे-खा ऐसाअन्योंसेकहाअन्योंनेंअन्यपुरुषोंसेकहा ऐसेहीअन्धपरंप-रावतकहतेऔरसुनतेचलेआतेहैं इससे ईश्वरकीसिद्धिकिसीप्रका-रसेनहींहोसकी(उत्तरपक्ष)ईश्वरकीसिद्धियथावतहोतीहै क्योंकि जोस्वभावसेजगतकीउत्पत्तिमानेगा उसकेमतमें यहदोषआवेगा

जगत्में जितनेपदार्थहैं उनकेविलक्षण २ संयोगआकृति तथागुण औरस्वभावदेखपड़तेहैं जैसेकिमनुष्यऔरबानर आमकाऔरबबूरकावृक्ष इत्यादिकोंमेंविलक्षण२गुण औरआकृति देखपड़तीहैं इननियमोंकाकर्ताकोईनहोगा तोयेनियम कभीनबनेंगे क्योंकि जड़पदार्थोंमेंतोमिलनेवाजुदाहोनेकीयथावत्समर्थतानहीं किंतु नउनमेंज्ञानगुणहीनहीं जोज्ञानगुणवालाहोताहै वहीयथावत्नियमकरसकताहै अन्यनहीं जोजीवहैसोज्ञानवालातोहै परन्तुजीवकाउतनासामर्थ्यहीनहींइससेकोईपृथिव्यादिकभूतऔरजीवसेभिन्नपदार्थअवश्यहै जोसबजगत्काकरता औरनियमोंका नियन्ता ईश्वरअवश्यहो किन्तुस्वभावसेजगत्कीउत्पत्तिजोमानताहै उसकेमतमेंएदोषआवेंगे यहपृथिवीस्वभावसेजोहोतीतोइसकाकरता और नियन्तानहोता इसपृथिवीसे भिन्नदशवेंकोश अन्तरिक्ष में दूसरीआपसेआपपृथ्वीबनजाती सोआजतकनहींबनी इससे जाना जाताहै किजीवऔर सबभूतोंसे सर्वशक्तिमान् सबजगत् काकर्ता औरनियन्तापरमेश्वर उसीकोईश्वरकहतेहैं/दूसरादोष कि जितनेपरमाणुपृथिव्यादिकभूतोंकेहैं वेसबमिलगए अथवाइनसेबिनामिलेभीहैं जोकहैकिसबमिलगए तोत्रसरेणुआदिकहमकोप्रत्यक्षदेखपड़तेहैं इससेवहबातमिथ्याहोगई औरजोकहैकिकुछमिले कुछनहींमिलेभीहैं तोउनसेपूछनाचाहिए किसबक्योंनहींमिले अथवापृथक् २ क्यों न रहे तथाएकप्रकारके रूपवाले सबपदार्थ क्योंनहींहुए भिन्न २संयोग औररूपके होनेसे सबजगत् काकर्ता औरनियन्ताअवश्यसिद्धहोताहै तीसरादोषउसकेमतमेंयहहै कि कोईकर्मकर्ताकेबिनाहोताहै वानहीं जोवहकहैकि बनादिकोंमें घासादिकपदार्थ आपहीसेहोतेहैं उसकाकर्ता औरनिमित्तकोई नहींदेखपड़ता उससेपूछनाचाहिएकिपृथिव्यादिकसबभूतनिमित्त हैं औरसबबीजबिनाकर्ता औरनियन्ताकेकभी नहींबनसके क्योंकि आमकेबीजमें जैसापरमाणुओंकामेलकर्तानेकियाहै वैसेही

अङ्कुर पत्र पुष्प फल काष्ठ और स्वाद देखने में आते हैं उससे भिन्न औकद- लीउसके अवयव वा स्वाद आमसे कोई नहीं मिलते क्योंकि सब पदार्थों में परमाणु तो वेही हैं फिर रचनेवाले के बिना भिन्न२ पदार्थ कैसे होगें इससे जाना जाता है कि सब जगत का रचनेवाला कोई पदार्थ है जो चू- ना, हर्दी और जल के मिलाने से रोरी होती है उसका मेलन करनेवा- ला जब मिलाता है तब वे मिल के रोरी होती हैं वे आपसे आप तो नहीं मिलते इससे वह दृष्टान्त मिथ्या होगया कुम्हार का जो दृष्टान्त दि- या सो कौं हार स्थानी आपने जीव को रक्खा क्योंकि ईश्वर को तो आप मानते ही नहीं सो जीव सर्वशक्तिमान् नहीं क्योंकि परमाणु आदिकों का संयोग वा वियोग जीव कभी नहीं कर सक्ता जो जीव कर सक्ता तो चाहता तो सूर्य, चन्द्रादिक लोकों को रच लेता सो रच सक्ता नहीं इ- ससे जाना जाता है कि सब जगत् का कर्ता और नियन्ता कोई अवश्य है जब जगत् रचा गया है तो नित्य कभी नहीं हो सक्ता क्योंकि जब तक नहीं रचा था तब तक नहीं था और जो रचने से भया है सो कभी मिट भी जायगा बिना कर्ता वा कारक के कर्म वा कार्य नहीं होता तो यह ना- ना प्रकार की रचना और इतना बड़ा कार्य जगत् कभी नहीं हो सक्ता इससे तीन प्रकार जो अनुमान है सो ईश्वर में यथावत् घटता है कि का- रण के बिना कार्य कभी नहीं हो सक्ता कार्य से कारण अवश्य जाना जा- ता है और कर्ता के बिना कर्म नहीं होता इससे पूर्ववत् शेषवत् और सामान्यतो दृष्ट तीन प्रकार का अनुमान ईश्वर को यथावत् सिद्ध कर- ता है ईश्वर के सर्वशक्तिमत्व दयालुता और न्यायकारित्वादिक गुण जगत् में प्रत्यक्ष देख पड़ते हैं स्वाभाविक गुण और गुणी का नित्य संबंध होता है जैसा कि रूप और अग्नि का सो जैसे अग्नि का रूप देख पड़ता है और अग्नि नेत्र से नहीं देख पड़ता परन्तु हम लोग ज्ञान से अग्नि को प्रत्यक्ष देखते हैं क्योंकि अग्नि को बुद्धि से प्रत्यक्ष हम लोग न देखते तो अग्नि को लेआने और अग्नि से जितने व्यवहार होते हैं उनमें प्रवृ- त्त कभी न होते इससे जैसा अग्नि हमको प्रत्यक्ष है गुण और गुणी के

ज्ञानसे वैसे ज्ञानसे परमेश्वर भी प्रत्यक्ष है जो धर्मात्मा और योगी पु-
रुष होते हैं उनको परमात्मा जीव और परमेश्वर भी यथावत् प्रत्यक्ष
होते हैं जो कोई इसमें संदेह करै सो करके देखले उपमानप्रमाणतो
परमेश्वर में नहीं होसक्ता क्योंकि परमेश्वर के सदृश कोई पदार्थ नहीं
जिसकी उपमा परमेश्वर में होसकै परन्तु परमेश्वर की उपमा परमेश्व
रही में होसक्ती है ऐसा जगत् में व्यवहार देखने में आता है कि आप
के तुल्य आपही होवैं वैसे हमलोग भी कहसक्ते हैं कि परमेश्वर के तुल्य
परमेश्वर होहै और कोई नहीं जबतो न प्रमाणों से ईश्वर की सिद्धि हो
गई तो शब्द प्रमाण भी अवश्य होगा सो शब्दप्रमाण इस प्रकार का ले-
ना ॥ दिव्योह्यमूर्त्तः पुरुषः सबाह्याभ्यन्तरो ह्यजः। अप्रमाणो ह्य-
मनाः शुभ्रोऽक्षरात्परतः परः ॥ २ ॥ दिव्य नाम सब जगत् का प्रकाश-
क अमूर्त्त निराकार और सदा अशरीर पुरुष नाम सब जगत् में पूर्ण
सो ई बाहर और भीतर एकरस अज कभी जिसका जन्म नहीं होता अ-
प्राणनाम किसी प्रकार की चेष्टा वा लीला नहीं करता अमना नाम रा-
गद्वेष संकल्पविकल्पादिक दोषरहित अक्षर जो जीव उस्से परे जो प्र-
कृति उस्से भी परमेश्वर सूक्ष्म और पर है ॥ २ ॥ न तत्र सूर्यो भाति न च-
न्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः। तमेव भान्तमनुभाति-
सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥ ३ ॥ मन्त्र० उस परमेश्वर में सूर्य
चन्द्र, तारे, बिजली, और अग्नि एक कुछ भी प्रकाश नहीं करसक्ते कि-
न्तु सूर्यादिकों को परमेश्वर ही प्रकाशते हैं सब जितना जगत् है उसके
प्रकाश से प्रकाशित होता है परमेश्वर का प्रकाशक कोई नहीं ॥ ३ ॥
अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः। स वेत्ति वि-
श्वं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्र्यं पुरुषं पुराणम् ॥ ४ ॥ मन्त्र०।
परमेश्वर निरंकार है परन्तु उसमें शक्तियां सब हैं हाथ परमेश्वर
को नहीं है परन्तु हाथ की शक्ति ऐसी है कि सब चराचर को पकड़के
थांभरक्खा है तथा पाद नहीं है परन्तु सबसे वेगवाला है नेत्र नहीं है
परन्तु चराचर को यथावत् सब काल में देखरहा है कान नहीं है पर-

न्तु चराचरको बातसुनता है मन,बुद्धि,चित्तऔर अहङ्कारतो नहीं है परन्तु मननिश्चयऔर स्मरण अपनेस्वरूपका आपही जाननेवाला है औरवहसबको जानता है परन्तुउसको कोई नहीं जानसक्ता कि इतनाबड़ावा इसप्रकारका वा इतनासामर्थ्यउसमें है ऐसाकोई नहीं जानसक्ता उसपरमेश्वरको ज्ञानी और शास्त्रसर्वोत्कृष्टपूर्णऔर सनातनकहते हैं ॥ ४ ॥ अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययंतथारसन्नित्य-मगन्धवच्चयत्। अनाद्यनन्तंमहत:परंध्रुवंनिचाय्यतंमृत्युमुखात्प्र-मुच्यते ॥ ५ ॥ भा० वहपरमेश्वर अशब्दअर्थातकहने और सुनने मात्रसेनहीं जानाजाता बिनाउसके आज्ञापालन विज्ञान प्रीति और योगाभ्यासकेस्पर्श रूपरसऔर गन्धपरमेश्वरमेंनहीं इस पर-मेश्वरकाज्ञानसहस्रों पुरुषोंमेंकिसीको होता है सबको नहीं वह कैसा है अनादि और अन्तजिसकाआदिकारण अथवा अन्तको कोई नहीं देखसक्ता क्योंकि उसकामरण वा अन्तनहीं है तो कैसे कोई देखसके परमेश्वरबुद्धिसेभीसूक्ष्मऔरपरे है जोकोईपरमेश्वरको जानता है सोजन्ममरणादिक सबदु:खोंसेछूटके परमेश्वरकोप्राप्त होता है फिरकभीउसकोदु:खलेशमात्रभीनहीं होता ॥ ५ ॥ समा-धिर्धूतमलस्यचेतसोनिवेशितस्यात्मनियत्सुखंभवेत्। नशक्यतेव-र्णयितुंगिरातदास्वयंतदन्त:करणेनगृह्यते ॥ ६ ॥ भा० जिसपुरुष काधर्माचरणविद्या औरसमाधियोगसेचित्तशुद्धहोजाता है उस-काचित्तपरमेश्वरकेज्ञानमें औरप्राप्तिकेयोग्यहोता है जबसमाधि योगमेंचित्त औरपरमेश्वरका योगहोता है उसवक्तऐसा आनन्द उसजीवको होता है किकहनेमेंभीनहींआता क्योंकिवहजीवअपने अन्त:करण अर्थातबुद्धिहीसेग्रहणकरता है वहांतोसराकोईनहीं है किजिससे कहें किफिरजागृतावस्थाकहनेमेंभीनहींआता क्योंकि वहपरमेश्वरउसकाआनन्द औरउसकोजाननेवालाजीवतीनोंच-द्भुतपदार्थ हैं इससे वहसबआनन्दकहनेमेंनहींआता ॥ ६ ॥ आ-श्चर्योऽस्यवक्ताकुशलोऽस्यलब्धा। आश्चर्योऽस्यज्ञाताकुशलानुशिष्ट:

॥ ७ ॥ मन्त्र० परमेश्वरकावक्ता और प्राप्तिहोनेवालादोनों आश्चर्य पुरुषहैं क्योंकि आश्चर्य जोपरमेश्वर उसकोजाननेवालाभी आश्चर्य हीहोताहै जिसकोब्रह्मवित्पुरुषोंकाउपदेशकुश्राहोय औरअपने भीसबप्रकारसेविद्यावान् शुद्धऔरयोगीतबपरमेश्वरकोजानसक्ता है सोभीआश्चर्यहैअन्यथानहीं ॥ ७ ॥ सर्वेवेदायत्पदमामनन्ति तपांसिसर्वाणिचयद्वदन्ति यदिच्छन्तोब्रह्मचर्यंचरन्तितत्ते पदंसंग्रहेणब्रवीम्योमेतत् ॥ ८ ॥ जिसपदअर्थात्परमेश्वर सबवेदअभ्यास पुनःपुनः उसीहीकाकथनकरतेहैं अर्थात्वेपरमेश्वरहीकोकहते हैं औरउसकेवास्तेहोहै जिसकोप्राप्तिकोइच्छासेमनुष्यलोगब्रह्मचर्यसेयथावत्विद्यापढ़तेहैं किहमलोगपरमेश्वरकोजानैं उसकी प्राप्तिकेविना अनन्तसुखऔरसबदुःखकी निवृत्तिनहींहोती यही बातयमराजनचकेतासेकहतेहैं किहेनचकेताजो ओंकारकाअर्थ हैसोईपरब्रह्महै ॥ ८ ॥ एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढ़ःसर्वव्यापीसर्वभूतान्तरात्मा । सर्वाध्यक्षःसर्वभूताधिवासःसाक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च ॥ ९ ॥ मन्त्र एकजोअद्वितीयपरमेश्वरब्रह्महै सोईसबभूतोंमेंगूढ़ है अर्थात्गुप्तकिसबजगत्‌मेंप्राप्तहै फिरमूढ़लोगउसको नहींजानते सबभूतोंकाअन्तरात्मा किनिकटसेभीनिकटसबसंसारकावही है अध्यक्षनामस्वामीऔरसबभूतोंकानिवासस्थानसबसेश्रेष्ठ सबकेऊपरविराजमानसबकासाक्षी किकोईकर्मजीवकाउनसेविना जानानहींरहताकिन्तुसबजानतेहैं चेतनस्वरूपऔरकेवलअर्थात् उसमेंकुछभीनहींमिलताहै एकरसचेतनस्वरूपहीहै जैसादूधमें जलमिलारहताहै वैसानहीं जितनेअविद्या जन्म,मरण, हर्ष, शोक,क्षुधा,तृषा, तमोरजः औरसत्त्वगुणादिकजगत्केहैं उनसे सदाभिन्नहोनेसेपरमेश्वरनिर्गुणहै औरसच्चिदानन्दसर्वशक्तिमत्वदयालुन्यायकारित्व औरसर्वज्ञादिक गुणोंसेसदासगुणहै ९ ॥ नतस्यकार्यंकरणंचविद्यतेनतत्समश्चाभ्यधिकश्चदृश्यते । परास्यशक्तिर्विविधैवश्रूयतेस्वाभाविकीज्ञानबलक्रियाच १० ॥ मन्त्र परमेश्व·

रसदात्तत्वहै उसकोकर्तव्यकुछनहीं किइसकोकरनेकेविनाइ-
मकोसुखनहोहोगा ऐसानहींकरनाजैसाकिचक्षुकेविनारूपनहीं
देखसक्ता ऐसाभीपरमेश्वरमेंनहीं किन्तुविविधशक्ति स्वाभाविक
अनन्तसामर्थ्यपरमेश्वरकासुनाजाताहै किअनन्तज्ञान,अनन्तब-
लऔरअनन्तक्रियापरमेश्वरमेंस्वाभाविकहोहै इसमेंकुछसन्देह
नहीं क्योंकिपरमेश्वरकेतुल्यवाअधिककोईनहीं ॥ १० ॥ एषसर्वे-
षुभूतेषुगूढात्मानप्रकाशते। दृश्यतेत्वग्र्ययाबुध्यासूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शि-
भिः ॥ ११ ॥ मन्त्र यहजोपरमेश्वरसबभूतोंमेंसूक्ष्मव्यापकऔरगुप्त
है इससे मूढजोविज्ञानऔरयोगाभ्यासहो उनकोबुद्धिमेंनहींप्रका-
शितहै जितनेसूक्ष्मदर्शीयथावत् विद्यावान्उनकोशुद्धि औरसूक्ष्म
जोबुद्धि,विद्या,विज्ञान,योगाभ्यास सेहोताहै उससे परमेश्वरको
वेयथावत्जानतेहैं अन्यथानहीं ॥ ११ ॥ तदेजतितन्नैजतितद्दूरे-
तद्वन्तिके। तदन्तरस्यसर्वस्यतदुसर्वस्यास्यबाह्यतः ॥ १२ ॥ मन्त्र
सोईपरमेश्वर प्राणादिकोंको चेष्टाकरताहै औरआपअचलहोहै
वहअधर्मात्माऔरमूढ पुरुषोंसेअत्यन्तदूरहै औरधर्मात्माविज्ञान
वालेपुरुषोंसेअत्यन्तनिकट अर्थातउनकाअन्तर्यामीहोहै सोईब्रह्म
सबजगत्के बाहरभीतर औरमध्यमेंपूर्णहै ॥ १२ ॥ अनेजदेकम्म-
नसोजवीयोनैनद्देवाआप्नुवन्पूर्वमर्षत्। तद्धावतोन्यानत्येतितिष्ठ-
त्तस्मिन्नपोमातरिश्वादधाति ॥१३॥ मन्त्र यहब्रह्मनिष्कंपनिश्चलहै
परन्तुमनसेभीवेगवालाहै इसब्रह्मकोदेव अर्थात् चक्षुरादिक इ-
न्द्रियांप्राप्तनहींहोतो क्योंकिइन्द्रियऔर मनकावहीआत्माहै सो
आत्माकाबाह्यजोशरीर सोउसकोकभीनहींदेखसक्ता वहआत्मा
तोसबकोदेखसक्ताहोहै औरमनवेगसेजहांजहां जाताहै वहांवहां व्या-
पकहोनेसे परमेश्वरआगेदेखपड़ताहै सोपरमेश्वरजितनेवेगवा-
लेहैं उनकोउल्लङ्घनकरलेताहै अर्थात्परमेश्वरकेकोईगुणकेतुल्य
वाअधिककिसीकागुणसामर्थ्यनहीं सोपरमेश्वरस्थिरव्यापकऔर
चेतनउसकेसत्तासे उसमेंठहराभया मातरिश्वा अर्थात्मातागो

आकाशउसमेंचलनेऔररहनेवाला जोप्रमाणसोचेष्टादिकसबकर्मोंकाकर्ताहैअन्यथानहीं १३ ॥ यस्मिन्सर्वाणिभूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः । तत्रकोमोहःकःशोकएकत्वमनुपश्यतः १४ ॥ मन्त्र जिसपरमेश्वरकेजाननेसेसबभूतप्राणिमात्रआत्माकेतुल्यहोजातेहैं किकिसीभूतसेनरागऔरनद्वेषउसकोकभीरागऔरनहींहोतेक्योंकिवह एकजोअद्वितीयउसपरमेश्वरमेंस्थिरज्ञानवालाजोपुरुषउनकोकिसीमेंमोहवाकिसीसेक्याशोकअर्थात्उसकोकभीमोहवाशोकहोताहीनहीं १४ ॥ वेदाहमेतंपुरुषम्महान्तमादित्यवर्णन्तमसःपरस्तात् । तमेवविदित्वातिमृत्युमेतिनान्यःपन्थाविद्यतेयनाय १५ ॥ मन्त्र जोब्रह्मवित्पुरुषउसकायहअनुभवहै किपूर्णसबसेबड़ाप्रकाशस्वरूप औरसबकाप्रकाश जन्ममरणसुखदुःख औरअविद्या जोतम उससेभिन्नउसपरमेश्वर कोजानताहूं सबदुःखसेछूटकेपरमानन्द उसकोजाननेसे यथावत् प्राप्तभयाहूं उसीकोजानके अतिमृत्यु जोपरमेश्वर किजिसमेंजन्ममरणादिकदुःखोंकालेशमात्रभीनहीं अर्थात्मोक्षपदकोप्राप्तहोताहै औरकोईदूसरे भिन्नमोक्षकामार्ग नहीं ॥ १५ ॥ सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरंशुद्धमपापविद्धम् । कविर्मनीषीपरिभूःस्वयंभूर्याथातथ्यतोर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यःसमाभ्यः ॥ १६ ॥ मन्त्र सोपरमेश्वरसबपदार्थोंमें एकरसअद्वितीयपूर्णहै सबजगत्कर्तास्थूलसूक्ष्म औरअकायअर्थात् जागृत और सुषुप्ति इनतीन शरीर रहित शुद्ध निर्मल सर्वदोष रहित जिसकोपापकालेश मात्रभीसम्बन्धनहीं सर्वज्ञसर्वविद्वान् अनन्त जिसकाविचारऔरज्ञान सबकेऊपरविराजमान स्वयंभूनामजिसकोकभीउत्पत्तिनहोय आपसेआपहोसदासनातनहोवै जिन्नेवेदरूपसर्वज्ञ विद्याकाहिरण्यगर्भादिक शाश्वतनामनिरन्तरप्रजाओंकोअर्थोंकाअर्थात्वेदोंका यथावत्उपदेशकियाहै उसपरमेकोस्तुतिप्रार्थनाऔरउपासनाकरनीचाहिए इतनासंक्षेपसेकहिताऔरब्राह्मणोंकेमन्त्रोंसे शब्दप्रमाणलिखदियासोजानलेना पू-

वपक्ष परमेश्वररागीहैवाविरक्तवाउदासीनजोरागीहोगातोदुःखी वाअसमर्थहोगा सदाजोविरक्तहोगातोकुछभीनकरेगा औरसंसारकाधारणभीनहोगा औरजो उदासीनहोगातोअपनेस्वरूपस्थ साक्षीवत्रहेगा अर्थात्बद्धजोईश्वरहोगा तोकभी रचसकेगा नहीं मुक्तहोगातोजगत्कोहीरचेगानहीं इससे ईश्वरकोसिद्धिनहीहोती। उत्तर। परमेश्वररागीनहीं क्योंकिअपनेसेउत्तमकोईपदार्थनहीहै किजिसमेंरागकरै अपनेस्वरूपमेंअपनारागकभीनहीं बनता सर्वव्यापीकेहोनेसेअप्राप्तपदार्थईश्वरकोकोईनहीं तथासर्वशक्तिमान् केहोनेसेभीरागईश्वरमेंनहींबनसक्ता विरक्तभीईश्वर नहीं क्योंकिपहिलेजोबद्धहोताहै सोईबन्धनसेछूटनेसेविरक्तकहाताहै सोईश्वरकोबन्धनतोतीनोंकालमेंभीनहींभया फिरउसकोविरक्त कैसेकहसकैं उदासीनभीवहहोताहै किपहिले बन्धनमेंहोय पीछेज्ञानकेहोनेसेउदासीनहोजाय ऐसाईश्वरनहीं ईश्वरकोअचिन्त्यशक्तिहै किसबमेंरहै औरकिसीकाभी लेशमात्रसंगदोष न लगे इससे ऐसीशंकाजीवकेबीचमेंघटसक्तीहै ईश्वरमेंनहीं पूर्वपक्ष जितनेपदार्थहैं वेसबसन्देहयुक्तहोतेहैं निश्चययथावत्एककाभीनहीं होता उत्तर आपनेयह बातकही सोनिश्चितहै वानहीं जोकहो किनिश्चितहै तोसबपदार्थसन्देहयुक्तनहींभये आपकोबातनिश्चित होनेसे औरजोआपकहैं कियहमेरीबातभीनिश्चितनहीं तोआप कोबातका प्रमाणकोईनहींहुआ। क्योंकि लक्षणप्रमाणाभ्यांपदार्थसिद्धिः। लक्षणऔरप्रमाणोंकेबिना किसीपदार्थकीनिश्चितसिद्धि नहींहोती आपनेसबपदार्थोंमेंसन्देहसिद्धकहा सोकिसप्रमाणसेउसकीसिद्धिहोतीहै किसोप्रमाणसन्देहहैकोआपसिद्धकियाचाहोगे तोउसप्रमाणमेंभी आपकानिश्चय नहींहोगा क्योंकि आपसब पदार्थोंकोसन्देहयुक्तकहचुकेहैं इससेआपकासन्देहहीसन्देहनष्ट होगया फिरआपकिसीव्यवहारमेंप्रवृत्त नहोसकोगे जैसेकिगमन भोजन,छादन, देखनासुननाइत्यादिकभी सन्देहयुक्तहोनेसेप्रवृ-

क्तिभीइनमेंनहोनीचाहिए प्रहत्तितोआपकतेंहीहैं इससे आपमेंजो कहाकि सबव्यवहारऔरसबपदार्थ सन्देहयुक्तहीहैं यहबातआप कीमिथ्याहोगई इससेक्याआयाकिलक्षणऔरप्रमाणोंसेजोनिश्चित पदार्थहोताहै उसकोनिश्चितहीमाननाचाहिए इसमेंसन्देहकरनाव्यर्थहीहै सोप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंसेईश्वरकीयथावत्सिद्धिहोतीहै उसकोमाननाहीचाहिए(प्रश्न)पृथिवी,जल,अग्नि,वायु, इन चारोंकेमिलनेसे चेतनभीउसमेंहोताहै जबवेपृथक्२होजातेहैं तबसबकलाविगड़जातीहैं फिरउसमेंकुछनहींरहता इससे जगत् कारचनेवालाकोईनहीं आपमेंआपहीजगतऔरजीवहोताहै(उत्तर)आपभीइनचारोंकोमिलाकेजीवऔरजीवकेजितनेगुणउनको देखलादेवें सोकभीनहींदेखपड़ेगें क्योंकिपहिलेहीमेंसबस्थूल भूतोंमेंसबसूक्ष्मभूतमिलरहेहैं फिरउनमेंज्ञानादिकगुणक्योंनहीं देखपड़ते इससे जीवपदार्थ इनभूतोंसेभिन्नहीहै–जिसकेयेगुणहैं इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनोलिङ्गम् । यहगौतममुनि कासूत्रहै इसकायहअभिप्रायहै किइच्छाकिसीप्रकारकाचाहना जिसकेगुणोंकोजानताहै उसकीप्राप्तिकीचाहनाकरताहै जिसमें दोषोंकोजानताहै उसमें द्वेष अर्थात् चाहना नहींकरता प्रयत्न नानाप्रकारकीशिल्पविद्यासे पदार्थोंकारचना शरीरतथाभार काउठानाइसकानामप्रयत्नहै सुखनामअनुकूलकाचाहना और जानना दुःखप्रतिकूलकाजानना औरछोड़नेकीइच्छाकरना ज्ञानजैसाजोपदार्थहै उसकातत्त्वपर्यन्त यथावत्विवेककरना इसका नामजीवहै येगुणपृथिव्यादिकजड़ोंकेनहीं किन्तु जीवहीकेहैं लिंगशरीरबुद्धि जिससेजीवनिश्चयकरताहै(बुद्धिरुपलब्धिर्ज्ञानमित्यनर्थान्तरम्) यहगौतमजीकासूत्रहै बुद्धिउपलब्धिऔरज्ञानयेतीनों नाम एकहीपदार्थ केहैं मनजिससे एकपदार्थकोविचारकेदूसरेका विचारकरताहै ॥ युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसोलिंगम् । यहगौत० जिससेएकपदार्थहीकोएककालमेंग्रहणकरताहै एककोग्रहणकरके

दूसरे का दूसरे काल में ग्रहण करता है एक काल में दोनों का नहीं इसका नाम मन और चित्त जिससे कि जीव पूर्वापर का स्मरण करता है जो कि पहिले देखा और सुना था इसका नाम चित्त है अहङ्कार जिससे अभिमान जीव करता है ये चार मिल के अन्तःकरण कहाता है इससे जीव भीतर मनोराज्य करता है ये चारों एक ही हैं परन्तु व्यापार भेद से चार भिन्न २ नाम हैं बाह्य करण जिससे कि बाहर जीव व्यापार करता श्रोत्र जिससे शब्द सुनता है त्वचा जिससे स्पर्श जानता है नेत्र जिससे रूप को जानता है जिह्वा जिससे रस को जानता है नासिका जिससे गन्ध को जानता है ये पांच ज्ञान इन्द्रियां हैं इनसे जीव बाह्य पदार्थों को जानता है वाक् जिससे शब्द बोलता है पाद जिससे गमन करता है हस्त जिससे ग्रहण करता है वायु जिससे मल का त्याग करता है लिंग जिससे मूत्र और विषय भोग करता है ये पांच कर्मेन्द्रिय हैं इनसे जीव बाह्य कर्म करता है प्राण जिससे ऊर्द्ध चेष्टा करता है अपान जिससे अधो चेष्टा करता है व्यान जिससे सब सन्धियों में चेष्टा करता है उदान जिससे जल और अन्न को कण्ठ से भीतर आकर्षण कर लेता है समान जिससे नाभि द्वार सब रसों को सब शरीर में प्राप्त कर देता है ये पांच मुख्य प्राण कहाते हैं नाग जिससे डकार लेता है कूर्म जिससे नेत्र को खोलता और मून्दता है क्रकल जिससे छींकता है देवदत्त जिससे जम्भाई लेता है धनञ्जय जिससे शरीर को पुष्टि करता है और मरे पीछे शरीर को नहीं छोड़ता जो कि सुरदे को फुलाता है ये पांच उपप्राण हैं ये दश एक ही हैं परन्तु क्रिया भेद से दश नाम भये हैं ये २४ तत्त्व मिल के लिंग शरीर कहाता है कोई उपप्राण को नहीं मानता उसके मत में २९ होते हैं और कोई पांच सूक्ष्म भूत जो कि परमाणुरूप हैं और पूर्वोक्त चार भेद अन्तःकरण के इन नव तत्त्वों को लिंग शरीर कहाता है इस लिंग शरीर में जो अधिष्ठाता कर्त्ता और भोक्ता उसको जीव कहते हैं जो कि एक काल में सब बुद्ध्यादिकों के किये कर्मों का अनुभव करता है चेतन स्वरूप है उसका नाम जीव है उसकी अधिक व्याख्या सुक्ति के प्रकर्ण में किई जायगी सो

जीवभिन्नपदार्थही है चारोंकेमिलानेसे जीवकेगुण औरजीवकभी नहींउत्पन्नहोता इससे यहबातकहीथी किचारोंकेमिलनेसे जीव भीहोताहै यहबातखण्डितहोगई(प्रश्न)ईश्वर,सर्वज्ञऔरत्रिकाल दर्शीहै जैसाईश्वरनेअपनेज्ञानसेनिश्चितकियाहै वैसाहीजीवपाप वापुण्यकरेगा फिरजीवको दण्डक्योंहोताहै क्योंकिउससे अन्यथा जीवकुछनहींकरसक्ता जोअन्यथाजीवकरेगातो ईश्वरकासर्वज्ञानमष्टहोजायगा इससे जैसाईश्वरनेपहिलेहीनिश्चयकररक्खाहै वैसाजीवकरताहै ईश्वरजानताभीहै फिरआपसेउसकोनिवृत्तक्यों नहींकरदेता जोनिवृत्त नहींकरदेता तोदण्ड क्योंदेताहै(उत्तर) ईश्वरहै अत्यन्तदयालु(सबजीवोंकोईश्वरनेरक्खा तबविचारकरके सबकोस्वतन्त्रहीरक्खे क्योंकिपरतन्त्ररखनेसेकिसीकोकभीसुखनहींहोता जैसेकिकोईअपनीइच्छासे मरणतकएकस्थानमेंरहताहै तोभीइसमेंउसकोकुछदु:खनहींमालूमहोता उसकोजो कोईएकघड़ीभरभीपराधीनवैठायरक्खे तोबड़ाउसकोदु:खहोता है इससेपरमेश्वरनेसबजीवस्वतन्त्ररक्खे हैंजोचाहतातोपरतन्त्रभी रखसक्ता परन्तुपरमेश्वरबड़ादयालु औरकृपासागरहै इससे सब स्वतन्त्ररक्खे हैं परन्तुआज्ञा ईश्वरकीहै किजोजैसाकर्म करेगा वहवैसाफलभोगेगा सोआज्ञाउसकोसत्यहीहै इससे क्याआयाकि कर्मोंकेकरने औरपुण्योंके फलभोगनेमेंजीवस्वतन्त्रहै)औरपापों केफलभोगनेमेंपराधीनहैं जीवकर्मोंकेकरनेवाले औरभोगनेवाले हैं जैसाजीवकर्मकरेगा वैसाहीईश्वरने ज्ञानमेंनिश्चय पहिलेही कियाहै औरभोक्तावहीहै त्रिकालज्ञानमेंईश्वरस्वतन्त्रऔरअपने कर्मोंकेकरनेमेंतथाभोगनेमेंजीवस्वतन्त्रहैं(प्रश्न)जीवकानिजस्वरूपक्या॥(उत्तर)विशिष्टस्यजीवत्वमन्वयव्यतिरेकाभ्याम्। यहकपिल मुनिजीकासूत्रहै इसकायहअभिप्रायहै किजैसाअयनामिट्टीसेवनताहै परन्तु शुद्धकेहोनेसे जोउसकेसामनेपदार्थहोगा सोउसमें यथावत्देखपड़ेगा अथवालोहेकोअग्निमेंरखनेसेअग्निकेगुणआ-

ला होता है उन दोनों में प्रतिबिम्ब वा अग्नि भिन्न है क्योंकि उनसे पृथक् भी वे देख पड़ते हैं और हो भी जाते हैं इस से दर्पण और लोहे से व्यतिरिक्त हैं अर्थात् जुदे हैं और जो केवल जुदे होते तो उनके गुण दर्पण और लोहे में न होते इस से उनमें अन्वय भी उनका देख पड़ता है वैसे ही लिंगशरीर जो है उसका अधिष्ठाता है सो ई जीव है दर्पण के तुल्य अन्तःकरण शुद्ध है स्थूल देह बाहर का है और जिसमें मन्द मिश्र होता है सत्व रजो और तमो गुण मिलके प्रकृति कहाती है जिसका नाम अव्यक्त परम सूक्ष्म भूत और प्रधान भी है वह कारणशरीर कहलाता है सो सब प्राणियों का व्यापक के होने से एक ही है दोनों के बीच में मध्यस्थ लिंगशरीर है चेतन एक जीव और दूसरा परमेश्वर ही है तीसरा कोई नहीं सो परमेश्वर है विभु व्यापक सर्वत्र एकरस जहां २ लिंगशरीर विशिष्ट जीव रहता है वहां २ परमेश्वर ही पूर्ण है सो लिंगशरीर में उसका सामान्य प्रकाश है और विशेष प्रकाश चेतन होका जीव है जैसे दर्पण में सूर्य का विशेष प्रकाश होता है सो परमेश्वर का सदा संयोग रहता है वियोग कभी नहीं इस से परमेश्वर के अन्वय होने से वह चेतन नहीं है वह जीव कहलाता है और लिंगदेह से परमेश्वर भिन्न के होने से पृथक् भी है क्योंकि लिंगशरीर से युक्त जीव स्वर्ग नर्क जन्म और मरण इत्यादिकों में भ्रमण करता है परन्तु परमेश्वर निश्चल है उसके साथ भ्रमण नहीं करते हैं और उसके गुण दोषों के भोग वा संग कभी नहीं होते हैं कारणशरीर के ज्ञान लोभ और क्रोधादिक गुण जीव में आते हैं और स्थूलशरीर के शीतोष्ण क्षुधा तृषादिक गुण भी जीव में आते हैं क्योंकि दोनों शरीर के मध्यस्थवर्ती जीव है इस से दोनों शरीरों के गुण का भी संग जीव करता है इसका स्पष्ट ग्रन्थ व्याख्यान मुक्ति और बन्ध के विषय में किया जायगा प्रश्न ईश्वर व्यापक नहीं हो सक्ता क्योंकि जितने परमाणु आदिक पदार्थ हैं वे जहां रहते हैं उतने अवकाश को ग्रहण अवश्य करते हैं फिर उसी अवकाश में दूसरे परमाणु वा ईश्वर की स्थिति कभी नहीं हो सक्ती और उसके बीच में अन्य

पदार्थभीरहैं तोवहपरमाणुहीनहीं क्योंकिवह्तपदार्थोंकेसंयोग सेविनासंधिवापोलउसमेंनहीं होसका सबवियोगकीअन्तावस्था जोहै उसकोपरमाणुकहतेहैं किफिरजिसकाविभागहोसके (उत्तर) ईश्वरव्यापकहै क्योंकिपरमाणुसेभीसूक्ष्महै जैसेचिसरणुकेआगेसंयोगवावियोग वुद्धिसेहमलोगजानतेऔरकरतेहैं वैसेहीपरमाणुकावियोग भीवुद्धिसेकरसकेहैं औरईश्वरकीविभुताभीज्ञान सेजानसकेहैं क्योंकिपरमेश्वरविभुनहोतेतोपरमाणुकारचनसंयोगवियोग औरधारणभीनकरसके फिरपरमाणुकाधारणभी कैसेहोता जैसेपुष्पमेंगन्ध दूधमेंघृतघृतमेंस्वाद औरगन्धऔरउन सबपदार्थोंमें आकाशनाम पोलयेसबव्यापकहैं उनरपदार्थोंमें वैसेपरमेश्वरभीपरमाणुऔरप्रकृत्यादिकतत्त्वोंमेंव्यापकहोहै (प्रश्न) अच्छा ईश्वरसिद्ध औरव्यापकभीहै परन्तुउसको उपासनाप्रार्थनाऔरस्तुतिकरनीआवश्यकनहीं क्योंकिकोईव्यवहारईश्वरके सम्बन्धकाप्रत्यक्षनहींदेखपड़ता इससे ईश्वरअपनी ईश्वरतामेंरहे औरहमजीवलोगअपनीजीवतामेंरहैं (उत्तर) ईश्वरकीउपासना प्रार्थनाऔरस्तुति अवश्यसबजीवोंकोकरनीचाहिए जैसेकिकोई किसीकाउपकारकरै उसकाप्रत्युपकार उसकोअवश्यकरनाचाहिए जोप्रत्युपकारनहीकरता सोअवश्यकृतघ्नहोताहै क्योंकिउसनेउसकेसाथभलाईकिया औरउसनेउसकेसाथबुराईकी जैसा उसनेसुखदियाथा फिरउसनेउसकोसुखकुछनहींदिया वाउसने विरोधहीकरलिया इससे वहपुरुष कृतघ्नहोताहै जैसेमातापिता औरकोईस्वामी जिसकापालनकरतेहैं वेकेवलअपने उपकारके हेतुकतेहैं कियहभीमेरापालनसमर्थहोकेकरैगा जबवहपुत्रवाभृत्य यथावत्पालननहींकरता संसारमेंसज्जनलोगउसकोकृतघ्नकहते हैं जोमाताऔरपिताअथवास्वामीउनकापालनकरतेहैं जिनपदार्थोंसेवेघृतजलपृथिवी औरअन्नादिकसबपरमेश्वरकेरचेहैं जो जिसकोरचताहै वहीउसकामातापिता औरमुख्यस्वामीहोताहै

उनपदार्थोंसेअपनाबापुत्रादिकोंकापालनबेकरतेहैं जैसेकिसीने अपनेभृत्यसेकहाकितू इसकोसेवाकरबामेरेइस पदार्थकोलेकेउस कोदेआजबवहसेवा वापदार्थकोप्राप्तहोवे तबपदार्थदातास्वामीके ऊपरवहप्रीतिकरैवाभृत्यकेकिन्तुपदार्थदातास्वामीहीसेप्रीतिकरे गाभृत्यसेनहींकिन्तुजिसकापदार्थहै।वैउसीसेप्रीतिकरनाचाहिए जैसेयुद्धमेंजयवापराजय राज्यकोप्राप्तिअथवाहानिराजाकोहोती है भृत्योंकोनहीं वैसेहीपरमेश्वरकाजगतहै जगतमेंजितनेपदार्थ हैं उनकास्वामीपरमेश्वरहीहै इससे परमेश्वरकोअत्यन्त प्रीतिसे स्तुतिप्रार्थनाऔरउपासना अवश्यकरनीहोचाहिएअन्यकिसीको नहीं सेवातोमातापिताऔरविद्याकादेनेवाला श्रेष्ठऔरसुपात्र कीभीकरनीचाहिए औरजोईश्वरकीउपासनानकरेगा वहकृतघ्न होजायगा क्योंकिईश्वरनेहमलोगोंपरअनेकउपकारकिएहैं जि- तनेजगतमेंपदार्थरचेहैंवेसबजीवोंकेसुखकेहेतुरचेहैं औरजीवोंको स्वतन्त्रकर्मकरनेमें रखदियेहैं इसमेंयहयजुर्वेदकाप्रमाणहै॥ कु र्वन्नेवेहकर्माणि जिजीविषेच्छतंसमाः। एवंत्वयिनान्यथेतोऽस्ति नकर्मलिप्यतेनरे॥ इसकायहअभिप्रायहै किजीवस्वतन्त्रआपही आपकर्मकरताहै सोइससंसारमेंआपही आपकर्म कर्त्ताहुआ॥ १०० सौवर्षतकजीनेकीइच्छाकरै परन्तु अधर्मकभीनकरै सदाध- र्महीकरै जोजीवकहेगाकि मरनामुझकोअवश्यहै इससे पापको नकरनाचाहिए ऐसेजोजीव विचारसेकर्मकरेगा सोपापोंमेंलिप्त कभीनहोगा॥ यन्मनसाध्यायतितद्वाचावदतियद्वाचावदतितत्क- र्मणाकरोति। यत्कर्मणाकरोतितदभिसंपद्यते॥ इसश्रुतिकाअर्थ पहिलेकरदियाहै परन्तु इसका यहीअभिप्रायहै किजोजैसाकर्म करै वहवैसाहीफलपावै ऐसीईश्वरकीआज्ञाहै॥ यथर्तु लिङ्गा- न्यृतवःस्वयमेवर्तुपर्यये। स्वामिस्वान्यभिपद्यन्ते तथाकर्माणिदे- हिनः॥ यहमनुकाश्लोकहै इसकायहअभिप्रायहै किजैसेवसन्ता- दिकऋतुओंकेलिंगअर्थात्शीतोष्णादिकऋतुओंमेंप्राप्तहोतेहैं वैसे

सबजीवअपनेर् कियेकर्मोंको प्राप्तहोतेहैं १॥ जोपुरुषईश्वरकी उपासनानकरेगा वहमहाअज्ञानहोगा इसमेंकुछसन्देहनहीं॥ प्रश्न जीवजब विद्यादिकशुद्धगुणऔरयोगाभ्याससे अनिमादिकसिद्धि-वालाहोताहै उसीकोईश्वर माननाचाहिए उससे भिन्नस्वतन्त्र ईश्वरमाननेकाकुछप्रयोजननहीं वहीसिद्धजगतकीउत्पत्तिस्थिति धारणऔरप्रलयकरेगा इससे सनातनईश्वरकोईनहीं किन्तु सा-धनोंसे ईश्वरबनजाते हैं उत्तर इनसेपूछनाचाहिए किजब जीवजीवकाशरीरइन्द्रियां औरपृथिव्यादिक तत्त्वोंकोकोईरचेगा तबतोविद्यादिकगुण औरयोगाभ्याससे कोईजीवसिद्धहोगा जोव ऐसाकहैंकि जन्महीसेकोई सिद्धहोजायगा तोउनकेकही साधनों सेसिद्धहोतीहै यहबातमिथ्याहोजायगी औरबिनासाधनोंकेसिद्ध होवै तोसबजीवसिद्धक्योंनहींहोते इससे यहबातउनकीमिथ्याहो गी सदासनातनसिद्धसबऐश्वर्यवाला साधनोंसेविनास्वतः प्रका-शस्वरूपईश्वरहै इसमेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न जीवकर्मकरतेहैं और ईश्वरकराताहै क्योंकिईश्वरकीसत्ताकेविनाएकपत्ताभीनहींचल सक्ता इससे ईश्वरकेसहायसेजीवकर्मोंकोकरताहै आपसेआपकुछ करनेकोसमर्थनहीं उत्तर जीवआपहीआप स्वतन्त्रकर्मोंको क-रताहै ईश्वरकुछनहींकराता क्योंकिजोईश्वरकराते तोजीवक-भी पापनहींकरता सोजीवपुण्य औरपापकरताहीहै इससे ईश्वर नहींकरता औरजोईश्वरकरता तोजीवसे ईश्वरको अधिकपाप होता जैसेएकमनुष्य चोरीकरताहै औरदूसराकराताहै इसमें करनेवालेसेकरानेवालेको पापअधिकहोताहै क्योंकियहप्रेरणा-उसकोनहींकरता तोवहचोरीकभीनकरता सोएकप्रेरणाकरने-वालाअनेकमनुष्योंकोचोरबनादेताहै इससेउसकोअधिकपापहो-ताहै इसवास्ते ईश्वर कभीनहींकरता औरजोईश्वर कराताती जीवकाठकीपुतलीकीनांईहोता जैसेउसकोनचावैवैसानाचे फिर जीवहीपरतन्त्रतामें जोदोषणकासोईआजाता इससे ईश्वरसबज-

मत्का करनेवाला है। ताहै परन्तु जीवोंकेकर्मोंकोकरनेवाकराने-वालानहीं प्रश्न जोईश्वरजीवोंको न रचतातोजीव क्योंपापकरते और दुःखभीक्योंभोगते जैसेकिसोनेकूंआखोदा उसमेंकोईमनुष्य भी गिरपड़ताहै जोवह कूंआ नखोदता तोकोईन गिरता वैसे ईश्वरजीवोंकोनरचतातोजीवक्योंपापकरते(उत्तर)ऐसानकहना चाहिए क्योंकिजोकोईराजाभृत्योंकोंरखताहै औरपुत्रोंकोमनुष्य उत्पादनकरताहै वागुरुशिष्योंकोशिक्षाकरताहै सोसबइसीवास्ते करतेहैं किसबधर्मकीरक्षाऔरधर्माचरणकरैं पापकरनेकाअभि-प्रायइनकानहीं औरजैसेवालकवाभृत्यकेहाथमें लकड़ीशिक्षावा शस्त्रदेतेहैं सोअपनेशरीरकीऔरस्वामीकीआज्ञा तथाधर्मकीर-क्षाकेवास्ते देतेहैं ऐसाअभिप्राय उनकानहींहै किउनसेआपअ-पनेहीको मारकेमरजाय वैसेहीपरमेश्वरनेजीवरचेहैं सोकेवल धर्माचरणऔरमुक्त्यादिकसुखकेवास्ते रचेहैं औरजोजीवपाप क-रताहैसोअपनीमूर्खताहीसेकरताहैवैसाहीदुःखभोगताहै हस्ता-दिकजीवोंकेवास्ते इन्द्रियरचीहैं सोकेवलजीवोंकेव्यवहारसिद्धहो वैं औरउनसे सबसुखकार्योंकोकरैं इनमेंसेकोईअपनेहाथसे अ-पनीआंख निकाललेताहै वाअपनागलाकाटदेताहै सोकेवलअ-पनीमूढ़तासेकरताहै मातापितादिकोंकावैसाअभिप्रायनहीं इ-ससेयहप्रश्नअच्छानहीं प्रश्न ईश्वरसर्वशक्तिमान्‌हैवानहीं उत्तर सर्व शक्तिमान्‌है प्रश्न जोसर्वशक्तिमान्‌होयतोअपनानाशभीईश्वरकर सक्ताहैवानहीं उत्तर ईश्वरअविनाशीपदार्थहै अत्यन्तसूक्ष्म जि-सकाकिसीप्रकारसेशस्त्रसेनाशनहींहोसक्ता क्योंकिजिसपदार्थका रूपऔरस्पर्शहोवै उसीकाअग्नि,जल,वायु, अथवाशस्त्रोंसे नाश होसक्ताहै अन्यथानहीं नाशशब्दकायहअर्थहै किअदर्शनअथवा कारणमेंमिलजाना सोपरमेश्वरकोईइन्द्रियसेदृश्यनहीं किफिर अदर्शनउसकोहोय औरइसकाकोईकारणभीनहीं जिसमेंईश्वर मिलजाय इससे ईश्वरकेनाशकीशंकाकरनीभी अनुचितहै औरई-

श्वरसर्वशक्तिमान्है परन्तु उसकीशक्तिन्याययुक्तहोतीहै अन्याययुक्त
नहीं इससे ईश्वरसदान्यायहीकरताहै किअविनाशीपदार्थकोअ-
विनाशीजानताहै औरउसकेनाशकी इच्छानहींकरता औरजो
विनाशवालापदार्थहै उसकानाशनहोवे ऐसेभीइच्छानहींकरता
क्योंकिईश्वरकाज्ञाननिर्भ्रमहै जोजैसापदार्थहैउसकोवैसाजान-
ता औरवैसाहीकरताहै प्रश्न जोईश्वरदयालुहै तोन्यायकारीन-
हीं औरजोन्यायकारीहै तोदयालुनहीं क्योंकिन्यायउसकानाम
हैकिधर्मकरना औरपक्षपात काछोड़ना इससे क्याआयाकिदण्ड
देनेकेयोग्य कोदण्डदेना औरअदण्डको कभीदण्डनदेना सोजो
दयालुहोगा सोतोकभी दण्डनदेसकेगा क्योंकिदयानामहै करु-
णाऔरकृपाकासो सदाअन्यकेसुखऔरउपकारमेंरहेगा इससे ई-
श्वरकोदयालुमानोंतोन्यायकारीमतमानों उत्तर न्यायकारीका
तोबहुतस्थानोंमेंअर्थकरदियाहै औरदयालुकाभी परन्तुन्यायऔ-
रदयालुइनदोनोंकाथोड़ासाभेदहै दण्डकाजोदेनाऔरजीवोंको
स्वतन्त्रताकारखना औरसबपदार्थवृक्षादिकोंकादेना सर्वज्ञसर्व
पदार्थकोजिसमेंयथार्थपदार्थविद्याहैउसवेदशास्त्रकाप्रकाशकरना
यहबड़ीईश्वरकोदयाहै किजोजैसाकर्मकरै वहवैसाहीफलपावै
अर्थात्यथावत्जोदण्डकादेनाहै सोउरूकेऔरउससे भिन्नसबजी-
वोंकेऊपरईश्वरदयाकरताहै किकोईनपापकरै औरनदुःखपावै
जैसेराजदण्डहै सोकेवलसब मनुष्योंकेऊपर दयाकाप्रकाशहीहै
क्योंकिराजाकायह अभिप्रायहोताहैकिकोईअनर्थमें प्रवृत्तनहोवै
जोहमदण्डनदेंगे तोसबमनुष्यअधर्ममेंप्रवृत्तहोजांयगे इससे अप-
राधीपुरुषकेऊपर अत्यन्तकठिनदण्डदेताहैं किसबमनुष्यभयमा-
नहोनेसे अधर्ममें प्रवृत्तनहोवें वैसाहीईश्वर कोसबजीवोंके ऊ-
परदयाहै किएककोदुःखीदेखकेअन्यपुरुषपापमेंप्रवृत्तनहोवै और
फिरजीवकोयहांतक अधिकारदियाहै किअणिमादिकसिद्धिवि-
ज्ञानदर्शन औरआपजीवईश्वरसंयोगसे अनन्तसुखको प्राप्तहोवै

किकर्मोंजिसकोफिरदुःखनहोवै इससेईश्वरन्यायकारीऔरदयालु है इसमेंकुछविरोधनहीं प्रश्न ईश्वरसर्वशक्तिमान्औरन्यायकारी किसप्रकारसेहै उत्तर देखनाचाहिएकिजितनेजीवहैं उनकोतुल्यपदार्थदियेहैं पक्षपातकिसीकाभीनहींकिया और जैसीव्यवस्था न्यायसे यथायोग्यकरनीचाहिए वैसीहीकियाहै इससे ईश्वरन्याय कारीहै जगत्मेंसूर्य्य,चन्द्र,पृथिव्यादिकभूत.वृक्षादिक,स्थावरऔर मनुष्यादिक चरइनकारचन हमलोगदेखके तथाधारणऔरप्रलयकोदेखकेआश्चर्यअनन्तईश्वरकीशक्तिकोनिश्चितजानतेहैं क्योंकि सर्वशक्तिमान् जोनहोता तोसब प्रकारका विचित्र जगत् न रचसक्ता इससे हमलोग जानतेहैं किईश्वर सर्वशक्तिमान्है इस मेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न ईश्वरविद्यावानहैवानहीं उत्तर ईश्वरमें अनन्तविद्याहै क्योंकिजोविद्यानहोतो तोयथायोग्यजगत्कीरचनाकोनजानता जगत्कोरचनायथायोग्यकरनेसे पूर्णविद्याईश्वर मेंहै प्रश्न ईश्वरकाजन्म होताहैवानहीं उत्तर उसकाजन्म कभी नहींहोता क्योंकि जन्मलेनेका प्रयोजन कुछनहीं जोसमर्थनहीं होता सोईदूसरेकासहायलेताहै जोसर्वशक्तिमान्है उसको किसीकेसहायसे कुछप्रयोजननहीं आपही सबकार्यको करसक्ताहै प्रश्न राम,कृष्णादिकअवतारईश्वरकेभएहैं यसूमसीहईश्वरकापुत्र औरमहम्मद आदिपुरुषोंको उपदेशकरनेकेवास्ते भेजा यहबात संसारमेंप्रसिद्धहै अपनेभक्तोंकेवास्ते शरीरधारणकरकेदर्शनदिया औरनानाविधिलीलाकिई किजिसकोगाकेभक्तलोगतरजाते हैं फिरआपकैसेकहतेहोकि जन्मईश्वरकानहींहोता उत्तर यह बातयुक्तिसेविरुद्धहै औरशास्त्रप्रमाणसेभी क्योंकिईश्वर अनन्तहै जिसकादेशकाल औरवस्तुसेभेदनहींहै एकरसहै जिसकाखण्ड कभीनहींहोता औरआकाशादिकबड़ेस्थूलपदार्थभी परमेश्वर केसामने एकपरमाणुकेयोग्यभीनहीं औरशरीरजोहोताहै सो शरीरसेस्थूलहोताहै जैसेघरमेंरहनेवालोंसे घरबड़ाहोताहै सो

ईश्वरका शरीर किसपदार्थसे वनसक्ता है किजिसमें ईश्वर निवास करै और जोकिसीमें निवासकरेगा तो अनन्त नरहैगा क्योंकि शरीरसे शरीरछोटाही होता है जवशरीरकेसहायसे रावणवाकंसादिकोंको मारै तथा उपदेश भीकरै विनाशरीरसे नकरसकेतो ईश्वरसर्व शक्तिमान्‌ही नहीं औरजोरावणादिकोंको मारा चाहै और उपदेश करा चाहै तोसर्वव्यापी औरअन्तर्यामी होनेसेएक क्षणमें सवजगत्‌कामारडालै औरउपदेशभीकरदेवै तथा अपने भक्तोंको प्रसन्नभी करदेवै इस्से ईश्वरको ईश्वरतायही है किविना सहायसे सवकुछकरसक्ता है औरजोसहायकेविनानकरसकेतोउसकासर्वशक्तित्वही नष्टहोजाय इस्से ईश्वरकाकभी जन्मऔर किसीकासहायलेता है ऐसीशंकाकरनी व्यर्थहै प्रश्न जैसेसवजगत्‌की उत्पत्तिहोती है ईश्वरसेवैसे ईश्वरकोभीउत्पत्तिकिसीसेहोती होगी उत्तर ईश्वरसेकौनवड़ापदार्थहै किजिस्से ईश्वरउत्पन्नहोवै पहिलेही प्रश्नकेउत्तरसे इसकाउत्तरहोगया औरजोउत्पन्नहोता है उसको ईश्वरहमलोगनहींमानते किन्तु जिसकीउत्पत्तिकभीनहोवै औरसवसंसारको जिस्से उत्पत्तिहोवै उसीकोवेदादिक सत्यशास्त्र औरसज्जनलोगईश्वरमानतेहैं औरकोनहीं जोकोई ईश्वरकोभी उत्पत्तिमानता है उसकेमतमें अनवस्थादोषआवैगा किजैसेउसने ईश्वरको उत्पत्तिमानी फिरईश्वरकेपिताकी भीउत्पत्ति माननी चाहिए औरईश्वरकेपिताके पिताकोभीउत्पत्ति माननीचाहिए ऐसेहीआगे२माननेसे अनवस्थाआजायगी अथवाजिसकीवहउत्पत्तिनमानेगा उसीकोहमलोगईश्वरकहतेहैं अन्यकोनहीं प्रश्न ईश्वर साकारहै वानिराकार उत्तर ईश्वर निराकारहै क्योंकि जोनिराकारनहोता तोसर्वशक्तिमान्‌सर्वव्यापकसवकाधारनेवाला औरसर्वान्तर्यामी औरनित्यकभीनहोता इस्से ईश्वरनिराकार हीहै प्रश्न ईश्वरचेतनहै अथवाजड़ उत्तर जोजड़होतातोसवजगत्‌की रचना और ज्ञानादिक अनन्त गुण वाला कभी न होता

इससे ईश्वर चेतन है यह थोड़ासा ईश्वर के विषय में लिख दिया (इसे अनेक विषयों में लिखा गया है) इसी ईश्वर ने सर्वज्ञ सर्व विद्यायुक्त और सत्य२ विचार सहित कृपा करके वेदशास्त्र सब जीवों के ज्ञाना-दिक उपकार के वास्ते रचा है (प्रश्न) ईश्वर निराकार है उसको मुख नहीं फिर वेद का उच्चारण और रचना कैसे किया (उत्तर) यह शंका असमर्थों में होती है कि बिना मुख मुख का काम न कर सकै ईश्वर बिना मुख से मुख का काम कर सक्ता है क्योंकि वह सर्वशक्तिमान् है और जो ऐसा न मानेगा उसके मत में यह दोष आवैगा कि हाथ, पांव आंख, शरीर और कान बिना जगत् कैसे रचा जैसे बिना हाथ आ-दिक के सब जगत् को रचा तो वेद के रचने में कुछ शंका नहीं (प्रश्न) ओष्ठादिक स्थानों का जिह्वा से वायु को प्रेरणा होने से अक्षर उच्चार-ण हो सक्ते हैं अन्यथा नहीं (उत्तर) फिर भी वही दोष आवेगा कि ईश्व-र सर्वशक्तिमान नहीं होगा क्योंकि ओष्ठादिक के स्पर्श और प्राण बि-ना ईश्वर उच्चारण नहीं कर सक्ता तो ईश्वर पराधीन हुआ और हाथादिकों के बिना ईश्वर ने जगत् भी न रचा होगा जैसा कि ओ-ष्ठादिक स्थान और प्राण बिना उच्चारण नहीं कर सक्ता ऐसी शंका जीव में घट सक्ती है ईश्वर में नहीं (प्रश्न) लेखनी मसी इनसे ककारादि-क अक्षर बनते हैं बिना इनके नहीं फिर ईश्वर ने कहां से कागद लेख-नी मसी छुरि का वा चाकू और पटिया यह सामग्री पाई जिससे सब अक्षर रचे (उत्तर) यह बड़ी शंका आपने किया कि ईश्वर को अनीश्वर ही बना दिया अच्छा मैं आपसे पूछता हूं कि नासिका, आंख, ओष्ठ, कान, मु-ख, लोम, नाड़ी, और उनका सन्धान तथा आकार बिना सा-मग्री और साधन शरीर तथा अक्षर भी रच लिए (प्रश्न) फिर यह लिखी लिखाई पुस्तक संसार में कैसे आई और किसने पाया आ-काश से गिरी वा पाताल से आगई (उत्तर) आपका शरीर वृक्ष, पर्वत और इतनी बड़ी पृथिवी अन्तरिक्ष में कैसे आगए जैसे ये आगए वैसे पुस्तक भी आगई इसमें क्या आश्चर्य कुछ भी नहीं अग्नि, वायु और

आदित्यसृष्टिकेआदिमेंभयेथे उन्होंनेवेदपाये उनसेब्रह्मानेपढ़े ब्रह्मासेविराटने विराटसेमनुने मनुसेंदक्षप्रजापतियोंनेपढ़े औरउनसे प्रजामेंफैलगए(प्रश्न) अग्न्यादिकोंने ईश्वरसेवेदोंकोकैसेपढ़े (उत्तर इसमें दोबातहैं ईश्वरनेउनको आकाशवाणीकोनांई सबशब्दसब मन्त्र उनकेस्वरअर्थऔरसम्बन्धभीसुनादिए इस्से वेदोंकानामश्रु-तिरक्खाहै अथवाउनकेहृदयमेंईश्वरअन्तर्यामीहै उसनेउसीहृ-दयमें वेदोंकाप्रकाशकरदिया फिरउनोंनेअन्योंसे परप्रकाशकर दिए॥योब्रह्माणंविदधातिपूर्वं योवैवेदांश्चप्रहिणोतितस्मै तंहदेव-मात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वैशरणमहंप्रपद्ये यहवेदकाप्रमाणहै इस-कायहअभिप्रायहै किजोईश्वरब्रह्मादिकदेव औरसबजगतका र-चनकर्ताभया इस्से पहिलेही वेदोंकोरचके ब्रह्माकोअग्न्यादिदेव नाम हिरण्यगर्भादिद्वाराजनादिये क्योंकिविद्याकेविना सबजीव अन्धेहोतेहैं कुछनही जानसक्ते जैसेपशु इस्से परमेश्वरने वेदका प्रकाशकरदिया सबमनुष्योंकोसबपदार्थ विद्याजाननेकेहेतुअग्न्यादि ई-श्वरनेउनदेवअर्थातविद्वानोंकेहृदयमें प्रकाशवेदोंकाकिया सोलो-गोंनेबातबनालियाहै किपरमेश्वरनेवेदबनाएहैं ऐसाहमलोगक-हेंगे तोवेदोंमेंसबलोगश्रद्धाकरेंगे औरउनकाप्रमाणभीकरें-गे परन्तुअनुमानसे यहनिश्चतजानाजाताहै किउनअग्न्यादिक देव विद्वानोंनेहीं वेदबनालिएहैं उत्तर परमेश्वरने आकाशसे लेकेक्षुद्र,घास,पर्यन्त जगतकोरचकेप्रकाशकरदिया औरसर्वो-त्कृष्टसबपदार्थोंका जिस्से निश्चयहोताहै उसविद्याको प्रकाशन करै तो यह परमेश्वरमें दोषआताहै किपरमेश्वर दयालुनही और छली भी है क्योंकि ऐसा अनुमान से जाना जायगा अप-नीविद्याका प्रकाश इसवास्ते नहीकिया किसबजीव विद्यापढ़नें सेज्ञानी औरसुखीहोजायंगे फिरमुझको जानकेअनन्त आनन्द युक्तभी होजायंगे यहदोष परमेश्वरमेंआवेगा जैसेकोई आजी-विका विद्यासेकरताहोय सोपण्डितनही वहऐसीइच्छाकरताहै

जोकोईपण्डितहोगातोमेरीप्रतिष्ठा और आजीविकान्यूनहोजाय-
गी ऐसातुच्छबुद्धिसेवहमनुष्यचाहताहै और जोसज्जनलोगहैं वेतो
सदाविद्यादिकगुणोंकाप्रकाशकियाकर्तेहैं सोपरमेश्वरअपनीअ-
नन्तविद्याका प्रकाशक्यानकरेगा किन्तुअवश्यहीकरेगा क्योंकि
एकओरसबजगत्औरएकओरविद्या इनदोनोंमेंभीविद्याअत्य-
न्तउत्तमहै सोईश्वरक्याआजीविकाधीन औरप्रतिष्ठाकेलोभसेवि-
द्याका प्रकाशनकरेगा किन्तुअवश्यहीकरेगा इसमेंकुछसन्देह
नहीं औरजोकोईऐसाकहैकि पण्डितोंनेवेदविद्यारचलियाहै उ-
नसेपूछाजाताहै किवेबिनाशास्त्रके पढ़नेसे पण्डितकैसेभए और
जो वे कहैं कि अपनी बुद्धि और विचार से हो गये तो आज
कालभी बुद्धि और विचारसे होजांय सो बिना विद्याके पढ़नेंसे
कोईपण्डितनहींहोता क्योंकिजबसृष्टिरचीगई उससमयकोईम-
नुष्यनहींथा बिनापरमेश्वरके फिरवह अनुमानसे जानाजाताहै
वहअनुमानभीयथार्थ कभीनहोसकेगा आजतकबहुतबुद्धिमानप-
दार्थोंका विचारकर्तेहैं सोकिसीपदार्थमें गुणवादोषजानतेहैं प-
रन्तुइतनेइसमें गुणहैं वाइतनेहीदोषहैं ऐसानिश्चयउनकोनहीं
होता जितनीअपनीबुद्धि उतनाहीजानतेहैं अधिकनहीं औरप-
रमेश्वरसबपदार्थोंको यथावत्जानताहै सोअपनाज्ञानऔरवि-
द्या क्यापरमेश्वर गुप्तरक्खैगा ऐसा ईर्ष्यावान परमेश्वर होग-
या किसर्वज्ञअपनी विद्याकाप्रकाशनकरै किन्तु दयालुके होनेसे
औरईर्ष्या,कपट,छलादिदोष रहितहोनेसे अवश्यविद्याकाप्रकाश
करैगा इसमेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न वेदकोआपपरमेश्वरसे उत्पत्ति
मानतेहो जैसे जगतको सोजैसाजगत्अनित्यहै वैसावेदभीअनि-
त्यहोगा उत्तर वेदकेपुस्तक औरपठनपाठन जबतकजगतरहैगा
तबतकवेदकीपुस्तक औरपठनपाठनभीरहैंगे जबजगत् नष्टहोगा
उसकेसाथयेतोनभीनष्टहोगें परन्तु वेदनष्टनहोंगे क्योंकिवहवि-
द्यापरमेश्वरकीहै जैसेपरमेश्वरनित्यहै वैसेविद्यादिकगुणभी पर-

मेश्वरकेनित्यहैं(प्रश्न)वेदकीरचनाकोईबुद्धिमान होसोरचसक्ताहै
क्योंकि ॥ एतद्युक्तंमनातनंविजानीहि इतश्चादेवानां देवऋषी-
णामृषिसु नोनाम्युनिः। ऐसेऔरहवाशब्दकेरचनेसे वेदकोजैसी
संस्कृतवैसीमनुष्य पण्डितभीरचसक्ताहै जैसाकियहसंस्कृत ह-
मनेरचलियाहै फिरआपकैसे वेदकेरचनेका असम्भव मानतेहैं
किपरमेश्वरबिनावेदकोकोईनहींरचसक्ता।उत्तरहमलोगसंस्कृ-
तमात्रसे वेदकानिश्चयनहींकर्ते किपरमेश्वरने रचाहै क्योंकिसं-
स्कृततोजैसीतैसी पण्डितरचसक्ताहै परन्तुपरमेश्वरकेगुणउनसं-
स्कृतमें नहीदेखपड़ते जोमनुष्यहोगा सोअवश्यपक्षपातकिसी
स्थानमेंकरैगा औरपरमेश्वरपक्षपात किसीप्रकारसे कभीनकरै-
गा क्योंकिपरमेश्वरपूर्णानन्दऔरपूर्णकामहै सोवेदमेंकिसीप्रका-
रसे एकअक्षरमें भी पक्षपात देखनेमें नहींआता।फिरदेहधारी
सबविद्याओंमेंयथावत्पूर्णकभीनहींहोता सोजबकोईपुस्तकरचे-
गा तबजिसविद्यामेंनिपुणहोगा उसविद्याकीबातअच्छीप्रकारसे
लिखेगा परन्तु जिसविद्याको नहीजानता उसकाविषय जबकुछ
आवेगा तबकुछन लिखसकेगा जोलिखेगातो अन्यथा लिखेगा
औरपरमेश्वर सबविद्याओंकेविषयोंको यथावत्लिखेगा सोवेदों
मेंसबविद्यायथावत्लिखीहैं मनुष्यजबग्रन्थरचेगाउसमेंकोईबुद्धि-
मानहोगा तोभीसूक्ष्मदोषआवेंगे किधर्मकाकिसीप्रकारसेखण्ड-
नऔरअधर्मकामण्डन थोड़ाभीअवश्यआजायगा परमेश्वरकेलि-
खनेमें धर्मकाखण्डन वाअधर्मकामण्डन किसीप्रकारसेलेशमा-
त्रभीनआवेगा सोवेदमें ऐसाहीहै मनुष्य शब्द अर्थ औरसम्बन्ध
इनकोजितनीबुद्धिउतनाहीजानेगा अधिकनहीं सोवैसेहीशब्दअ-
पनेग्रन्थमेंलिखेगा जिसमें एक,दो,तीन,चारवापांचप्रयोजन जैसे
तैसेनिकलसकें औरपरमेश्वरसर्वज्ञकेहोनेसे शब्दअर्थऔरसम्ब-
न्धकेरचनेमें कितनेअसंख्यातप्रयोजन औरसबविद्यायथाव-
त्जानते जोपरमेश्वरकाऐसासामर्थ्यहै अन्यकानहीं सोवैसेवे-

दहोहैं किजिनसेअसंख्यात प्रयोजन औरसबविद्या निकलतीहैं
क्योंकिपरमेश्वरने सबविद्यायुक्तवेदोंकोरचेहैं इससे सबकार्यवेदोंसे
सिद्धहोतेहैं(औरवेदोंकेनामलिखके गोपालतापिनी,रामतापि-
नी, कृष्णतापिनी औरअल्लोपनिषदादिक मनुष्योंनेबहुतग्रन्थर-
चलिएहैं परन्तु विद्वान्यथावत्विचारकरकेदेखै तोउनग्रन्थोंमें
जैसोमनुष्योंकी क्षुद्रबुद्धिवैसीहीक्षुद्रता देखपडतीहै सोपरमेश्वर
औरउनकेवचनोंमें दिनऔररातकाजैसाभेदहै वैसाभेद देखप-
डताहै(प्रश्न)वेदपौरुषेयहै अथवाअपौरुषेय अर्थातईश्वरकारचाहै
वाकिसीदेहधारीका(उत्तर)वेददेहधारीकारचाकभीनहीहै किन्तु
परमेश्वरहीनेरचाहै परन्तु वेदअपौरुषेय औरपौरुषेयभीहै क्यों-
किपुरुषदेहधारीजीवकानामहै औरपूर्णकेहोनेसेपरमेश्वरकाभी
अपौरुषेयतोइससे है किकोईदेहधारीजीवकारचानहीं औरपौरु-
षेयइसवास्ते है किपूर्णपुरुषजोपरमेश्वरउसनेरचाहै इससे पौरुषे-
यभीहै।औरपरमेश्वरकीविद्यासनातनहैसोईवेदहै इससे भी वेदअ-
पौरुषेयहै क्योंकिपरमेश्वरकी विद्याजोवेद उसकीउत्पत्तिवानाश
कभीनहीहोती परन्तु पुस्तकपठनऔरपाठन इनतीनोंकाजगत्के
प्रलयमेंप्रलयहोजाताहै वेदईश्वरमेंनित्यरहतेहैं इससे वेदकानाश
कभीनहीहोता(प्रश्न)जैसेवेदईश्वरसेउत्पन्नहोताहै वैसाजगत्भीई-
श्वरसेउत्पन्नहोताहै जैसाजगत् विनश्वरहै वैसावेदभी विनश्वरहै
औरजोवेदनित्यहोगा तोजगत्भीनित्यहोगा(उत्तर) जगत्जोहैसो
प्रकृतिपरमाणु औरउनकेपरस्परमिलानेसे परमेश्वरसेउत्पन्नभ-
याहै सोकभीकारणजोपरमेश्वर उसमेंकार्यरूपजगत्नष्टहोजाय-
गा परन्तु वेदजगत्जैसाकार्यहैवैसानहीं क्योंकिवेदतो परमेश्वर
कीविद्याहै सोजोनाशहोजायतोपरमेश्वरविद्याहीनहोनेसे अवि-
द्वान्हो होजाय सोपरमेश्वर अविद्वान कभीनहीहोता सदापूर्ण
ज्ञानऔरपूर्णविद्यावान रहताहै सोजैसाज्ञान परमेश्वरकी वि-
द्यामेंहै वैसाही[illegible] औरसंहिताअर्थात्पूर्वा-

परमन्त्रोंका सम्बन्धजोमन्त्र जिस्से पूर्वत्रापीछेलिखनाचाहिए सो
सबपरमेश्वर होनेंसक्ते हैं इस्से कुछसन्देहनहीं जैसाजगत्कासं-
योगवावियोगहोताहै वैसावेदविद्याकासंयोगवावियोगकभीनही
होता क्योंकिपरमेश्वर औरपरमेश्वरके विद्यादिकसबगुणभीनि-
त्यहैं इस्से वेदविद्यानित्यहीहै जोऐसानमानेगाउसकेमतमें अन-
वस्थादोषआवेगा किकोईविद्यापुस्तकस्वयंभू औरईश्वरकारचान
मानेगा तोसबपुस्तकोंके सत्य वा असत्य का निश्चय कैसे करैगा
क्योंकिएकपुस्तकस्वतःप्रमाणरहेगा औरउसकेप्रमाणसे वाअप्र-
माणसेसत्यवामिथ्यापुस्तककानिश्चयहोसक्ताहै औरजोकोईपुस्त-
कस्वतः प्रमाणहीनहोगा तोकोईपुस्तककानिश्चयनहीहोसकेगा
क्योंकिएकमनुष्यनेअपनीबुद्धिकीकल्पनासे पुस्तकरचा दूसरेनेउ-
सकाअपनीबुद्धिसे खण्डनकरदिया दूसरेकातीसरेने तीसरेका
चौथेने ऐसेहीकिसीपुस्तककाप्रमाणनहोगा फिरअनवस्थाभ्रम
केहोनेसेसदारहैगो इस्सेवेदपुस्तकस्वतः प्रमाणहोनेसे परमेश्वर
हीकारचाहै अन्यथानहीं क्योंकिऐसीसुगमसंस्कृतललितपद स-
त्यार्थयुक्त अनेकप्रयोजनऔरअनेकविद्यासहित स्वल्पअक्षरसुग-
मवेदहीकीपुस्तकहै अन्यनहीऔरजगत्केकिसीपदार्थका कुछभि-
अयमनुष्यअपनीबुद्धिसेकरसक्ताहै परन्तुईश्वरस्वरूप औरउनके
न्यायकारित्वादिक अनन्तगुणवेदपुस्तकमें जैसेलिखेहैं वैसालेख
कोईसंस्कृतवाभाषापुस्तकमेंनहीहै क्योंकिकिसीकोवैसी बुद्धिनही
होसक्ती किपरमेश्वरकास्वरूपऔरयथावत्गुणलिखसके सोऐसा
ही जानना चाहिए किहमलोगोंपर अत्यन्त कृपासे परमेश्वरने
अपनास्वरूप औरअपनेसत्यगुणवेदपुस्तकमेंप्रकाशकरदिएहैं जि-
स्से किहमलोगभीपरमेश्वरकास्वरूप औरगुणवेदपुस्तकसेजानके
अत्यन्तआनन्दयुक्तहोतेहैं सोपक्षपातकोछोड़के यथावत्विद्यायुक्त
पुरुष अत्यन्तवेदार्थका विचारकरैगा सोईअनन्तसुखको पावेगा
अन्यथानहीं प्रश्न ऐसेही सबमनुष्यएक २ पुस्तकको परमेश्वरकी

मानतेहैं वैसेकि बाबिल्, इञ्जील और कुरान् वैसे आपलोगोंको
भी वेदमें आग्रह है जिससे कि अत्यन्त स्तुतिकरते हैं जो वेद परमेश्वरका
रचा होगा तो वे पुस्तक परमेश्वरके रचे क्यों नहीं इसमें क्या प्रमाण
है कि वेद ही ईश्वरका रचा है और अन्य पुस्तक नहीं उत्तर सब म-
नुष्योंका प्रमाण नहीं हो सक्ता क्योंकि सब मनुष्य पूर्णविद्यावाले आप्त
और पक्षपातरहित नहीं होते जिससे कि सब मनुष्योंके कहने का प्र-
माण होजाय जो आप्त और पक्षपात रहित होवैं उन्होंका प्रमाण
करना योग्य है अन्यका नहीं क्योंकि जो मूर्खों का हम लोग प्रमाण
करैं तो बड़ा भारी दोष आजायगा वे अन्यथा भाषण करते हैं और अ-
न्यथा कर्म भी करते हैं इससे आप्त लोगोंका प्रमाण करना चाहिए और
वेद के सामने इञ्जील और कुरानादिकी कुछ गणना ही नहीं
होसक्ती किन्तु उनमें विद्याकी बात तो कुछ नहीं है। जैसोकि कहा-
ने होय वैसे वे पुस्तक हैं प्रश्न आप्तका निश्चय कैसे होसक्ता है वेदवाले
कहते हैं कि हमारी बात स[illegible]हते हैं कि हम लोगोंकी
बात सत्य है इसमें क्या प्रमाण है कि यही बात सत्य है अन्य नहीं उत्तर
इसका समाधान तृतीय समुल्लासमें कह दिया है कि ऐसा लक्षणवा-
ला आप्त होता है और प्रत्यक्षादिक प्रमाणोंसे सत्य वा असत्यका यथा-
वत् निश्चय भी होता है उनसे निश्चय करके सत्यको मानना चाहिए अ-
सत्यको नहीं प्रश्न वेद किसी देशविशेष और भिन्न देशमें रहनेवाले
मनुष्योंके हेतु हैं वा सब मनुष्योंके हेतु हैं उत्तर वेद सब मनुष्योंके वा-
स्ते हैं क्योंकि जो विद्या और सत्य बात होती है सो सबके हेतु होती है
और वेदमें कहीं नहीं लिखा कि इस देशवा उन मनुष्योंके हेतु वेद ब-
नाया गया और अधिकार भी इनका है और इनका नहीं जैसे कि बा-
बिल, मूसा और इसराईल कुलादिकोंके वास्ते पुस्तक आई और मु-
हम्मदादिकोंके हेतु कुरान् यह बात मनुष्योंको होती है अपने देशवा-
लेके ऊपर प्रीति और अन्यके ऊपर नहीं जो ईश्वरका वचन सो तो
सर्वज्ञ और सब जगत्का स्वामी है इससे तुल्य कृपा और तुल्य दृष्टि और-

रहैगा अन्यथा नहीं ऐसे ही पुस्तक वेदही को है अन्य नहीं क्योंकि
अन्यपुस्तकोंमें ऐसी विद्या नहीं और कहानी कोनाई उनमें कथा है
और पक्षपात बहुतसे हैं इससे वेदपुस्तकही ईश्वरकृत है अन्य नहीं
इसमें किसीको जो सन्देह होय तो पक्षपातको छोड़के तीनों पुस्तकों
का विद्याप्रीति और सज्जनतासे विचार करैं तब यही निश्चय होगा
कि वेदपुस्तकही ईश्वरकृत है अन्य नहीं प्रश्न वेदोंका सब मनुष्योंको
पढ़ने और पढ़ानेका अधिकार है वा नहीं उत्तर इसका विचार तृ-
तीयसमुल्लासमें वर्णव्यवस्थाके कथनमें किया गया है वहां जानले-
ना इसप्रकारसे वहां लिखा है कि जो मूर्ख है वह शूद्र है उसका पढ़ना
वा उसको पढ़ाना व्यर्थ है क्योंकि उसको बुद्धि न होनेसे कुछ वि-
द्या न आवेगी अन्य व्यवस्था चतुर्थ समुल्लासमें देख लेनी प्रश्न शूद्रा-
दिकोंको वेद सुननेका अधिकार है वा नहीं उत्तर जिसको कानइन्द्रि-
य है और उसके समीप जो शब्द होगा उसको अवश्य सुनेगा सो वेद-
का शब्द अथवा अन्य शब्द हो वैसे सबको सुनेगा परन्तु शूद्र मूर्ख होनेसे
सुनके भी कुछ न कर सकेगा इस हेतु जहां तहां निषेध लिखा है कि शूद्र-
को वेद न पढ़ना चाहिए कि उसको कुछ आता नहीं प्रश्न वेदव्यासजी
ने वेद रचे हैं इससे उनका नाम वेदव्यास पड़ा है यह बात भागवत में
लिखी है फिर आप कैसी बात कहते हैं कि वेद ईश्वरने रचे हैं उत्तर
यह बात अत्यन्त मिथ्या है क्योंकि व्यासजीने भी वेद पढ़े थे और अपने
पुत्र शुकदेवादिकोंको पढ़ाये थे और उनका पिता पराशर उसका
पितामह शक्ति और प्रपितामह वशिष्ठ ब्रह्मा और बृहस्पत्यादिकों
ने भी पढ़े थे जो व्यासके बनाये वेद होते तो वे कैसे पढ़ते क्योंकि व्यास
जी तो बहुत पीछे भये हैं और जो उनका नाम वेदव्यास पड़ा है सो
इस रीतिसे पड़ा है कि । वेदेषु व्यासो विस्तारो नाम विस्तृता बुद्धिर्य-
स्यासौ वेदव्यासः ॥ व्यासजीने वेदोंको पढ़के और पढ़ाये हैं जिससे सब
जगत्में वेदका पठन और पाठन फैल गया और उनकी बुद्धि वेदोंमें
विशाल थी कि यथावत् शब्द अर्थ और सम्बन्धसे वेदोंको जानते थे इ-

से इनका नामवेदव्यास रक्खा गया पहिले इनका नाम ककका कृ-
ष्णद्वैपायन था वेदव्यास नाम विद्याके गुणसे भया है इसे भागवतमें
जो बात लिखी है सो वेदोंकी निन्दाके हेतु लिखी है उसका यह अभि-
प्राय था वेदोंकी निन्दामें कि जिसने वेद रचे हैं उसीने भागवत भी र-
चा और वेदोंके पढ़नेसे व्यासजीको शान्ति भी न भई किन्तु भागवतके
रचनेसे उनको शान्ति भई और भागवत वेदोंका फल है अर्थात वेदों
से भी उत्तम है सो यह बात दुर्बुद्धि जीवोपदासकी कही है क्योंकि
व्यासजीके नामसे उसने सब भागवत रचा है इस हेतु कि व्यासजीके
नाम लिखनेसे सब लोग प्रमाण करें और वेदोंकी निन्दासे मेरे ग्रन्थ
की प्रवृत्तिके होनेसे सम्प्रदायकी वृद्धि और धनका लाभ होय इसे
सज्जन लोग इस बातको मिथ्या ही मानें प्रश्न वेद ईश्वरने संस्कृत भा-
षामें क्यों रचे क्या ईश्वरकी भाषा संस्कृत ही है जो देशभाषामें र-
चते तो सब मनुष्य परिश्रमके विना वेदोंको समझ लेते और संस्कृ-
त जाननेके हेतु व्याकरणादिक सामग्री पढ़नी चाहिए इसके विना
वेदोंका अर्थ कभी मालूम न होगा उत्तर संस्कृतमें इस हेतु वेद रचे
गये हैं कि छोटे पुस्तकमें सब विद्या आ जांय और जो भाषामें रचते
तो बड़े २ ग्रन्थ हो जाते और एकदेशही का उपकार होता सब देशों
का नहीं और जितनी देशभाषा हैं उनमें रचते तब तो पुस्तकोंका पा-
रावार ही न होता इसे ईश्वरने सर्वभाषामें वेद रचे हैं कि कि-
सी देशकी भाषा न रहै और सब भाषा जिसे निकलें क्योंकि संस्कृत
किसी देशकी भाषा नहीं जैसे ईश्वर किसी देशका नहीं किन्तु सब दे-
शोंका स्वामी है वैसेही संस्कृत भाषा है कि किसी एक देशकी नहीं प्रश्न
देवलोग और आर्यावर्त्त देशकी प्रथम भाषा संस्कृत थी इसीको सु-
सम्मानलोग [illegible] क्योंकि जैसी प्रवृत्ति संस्कृतकी प-
हिले आर्यावर्त्तमें थी वैसी किसी देशमें न थी जिस देशमें कुछ प्रवृ-
त्ति भई होगी सो आर्यावर्त्तहीसे भई होगी अब भी आर्यावर्त्तमें अन्य
देशोंसे संस्कृतकी अधिक प्रवृत्ति है इसे यह निश्चय होता है कि संस्कृ

नभाषाआर्यावर्त्तकीमुख्यभाषाथी उत्तर यहदेवलोगकीभाषानहीं क्योंकि बृहस्पतिःप्रवक्ताइन्द्रश्चाध्येता। यहमहाभाष्यकावचनहै इन्द्रनेबृहस्पतिमेंसंस्कृतपढ़ी औरबृहस्पतिने अङ्गिराप्रजापतिसे, उन्नेमनुसे, मनुनेविराटसे, विराट्नेब्रह्मासे ब्रह्मानेहिरण्यगर्भादिकदेवोंसे, उन्नेईश्वरसे, जोदेवलोगकीभाषाहोती तोवक्योंपढ़तेऔरपढ़ाते क्योंकिदेशभाषातोव्यवहारसेपरस्परआजातीहै इस्से देवलोगकीसंस्कृतभाषानहीं औरब्रह्मादिकोंकी भाषानहीं तोआर्य्यावर्त देशवालोंकी कैसे होगी कभीनही परन्तु ऐसा जानाजाताहै किआर्य्यावर्तदेशमेंपहिलेप्रवृत्तिअधिकथी सबऋषि मुनिऔरराजालोग आर्य्यावर्तदेशवासोलोगोंने परम्परासेसंस्कृतपढ़ा औरपढ़ायाहै इस्सेआर्यावर्त्त देशकीभी संस्कृतभाषानहीं औरजोमुसल्मानलोगइसकोजिन्नभाषाकहतेहैं सोतोकेवलईर्ष्यासेकहतेहैं जैसेकिआर्यावर्तदेशवासियोंकानामहिन्दूरखदिया सो यहसंस्कृतजिन्नभाषाभीनहीं क्योंकिजिन्नतोभूतप्रेत पिशाचोंहीका नाम है भूतप्रेतऔरपिशाचहोतेहीनहीं औरजोहोतेहोंगे तोलोकलोकान्तरमेंहोतेहोंगे यहांनही फिरउनकीभाषा यहां कैसेआसकेगी इस्से यहबातअत्यन्तमिथ्याहै क्योंकिउनकोऐसीपदार्थविद्या औरधर्माधर्मविवेककीबुद्धिहीनहीं फिरयेसंस्कृतविद्यासर्वोत्तमकोकैसेकहसके वारचसके हैं औररचतेहोतेतोअन्यदेशोंमेंभीरचलेतेतथाकिसीपुरुषसेअबभीकहते इस्से ऐसीबात सज्जनलोगोंको नमाननाचाहिए प्रश्न देशभाषाभिन्न२ सबकैसें बनगई औरकिस्सेबनी उत्तर सबदेशभाषाओंका मूलसंस्कृतहै क्योंकिसंस्कृत अबबिगड़तीहै तबअपभ्रंशकहाताहै फिरअपभ्रंशसेदेशभाषासेहोतीहै जैसेकिघटशब्दसेघड़ा घृतशब्दसेघीदुग्धशब्दसेदूधनवीतशब्दसेनैनू अक्षिशब्दसेआंखकर्णशब्दसेकान नासिकाशब्दसेनाकजिह्वाशब्दसेजीभ मातरशब्दसेमादरयूयंशब्दसेयू वयंशब्दसेवीगूढशब्दकागोड़ इत्यादिकजानलेना औरएकपदार्थकेब-

क्षतनामहैंजैसेकिगौ:नामगाय.ग्मा,ज्मा,क्ष्मा,क्षा,क्षमा,क्षोणी,
क्षिति,अवनी,उर्वी,पृथ्वी,मही,रिप:,अदिति:,इडानिर्ऋति:,भू:,
भूमि:,पूषा:,गातु:,गोत्रा,ए२१नामपृथिवीकेनामहैं सोभिन्न२दे-
शोंमेंभिन्न२, २१नामोंमेंसेभिन्न२काअपभ्रंशहोनेसे भिन्न२भाषा
बनजातीहै औरएकनामबहुतअर्थोंकाहोताहै जैसेकिसिंह,वा-
नर,घोड़ा,सूर्य्य, मनुष्य,देव औरचोर इत्यादिकानाम हरिहै
इससे भीभिन्न२देशमें भिन्न२भाषाहोतीहै क्योंकिकिसीदेशमेंसिंह
नामसें उसपशुकाव्यवहारकिया किसीदेशमेंहरिशब्दसेबानरका
ग्रहणकिया किसीदेशमेंहरिशब्दसेघोड़ेकोलिया किसीदेशमेंह-
रिशब्दसेसूर्य्यकोलिया किसीदेशमेंहरिशब्दसेचोरकोलिया इस
हेतुदेशभाषाभिन्न२होगई औरमनुष्योंकाउच्चारणभेदसेभिन्न२
भाषाहोजातीहै जैसेकि ष्ज यहदोनोंप्रकारमें मिलनेसे अक्षर
यहज्ञहोताहै सोआजकालइसकालेखऐसाहोगयाहै ज्ञ इसएक
अक्षरकेअन्यथाउच्चारणसे तीनभेदहोगयेहैं गुजरातीलोगगका-
र औरनकारकाउच्चारणकर्त्तेहैं महाराष्ट्रादिक दाक्षिणात्यलोग
दऔरनकारकाउच्चारणकर्त्तेहैं औरअन्यलोगगकार औरयकार
काउच्चारणकर्त्तेहैं तथातालव्यश मूर्द्धन्यष औरदन्त्यस इनतीनों
केस्थानमें बंगालीलोगतालव्यशकारकाउच्चारणकर्त्तेहैं मध्यऔर
पश्चिमदेशवालेतीनोंकेस्थानमें दन्त्यसकारकाउच्चारणकर्त्तेहैं त-
थाकिसीकोजोभकठिनहोतीहै वहप्राय:शब्दोंकोअन्यथाउच्चारण
कर्तीहै औरजिसदेशमेंविद्याकालेशभीनहोय उसदेशमेंसङ्केतव्य-
वहारकरनेकेहेतु शब्दोंकाकरलेतेहैं किइसशब्दसेइसकोजानना
औरइसशब्दसेइसकोजानना जैसेदाक्षिणात्यलोगोंने घीकानाम
तूपररखलिया औरउत्तरदेशपर्वतवासियोंने घीकानामघोखार
खलिया औरगुजरातियोंने चावलकानामघोखाररखलिया इस
भीदेशदेशान्तरको भाषाभिन्न२होगईहै इसीप्रकारके अन्यकार
णोंकोभीविचारलेना अश्व वेदमें अश्वमेधादिक यज्ञोंकोक्रिया र्ने

लिखीहै सोजैसीबालकोंकीबातहोय कुछबुद्धिमानपनेकीनहीदी-
खती क्योंकिघोड़ेको सबजगह फिरातेहैं उसकोकोई जोबांधले
उससे फिरयुद्धकर्तेहैं सोव्यर्थयुद्धबनालेतेहैं मित्रमेंभीऐसीबातसेवैर
होजाताहै इत्यादिकऐसीरबुरीबात जिसमेंलिखीहैं सहवेदईश्व-
रकाबनायाकभी नहोगा उत्तर येसबबातमिथ्याहैं वेदमेंएकभीन-
हीलिखीहैं किन्तुलोगोंनेकहानी बनालियाहै प्रश्न ईश्वरनेऐसा
क्योंनहीकिया किबिनापढ़ने औरसुननेसे सबमनुष्योंकोयथावत्
आजाते तबतोईश्वरकी दयालुताजानपड़ती अन्यथाक्यादयालु-
ता किबड़े परिश्रमसे वेदकेअर्थोंको मनुष्यलोगजानतेहैं उत्तर
फिरभीस्वतन्त्रताहानि दोषआजाता क्योंकिपरमेश्वरकेप्रेरणा
सेवेदउनकोआजांय अपनेपरिश्रमऔरस्वतन्त्रतासेनहो औरजो
परीश्रमबिनापदार्थमिलताहै उसमेंप्रसन्नताभीनहींहोती बिना
परीश्रमकुछभी कामनहींहोता जैसेकीखानापीना उठनाबैठना
कहनासुननाआनाऔरजाना इत्यादिकपरीश्रमहीसेहोतेहैं अ-
न्यथानहीं परीश्रमकेबिनाकुछनहीहोता औरइतनीबड़ीजोपदा-
र्थविद्यासोकैसेहोगी जीवकोकानआदिकइन्द्रिय बुद्धिऔरप्राणक-
हने औरसुननेकासामर्थ्य भीदियाहै औरविद्याकाप्रकाशभी कर
दियाहै इससे ईश्वरदयारहितकभीनहीहोते औरजीवकोजोस्व-
तन्त्ररखदियाहै यहीबड़ीदयाईश्वरकीहै औरकोईभीनहीं शंका
करैउसकासमाधान बुद्धिमान्लोगविचारकरकेदेवैं ईश्वरऔ-
रवेदकेविषयमेंसंक्षेपसेकुछथोड़ासालिखदिया औरजोविस्तारसे
देखाचाहै सोवेदादिकसत्यशास्त्रोंमेंदेखलेवै इसकेआगेजगत्कीउ-
त्पत्तिस्थितिऔरप्रलयकेविषयमेंलिखाजायगा ॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते
सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते सप्तमः
समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ ७ ॥

अथ जगदुत्पत्ति प्रलयविषयान्व्याख्यास्यामः ब्रह्मविदाप्नोति परं तदेपाभ्युक्ता सत्यंज्ञानमनंतं ब्रह्मयोवेदनिहितंगुहायांपरमेव्योमन् प्रतिष्ठितासोऽश्नुतेसर्वान्कामान्ब्रह्मणासह विपश्चितेतितस्माद्वाएत स्मादात्मनआकाशःसंभूतःआकाशाद्वायुःवायोरग्निःअग्नेरापःअद्भ्यः पृथिवी पृथिव्याओषधयः ओषधिभ्योन्नंअन्नाद्रेतःरेतसःपुरुषः स वाएषपुरुषोन्नरसमयः ४ तैत्तिरीयशाखाकीश्रुतीहै सदेवसौम्येदम ग्रआसीदेकमेवाद्वितीयंतदैक्षत बहुःस्यांप्रजायेयेति यहछांदोग्यउप निषदकीश्रुतीहै नासदासीन्नोसदासीत्तदानीन्नासीद्रजोनव्योमा परोयत् किमावरीवःकुहकस्यशर्मन्नम्भः किमासीद्गहनंगभीरं यह ऋग्वेद की श्रुति है आत्मावाइदमग्रआ सीन्नान्यत् किंचनमिषत् सईक्षतलोकान्नुसृजाइति यहऐतरेयब्राह्मण कीश्रुतिहै इत्यादिक वेदादि कीश्रुतियों से यहनिश्चित जानाजाताहै किएकअद्वितीय सच्चिदानन्दरूप परमेश्वरही सनातनथा औरजगत् लेशमात्रभी नहीथा उसनेसबजगत्कोरचा सोइन मंत्रोंमेंजितनेनामहैं वेसब परमेश्वरकेहीहैं इनकाअर्थ प्रथम समुल्लास मेंकरदियाहै वहांदेख लेना उसपरब्रह्मकोजो मनुष्यजानताहै उसअनन्तपंडित परमेश्व रकेसाथ मिलके उसके सबकामपूर्णहोजातेहैं वह परमेश्वर एक अद्वितीयथा दूसराकोईनहीथाउन्ने जगदुत्पत्तिकीइच्छाकिईकिब- हुतप्रकारकी प्रजाओमेंउत्पन्नकरूं उसीक्षणमें नानाप्रकारकीप्र जाउत्पन्नहोगई सोइसक्रमसे पहले आकाशको उत्पन्नकिया कि जोसबजगतका निवासकरनेकास्थान सोआकाश अत्यन्तसूक्ष्म प- दार्थहैजाकिअनुमानसेभीकठिनतासेसमझनेमेंआताहै उससे स्थूल द्विगुणवायुउत्पन्नभया उससे अग्नित्रिगुणभया त्रिगुणअग्निसे चतु- र्गुणजलभया और जलसेपंचगुणभूमिभई भूमिसेओषधि औषधि योंसेवीर्यवीर्यसेशरीर इसप्रकारआकाशसलेकेतृणपर्यन्तपरमेश्वर नेसृष्टिरचलिई सोशब्दऔर संख्यादिकगुणवालाआकाशरचाफि र वायुआदिक चारोंके परमाणुरचे परमाणुसाठ मिलाकेएकत्र

णुरचा दोअणुसे एकद्व्यणुक और तीनद्व्यणुकसे एक त्रसरेणु और अनेकत्रसरेणुकोमिलाके यहजोदेखपडताहै सबजगत इसकोरच दिया (प्रश्न) परमेश्वरको क्याप्रयोजनथा किजगत्कोरचा (उत्तर) इसमें पूंछनाचाहिये कि प्रयोजनक्याकहाताहै यमर्थमधिकृत्यप्रवर्त्तते तत्प्रयोजनम् यह गौतममुनिजीकासूत्रहै इसकायहअभिप्राय है किजिसपदार्थकी अधिकमानके जीवप्रवृत्तहोवै उसको कहनाप्रयोजन सो परमेश्वरपूर्णकामहै उसको कोईप्रयोजन अधिक नहीहै क्योंकि उससे कोईपदार्थ उत्तम वाअप्राप्तनही फिर प्रयोजनका जोप्रश्नकरनासोअयुक्तहै (प्रश्न) जगत्केरचनेकोइच्छाकिईसो बिनाप्रयोजनसे इच्छानहीहोसक्ती (उत्तर) इच्छाकेजगत्मेंतीन कारणदेखपडतेहैं पदार्थकीअप्राप्ति और वहउत्तमहोवै तथा अपनेसेभिन्नहोवै परमेश्वरमें तीनोंमेसेएकभीनहीं क्योंकिसर्वशक्तिमान्केहोनेसे कोईपदार्थकी अप्राप्तिकभीनहीहोगी तब परमेश्वरसे कोईपदार्थ उत्तमभीनही और सर्वव्यापकके होनेसे अत्यन्त भिन्न कोईपदार्थनही इससे इच्छाकीघटना ईश्वरमेंनहीहोसक्ती (प्रश्न) जगत्रचनेकी प्रवृत्तिबिनाप्रयोजन वाइच्छाके कभीनहीहोसक्ती (उत्तर) अच्छा इच्छा तोनहीबनसक्ती तथा प्रयोजन भीनहीबनसक्ता परन्तु इच्छा और प्रयोजन मानो तो जगत्काहोना वहीइच्छा और प्रयोजनमानलेवो इससे भिन्नइच्छा वा प्रयोजन कोईनही क्योंकि जोऐसामानेंकि अपनेआनन्दकेवास्ते जगत्को रचा उससे हमलोगपूछतेहैं किजबतक जगतनहीरचाथा तबपरमेश्वर क्यादुःखीथा जोकिआनन्दकेवास्ते जगतकोरचासो दुःखका परमेश्वरमें लेशमात्रभीसंबन्धनही जो आपऐसेपूछनेमेंआग्रहकरैं किजगतकेरचनेमें औरभीकुछप्रयोजनहोगा तोआपसेमैं पूछताहूं किजगतके नहीरचनेमें क्याप्रयोजनहै जोआपकहैंकिजगतकेरचनेमेंजगतकीलीलादेखनेसेआनन्दहोताहोगा और जगतकेजीवभक्तिकरैं तोजबतकजगतकी लीलानहीदेखीथी औरजग

त् को जीव भक्ति भी नहीं करते थे तब परमेश्वर अवश्य दुःखी होगा इससे ऐसा प्रश्न व्यर्थ होता है इसमें आग्रह नहीं करना चाहिये रचना से ईश्वर के सामर्थ्य का सफल होना ही रचना का प्रयोजन है प्रश्न ईश्वर ने जगत रचा सो जगत रचने की सामग्री थी अथवा अपने में से ही जगत रचा वा अपने ही सब जगत रूप बन गया उत्तर इसका विचार अवश्य करना चाहिये कि बिना सामग्री के कोई पदार्थ नहीं बन सका क्योंकि कारण के बिना किसी कार्य की उत्पत्ति हम लोग नहीं देखते सो कारण तीन प्रकार का होता है एक उपादान दूसरा निमित्त और तीसरा साधारण सो उपादान यह कहाता है कि किसी से कुछ लेके कोई पदार्थ बनाना सो कार्य और कारण का इसमें कुछ भेद नहीं होता दोनों एक ही रूप होते हैं जैसे मट्टी को लेके घड़े को बनाते हैं कपास को लेके वस्त्र सोने को लेके गहना लोहे को लेके शस्त्र और काष्ठ को लेके किवाड़ आदिक सो घड़ादिक जितने हैं वे मृत्तिकादिकों से भिन्न वस्तु नहीं हैं किन्तु वही वस्तु है इस प्रकार का उपादान कारण जानना दूसरा निमित्त कारण जो कि उनकुलालादिक शिल्पी लोग नाना प्रकार के पदार्थों को रचने वाले निमित्त कारण में जानना क्योंकि मृत्तिकादिकों का ग्रहण करके अनेक पदार्थों को रचते हैं किन्तु अपने शरीर से पदार्थ लेके नहीं रचते इससे ऐसा निमित्त कारण होता है कि जो पदार्थ बनावे उससे भिन्न सदा रहे और उस पदार्थ को रचले तीसरा साधारण कारण होता है जैसा कि प्राण काल देश चक्र और सूत्रादिक क्योंकि ये सब कर्त्ता के आधीन और हेतु रहते हैं इससे अवश्य विचार करना चाहिये परमेश्वर इस जगत् का तीनों कारणों में से कौन कारण है अर्थात् तीनों कारन हैं जो उपादान कारण होवे तो क्षुधा तृषा शीतोष्ण भ्रम जन्म और मरणादिक दोष ईश्वर में आ जांयगे क्योंकि उपादान से उपादेय भिन्न नहीं होता अर्थात् ईश्वर से जगत् भिन्न नहीं होगा इससे उक्त दोष अवश्य ही आवेंगे इसमें जो कोई ऐसा कहै कि जैसे स्वप्नावस्था में मिथ्या पदार्थ अनेक देख पड़ते हैं और रज्जु में सर्प बुद्धि

तीहै इत्यादिक सब कल्पित भ्रान्तपदार्थहैं उनसे वस्तु में कुछदो-षनहीं आसक्ता स्वप्नसे जीवकी कुछहानि नहीं होती और सर्पसे र-ज्जु की उनसे पूंछना चाहिये सर्प की भ्रान्ति रज्जु में और स्वप्नमें हर्षशोकादिक दुःख किसको भये जो वह कहै कि ब्रह्मको भये फि र वह ब्रह्म शुद्धनहीं रहा तथा ज्ञानस्वरूप नहीं रहा क्योंकि भ्र म जो होता है सो अज्ञानसे ही होता है बिना अज्ञानसे नहीं फि र वेदोंमें सर्वज्ञ सदाभ्रान्ति रहित ब्रह्मको लिखा है उसको क्या गतिहोगी तथा बन्धमोक्षादिक दोषभी ब्रह्ममें आजांयगे जोवह क हैकि भ्रमसे बन्ध और मोक्ष है वस्तु में नहीं फिर भी नित्यशुद्ध बुद्ध मुक्तस्वभाव परमेश्वरको वेदमें लिखा है सोबात झूठी होजायगी य हबड़ा दोषहोगा और(जो बद्धहोगा सो जगतको कैसे रचसकैगा और जो मुक्त होगा सो जगत रचनेकी इच्छाही नकरैगा)फिर परमे श्वरसे जगत कैसे बनेगा और जो कोई केवल निमित्तकारणमानै तो जगतका साक्षात कर्ता नहीं होगा। किन्तु शिल्पीवत् होगा अथवा उस को महाशिल्पी कहो और उसके पास सामग्रीभी अवश्यमाननी चाहिये फिर जो सामग्री मानेंगे तो जगतभी नित्य होगा क्योंकि जिस्से जगत बना है वह सामग्री ईश्वरके पास सदा रहती ही है फिर एक अद्वितीय जगतकी उत्पत्तिके पहिले परमेश्वर था जगतभी था भी नहीं था यह वेदादिक शास्त्रोंका प्रमाणोंसे कहना वह व्यर्थ होगा)इस्से उन निमित्त कारण माननेसेभी वह दोषआवेगा और जो साधारणकारणमानें तो भी जडपराश्रित रचनेमें असमर्थ ईश्वर होगा जैसे कुलालादिकके बिना घटादिकार्य पराधीन होते हैं क्यों कि जैसे चक्रादिकके बिना कुलालादिक घटादिक नहीं रचसक्ते हैं फि र वह ईश्वर पराधीन होनेसे सर्वशक्तिमान नहीं रहेगा क्योंकि(कोई कामसहायकिसीकाममें नले और अपनी शक्तिसे सबकुछकरै उसको कहते हैं सर्वशक्तिमान्)सोसाधारणकारणजबमानाजायगा तो सर्व शक्तिमान् ईश्वरकभी नरहेगा इस्से तीनों प्रकारमें दोषआते हैं॥

इसवास्ते अत्यन्तविचारकरनाचाहिए जिसमेंकिकोईदोषनआवै
इसमेंयह विचारहै किईश्वर सर्वशक्तिमान्है जो सर्वशक्तिमान्
होताहै ~~उसमेंअनन्तसामर्थ्य सामग्री होती~~है सोवहसामग्रीस्वा-
भाविकहै जैसाकिस्वाभाविकगुणगुणीकासम्बन्धहोताहै वहदूस-
रापदार्थनहींहै औरएकभीनहीं उससामग्रीसेसबजगत्कोपरमे-
श्वरनेबनाया(प्रश्न)जोगुणकीनांईस्वाभाविकसामग्रीहै सोगुणीसे
भिन्नकभीनहीहोती क्योंकिस्वाभाविकजोगुणहै सोगुणीसे भिन्न
कभीनहींहोता इस्से क्याआयाकिसामग्रीसहितपरमेश्वर जगत्
रूपबनगया(उत्तर) ऐसानकहनाचाहिए क्योंकिजोजिसकापदा-
र्थहोताहै वहउसीकाकहाताहै सोपरमेश्वरका अनन्तसामर्थ्य
स्वाभाविकहीहै अन्यसेनहींलिया वहसामर्थ्य अत्यन्तसूक्ष्महै औ-
रस्वाभाविककेहोनेसे परमेश्वरका विरोधभीनहीं किन्तुउसीमें
वहसामर्थ्य रहताहै उस्से सबजगत्कोईश्वरनेरचाहै इस्सेक्याआ-
या किभिन्न पदार्थनलेके जगत् के रचनेमे उपादान कारणज-
गत् का परमेश्वरही हुआ क्योंकि अपने से भिन्न दूसरा कोई
पदार्थ नही है कि जिसे लेके जगत् को रचे सो अपने स्वाभा-
विक सामर्थ्य गुणरूपसे जगत् कोरचा इस्से सब जगत्का उ-
पादानकारणपरमेश्वरहीहै(परन्तुआप जगत्रूपनहीबना तथा
अपनीशक्तिसे नानाप्रकारके जगत् रचनेसे दूसरेके सहायबिना
इस्से जगत्कानिमित्त कारणईश्वरहीहै अन्यकोईनहीं तथासा-
धारणकारणभीजगत्काईश्वरहै क्योंकिकिसीअन्यपदार्थकेसहा-
यसेजगत्कोईश्वरनेनहीरचा किन्तुअपनीसामर्थ्यसेजगत्कोर-
चाहै इस्से साधारण कारणभी जगत्काईश्वरहै अन्यकोई नहीं
औरजोअन्यकोईहोता तोविरुद्धकार्यजगत्मेंदेखपड़ते विरुद्धका-
र्योंकोहमलोगजगत्मेनहीदेखतेहैं इस्से जगत्केतीनों कारणप-
रमेश्वरहीहैं अन्यकोईनहीं(प्रश्न)परमेश्वरनिराकारऔरव्यापक
है अथवानही(उत्तर)परमेश्वरनिराकारऔरव्यापकहीहै क्यों-

कि निराकार न होता तो एकदेश में रहता और कहीं देख भी पड़ता सो एकदेश में नहीं है और कहीं देख भी नहीं पड़ता इस से निराकार ही ईश्वर को जानना चाहिए और जो निराकार न होता तो सर्वव्यापक न होता तो सर्वात्मा और सब जगत् का अन्तर्यामी न होता सो सब जगत् का आत्मा सर्वान्तर्यामी के होने से व्यापक जो ईश्वर है अन्यथा नहीं (प्रश्न) सब जगत् का रचन और धारण ईश्वर किस प्रकार से करता है (उत्तर) जैसा जगत् में हम लोग देखते हैं वैसा ही ईश्वर ने जगत् रचा है परन्तु इस में यह प्रकार है कि आकाश तो परमाणु से भी सूक्ष्म है और वायु के परमाणु का यह स्वभाव देखने में आता है कि नीचे ऊंचे और समदेश में गमन करने वाले परमाणु हैं क्योंकि जो त्वचा इन्द्रिय से प्रत्यक्ष वायु को हम लोग वैसा ही स्वभाव वाला देखते हैं कभी ऊर्द्ध कभी नीचे और कभी तिरछा चलता है इस से हम लोग परमाणु का अनुमान करते हैं इस में अन्य भी बहुत कारण हैं क्योंकि वायु में अनेक तत्त्व मिले हैं परन्तु हम लोग मुख्य को गणना से इस बात को लिखते हैं तथा अग्नि का ऊर्द्ध जल के तथा नीचे और पृथिवी का सम तथा अनेकविधि गति को देख के परमसूक्ष्म परमाणु रूप जो तत्त्व उन का भी अनुमान करते हैं कि वे भी इसी प्रकार के हैं सो परमेश्वर ने पृथिवी में अनेक तत्त्वों का मेलन किया है क्योंकि जो मेलन न होता तो तत्त्वों के स्वाभाविक गुण पृथिवी में न देख पड़ते जैसे कि वायु न होता तो पृथिवी में स्पर्श भी न होता तथा अग्नि, जल और आकाश न होते तो रूप रस और पोल भी न देख पड़ते इस से क्या जाना जाता है कि सब में सब तत्त्व मिले हैं सो पृथिवी और जल के परमाणु अधोगामी स्वभाव से हैं अग्नि ऊर्द्ध गमन और वायु तिरछे गमन करने वाला है उन सब के परमाणु भी वा अधिक न्यून मिलने से स्थिरता वा गमन पदार्थों के होते हैं जैसे कि पृथिवी और जल नीचे जाते हैं और अग्नि तथा वायु ऊपर और अनेक विधि चलते हैं फिर मिला भया पदार्थ क्यों न होगा आसन्न वा अधिक न्यूनता तत्त्वों के मिलाने से जितनी जिस की गति परमेश्वर ने रची है

उतनी होई है। तो है अन्यथा नहीं और सब से बलवान् वायु है वायु के आधार से सब लोगों को हम लोग देखते हैं जैसे कि इस पृथिवी के चारों ओर वायु अधिक है तथा वायु में अन्य तत्व भी मिले हुए देख पड़ते हैं और वह वायु ४९ वा ५० कोस तक अधिक है उस के ऊपर थोड़ा है सो ज्योतिष विद्या की गणना से प्रत्यक्ष है उस वायु का आधार आकाश और आकाशादिक सब पदार्थों का आधार परमेश्वर है सो जो सर्वव्यापक न होता तो आकाशादिकों का सब जगत् में धारण कैसे करता इस से परमेश्वर व्यापक है व्यापक के होने से सब का धारण बनता है अन्यथा नहीं और जो साकार एकदेशस्थ परमेश्वर को मानेगा उस के मत में धारण सब जगत् का न होवेगा इत्यादिक बहुत दोष आवेंगे फिर दो प्रकार का व्यवहार हम लोग देखते हैं कि एक तो लघु वेग और गुरुत्वादिक गुण और आकर्षण भी पदार्थों में है क्योंकि जो हलका पदार्थ होता है सो ऊपर ही चलता है और गुरु नीचे को चलता है जैसे कि जल के पात्र में तेल को धारा जब देते हैं सो लघु के होने से तैल जल के ऊपर हो आ जाता है कभी नीचे नहीं रहता इस का यह कारण है कि जिस में छिद्र अधिक होगा उस में पोल और वायु अधिक होगा वह लघु होगा और जिस में पोल और वायु थोड़ा होगा वह गुरु होगा जो कि सम्मीप२ अत्यन्त जुट जायगा वही गुरु होगा और जो मिलेगा परन्तु उस के भीतर कुछ अत्यन्त सूक्ष्म छिद्र रहेंगे जैसे कि लोहा और काठ दोनों का भार तो तुल्य होता है परन्तु जल में दोनों को डारने से काठ तो ऊपर रहेगा और लोहा नीचे चला जायगा तथा बहुभीगने से नीचे चला जाता है उस का यह कारण है कि उस के छिद्रों से जल ऊपर चला जाता है सो ऊपर से जल का भार और सून का अधिक बढ़ना और पृथिवी के आकर्षण से नीचे चला जाता है तथा कोई काष्ठ भी अत्यन्त भीगने और बस रेखादिक के अत्यन्त मिलने से वह नीचे चला जाता है और वे सभी पदार्थों में देख पड़ता है जैसे मनुष्य, घोड़ा, हरिण वायु अग्न्यादिक में हैं तथा अग्नि और सूर्य, पदार्थों के अवयवों को

भिन्न२ कर देते हैं और जल तथा पृथिवी ये पदार्थों से मिलने और मिलानेवाले हैं सो जहां जिसका अधिक बल होगा वहां उसका कार्य्य होगा जैसे कि वायु सूक्ष्म और लघु होके ऊपर जाता है तब चारों ओर को पृथिवी जल, त्रसरेणु युक्त जिस स्थान से वायु ऊपर चढ़ा उस स्थान में चारों ओर से गुरु वायु गिरता है वही अधिक चलने और आंधी का कारण है और वही वृष्टि का जल के ऊपर आकर्षण के होने से कारण है क्योंकि सूर्य्य और अग्नि सब रसों का भेद करते हैं फिर एजलादिक रस सब ऊपर चढ़ते हैं परन्तु उनमें अग्नि वायु और पृथिवी के भी परमाणु मिले हैं और जल के परमाणु अधिक हैं फिर जब अधिक ऊपर जलादिकों के परमाणु चढ़ते हैं तब गुरु होते हैं अर्थात अधिक भार होता है फिर वायु धारण उनको नहीं कर सक्ता वहां का वायु जल के संयोग से शीतल चलता है उससे जलादिकों के परमाणु मिलके बादल हो जाते हैं जब वे वायु से बीच में परस्पर चलते हैं वायु मन्द होने से उष्णता होती है फिर वे परस्पर भिड़ते हैं और घिसते हैं इससे गर्जन और बीजली उत्पन्न होती है फिर उष्णता और बिजली के होने से जल पृथिवी के ऊपर गिरता है तथा वायु के वेग और ठोकर से बिजली नीचे गिरती है और अग्नि का ऊपर वेग तथा जल का नीचे होता है सो जल को पात्र में रख के ऊपर रखने और अग्नि को नीचे रखने से जब उस जल में अग्नि प्रविष्ट होता है तब उसमें वेग और बल होता है यही रैल आदिक पदार्थों का कारण है तथा बिजली अङ्कविद्या और नाना प्रकार के यन्त्रों से तार बिद्या भी होती है ऐसे ही विद्या से अनेक प्रकार की पदार्थविद्या बन सक्ती है ग्रन्थ अधिक होजाय इस हेतु हम अधिक नहीं लिखते हैं क्योंकि शास्त्रों में लिखा है सो बुद्धिमान् लोग विचार लेंगे जो थोड़ी२ विद्या से मनुष्य लोग अनेक प्रकार के पदार्थ रच लेते हैं फिर सर्वशक्तिमान् अनन्तविद्यावाला जो ईश्वर अनेक प्रकार के पदार्थों को रचे इसमें क्या आश्चर्य है इस प्रकार से जगत् को रचता है ईश्वर की अपनी नित्य शक्ति और गुण उनसे आकाश अव्यक्त अव्याकृ-

तप्रकृतिऔरप्रधानएसबएकहीकेनामहैंइनकोरचताहै आकाश
सेवायुआदिकेपरमाणुबनाताहै उनसाठपरमाणुसे एकअणुबन-
ताहै दोअणुसेएकद्व्यणुकबनताहै सोवायुद्व्यणुक है इससे प्रत्यक्षरू-
प नहींदेखपड़ता वायुमेंत्रिगुणस्थूल अग्निरचाहै इससे अग्निमें
रूपदेखपड़ताहै उससे चतुर्गुणजलऔरजलमेंपंचगुणपृथिवीरची
है तथाउसपरमाणुकेमेलनसेवृक्ष,घासऔरवनस्पत्यादिकोंकेबी-
जरचेहैं उनमेंपरमाणुकेसंयोग इसप्रकारकेरक्खे हैं किजिनसे
विलक्षण२स्वाद पुष्प,पत्र,फलऔरकाष्ठादिकहोतेहैं सोप्रसिद्ध
जगत्केपदार्थोंकोदेखनसे हमलोगपरमेश्वरकोरचनाका अनु-
मानकर्तेहैं औरसाधारणसबजगहमेंव्यापकहोनेसे सबजगत्का
धारणकर्तेहैं तथाएककेआधारदूसराऔरपरस्पर आकर्षणसेभी
जगत्काधारणहोताहै परन्तु सबआकर्षणोंकाआकर्षण औरधा-
रणकरनेवालोंका धारणकरनेवाला परमेश्वरहीहै अन्यकोईन-
हीं प्रश्न इसीलोकमें इसप्रकारकीसृष्टिहै वासबलोकोंमेंऐसीसृ-
ष्टिहै उत्तर सबलोकोंमेंसृष्टिअनेकप्रकारकीहै जैसीकिइसलोक
में क्योंकिइसलोकमेंहमलोग पृथिव्यादिकपदार्थप्रयोजनकेहेतु
रचेहुएदेखतेहैं इनमेंएकपदार्थभीव्यर्थनहींदेखते इससे हमलो-
गअनुमानकर्तेहैं किकोईलोकपरमेश्वरनेव्यर्थनहींरचाहै किन्तु
सबलोकोंमें अनेकविधिमनुष्यादिकसृष्टिरचीहै क्योंकिपरमेश्वर
का व्यर्थकार्यकभीनहींहोता प्रश्न कितनेलोक परमेश्वरनेरचेहैं
उत्तर सूर्य,चन्द्रऔरजितनेतारेदेखपड़तेहैं तथाबहुतभीनहीं
देखपड़ते एसबलोकहीहैंसोअसंख्यातहैं प्रश्न येसबलोकस्थिरहैं
वाचलतेहैं उत्तर सबलोकअपनी२परिधिऔरअपने२वेगसे च-
लतेहैं सोअनेकविधिगतिहै स्थिरतोएकपरमेश्वरहीहै औरकोई
नहीं प्रश्न जबपरमेश्वरनेपहिलेसृष्टिरची तबएक२दो२ मनुष्या-
दिकजातिमेंरचे अथवाअनेकरचेथे उत्तर एक२जातिमेंपरमे-
श्वरनेअनेक२रचेहैं एक२वादो२नहीं क्योंकिचिंउटीआदिकजा-

नि एक द्वीप में एक२ दो२ रचते तो द्वीपान्तर में वे कैसे जास-
कों इत्यादिक और भी विचार आपलोग करलेना प्रश्न परमे-
श्वरने सब पदार्थ शुद्ध२ रचे हैं याकोई पदार्थ अशुद्धभी रचा है
उत्तर परमेश्वर सब पदार्थ अपने२ स्थान में शुद्धही रचे हैं अ-
शुद्ध कोई नहीं परन्तु विरुद्ध गुणवाले परस्पर मिलने वा मि-
लानेवाले अशुद्ध कहते हैं अपने२प्रतिकूल के होनेसे जैसेकिदू-
धऔरनोनजबमिलते हैं तबवेदोनों नष्टगुणहोजाते हैं क्योंकिदो-
नोंका स्वादबिगड़जाताहै परन्तु उनोंदोनोंको पदार्थविद्याको
युक्तिसे इनोंपदार्थकोईरचले फिरभीवहउत्तमहोसक्ताहै जैसे
सर्पमक्खीवेभी अपनेस्थानमेंशुद्धहैं क्योंकिवैद्यक शास्त्रकीयुक्तिसे
इनकीभीबहुत औषधियांबनतीहैं अनुकूलपदार्थों में मिलानेसे
परन्तुवेमनुष्यआदिकिसीकोकाटें अथवाभोजनमें खालेनेसेदोषकर-
नेवालेहोजातेहैं ऐसेहीअन्यपदार्थोंकाविचारकरलेना प्रश्न जब
इसजगत्का प्रलयहोताहै तोकिसप्रकारसे होताहै उत्तर जिस
प्रकारसेसूक्ष्मपदार्थों से रचनास्थूलकीहोतीहै उसीप्रकारसेप्र-
लयभीजगत्काहोताहै जिस्से जोउत्पन्नहोताहै वहसूक्ष्महोकेअ-
पनेकारणमेंमिलताहै जैसेकिपृथिवीकेपरमाणुऔरजलादिकोंके
परमाणुसे यहस्थूलपृथिवीबनीहै इनपरमाणुकाजबवियोगहोता
है तबस्थूलपृथिवीनष्टहोजातीहै वैसेहीसबपदार्थोंका प्रलयजा-
नना आकाशसेपृथिवीपर्य्यन्तगुणोहैं जबएकगुणोघटेंगी तबजलरू-
पहोजायगी जलऔरपृथिवीजबएक२गुणघटेंगे तबअग्निरूपहो-
जांयगे जबवेतीनोंएक २ गुणघटेंगे तबवायुरूपहोजांयगे जबवे
भिन्न२होजांयगे तबसबपरमाणुरूपहोजांयगे परमाणुकोजबसू-
क्ष्मअवस्थाहोगी तबसबआकाश रूपहोजांयगे औरजबआकाश
कीभी सूक्ष्मअवस्थाहोगी तबप्रकृतिरूपहोजायगा जबप्रकृतिलय
होतीहै तबएकपरमेश्वरऔरसबजगत्काकारण जोसबमेंजगत्का
सामर्थ्य औरगुणपरमेश्वरकेअनन्त सत्यसामर्थ्य वालाएकअद्वि-

तो यह परमेश्वर और होगा और कोई नहीं सो यह सब आकाशादिक जगत् परमेश्वर के सामने कैसा है कि जैसा आकाश के सामने एक अणु भी नहीं इससे किसी प्रकार का दोष उत्पत्ति स्थिति और प्रलय में परमेश्वर में नहीं आता इससे सब सज्जन लोगों को ऐसा ही मानना उचित है (प्रश्न) जन्म और मरणादिक किस प्रकार से होते हैं उत्तर (लिंगशरीर और स्थूलशरीर का संयोग से प्रकट का जो होना उसका नाम जन्म है) और लिंगशरीर तथा स्थूलशरीर के वियोग होने से अप्रकट का जो होना उसका नाम मरण है) सो इस प्रकार से होता है कि जीव अपने कर्मों के संस्कारों में घूमता हुआ जल वा कोई औषधि में अथवा वायु में मिलता है फिर जैसा जिसके कर्मों का संस्कार अर्थात् सुख वा दुःख जितना जिसको होना अवश्य है परमेश्वर की आज्ञा के अनुकूल वैसे स्थान और वैसे ही शरीर में मिल के गर्भ में प्रविष्ट होता है फिर जिसमें वह मिला उसके अवयवों को आकर्षण से शरीर बनता है जैसी कि परमेश्वर ने युक्ति रची है जिसके शरीर का वीर्य्य होगा उस वीर्य्य में उसके सब अङ्गों से सूक्ष्म अवयव आते हैं क्योंकि सब शरीर के अवयवों से वीर्य्य की उत्पत्ति होती है फिर उस वीर्य्य के अवयवों में उस शरीर के अवयव मिलते जाते हैं उन से शिर, नेत्र, नासिका, हस्त, पादादिक, अवयव बढ़ते चले जाते हैं जब वह शरीर, नख और शिखा पर्यन्त पूर्ण बन जाता है तब वह जीव शरीर में सब अवयवों से चेष्टा करता भया शरीर सहित प्रकट होता है फिर भोजन पानादिक बाहर के पदार्थों के भोजन करने से शरीर के अवयवों की वृद्धि होती है सो छः विकार वाला शरीर है अस्तिनाम शरीर है १ जायते नाम जन्म का होना २ वर्द्धते नाम बढ़ना ३ विपरिणमते नाम स्थूल का होना ४ अपक्षीयते नाम क्षीण होना ५ विनश्यते नाम नष्ट का होना नाम मृत्यु का होना ६ ए छः विकार शरीर के हैं फिर जब मरण होता है तब स्थूल और लिंगशरीर का वियोग होता है सो स्थूलशरीर से लिंगशरीर निकल के बाहर का जो वायु उसमें मिल-

ता है फिर वायु के साथ जहां तहां घूमता है कभी सूर्य्य के किरणों के साथ ऊंचे और चन्द्र की किरणों के साथ नीचे आ जाता है अथवा वायु के साथ नीचे ऊपर और मध्य में रहता है फिर उक्त प्रकार से शरीर धारण कर लेता है (प्रश्न) स्वर्ग और नरक लोक हैं वा नहीं- उत्तर सब कुछ है क्योंकि परमेश्वर के रचे असंख्यात लोक हैं उन में से जिन लोकों में सुख अधिक है और दुःख थोड़ा उनको स्वर्ग कहते है तथा जिन लोकों में दुःख अधिक और सुख थोड़ा है उनको नरक कहते हैं और जिन लोकों में सुख और दुःख तुल्य है उनको मर्त्य लोक कहते हैं इस प्रकार के स्वर्ग, मर्त्य और नर्क लोक बहुत हैं उन में भी अनेक प्रकार के स्थान और पदार्थ हैं कि जिन में सुख वा दुःख अधिक वा न्यून है सो इसी हेतु परमेश्वर ने सब प्रकार के स्थान और पदार्थ रचे हैं कि पापी पुण्यात्मा और मध्यस्थ जीवों को यथावत् फल मिले अन्यथा न होय जैसे कि राजा के उत्तम मध्यम और नीच स्थान हैं तो हैं जिन से उत्तम मध्यम और नीचों की यथावत् व्यवहार की व्यवस्था होती है परमेश्वर का यथावत् अखण्डित संपूर्ण जगत् में राज्य है और यथावत् न्याय से जिसकी व्यवस्था है फिर परमेश्वर के राज्य में स्वर्ग नर्क और मर्त्य लोकादिकों की व्यवस्था कैसे न होगी किन्तु अवश्य होगी प्रश्न मरण समय में यमराज के दूत आते हैं उस जीव को जाल में बांध लेते हैं बांध के मारते२ यमराज के पास ले जाते हैं और यमराज यथावत् न्याय से दण्ड देते हैं यह बात सत्य है वा मिथ्या है उत्तर यह बात मिथ्या है क्योंकि जीव अत्यन्त सूक्ष्म है जाल से बांधने में कभी नहीं आता और गरुड़ पुराणादिकों में लिखा है कि पिण्डदान से जीव का शरीर बन जाता है और वैतरणी नदी के तरने के हेतु गोदानादिक करना चाहिए और यम के दूतों का काजल के पर्वत की नांई शरीर लिखा है वे नगर के मार्ग और घर के दरवाजे भीतर जीव के पास कैसे आ सकेंगे चिउंटी आदिक सूक्ष्म छिद्र में एक काल में अनेक जीव मरते हैं वहां कैसे जायंगे तथा वन वा नगरादिकों में अग्नि के लगने और युद्ध में एक पल में बहु-

तजीवोंकामरणहोताहै एक२जीवकोपकड़नेकेहेतु बहुतदूतजाते हैं उननेदूतकहांरहतेहैं तथाउनकाहीनाकैसेबनसकै सोयहबात अत्यन्तमिथ्याहै औरजोवेदादिक सत्यशास्त्रोंमें यमराज,तथा धर्मराज नामलिखेहैं वेपरमेश्वरकेहैं औरवायुतथासूर्य्य केभीहैं इसमें क्याआयाकि जैसीव्यवस्थाजीनेऔरमरनेमें परमेश्वरनेरची है वैसीहीहोतीहै सोवायुऔरसूर्य्यकेआधारसे सबजीवोंकाजा-नाऔरआनाहोताहै तथा यहीपरमेश्वरकीआज्ञाहै किजैसाजो कर्मकरै वहवैसाफलपावै येजोबात लिखीहैं उनमेंये प्रमाण हैं उत्पत्तिकेविषयमेंतो कुछश्रुतिलिखदियाहै परन्तुफिरभीलिख-तेहैं। यतोवाइमानिभूतानिजायन्ते येनजातानिजीवन्तियत्प्रय-न्त्यभिसंविशन्तीति तद्विजिज्ञासस्वतद्ब्रह्म ॥ १ ॥ यह यजुर्वेदकी तैत्तिरीयशाखाकीश्रुतिहै। अथातोब्रह्मजिज्ञासा ॥ २ ॥ जन्मा-द्यस्ययतः ॥ ३ ॥ एदोव्यासजीकेसूत्रहैं इनकायहअभिप्रायहै कि जिसपरमेश्वरसेसबभूत अर्थातसबजगतउत्पन्नहोताहै उत्पन्नहो-केउस परमेश्वरके धारणऔरसत्तासेसबजगतजीताहै औरप्रल-यमेंउसीपरमेश्वरमेंलीनहोजाताहैवहीब्रह्महै उसब्रह्मकोजानने कीइच्छाहै भृगोतूंकरयहीदोनोंसूत्रकाभीअर्थहै। सविताप्रस-मर्हति, इत्यादिकमन्त्रयजुर्वेदकी संहितामेंलिखेहैं इनकायहअ-भिप्रायहै किजोवजब शरीरछोड़ताहै तबसूर्य्य वावायुमेंमिलता है फिरजैसापूर्वलिखा वैसेहीजाताऔरआताहै सोसबबातवहां लिखीहै देखाचाहै सो देखले। अन्नेनसोम्यसुङ्गेनापोमूलमन्वि-च्छअद्भिः सोम्यसुङ्गेनतेजोमूलमन्विच्छतेजसासोम्यसुङ्गेनसन्मूल-मन्विच्छसन्मूलाःसोम्येमाःप्रजा। इत्यादिकसामवेदकीछान्दोग्य कीश्रुतीहैं इनकायहअभिप्रायहै किजैसीआकाशादिक क्रमसेउ-त्पत्तिजगतकीहोतीहै वैसेहीक्रमसेप्रलयभीहोताहै सुङ्गनामका-र्य्यकापृथिवीरूपजोकार्य्य उसकामूलजलहै सोजबपृथिवीका प्रलय होताहै तबपृथिवीजलरूप कारणमें लयहोतीहै तथाजल,अग्नि

में अग्नि वायु में वायु आकाश में और आकाश परमेश्वर में सो जिस प्रकार से प्रलय को लिखा उसी प्रकार से होता है और हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे इति यह मन्त्र पहिले लिखा है और इसका अर्थ भी लिख दिया है सो परमेश्वर ही सब जगत् का धारण कर्ता है अन्य कोई नहीं इससे ऐसा सिद्ध भया उत्पत्ति धारण और प्रलय परमेश्वर ही के आधीन हैं यह संक्षेप से जगत् की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय के विषय में लिखा और जो विस्तार से देखा चाहै सो वेदादिक सत्यशास्त्रों में देख लेवें इसके आगे विद्या, अविद्या बन्ध और मोक्ष के विषय में लिखा जायगा ॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते अष्टमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ ८ ॥

अथ विद्याऽविद्याबन्धमोक्षान्व्याख्यास्यामः । वेत्ति यथावद्यथार्थान्पदार्थान्सा विद्या विद्या इसका नाम है कि जो जैसा पदार्थ है उसको वैसा ही जानना न वेत्ति यथा यथार्थान् पदार्थान्सा अविद्या जैसा पदार्थ है उसको वैसा न जानना उसका नाम अविद्या है ज्ञान विवेक और विज्ञान इत्यादिक विद्या के नाम हैं अज्ञान भ्रम और अविवेक इत्यादिक सब अविद्या के नाम हैं । अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या ॥ १ ॥ यह पतञ्जलि मुनि का योगशास्त्र में सूत्र है इसका यह अभिप्राय है कि अनित्य अशुचि दुःख और अनात्मा ये जैसे हैं वैसे न जानना किन्तु इन में नित्य शुचि सुख और आत्मा की बुद्धि होती है जैसे कि, अमरा निर्जरा देवा इत्यादिक वचनों से नित्य निश्चय का जो करना कि स्वर्गादि लोक और ब्रह्मादिक देव नित्य हैं ऐसा अज्ञान बहुत मनुष्यों को है परन्तु विचार करके देखें कि जिन की उत्पत्ति होती है वे नित्य कैसे होंगे कभी

नहीं क्योंकि बहुत पदार्थों के संयोग से जो पदार्थ होता है सो उन पदार्थों के वियोग से बहुजो संयोग से बनाथा सो अवश्य नष्ट होजायगा ब्रह्मादिकों के शरीर और स्वर्गादिक सब लोक जो संयोग से बने हैं उनका वियोग से अवश्य नाश होता ही है फिर जो इन अनित्य पदार्थों में नित्य निश्चय होना और नित्य जो परमेश्वर तथा परमेश्वर के नित्य गुण धर्म और विद्या उनको नित्य न जानना कभी उनके जानने में इच्छा भी नहीं। तो यह अविद्या का प्रथम भाग है और अनित्य पदार्थों को अनित्य जानना तथा नित्य पदार्थों को नित्य जानना यह विद्या का प्रथम भाग है अशुचि अपवित्र नाम अशुद्ध पदार्थों में शुद्ध का निश्चय होना और शुचि जो पवित्र अर्थात् शुद्ध पदार्थ में अशुद्ध का निश्चय होना जैसे कि यह शरीर इस के नव मार्गों से मल ही निकलता है कान, आंख, नाक, मुख तथा नीचे के छिद्र और लोमों के छिद्रों से भी दुर्गन्ध ही निकलता है परन्तु जिनको बुद्धि विषयासक्त होती है वह शुद्धबुद्धि ही उसमें करता है तथा स्त्री भी पुरुष के शरीर में शुद्ध बुद्धि करती है ऊपर के चाम को देख के मोहित हो जाते हैं फिर अपना बल, बुद्धि, पराक्रम तेज, विद्या, और धन उसके हेतु नाश कर देते हैं जो उनकी उसमें प्रवृत्त बुद्धि न होती तो ऐसे काम में प्रवृत्त न होते सो बड़े २ राजा और बड़े २ धनाढ्य और महात्मा लोग तथा मिथ्या विरक्त लोग जो हैं वे इस काम में नष्ट हो जाते हैं कभी उनके हृदय में इस नरक का विचार भी नहीं होता जैसे अग्नि में पतङ्ग गिर के नष्ट हो जाते हैं वैसे वे भी ऐश्वर्य सहित नष्ट हो जाते हैं और पवित्र जो परमेश्वर विद्या और धर्म इनमें उनकी बुद्धि कभी नहीं आती यह अविद्या का दूसरा भाग है और जो शुद्ध को शुद्ध जानना और अशुद्ध को यथावत् अशुद्ध जानना यह विद्या का दूसरा भाग है दुःख में सुखबुद्धि का करना और सुख में दुःखबुद्धि का होना जैसे कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक और विषयों की सेवा इनमें जीव को शान्ति कभी नहीं आती जैसे कि अग्नि में घी डालने से अग्नि बढ़ता जाता है वैसे उनकी भी तृष्णा बढ़ती जाती है परन्तु उस दुःख में

बहुतजीवोंकोसुखबुद्धिदेखनेमेंआतीहै क्योंकिउनदुःखमें,सुखबुद्धिनहोतो तोवेइसमें फसते नहीं यहअविद्याका तीसरा भाग है और जोपुरुषार्थ सत्यधर्मकाअनुष्ठानसत्यविद्याकाग्रहण जितेन्द्रियताकाकरना तथासत्संगसद्विद्या औरपरमेश्वरकीप्राप्तिका उपायअर्थातमोक्षकाचाहना इनमें इनकोबुद्धि लेशमात्रभीनहीं आती इनकेविनाजीवकोकभीसुखनहींहोता परन्तु विपरीतबुद्धि केहोनेसेदुःखहीमें फसेरहतेहैं सुखमेंकभीनहींआते यहअविद्या कातीसराभागहै औरसुखमें सुखबुद्धिकाहोना औरदुःखमें दुःखबुद्धिकाहोना सोविद्याकातीसराभागहै तथाअनात्मामेंआत्म बुद्धि औरआत्मामें अनात्मबुद्धिकाहोना जैसेकिशरीरादिक सब अनात्मपदार्थहैं इनमेंआत्माकीनांईबहुतमनुष्योंकीबुद्धिहै जबदेहादिकोंमें दुःखहोताहै तबइनकीबुद्धिमें यहीहोताहै किमैंमरा औरमैंबड़ादुःखीहूं मैंदुबलाहोगया मैंपुष्टहूं मैंरूपवान्हूं मैंकुरूपहूं इत्यादिकनिश्चयलोकमें देखपड़ताहै औरजोआत्मा औरपरमाणुआदिक जिनसेकिशरीरबनाहै औरपरमेश्वरइननित्यपदार्थोंमें इनकोबुद्धिकभीनहींआती नित्यसुखजोमोक्ष इसको इच्छाभीकभीनहींहोती इससे जन्म,मरण,क्षुधा,तृषा,शीत,उष्ण हर्षऔरशोक, इसदुःखसागरसे कभीनहींनिकलते यहअविद्या का चौथाभागहै औरआत्माको आत्मा जानना अनात्मा को अनात्माजानना यहविद्याकाचौथाभागहै इससे क्याआयाकि अनित्याशुचिदुःखानात्मसुनित्याशुचिदुःखानात्मबुद्धिः तथानित्यशुचिसुखात्मसुनित्यशुचिसुखात्मबुद्धिर्विद्या। अथोन्यथाचाविद्येति विज्ञातव्याअन्यथा नाममिथ्या जोज्ञान किजैसेको तैसा नजानना इसकानाम अविद्याहै औरनिर्भ्रम यथार्थज्ञान काहोना सोविद्याकहातीहै विद्याअविद्याकीउत्पत्ति विषयासक्त्यादिदोषोंसेहोतीहै जबयहजीव विद्याहीनहोके बाहरकेपदार्थोंको सुखकेहेतु जानताहै तबमनकोबाहरकोओरप्रेरताहै फिरवहमनइन्द्रियों

को बाहर के पदार्थों में लगाके प्रवृत्त कर देता है सो जैसे कोई पुरुष निशाने में तीर बा गोली लगाया चाहता है तब वह भीतर से बाहर की ओर ध्यान करता है सो नेत्र को बन्दूक के मुख से लगाके निशाने में लगा देता है वैसे ही जो २ व्यवहार जीव किया चाहता है तब उसी प्रकार का व्यवहार जीव में भी होता है फिर बाहर और भीतर के पदार्थों को यथावत् न जानने से जीव भ्रमयुक्त होके अन्यथा जान लेता है उस्से फिर दृढ़संस्कार अन्यथा होने से अविद्या कहाती है सो न अपने स्वरूप का कभी ध्यान करता है न परमेश्वर का तथा न विद्या का किन्तु जैसे वे मिथ्या संस्कार उसके हैं उसी में गिरा रहता है क्योंकि जैसा जिसका अभ्यास करेगा वैसा ही उस जीव को भासता रहेगा फिर जबतक यह अविद्या जीव में रहैगी तबतक उसको विद्या कभी नहीं होती परन्तु जबकभी अच्छा संग और सद्विद्या का अभ्यास तथा विचार और धर्म का अनुष्ठान तथा अधर्म का त्याग कभी नहीं वह जीव करसक्ता और यथार्थ तत्त्वज्ञान पदार्थों का उसको कभी नहीं होता जबतक यह अविद्या जीव को रहती है तबतक विद्या का साधन और विद्याप्राप्त नहीं होती क्योंकि जब जीव सुविचार करता है तब उसको कुछ२ विवेक उत्पन्न होता है कि सत्य को सत्य और असत्य को असत्य जानना फिर अविद्या के गुण और उनके कार्य उनमें वैराग्य होता है अर्थात् उनको छोड़ता है और विद्यादिक जो सत्यार्थ उनमें प्रीति करता है इनमें यह कारण है कि जबतक पदार्थों का दोष नहीं जानता तबतक उनके त्याग करने को बुद्धि जीव को कभी नहीं होती क्योंकि त्याग का हेतु दोषों का यथावत् देखना ही है तथा पदार्थों के गुण का जो ज्ञान होना सोई प्रीति का हेतु है फिर वह जीव धर्माधर्म का यथावत् निश्चय करके अधर्म का त्याग और धर्म का ग्रहण करेगा फिर उसका मन शान्त होगा कि विद्या, धर्म, सत्सङ्ग, सत्पुरुषों का संग, योगाभ्यास, जितेन्द्रियता, सत्पुरुषों का आचार, मोक्ष और परमेश्वर इन्हों में मनप्रीतियुक्त होके स्थिर होजायगा इनमें विरुद्ध अविद्या अधर्म कुसंग कि कुपु-

कर्षोंकासंगविषयोंकाअत्यन्तअभ्यास अजितेन्द्रियता दुष्टपुरुषों का आचार जिसमें न्यूनहोय और परमेश्वरकोछोड़के उपासनाप्रार्थनाऔरस्तुतिकाकरना इनसे उसकामनहटजायगा इसकानाशमहै फिरसबइन्द्रियांस्थिरहोजांयगी इसकानामदमहै फिर अविद्यादिकजितनेदुष्टव्यवहार उनसेउनकानामपृथकहोजायगा अर्थातउनमें कभीन फसेगा उसकानाम उपरतिहै फिरशीत, उष्ण,सुख,दुःख,हर्ष,शोच,औरक्षुधा,तृषादिकइनकासहनअर्थातइनमें हर्ष वाशोक नकरेगा इसकानाम तितिक्षाहै फिरविद्यादिकउत्तमगुणोंमें अत्यन्तश्रद्धाअर्थात् प्रीतिजीवकीहोतीहै अविद्यादिकदोषोंमेंसदाअप्रीतिइसकानामहै श्रद्धाफिरमनबुद्धिचित्त,अहङ्कार,इन्द्रियऔरप्राण एसबउसकेवशीभूतहोजांयगे उनकोजहांस्थिरकरेगा वहांसबस्थिररहैंगे औरअविद्यादिक अनर्थमें कभीनजांयगे इसकानाम समाधानहै एछः गुणजीवमें उत्पन्नहोंगे फिरजैसेक्षुधातुर पुरुषकोइच्छा अन्नहीमें रहतीहै वैसे उसकामनमुक्तिहीमेंरहैगा किमेरीमुक्तिकबहोगी इससे भिन्नव्यवहारोंमें उसकामनलगेहीगानहीं इसकानाममुमुक्षुत्वहै येनव विवेकादिकगुणजबजीवमें होतेहैं तबवहब्रह्मविद्याका अधिकारी होताहै फिरवहसबसत्यशास्त्रोंका जोसत्य२पदार्थ विद्यारूप विषयउसकोयथावतजानेगा फिरशास्त्रजिनपदार्थोंकेप्रतिपादनकरतेहैं उनपदार्थोंकेसाथशास्त्रोंकाप्रतिपाद्य प्रतिपादकसम्बन्धको वहजीवयथावत्जानलेगा इसकानामसम्बन्धहै फिरवहयथावत् विद्याओंकाश्रवणकरेगा श्रवणकरकेज्ञानमेंजसेउनकायथावतविचारकरेगा इसकानाममननहै औरफिरउनपदार्थोंको यथावत् प्रत्यक्षजाननेकेहेतु योगाभ्यास अर्थातपातञ्जलदर्शन की रीति से करेगा इसकानामनिदिध्यासनहै फिरपृथिवीसेलेकेपरमेश्वरपर्यन्त सबपदार्थोंकाज्ञानजैसेप्रत्यक्षज्ञानकरेगा उसीसमयइसकाजोप्रयोजन किसबदुःखोंकोनिवृत्ति औरपरमानन्द परमेश्वर

कीओप्राप्ति इसकानाम, योजनहै सोजबयहविद्याहोगी तबअवि-
द्यादिकसबदोषनष्टहोजांयगे जैसेसूर्य्यकेप्रकाशमें अन्धकारनष्ट
होजाताहै विद्याऔरअविद्या यहदोनोंअन्धकारऔर प्रकाशकी
नांई परस्परबिरोधीपदार्थहैं इनकाफलितार्थयहहै किजोविद्या-
वान्होगा सोअधर्मादिक दोषोंको कभीनकरेगा औरजो अवि-
द्यावान्होगा उसकोनिश्चितबुद्धि धर्मादिकके अनुष्ठानमें कभीनल-
गेगी प्रश्न विद्याकीपुस्तककोईसनातनहै वासबपीछेरचीगईहैं उ-
त्तर चारबेदोंकोछोड़करचीगईहैं प्रश्न जैसेअन्यसबशास्त्ररचेगए
हैं वैसेवेदभीरचागयाहोगा उत्तर ऐसामतकहोजोऐसाकहोगे
तोआपकेमतमेंयहअनवस्थादोषआजायगा क्योंकिकोईपुस्तक स-
नातननठहरनेसे किसीपदार्थ अथवापुस्तककासत्य वा असत्यनि-
श्चयकभीनहोसकेगा जोकोईपुस्तकरचेगा उसकाप्रमाणकैसेहोगा
क्योंकिजोसनातनपुस्तकहोतो तोउसपुस्तकसेऔरोंका सत्यासत्य
जीवलोगजानसकें फिरउसकाखण्डनकरके दूसराकोईग्रन्थरच-
लेगा ऐसेदूसरेका करकेतीसरा ऐसेहीअनवस्थाआजायगी प्रश्न
जैसेअन्यपुस्तककाप्रमाणवेदसेहोताहै वैसे बेदकाप्रमाण किसपु-
स्तकसेहोगा उत्तर ऐसाकहनेसेभीअनवस्थादोषआजायगा क्यों-
किवेदकेप्रमाणकेहेतु कोईअन्यपुस्तकरक्खीजाय तोफिरउसपुस्त-
ककेप्रमाणकेहेतु कोईतीसरीभी मानीजायगी ऐसेहीर आगेर
अनवस्थाआजायगी इससेअवश्यएकपुस्तकसनातनमाननाचाहि-
ए जिससे किअन्यपुस्तकोंकोव्यवस्थासत्य२रहै सोवेदकेसनातनहो-
नेमेंपहिलेलिखदियाहै वहीबिचारलेना प्रश्न छःदर्शनोंमेंबड़े२
बिरोधहैं किपूर्वमीमांसावाला धर्माधर्मऔरकर्महीपदार्थहैं इ-
नसेजगत्कीउत्पत्तिमानताहै तथावैशेषिकदर्शनऔरन्यायदर्शन
में परमाणुसेजगत्कीउत्पत्तिमानीहै औरपातंजलदर्शनतथासां-
ख्यदर्शनमें प्रकृतिसेजगत्कीउत्पत्तिमानीहै औरवेदान्तदर्शनमें
परमेश्वरसे सबजगत्कीउत्पत्तिमानीहै यहबड़ापरस्परबिरोधहै

सबशास्त्रोंमें इसकाव्याउत्तरहै उत्तर वेदान्तमें प्रथमसृष्टिका
व्याख्यानहै किउससे पहिलेजगत्थाहीनहीं औरजबअत्यन्तसबका
प्रलयहोगा तबपरमेश्वरहीमें लयहोगा अन्यमें नहीं सोयहआ-
दिसृष्टिहै क्योंकिपहिलेनहींथी औरफिरउत्पन्नभई इससे इसस-
ृष्टिकेआदिहोनेसे सादिकहातीहै औरमीमांसादिकशास्त्रोंमें अ-
नादिसृष्टिकाव्याख्यानहै क्योंकिप्रकृतिपरमाणुऔरधर्मधर्मी इ-
नकानाशप्रलयमेंभीनहींहोता इसकानाममहाप्रलयहै इसमें
प्रकृतिपरमाण्वादिकोंकेमिलनेसे जितनास्थूलजगत्होताहै वह
सबपरमाण्वादिकोंके वियोगसेसबनष्टहोजाताहै परन्तुप्रकृतिऔ
रपरमाण्वादिकबनेरहतेहैं फिरभीजबईश्वरउनकोमिलाकेजग-
त्कोरचताहै तबयहस्थूलसबहोजाताहै फिरउनसेस्थूलजगत्उ-
त्पन्नहोताहै फिरजबनष्टहोताहै तबप्रकृतिऔरपरमाणुरूपहो-
ताहै फिरउनसेस्थूल जगत्उत्पन्नहोताहै ऐसेहीअनेकबारउत्प-
त्ति औरअनेकबार जगत्काप्रलयहोताहै परन्तुप्रकृतिऔरपर-
माणु इनस्थूलकाजोकारणसोनष्टनहीं इससे महाप्रलयमेंआदि
इसजगत्की नहींदेखपड़ती क्योंकिइसकाकारण प्रकृतिऔरपर-
माणुसदाबनेरहतेहैं इससे जगत्अनादिकहाताहै कभीकारणरूप
होजाताहै कभीकारणसे स्थूलजगत्उत्पन्नहोताहै ऐसेहीप्रवाह
रूपउत्पत्ति औरप्रलयकेहोनेसे अनादिजगत्कहाताहै सोयहज-
गत्कबउत्पन्नभया ऐसाकोईनहींकहसक्ता इससे यहआयाकिपां-
चशास्त्रोंमें महाप्रलयकीव्याख्याहै इसमेंभीअनेकभेदहैं किचम-
रेणुतकजबप्रलयहोताहै तबधर्मऔरधर्मी कुछ२प्रसिद्ध रहताहै
इसप्रलयकीव्याख्यामीमांसामेंहै औरजबअणुपर्यन्तकानाशहोता
है तबपरमाणुमात्रजगत्रहताहै सोभीमहाप्रलयभेदहै यहव्या-
ख्यावैशेषिकदर्शनऔरन्यायदर्शनमेंहै औरजबपरमाणुकोभीसू-
क्ष्मावस्थाहोतीहै तबअत्यन्तसूक्ष्मजोप्रकृतिसोरहजातीहै औरपर
माणुकाभीलयहोजाताहै क्योंकिशब्दादिकतन्मात्राओंकोभी सां-

ब्धशास्त्रमें उत्पत्तिलिखीहैं औरप्रकृतिकीनहीं इससे यहअनुमान् सेजानाजाताहै किप्रकृतिपरमाणुसेभीसूक्ष्महै सोयहव्याख्यानपातंजलदर्शन औरसांख्यदर्शनमें कियाहै औरवेदान्तमें प्रकृत्यादिकोंकीउत्पत्तिलिखीहैं औरप्रकृतिकालयभी परमेश्वरमें होताहै इससे उत्पत्तिकेविषयमें भिन्न२पदार्थोंकेव्याख्यानहोनेसे कुछविरोधपरस्परइनमें नहीहै(प्रश्न)पूर्वमीमांसा औरसांख्यमें ईश्वरकोनहीमानाहै औरअन्यशास्त्रोंमें मानाहै इससे विरोधआताहै (उत्तर)इसमेंभीकुछविरोधनहीं क्योंकिमीमांसामें धर्म औरधर्मीदोपदार्थमानेहैं इससे होईश्वरधर्मी औरईश्वरके सर्वज्ञादिकधर्म अवश्य मानलियाहै इसमेंकुछ सन्देहनहीं औरवेदकोजैमिनीजीनित्यमानतेहैं सोवेदशब्दज्ञानरूपकेहोनेसेगुणहै सोगुणीकेविनागुणकिसमेंरहेगा इससे ईश्वरको उसनेअवश्यमानाहै औरसांख्यमें ईश्वरासिद्धे: ॥ १ ॥ प्रमाणाभावन्नतत्सिद्धि: ॥ २ ॥ सम्बन्धाभावान्नानुमानम् ॥ ३ ॥ उभयथाप्यसत्करत्वम् ॥ ४ ॥ मुक्तात्मन:प्रशंसोपासासिद्धस्यवा ॥ ५ ॥ एपांचसांख्यशास्त्रमें कपिलजीकेकिएसूत्रहैं यहीअनीश्वरवादकाकारणहै इनकोयथावत्नजानके चार्वाक औरबौद्धादिक बहुतअनीश्वरवादी होगएहैं इनकेअभिप्रायनहीजाननेसे इनकायहअभिप्रायहै किईश्वर की सिद्धिनहीहोती किन्तु एकपुरुष औरप्रकृतिदोनोंनित्यहैं अन्यनहीं ॥ १ ॥ क्योंकिप्रत्यक्षप्रमाणनहोनेसे ईश्वरसिद्धनहींहोता प्रत्यक्षप्रमाणसे जोसिद्धहोतातोईश्वरमानाजाता अन्यथानहीं २ ॥ लिंगऔरलिंगीअर्थातचिन्ह औरचिन्हवालेकानित्यसम्बन्ध होता है सोलिंगकेदेखनेसेलिंगीकाअनुमानहोताहै फिरईश्वरकालिंगनामचिन्हकोईजगत्में देखनहीपड़ता इससे ईश्वरमेंअनुमान भीनहींबनता ३ ॥ ईश्वरजोमोहितहोगा तोअसमर्थकेहोनेसजगत्कोकभीनहीरचसकेगा औरजोमुक्तहोगा तोउदासीनकेहोनेसे जगतकेरचनेमें ईश्वरको इच्छाभी नहोहोगी इससे ईश्वरमें

शब्दप्रमाणभीनहींबनता॥४॥ फिरवेदमें सईश्वर इत्यादिकश्रु-
तिईश्वरकेव्याख्यानमें लिखीहैं उनकीक्यागतिहोगी वेसबश्रुति
विद्याऔरयोगाभ्यासऔरधर्ममेंसिद्धजोजीवहोताहै किअणिमा-
दिकऐश्वर्यवाला उसकोप्रशंसाऔरउपासनाकीवाचकहै इससे ई-
श्वरकीसिद्धि किसीप्रकारमेंनहींहोती ऐसेअर्थकोविपरीतजानके
मनुष्योंकीबुद्धिभ्रमयुक्तहोगईहै परन्तु कपिलजीकायहअभिप्रायहै
किपुरुषहीईश्वरहै औरवहीचेतनहै सर्वज्ञादिकगुणभीपुरुषमेंहैं
उसपुरुषचेतनमेंभिन्नकोईईश्वरनहींहै पुरुषकानामही ईश्वरहै
इससेयहआयाकि पुरुषहीको ईश्वरमानना चाहिए दूसराकोई
नहीं इससे जोकोईकहताहैकिजैमिनीऔरकपिलजीनिरीश्वरवा-
दीथे यहउसकाकहना मिथ्याजानना वेदादिकजितने पुस्तकहैं
उनकापठनपाठनविद्याकासाधनहै औरविद्यातथाअविद्याकीप-
रीक्षा उनकेपढ़नेऔरपढ़ानेके बिनाकभीनहींहोती विद्यापढ़ने
वाले तथानहींपढ़नेवाले इनमेंसेपढ़ने वालोंकाजोभाषण और
ज्ञानादिकव्यवहारअच्छाहीदेखनेमेंआता इससे ग्रन्थोंकाजोपढ़-
ना सोविद्याकोप्राप्ति करनेवालाहोताहै अन्यथानहीं परन्तुवि-
द्वानवहीहै जोकिसर्वथाअधर्मकात्यागकरै औरधर्मकाग्रहणक-
रै अन्यथापढ़नाऔरपढ़ानाव्यर्थहीहै। अन्धन्तमःप्रविशन्तियेवि-
द्यामुपासते ततोभूयइवतेतमोयउविद्यायांरताः॥ १॥ विद्या-
ञ्चाविद्याञ्चयस्तद्वेदोभयसह अविद्यया मृत्युंतीर्त्वाविद्ययाऽमृतम-
श्नुते॥ २॥ अन्यदेवाहुर्विद्ययाअन्यदाहुरविद्ययाः इतिशुश्रुम-
धीराणांयेनस्तद्विचचक्षिरे॥ ३॥ यजुर्वेदकीसंहिताकेमन्त्रहैं इ-
नकायहअभिप्रायहै किजोपुरुषअविद्यामेंफसेहैं वेअत्यन्तअन्धका-
रअर्थातजन्म,मरण,हर्ष, औरशोकादिकदुःखसागरमें प्रविष्टर-
हतेहैं इससे पृथक नहींहोसके औरविद्याअर्थात् नानाप्रकारके
कर्मोंसे विषयभोगोंकोचाहनाकरना तथायोगाभ्यास,तप और
संयमसेअणिमादिकसिद्धियोंमें फसकेप्रतिष्ठासंसारमें औरअभि-

मानादिकदोषोंसेयुक्तहोनाइसमेंजोरतरहतेहैंवेउनकर्मोंलोगों
सेभी अत्यन्तअन्धकारमेंफसजातेहैं फिरउनकानिकलनाउनसेबहु-
तकठिनहोताहै ॥ १ ॥ परन्तु विद्याऔरअविद्याकोएकसाथगिन
लेना क्योंकिबन्धकोकरनेवालीदोनोंहैं इससे दोनोंकानाम अवि-
द्याहै जोकर्मधर्मयुक्तऔरयोगाभ्यासजोउपासना इनकेअनुष्ठान
सेमृत्यु जोमोह औरभ्रमादिकदोषउनसेपृथक्मन औरजीवहोके
शुद्धहोजातेहैंफिरयथार्थपदार्थोंकाज्ञानऔरपरमेश्वरकीजोप्रा-
प्ति इसविद्यासेअमृतजोमोक्षउसकोप्राप्तहोताहै फिरदुःखसागर
मेंकभीनहींगिरता॥२॥ इससेविद्याजोनिर्भ्रमज्ञानइसकाफलभि-
न्नहैअर्थातमोक्षहै औरजोपूर्वोक्तअविद्याजोकिभ्रमात्मकज्ञानउ-
सकाभीफलअन्यहै नामबन्धहै सोविद्याऔरअविद्याका फलभि-
न्न२है एकनहीं ऐसाहमनेज्ञानियोंकेमुखसेसुनाहै जोकियथार्थ
वक्ता उननेहमारेसाम्हनेयथावतव्याख्याकरदीहै इससेहमको इ-
नमेंभ्रमनहीहै ॥ ३ ॥ सोसबमनुष्योंकोयहउचितहै किसबपुरुषा
र्थसेविद्याकीइच्छाकरैं औरअत्यन्तप्रयत्नसेअविद्याकोछोड़ैं क्यों-
किइससंसारमेंविद्याकेतुल्यकोईपदार्थनहीं तथाविद्याकेविनाइस
ोकवापरलोकमें कुछसुखनहीहोता औरअनेकजन्मधारणकर्ता
उनमेंअत्यन्तपीड़ाहोतीहै कभीपरमेश्वरकी प्राप्तिनहींहोती
सकीप्रातिकेउपायब्रह्मचर्यादिकपूर्वसबलिखदियेहैं उनकोनाम
ात्रयहांगणनाथोड़ीसीकरतेहैं प्रथमसबउपायोंकामूल ब्रह्मचर्या-
मजबतकपूर्णविद्यानहोय तबतकजितेन्द्रियहोकेयथावत्विद्या
हणकरैं औरसबव्यवहारोंकोयथावत्जानें फिरविवाहकरैं प-
न्तुविद्याभ्यासकोनछोड़ैं औरनित्यगुणग्रहणकीइच्छारक्खैं अ-
न्तपुरुषार्थ औरनम्रतापूर्वक सबसज्जनोंसेमिलैं मिलकेउनको
ापूर्वकगुणग्रहणकरैं आपभीजितनीबुद्धि उतनानित्य२विचार
रैं उसमेंपक्षपात रहितहोके सत्यकोग्रहणकरैं औरअसत्यको
ोड़ैं एकान्तसेवनसेअपनीं इन्द्रियां,मनऔरशरीर सदाधर्मा-

तुष्ठानमेंनिश्चितरक्खैं अधर्ममेंकभीनहीं । यथाखनन्खनित्रेण-
नरोवार्य्यधिगच्छति तथागुरुगतांविद्यांशुश्रूषुरधिगच्छति ॥ यह
मनुकाश्लोकहै इसकायहअभिप्रायहै किजोपुरुष अभिमानादिक
दोषरहित औरनम्रतादिकगुणयुक्तहोके सेवासेदूसरेकाचित्तप्र-
सन्नकरदेताहै सोईश्रेष्ठगुणोंकोप्राप्तहोताहै अन्यनहीं इसमेंयह
दृष्टान्तहै किजैसेंभूमिकोखोदता२कुदालीसेनीचेचलाजाय फिर
वहजलकोप्राप्तहोताहै वैसेहीशुश्रूषुअर्थातकपटादिकदोषरहि-
त औरदूसरेपुरुषकोपरिचर्याजानताहोय किइसमेंगुणहैं वा नहीं
फिरयथावतगुणोंकाबुद्धिमेंनिश्चयकरले किइसमेंएसत्यगुणहैं पी-
छेजिसप्रकारसेवेगुणमिलैं उनसेवादिकप्रकारोंसे गुणोंकोअवश्य
ग्रहणकरैं ग्रहणकरकेगुणोंकोप्रकाशकरदे औरजोकोईउनगुणों
कोग्रहणकियाचाहै उसकोप्रीतिसेनिष्कपटहोके यथावतगुणोंको
देदे क्योंकिगुणोंकोगुप्तकरना कोईमनुष्यकोउचितनहीं औरजो
गुणोंकोगुप्तरखताहै वहबडामूर्खपुरुषहै औरधर्मतथापरमेश्वर
काअत्यन्तविरोधीहै वहकभीसुखनपावैगा इत्यादिकविद्याकोप्रा-
प्तिकेहेतुहैं औरयहीअविद्या नाशकेहेतुहैं अन्यभीअनेक प्रकारके
हेतुहैं उनकोविचारलेना और(इसकेआगेबन्ध औरमुक्तिकाव्या-
ख्यानकियाजाताहै)। पराञ्चिखानिव्यतृणत्स्वयंभूस्तस्मात्पराङ्-
पश्यतिनान्तरात्मन् कश्चिद्धीरःप्रत्यगात्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृत-
त्वमिच्छन् । यहकठवल्लीकीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहै किप-
राञ्चिखानिअर्थातबहिर्मुख इन्द्रियजिसकीहोतीहैं वहजीवबा-
हरकेपदार्थोंहीकोदेखतारहताहै औरभीतरकेपदार्थोंकोवाअपने
स्वरूपको कभीनहींविचारता अथवापरमसूक्ष्मजोपरमेश्वर उ-
सकेविचारमें कभीजीवकाचित्तनहींजाता इससे जीवकोपदार्थों
कायथार्थज्ञानतोनहींहोता किन्तुअत्यन्तदृढ भ्रमहोताहै उससे
आपसेआपहीबद्धहोताहै फिरऐसामोह उसकोहोताहै किजि-
सकाछूटनाबहुतकठिनहै उससे फिरमिथ्याज्ञानहोताहै किस्त्रीपुत्र

धन, राज्यादिकों होने में सुखमान लेता है फिर उनके सुधरने में अत्यन्त हर्षित होता है और बिगड़ने से शोकयुक्त होता है इस जाल में गिरके अनेक जन्म मरण जीव के होते हैं और अत्यन्त दुःख पाता है प्रश्न जन्म एक होता है अथवा अनेक उत्तर अनेक जन्म होते हैं प्रश्न जो अनेक जन्म होते हैं तो पूर्व जन्मों का हमको स्मरण क्यों नहीं होता उत्तर पूर्व जन्मों का स्मरण नहीं हो सक्ता क्योंकि पूर्व जन्म ज्ञान के जो निमित्त हैं वे सब नष्ट होजाते हैं इस्से पूर्व जन्म का स्मरण नहीं होसक्ता प्रश्न कौन वे निमित्त हैं और निमित्त किसको कहते हैं उत्तर निमित्त इसका नाम है कि जो दूसरे के संयोग से उत्पन्न होता है जैसे कि जल शीतल है और अग्नि उष्ण है जब अग्नि का संयोग जल में होता है तब जल उष्ण होजाता है परन्तु जब अग्नि से जल पृथक किया जाता है तब फिर भी वह शीतल होजाता है इसका नाम नैमित्तिक गुण है जो कि जबतक उसका निमित्त रहता है तबतक वह रहता है और जब निमित्त नहीं रहता तब उसका निमित्त से उत्पन्न भया जो कि गुण सो भी नष्ट होजाता है जैसे सूर्य्य और नेत्र से रूप का ग्रहण होता है जब सूर्य और नेत्र नहीं रहते तब रूप का भी ग्रहण नहीं होता क्योंकि निमित्त के बिना नैमित्तिक गुण नहीं होता इस्से क्या आया कि पूर्व जन्म जिस देश जिस काल में और जो शरीर तथा उस शरीर के सम्बन्धी सब पदार्थ नष्ट अर्थात उनका वियोग होने से वहां का जो उनको ज्ञान था सो भी नष्ट होजाता है और इसी जन्म में जो २ बाल्यावस्था में व्यवहार किया था उस्से सुख वा दुःख पाया था उसका भी यथावत स्मरण वृद्धावस्था में नहीं रहता और जिस समय किसी से किसी की बात होती है तब उस बात में अनेक अक्षर, पद, वाक्य, स्कन्धक हैं और सुने जाते हैं परन्तु उसके उत्तर काल में स्मरण कहना वा सुनना यथावत् नहीं बनता और कोई बात कण्ठस्थ कर लेता है फिर कालान्तर में उसको भी भूल जाता है एक बात में जब जीव का चित्त होता तब दूसरे में नहीं जाता दूसरे में जब जाता है तब पहिले को भूल जाता है जब ऐसी बात है तो जन्मान्तर के स्मरण में शंका

जोकरतेहैं उनकीशंकाव्यर्थहोहै प्रश्न जीवऔरबुद्धिआदिकपदार्थतो वेहीहैं फिरपूर्वजन्मकाज्ञानक्योंनहींहोता क्योंकिजोकुछदेखता वासुनताहै सोबुद्धिहीसे ग्रहणकरताहै फिरउनकाज्ञान अवश्य होनाचाहिएसोनहींहोता इससे पूर्वजन्मनहींहैं उत्तर इसकाउत्तरतोपूर्वप्रश्नकेउत्तरहीसेहोगया क्योंकिइसबाल्यावस्थासलेकेवृद्धावस्थातक वहीजीवऔरबुद्ध्यादिकहैं फिरकहैवासुने व्यवहारों में अक्षर,पद,औरउनकेअर्थादिकोंका यथावत्स्मरणक्योंनहींहोता इसव्यवहारकोहमलोगप्रत्यक्षदेखतेहैं किजबहमलोगपरस्पर बातकहते औरसुनतेहैं तबकुछकालकेपीछेबहुत२बातोंके सुनने वाकहनेमेंआनुपूर्वीसेयथावतस्मरणनहींरहता फिरजन्मान्तरके स्मरणमेंशंकाकरनीव्यर्थहोहै औरदेखनाचाहिए किजागृतावस्था मेंवेहीजीवऔरबुद्ध्यादिकव्यवहारकरतेहैं यहमेराघर,द्वार,पिता,पुत्र,स्त्री,बन्धु,शत्रु,औरमित्रादिकहैं ऐसाउसजीवको यथावत स्मरणहै औरफिरजबस्वप्नावस्थाहोतीहै तबइनकाउसीसमयविस्मरणहोजाताहै फिरजबसुषुप्तिहोतीहै तबदोनोंकाव्यवहारविस्मृतहोजाताहै वेहीजीव और बुद्ध्यादिकहैं परन्तु किञ्चित २ देश औरकालकेभेदहोनेसे पूर्वकाव्यवहारविस्मृतहोजाताहै फिरपूर्व जन्मदेशकाल और शरीरादिकपदार्थ सबछूट जातेहैं फिरउनके स्मरणकीशंकाजोकरतेहैं सोविचारवाननहींहैं प्रश्न यहजन्मजोहोताहै सोएकबारहीहोताहै दूसरीबारनहींक्योंकियहदूसराजीवहै सोनया२उत्पन्नहोजाताहैऔरशरीरधारणकरताहैजोकिपहिले शरीरधारणकियाथा सोजीवफिरनहींआता उत्तर यहबातमिथ्याहै क्योंकिजोदूसराजीवहोता तोउसकोपूर्वके संस्कारनहींदेखपड़ते जैसेकिजिसपदार्थकासाक्षात अनुभवबुद्धिमें अवश्यआता है फिरसंस्कारसेस्मृतिउत्पन्नहोतीहै औरस्मृतिसेप्रवृत्तिवानिवृत्तिहोतीहै जैसेकिकोईसंस्कृतकोपढ़ै औरकोईअंगरेजीकोजोजिसकोपढ़ताहै उसकोउसकाअक्षरादिक्रमसेबुद्धिमेंसबसंस्कारहो-

तेहैं साक्षात्देखने औरसुननेसे अन्यकानहीं फिरकालान्तरमें
कोईव्यवहारअथवापुस्तककोदेखताहै सोपूर्वदृष्टवाश्रुतकेसंस्कार
सेस्मृतिहोतीहै है कियहप्रकार वायकारहै औरइसका यहअर्थ
है क्योंकिमैंनेपूर्वइसकाअर्थ ऐसापढ़ावासुनाथा बिनासंस्कारके
स्मृतिकभीनहींहोती औरबिनास्मृतिसेयहऐसाहीहै वानहीं ऐ-
सीप्रवृत्तिवानिवृत्ति कभीनहींहोती सोएकहीजन्महोता तोजन्म
समयसेलेके बालकोंकेअनेकप्रकारकेव्यवहारदेखनेमेंआतेहैं जैसे
क्षुधाकाज्ञानऔरदुग्धादिकोंसेक्षुधाकीनिवृत्तिकेहेतु इच्छाफिर
दुग्धपीनेकीयुक्ति औरतृप्तिहोनेसेदूधपीनेकीनिवृत्तितथामलमूत्रा
दिकोंकेत्यागकीयुक्ति औरकोईउसकोकुछमारै अथवाडरावै फि-
रउससे रोदनादिककीप्रवृत्तिऔरप्रीतिवाला उनसेहासऔरप्रस-
न्नताकीप्रवृत्तिइत्यादिकप्रवृत्तिऔरनिवृत्ति रूपव्यवहार बिनापूर्व-
जन्मकेसंस्कारसेकभीनहींहै सत्ताइससे पूर्वजन्मअवश्यमाननाचा-
हिए प्रश्न एसबव्यवहारस्वभावसेहोतेहैं जैसेकिअग्निऊपरचलता
है औरजलनीचेकोवैसे ही बेसबजीवकोज्ञानस्वरूपकेहोनेसे हो-
तेहैं उत्तर जोस्वभावसे मानोंगेतोपूर्वकहे अनुभव संस्कारऔर
स्मृतितथाप्रवृत्तिवानिवृत्तिइनकोछोड़देओ औरजोछोड़ोगेतोको-
ईव्यवहारआपलोगोंकासिद्धनहोगा फिरपढ़नापढ़ानाबुरीबातों
केछोड़नेकाउपदेश तथाअच्छीबातोंकाउपदेशक्योंकरते औरक-
रातेहो औरजोस्वभावसेमानोगेतोउसकोनिवृत्तिकभीनहींहोगी
जैसेकिअग्निऔरजलकेस्वभावकीनिवृत्तिनहींहोती वैसेप्रवृत्तिको
स्वभावसेमानोगेतो निवृत्तिकभीनहींहोगी जोनिवृत्तिकोस्वभाव
सेमानोगेतोप्रवृत्ति कभीनहींहोगी औरजोदोनोंको मानोगेतो
क्षणभंगऔरअनवस्थाहोगी फिरआपलोगोंमें उन्मत्तादोष आ-
जायगा क्योंकिअग्निकोनीचे चलनेमेंप्रवृत्तिकभीनहींहोती तथा
जलकोस्थूलकेहोनेसेऊपरकोप्रवृत्तिकभीनहींहोती वैसेहीस्वभा-
वसबजानों प्रश्न ईश्वरनेजैसाजिसकास्वभावरचाहै वैसाहीहोता

है उत्तर यहबातभीठीकनहीं जोईश्वरकारणहोताहै इनव्यवहा-रोंमेंतोईश्वरकेदयालुहोनेसे सबओषधियोंकाज्ञानऔरपरमेश्व-रपर्यन्तपदार्थोंकाबोध तथाधर्ममेंप्रवृत्तिऔरअधर्मसेनिवृत्ति ई-श्वरनेसबजीवोंमेंस्वभावसेक्योंनहींरक्खी औरईश्वरअन्यायकारी भीहोजायगा क्योंकिकिसीकोराजाऔरधनाढ्यकेघरमें जन्मऔर किसीकोअसमर्थ औरदरिद्रके घरमें जन्म तथाएककोबुद्धि बहुत अच्छीऔरदूसरेकोजड़बुद्धिदेताहै तथाएकरूपवान्औरएककुरूप तथाएकबलवान् औरदूसरानिर्बलएकपण्डितऔरदूसरामूर्खहो-ताहै सोबिनाअच्छेकर्मोंसेउत्तमपदार्थोंकादेना औरबिनाअप-राधसेभ्रष्टपदार्थोंकादेना इससे ईश्वरमेंपक्षपातआवेगा पक्षपात केआनेसेईश्वरअन्यायकारी होजायगाऔर कृतहानिरकृताभ्या-गमश्च। एदोदोष आजायंगे क्योंकि अबजो कुछ किया जाता है उसको हानि होजायगी फिर जन्मके नहीं होने से जो शरीर, इन्द्रियां, प्राण, और मन के नहीं होने से पाप पुण्यों का फल कभींनहींभोगसक्ता औरजोपूर्वजन्मनमानेंगेतो बिनाकिए सुख औरदुःखकोप्राप्तिकैसेहोगी वैषम्यऔरनैर्घृण्य,एदोदोषईश्वरमें आजांयगे किबिनाकारणसे किसीकोसुखदेदे औरकिसीकोदुःख यहविषमता ईश्वरमेंआवेगी औरजीवोंकोदुःखीदेखकेजिसकोघृ-णानामदयानहींआतोइससेईश्वरकादयाजोगुणसोनष्टहोजायगा औरजोपूर्वतथा उत्तरजन्महोगातोईश्वरमेंकोईदोषनहींआवेगा क्योंकिजैसाजिसकापुण्यवापापवैसाउसकोसुखवादुःखहोगा इससे ईश्वरन्यायकारीऔरदयालुभीयथावत्रहेगाइससेपूर्वऔरपरजन्म अवश्यमाननाचाहिए सोपूर्वजन्मोंकी संख्यानहींहैं क्योंकिजबसे सृष्टिउत्पन्नभईहै तबसेअनेकजन्मधारणकरतेर चलेआतेहैं और जबतकमुक्तिनहींहोगी तबतकस्थूलशरीरअवश्यधारणकरेंगे प्रश्न सुखवादुःखराजाऔरदरिद्रकोतुल्यहीदेखपड़ताहै क्योंकिजोरा-जाको सुखव दुःखहैं वेदरिद्रोंकोभीहैं विचारकरकेदेखें तोसुख

वा दुःख सबको तुल्य ही दीख पड़ता है उत्तर ऐसा कहना योग्य नहीं क्योंकि इच्छा के अनुकूल पदार्थों की प्राप्ति का होना सुख कहाता है और इच्छा के प्रतिकूल पदार्थों की प्राप्ति का होना दुःख कहाता है सो हर्ष और प्रसन्नता सुख के पर्याय हैं और शोक तथा अप्रसन्नता दुःख के पर्याय हैं जब राजादिक धनाढ्यों के गर्भवास में जीव आता है उसी दिन से अनुकूल पदार्थों का सेवन होता है फिर जन्म जब होता है तब अनेक औषधादिक व्यवहारों की प्राप्ति होती है और बिना इच्छा के भी अनेक पदार्थ अनुकूल प्राप्त होते हैं वह जब दूध पीने की इच्छा करता है तब बिना इच्छा से भी मिश्री और सुगन्धादिक से युक्त दूध यथेष्ट मिलता है और जब वह कुछ अप्रसन्न वा रोने लगता है तब अनेक सेवक परिचारक लोग मधुर वचन और खिलौनों से शीघ्र ही प्रसन्न कर देते हैं और फिर जब वह बड़ा होता है तब जिसके ऊपर दृष्टि करता है वह हाथ जोड़ के अनुकूल वचन तथा अनुकूल व्यवहार करता है सदा प्रसन्न उसको सब लोग रखते हैं और वह रहता है फिर जब कभी दुःखी भी होता है तब अनुकूल वचन और औषधादिकों से उसको प्रसन्न कर देते हैं और जो विद्यावानों के गर्भवास में आता है उसको भी अधिक सुख होता है परन्तु कोई कर्म उनमें से नष्ट बुद्धि के होने से दुःखी हो जाता है सो पूर्व जन्म के पापों से और इस जन्म के दुष्ट व्यवहारों से पीड़ित होता है और जो मूर्ख वा दरिद्र के गर्भवास में जीव आता है उसी समय से उसको दुःख होने लगता है जब वह स्त्री घास वा लकड़ी को काटने लगती है तब गर्भ में प्रहार के होने से जीव पीड़ित होता है और कभी क्षुधातुर रहती है कभी वह तत्कुत्सित अन्न को खा लेती है उससे भी उस जीव को अत्यन्त पीड़ा होती है फिर जब जन्म होता है तब कोई प्रकार का औषध वा सुनियम तथा कोई परिचारक उस समय नहीं रहता किन्तु मार्ग वन वा खेत में प्रायः पाषाण की नाईं गर्भ से बालक गिर पड़ता है फिर वह स्त्री उसको पोंछ पांछ के वस्त्र में बांध के पीठ में बांध लेती है फिर कभी उस स्त्री को घास वा लकड़ी बेचने को शीघ्रता

होतीहै सउससमयबालक दूधपीनेकेहेतुरोताहै सोदूधतो उसको नहींमिलता परन्तु वहस्त्रीउसबालककोथपेड़ामारतीहै फिरअधिकर जबरोताहै तबअधिकरमारतीहै फिररोतारहताहै परन्तु दूधनहींपिलाती फिरवहजबकुछबड़ाहोताहै तबउसकोयथावत्खानेकोभी समयकेऊपरनहींरहता फिरवहमजरीकरताहै तोभीउसकोयथावत्इच्छाकेअनुकूलनहींमिलता औरसदाउसकोसुखकीतथाउत्तमपदार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाहोतीहै परन्तु प्राप्तिकनहींहोनेसेसदादुःखीरहताहै जोऐसाकहताहैकिसुखवादुःखसबकोतुल्यहैसोपुरुषविचारवाननहींहै क्योंकिसुखवादुःखप्रत्यक्षहीअधिकवान्यूनदेखपड़तेहैं (प्रश्न) जबपहिलेरहीसृष्टिभईथी तब उससे पूर्वजन्मतोकिसीकानहींथा फिरसउससमय अधिक वा न्यून राजा अथवादरिद्रादिककोंभएथे इससे जानाजाताहै किजैसेपहिलेजन्ममेंभयेथे इससे आजकालपहिलाहीजन्महै सोअधिकन्यूनबनजाओ परन्तु एकरजन्महीविचारमेंआताहै बहुतजन्मनहीं (उत्तर) आदिसृष्टिमेंसबमनुष्य उत्पन्नभएथे नकोईराजानकोईप्रजा नमूर्खनपण्डितइत्यादिकभेदनहींथे इससे आदिसृष्टिमें दोषनहीं आया (प्रश्न) जैसेआदिसृष्टिमेंदुग्धपानादिकव्यवहार सुखऔरदुःखआदिक प्रवृत्तिवानिवृत्तिभईथी वैसेआजकालभीहोतीहै फिर वहजोआपनेकहाकि अनुभवादिकोंमेंबिनाप्रवृत्तिवानिवृत्ति नहीं होती सोबात विरुद्धहोगई (उत्तर) विरुद्धनहींहोती क्योंकिआदिसृष्टिमेंगर्भवाससेउत्पत्तिनहींभईथी औरकिसीकोबाल्यावस्थाभी नथी किन्तु सबस्त्रीऔरपुरुषोंकीयुवावस्थाहीईश्वरनेरचीथी फिर वेउससमयअच्छा वा बुराकुछनहींजानतेथे जहांजिसकानेत्रथा अथवाबुद्ध्यादिक जिसबाह्यपदार्थमेंयुक्तभए उसकोदेखरदेखतेथे परन्तु यहअच्छीवाबुरी ऐसानहींजानतेथे परन्तु प्राण, शरीरअथवा इन्द्रियइनमें चेष्टागुणथा ऐसानहींजानतेथेकि ऐसे चेष्टा करनीवानकरनी फिर चेष्टाहोनेलगी बाह्यपदार्थों केसाथ स्प-

आदिकव्यवहार होनेलगे उनमेंसे किसीनेकुछपत्तावाफूलवाघास स्पर्शकिया वाजीभकेऊपररक्खा तथादातोंसे चबानेलगे उसमें सेकुछभीतरचलागया कुछबाहरगिरपड़ा उसकोदेखकेदूसराभी ऐसाकरनेलगा फिरकतेंर व्यवहारबढ़ताचला तथासंस्कारभीहो तेचले होतेर मैथुनादिकव्यवहारभीहोनेलगे सोपांचवर्षतकउस समयकिसीकोपापवापुण्यनहोलगताथा वैसेहीआजकालभीपांच वर्षतकबालकोंकोपापपुण्यनहीलगता फिरव्यवहारकतेंर अच्छा बुराभीकुछर जाननेलगे फिरपरस्परउपदेशभीकरनेलगे कियह अच्छाहैयहबुराहै औरपरमेश्वरनभीउनपुरुषोंकेद्वारावेदविद्या काप्रकाशकिया वेवेद्द्वारामनुष्योंको उपदेशभीकरनेलगे उनके उपदेशको किसीनेसुना औरकिसीनेनसुना सुनकेभीकिसीनेवि- चारा औरकिसीनेनविचारा परन्तु बहुतमनुष्य कुछर अच्छाबुरा जाननेलगे फिरआगेर मैथुनिसृष्टिहोनेलगी फिरउनबालकोंको भीउपदेशऔरसंस्कारहोनेलगे सोआजतकअनेकप्रकारकेपापपु- ण्योंसेव्यवहारभिन्नर होतेआएहैं सोहमलोगप्रत्यक्षदेखतेहैं इ- ससे आगेकेसंस्कारोंकाअनुमानकरलेतेहैं औरपीछेजोरसंस्कारों सेव्यवहारहोंगे उनकाभी अनुमान हमलोगकरतेहैं इसमध्यस्थ व्यवहारकोप्रत्यक्षदेखनेसे प्रश्न परमेश्वरमें विषमतादोषतोआता है क्योंकिआदिसृष्टिमें बहुतजीवोंकोमनुष्यशरीरदिए बहुतोंको पश्वादिकशरीरदिए सोमनुष्योंकाशरीरतोउत्तमहै औरपश्वा- दिकोंकानीच औरआदिसृष्टिमें मनुष्योंनेएककर्म क्योंनहीकिया भिन्नर कर्मकरनेसेभी यहजानाजाताहै किजैसेप्रथम शरीरोंकेदे- ने औरकर्मोंकेकरनेमें विषमताभईथी वैसेआजकालभीहोतीहैं इससे ईश्वरपक्षपातीनहीहोता औरईश्वरकेऊपरकोईनहीहै इ- ससे जैसीउसकीइच्छावैसाकरताहै औरजोवहकरताहै सोअच्छा हीकरताहै परन्तु हमारीबुद्धिछोटीहै इससे समझनेमेंनहींआता उत्तर अपनेर स्थानमें सबशरीरअच्छे हैंकोईपदार्थपरमेश्वरनेबु-

रानहीं रचा परन्तु उनके परस्पर मिलने से कहीं गुण हो जाता है क-
हीं दोष होता है सो जिस समय आदिसृष्टि भई थी उस समय मनुष्यों
और पश्वादिकों में कुछ विशेष नहीं था विशेष तो पीछे से भया है सो
जितने शरीर रचे हैं वे सब जीवों के कर्म भोग करने के हेतु रचे हैं सो ई-
श्वर न रचता तो वे शरीर कैसे होते इससे प्रथम हो ईश्वर ने सब व्य-
वस्था कर रक्खी है कि जैसा जो कर्म करै सो वैसा ही जन्म सुख वा दुःख
को प्राप्त हो। वैसे और एक २ बार बिना संस्कारों से भी मनुष्य का शरीर मि-
लेगा क्योंकि सब शरीरों से मनुष्य का शरीर उत्तम है और मनुष्य ही के
शरीर में पाप और पुण्य लगता है अन्य शरीर में नहीं और जो यह म-
नुष्य का शरीर है सब जीवों के लिए है क्योंकि सबको प्राप्त होता है वैसे ही
सब कीट पतंगादिकों के शरीर भी हैं जब मनुष्य शरीर में जीव अधिक पा-
प करता है और पुण्य थोड़ा तब नरकादिक लोक और पश्वादिकों के श-
रीरों को प्राप्त होता है जब उसका पाप और पुण्य तुल्य होते हैं तब मनु-
ष्य का शरीर प्राप्त होता है और जब पुण्य अधिक करता है और पाप
थोड़ा तब देवलोक और देवादिकों का शरीर उस जीव को मिलता है
उसमें जितना अधिक पुण्य उसका फल जो सुख उसको भोग के जब पाप
पुण्य तुल्य रह जाते हैं तब फिर मनुष्य का शरीर धारण करता है इन
कर्मों में तीन भेद हैं एक मन से दूसरा वाणी से और तीसरा शरीर
से कर्म करता है इन तीनों में से एक २ के तीन भेद हैं सत्व रज और तमो-
गुण के भेद से सो जब मन में सत्त्वगुण कि शान्त्यादिक गुणों से युक्त हो के
उत्तम कर्म करता है तब देव मनुष्य और पश्वादिकों में वह जीव रहता
है परन्तु मन में प्रसन्नता ही उसको रहती है और रजोगुण से युक्त हो
के मन से जब पुण्य वा पाप करता है तब देव मनुष्य पश्वादिकों में मध्यम
जीव होता है उत्तम नहीं किन्तु उत्तम तो सत्वगुण वाला होता है
क्योंकि रजोगुण के कार्य लोभ हर्षादिक होते हैं तमोगुण प्रधान जिस
पुरुष को होता है उसको मोह, आलस्य, प्रमाद, क्रोध और विषादा-
दिक दोष होते हैं वह प्रायः पाप वा पुण्य अधम ही करेगा इससे देवम-

नुष्य और पश्वादिकों में नीचशरीर में प्राप्त होगा और जो वचन से पा-
प करेगा तो मृगादिक योनि को प्राप्त हो जायगा फिर सदा वह शब्दों
के नामित होरहेगा क्योंकि जो जिस्से पाप करता है वह उसी से भोग
करता है जब शरीर से जीव पाप करते हैं वे वृक्षादिक स्थावर शरीर को
प्राप्त होते हैं इसमें मनुभगवान के श्लोक लिखते हैं सो जान लेना ॥
मानसं मनसैवायमुपभुंक्ते शुभाशुभम् । वाचा वाचा कृतं कर्म काये-
नैव च कायिकम् ॥ १ ॥ म० यह जीव मन वाणी और शरीर से शुभ ना-
म पुण्य अशुभ नाम पाप करता है सो जिस्से करता है उसी से भोग भी
करता है ॥ १ ॥ शरीरजैः कर्मदोषैर्याति स्थावरतां नरः । वाचि-
कैः पक्षिमृगतां मानसैरन्त्यजातिताम् ॥ २ ॥ म० जब शरीर से पा-
प करता है तब वृक्षादिक स्थावर शरीर को प्राप्त होता है वचन से किए
पापों से पक्षि और मृगादिक योनि को प्राप्त होता है और मन से किए
पापों से नीच चाण्डालादिक योनि को प्राप्त होता है ॥ २ ॥ यो यदैषां
गुणो देहे साकल्येनातिरिच्यते । स तदा तद्गुणप्रायं तं करोति शरी-
रिणम् ॥ ३ ॥ म० जो गुण जिसके शरीर में प्रधान होता है उस्से यु-
क्त होके जीव उस गुण के योग्य कर्म को करता है और गुण भी उसको क-
राता है ॥ ३ ॥ सत्त्वं ज्ञानं तमोऽज्ञानं रागद्वेषौ रजः स्मृतम् । एत-
द्व्याप्तिमदेतेषां सर्वभूताश्रितं वपुः ॥ ४ ॥ म० सत्वगुण का कार्य
ज्ञान है तमोगुण का कार्य अज्ञान और रजोगुण का कार्य राग और
द्वेष है ए तीन गुण और इनके तीन कार्य सब भूतों में व्याप्त हैं क्योंकि इ-
सी का नाम प्रकृति और कारण शरीर है ॥ ४ ॥ तत्र यत्प्रीतिसंयुक्तं
किंचिदात्मनि लक्षयेत् । प्रशान्तमिव शुद्धाभं सत्त्वं तदुपधारयेत् ॥
५ ॥ म० जिस पुरुष का चित्त जब प्रसन्नता युक्त रहै तथा प्रशान्त की नाईं
और शुद्ध की नाईं तब उसको सत्वगुण और सत्वप्रधान पुरुष को जा-
नना ॥ ५ ॥ यत्तु दुःखसमायुक्तमप्रीतिकरमात्मनः । तद्रजोऽप्रति-
घं विद्यात्सततं हारि देहिनाम् ॥ ६ ॥ म० जिसका चित्त दुःखयुक्त
रहै हृदय में प्रसन्नता भी न होवै सदा चित्त चंचल होय विषयों के ओर

दौड़ने लगे और वशीभूत न होवे रजोगुणप्रधान पुरुष है। ताकै ६॥

यत्तु स्यान्मोहसंयुक्तमव्यक्तं विषयात्मकम्। अप्रतर्क्यमविज्ञेयं तमस्तदुपधारयेत्॥ ७॥ म० जो चित्त मोह संयुक्त रहै हृदय में कुछ विचार भी सत्यासत्य का न होय विषय की सेवा में फसा रहै ऊहापोह जिसमें न होय और जैसा अन्धकार में पदार्थ वैसा कुछ ज्ञान में भी न आवै उस जीव को तमोगुण प्रधान और तमोगुण जानना॥ ७॥

त्रयाणामपि चैतेषां गुणानां यः फलोदयः। अग्र्यो मध्यो जघन्यश्च तं प्रवक्ष्याम्यशेषतः॥ ८॥ म० इन तीन गुणों का उत्तम मध्यम और नीच जो फलोदय उसके आगे कहते हैं यथावत्॥ ८॥

वेदाभ्यासस्तपो ज्ञानं शौचमिन्द्रियनिग्रहः। धर्मक्रियात्मचिन्ता च सात्त्विकं गुणलक्षणम्॥ ९॥ म० वेदाभ्यास, तप नाम योगाभ्यास, ज्ञान, सत्यासत्यविचार, जितेन्द्रियता, धर्म का अनुष्ठान, आत्मा का विचार तथा परमेश्वर का भ जिसमें गुण होवें उत्तम सात्त्विक पुरुष और सत्त्व गुण का लक्षण है॥ ९॥

आरम्भरुचिताधैर्य्यमसत्कार्यपरिग्रहः। विषयोपसेवा चाजस्रं राजसं गुणलक्षणम्॥ १०॥ म० कार्यों के आरम्भ में अत्यन्त रुचि अधैर्य असत्कार्यों का स्वीकार और निरन्तर विषय सेवा में फसा रहै यह रजोगुण अधिक पुरुष वाले का लक्षण है १०॥

लोभः स्वप्नोऽधृतिः क्रौर्य्यं नास्तिक्यं भिन्नवृत्तिता। याचिष्णुता प्रमादश्च तामसं गुणलक्षणम्॥ ११॥ म० अत्यन्त लोभ अत्यन्त निद्रा धैर्य का लेश नहीं क्रूरता नाम दया रहित नास्तिक्य नाम विद्या धर्म और ईश्वर को नहीं मानना भिन्नवृत्तिता नाम छिन्न भिन्न जिसकी बुद्धि नित्य दान दक्षिणा और भिक्षा ग्रहण में प्रीति और प्रमाद नाम नाना प्रकार का उपद्रव करना यह तमोगुण और तमोगुण पुरुष वाले का लक्षण है और इस रूप से आगे तीनों गुणों के लक्षण कहे जाते हैं॥ ११॥

यत्कर्म कृत्वा कुर्वंश्च करिष्यंश्चैव लज्जति। तज्ज्ञेयं विदुषा सर्वं तामसं गुणलक्षणम्॥ १२॥ म० जिस कर्म को करके करता भया और करने की इच्छा में लज्जा और भय होता है वह पुरुष और कर्म तमोगु-

सो है क्योंकि पाप ही में रहेगा ॥ १२ ॥ येनास्मिन्कर्मणा लोके ख्या-
तिमिच्छति पुष्कलाम्। न च शोचत्यसंपत्तौ तद्विज्ञेयन्तु राजसम् ॥
१३ ॥ म० लोक में कीर्ति के हेतु इच्छा से भाट आदिक पुरुषों को पदार्थ
देना और ऐसा काम करै कि जिस से कि मेरी इस लोक में प्रशंसा होय
सो मिथ्या प्रशंसा की चाहना अन्याय से और छल से अन्न तथा पदार्थ के
नाश होने में कुछ सोच विचार न करना यह रजोगुणी पुरुष है यह घोर
दुःख में सदा पड़ा रहता है ॥ १३ ॥ यत्सर्वेणेच्छति ज्ञातुं यन्न लज्जति-
चाचरन्। येन तुष्यति चात्मास्य तत्सत्वगुणलक्षणम् ॥ १४ ॥ म० जो
पुरुष सब प्रकारों से और उत्तम पुरुषों से जानने को चाहता है तथा धर्म
के आचरण में कोई हानि वा निन्दा है वा तो भी जिसको लज्जा वा भय न
होय और जिस कर्म से अपना आत्मा प्रसन्न होय अर्थात् धर्माचरण से
उसको कभी न छोड़ै यह सात्विक पुरुष का लक्षण है ॥ १४ ॥ तमसो-
लक्षणं कामो रजसस्त्वर्थ उच्यते। सत्वस्य लक्षणं धर्मः श्रैष्ठ्यमेषां-
यथोत्तरम् ॥ १५ ॥ म० जो काम में फसा रहता है वह तमोगुणी पुरु-
ष है तथा धनादिक अर्थ ही को परम पदार्थ मानता है वह रजोगुणी है
और जो धार्मिक अर्थात् धर्म ही में जिसको निष्ठा है वह सत्वगुणी पु-
रुष है तमोगुणी से रजोगुणी रजोगुणी से सत्वगुणवाला पुरुष श्रेष्ठ है ॥
१५ ॥ इनमें से सत्वगुणवाला धार्मिक होके पुण्य ही करेगा रजोगुण-
वाला पाप पुण्य दोनों करेगा तथा तमोगुणवाला पाप ही करेगा इ-
नको जैसे २ जन्म और सुख वा दुःख होते हैं सो लिखा जाता
है ॥ देवत्वं सात्विका यान्ति मनुष्यत्वं च राजसाः। तिर्य्यक्त्वं ताम-
सा नित्य मित्येषा त्रिविधा गतिः ॥ १६ ॥ म० जो सात्विक पुरुष हो
ते हैं वे देवभाव को प्राप्त होते हैं अर्थात् विद्वान धार्मिक और बुद्धिमा-
न होते हैं तथा उत्तम पदार्थ और उत्तम लोकों को भी प्राप्त होते हैं
तथा जो रजोगुणी होते हैं वे मध्य लोक मनुष्य व तथा बुद्ध्यादिक प-
दार्थों को प्राप्त होके मध्य में रहते हैं उत्तम नहीं और जो तमोगुणी
होते हैं वे नीचता पश्वादिक योनि तथा बुद्ध्यादिकों में भी नीच भाव र-

रहता है इनतीनोंकेतीन गुणोंमें उत्तम मध्यम और नीचतासे एक२ गुणकेतीन २ भेदहोतेहैं और वैसेही उनको फल मिलतेहैं सो आगे२ लिखा जाता है ॥ १६ ॥ स्थावराः कृमिकीटाश्च मत्स्याः सर्पाश्च कच्छपाः। पशवश्च मृगाश्चैव जघन्या तामसी गतिः ॥ १७ ॥ भ० स्थावर, वृक्षादिक, कृमि, कीट, मत्स्य, तथा कच्छपादिक, जलजन्तु, गाय आदिक पशु तथा मृगादिक वनके पशु जिसको अत्यन्त तमोगुण होता है वह ऐसे शरीरोंको प्राप्त होता है ॥ १७ ॥ हस्तिनश्च तुरंगाश्च शूद्रा म्लेच्छाश्च गर्हिताः। सिंहा व्याघ्रा वराहाश्च मध्यमा तामसी गतिः ॥ १८ ॥ भ० हाथी घोड़े शूद्र जो मूर्ख म्लेच्छ नाम कसाई आदिक गर्हित नाम जो निन्दित कर्म करनेवाले सिंह उनसे कुछ जो नीच होतेहैं व्याघ्र वराह नाम सूअर जो पुरुष मध्य तमोगुणवाला होता है वह ऐसे जन्मों को पाता है ॥ १८ ॥ चारणाश्च सुपर्णाश्च पुरुषाश्चैव दाम्भिकाः। रक्षांसि च पिशाचाश्च तामसीषूत्तमा गतिः ॥ १९ ॥ भ० चारण नाम दूत दूती और गानेवाले जो कि वेश्याओं के पास गण रहतेहैं सुपर्ण जो हंसादिक अच्छे उत्तम पक्षी दांभिक पुरुष अर्थात् मस्तद यवाले मिथ्या उपदेश करनेवाले तथा अहंकार अभिमानादिक गुणयुक्त राक्षस नाम छल, कपट करनेवाले पिशाच नाम सदा मलिन रहें ऐसे जन्मोंको प्राप्त होतेहैं जिनमें किथोड़ा तमोगुण रहता है ॥ १९ ॥ झल्ला मल्ला नटाश्चैव पुरुषाः शस्त्रवृत्तयः। द्यूतपानप्रसक्ताश्च जघन्या राजसी गतिः ॥ २० ॥ भ० झल्ला नाम तड़ाग कूप आदिक खोदनेवाले मल्ला नाम मल्लाह और कुश्ती करनेवाले शस्त्र वृत्तिपुरुष जो कि शस्त्रोंकोंबनाने और सुधारने वाले जुआरी लोग और भांग, गांजा, अफीम तथा मद्यपीनेमें जो फंसे रहतेहैं जिनको अत्यन्त रजोगुण है वे इसप्रकारके होतेहैं ॥ २० ॥ राजानः क्षत्रियाश्चैव राज्ञां चैव पुरोहिताः। वादयुद्धप्रधानाश्च मध्यमा राजसी गतिः ॥ २१ ॥ भ० जिनपुरुषोंमें मध्य रजोगुण होता है वे राजा होतेहैं तथा क्षत्रिय होतेहैं अर्थात् शूद्रवीरादिकगुणवाले होतेहैं राजाओंकेपु-

रोहितवादमें प्रधानजोकिनानाप्रकारवादविवादकरतेहैं वकील आदिकयुद्धमें प्रधानजोकिसिपाहीहोतेहैं यहरजोगुणियोंकीमध्यमगतिहै २१। गन्धर्वागुह्यकायक्षाविबुधानुचराश्चये। तथैवाप्सरसःसर्वाराजसीषूत्तमागतिः। २२॥ भ० गन्धर्वजोकिगानविद्यामेंकुशल गुह्यकजोकिसिल्प औरवादित्रोंकोबजानेमेंचतुर यक्षनामबड़े धनाढ्यतथाविबुधनामउक्तदेवोंकेगण अर्थातसेवकऔरअप्सराअर्थात्रूपादिकगुण औरचतुरस्त्रीजिनमेंबहुतथोड़ा रजोगुणहोता है उनकोऐसेजन्ममिलतेहैं ॥ २२ ॥ तापसायतयोविप्रा येचवैमानिकागणाः। नक्षत्राणिचदैत्याश्च प्रथमासात्विकीगतिः २३॥ भ० तापसनामकपटछलादिकदोषोंकेबिना कृच्छ्रचांद्रायणादिक व्रतऔरयोगाभ्यासकरनेवाले यतिनाम यत्नऔरविचारकरनेमें प्रवीण बिप्रनामवेदकापाठअर्थऔरतदुक्तकर्मोंकेजानने औरकरनेवाले वैमानिकगणजोकिआकाशमेंयानोंकोचलानेवालेऔर रचनेवाले नक्षत्रजोकि गणितविद्या जाननेवाले औरनक्षत्रलोकतथानक्षत्रलोकमेंरहनेवाले औरदैत्यजोकिविद्याशान्ति और शूरवीरादिकगुणयुक्तजोथोड़े सात्विकगुणयुक्तहोवैं उनमेंऐसेगुण होतेहैं ॥२३॥ यज्वानऋषयोदेवा वेदाज्योतींषिवत्सराः। पितरश्चैवसाध्याश्च द्वितीयासात्विकीगतिः ॥ २४ भ० यज्ञकरनेमेंजिनकोअत्यन्तप्रीति ऋषिनाम यथार्थमन्त्रोंके अभिप्रायजाननेवाले देवनाममहादेव औरइन्द्रादिकदिव्यगुणवाले चारोंवेदज्योतिष शास्त्रऔरचन्द्रादिकज्योति लोकवत्सरकालऔरसूर्य्य लोक पितर जोपिताकीनांई सबमनुष्योंकेहितकरनेवाले औरपितृलोकमेंरहनेवाले साध्यजोअभिमानहठादिकदोषरहितहोके धर्मऔरविद्यादिकगुणोंकोसिद्धकरनेवाले तथानारायणऔरविष्णु आदिकदेवजोवैकुण्ठादिकमेंरहतेये जोमध्य सत्वगुणसे ऐसे कर्मकरतेहैं उनकोऐसोगतिहोतीहै ॥ २४ ॥ ब्रह्माविश्वसृजोधर्मो महानव्यक्तमेवच। उत्तमांसात्विकोमेतां गतिमाहुर्मनीषिणः ॥ २५ ॥

भ० ब्रह्माब्रह्मज्ञानपर्य्यन्तविद्याकाजाननेवाला अथवाब्रह्मलोकका अधिष्ठाताऔरउसलोककाप्राप्तहोनेवाले प्रजापतिऔरविश्वसृज जोकिधर्मऔरविद्यासमनकपालनकरनेवाले वासिद्धजोकिपरमाणुकेसंयोगवावियोगकरनेवाले औरउमविद्यावाले अथवाप्रजापतिलोकके अधिष्ठाता वाउनकोप्राप्तहोनेवाले धर्ममहान्बुद्धि अव्यक्तनामप्रकृति यहसत्वगुणकोउत्तमगतिहै यहांसेआगेकर्मऔरउपासनाकाकोईफलभोगनहीहैसिवायपरमेश्वरके॥२५॥ इन्द्रियाणांप्रसंगेन धर्मस्यासेवनेनच । पापान्संयान्तिसंसारानविद्वांसो नराधमाः॥२६॥ भ० इन्द्रियोंकाप्रसंगअर्थातअत्यन्तविषयसेवामेंफसनेऔरधर्मकेत्यागसे जोजीवअधमऔरविद्याहोनहैं अत्यन्तदुःखोंकोपातेहैं दुष्ट२शरीरोंकोप्राप्तहोतेभये इनप्रकारोंमेदुष्टवाश्रेष्ठ कर्मोंकेकरनेमसुखवादुःखजीवोंकोहोतेहैं यहीईश्वरकीआज्ञाहै किजोजैसाकर्मकरैवहवैसाभोगैइसमे ईश्वरमेंकुछपक्षपातदोषनहींआताक्योंकिजैसाजोकर्मकरताहैउसकोवैसाहीफलमिलताहै औरईश्वरन्यायकारीहैसोसदान्यायहीकरताहै अन्यायकभीनहीं इसमे जैसाचाहै ऐसाकरनानहींआता ईश्वरमेंक्योंकिवहसत्यसंकल्पहै औरनिर्भ्रमउसकाज्ञानहै इसमे जैसोव्यवस्थान्यायमेकरनीउचितथी वैसेहीकियाहै अन्यथानहीं एकदोषसबजीवोंमेहैं किपहिलेकुछऔरव्यवस्थाकरैं पीछेऔरक्योंकिजीवोंमेंभ्रमादिकदोषहोतेहैं औरकोईव्यवहारमेंनिर्भ्रमभोहोतेहैं सर्वत्रनहीं और सर्वत्रनिर्भ्रमतबजीवहोताहै किजबपरब्रह्मकासाक्षातविज्ञानहोताहै औरउसीकानित्ययोग अन्यथानहीं सर्वत्रनिर्भ्रमतो सनातनएकईश्वरहीहै इसमे क्याआयाकि एकजीव अनेकजन्म धारणकरताहै यहसिद्धभया। प्रश्न ईश्वरएकजीवकोअनेकजन्मकीव्यवस्था क्योंकरताहै क्योंकिईश्वर सर्वशक्तिमान्है नित्यनए२ जीवोंको उत्पन्नक्यानहीकरसक्ता। उत्तर ईश्वरअवश्यसर्वशक्तिमान्है परंतु अन्यायकभी नहींकरता जोजीवदूसराशरीर धारणनहीकरेगा

तोएकजन्ममें किएपापवापुण्यइनकाभोगनहीं होसकेगा फिरउस-
कान्यायभीनहीहोगा किपापकरनेवालेकोदुःखऔरपुण्यकरनेवा-
लेकोसुखहोनाचाहिए सोबिनाशरीरमेंभोगहोनहींहोसक्ता दूस्रे
अनेकजन्मअवश्यमाननाचाहिएप्रश्नपापवापुण्यकाभोगविनाशरी-
रमेंभीहोसक्ताहैपश्चात्तापकरनेमेंसाजीवमनमेंजितनेपापकिएहोंगे
उनकाभोगमनमेंशोककरकेभोगकरलेगा(उत्तर)ऐसानकहनाचा-
हिएक्योंकिपश्चात्तापजोहोताहै सोभविष्यत्याओंकानिवर्तकहोता
हैकिएभएपापोंकानहीं जैसेकोईपुरुष नित्यकूपकोदौड़२के डांक
जाय फिरकभीकूपकेपारकेकिनारेपरनहींपहुंचे किन्तुकूपमेंगिर
जायउसमेंउसकाहाथवागोडटूटजाय फिरउसकोकोई बाहरनि-
काललेफिरवहबहुतशोचकरै किमैंऐसाकामनकरतातामेरायह
बुरीदशाक्योंहोतो सोकै बड़ामूर्खहूं दूस्रे क्याआताहैकिआगेको
वहऐसाकर्मनकरेगा परन्तु जोकरचुकाउसकीनिवृत्ति कभीनहीं
होगी सोपश्चात्तापजोहोताहै सोकृतपापकानिवर्त्तकनहींहोता
और जैसेकोईमनुष्य आंखसेअन्धाऔरकानसे बहिराहोय उसके
पाससर्पवाव्याघ्रआजाय अथवाकोईगालीदे वाउसकीनिन्दाकरै
तोभीउसकोकुछदुःखनहींहोता ऐसेहीबिनाशरीरधारणमेंजीव
सुखवादुःखनहीभोगसक्ता क्योंकिजबमूर्त्तिमानपदार्थहोताहै तब
वहशीतउष्णादिक व्यवहारोंकाभोगकरसक्ताहै अन्यथानहीं दू-
स्रा प्रश्नयाकिपश्चात्तापमें कृतपापोंकानिवृत्तिनहीहोसक्ती प्रश्न
जीवजिनकर्मोंमेंसुखहोवै वैसाकर्मक्योंनहींकरता उत्तर विना-
विद्यादिकगुणोंमेंकुछनहींयथावत्ज्ञानसक्ता विद्यादिकगुणबिना
परिश्रमसेनहीहोते एकव्यवहारऐसाहै किजिसमें प्रथमसुखहो-
य औरपीछेदुःखसोविषयोंमेंफसकेजीवदुःखितहोताहैक्योंकिअ-
त्यन्तविषयसेवामेंबलबुद्धि औरधनादिकनष्टहोतेहैं औरज्वरादि-
कअनेकरोगोंसेयुक्तहोकेफिरदुःखहीपाताहै दूसराऐसाव्यवहार
है किप्रथमतोदुःखहोय औरपीछेसुखसोव्यवहारयहहै किजिते-

न्द्रियता, ब्रह्मचर्याश्रम, विद्याकीप्राप्ति, सत्पुरुषोंकासंग, औरधर्म
काअनुष्ठान, इत्यादिकजानलेना इनकीप्राप्तिकेसाधनोंमें प्रथम
दुःखहोताहैऔरजबएप्राप्तहोजातेहैं तबअत्यन्तउसकोसुखहोता
है तीसराव्यवहार ऐसाहोताहै किजिसमें सदादुःखहीरहै सो
मोहहै जोधन पुत्रऔरस्त्रीआदिकअनित्यपदार्थोंमेंफसके विद्या-
दिकश्रेष्ठगुणोंका त्यागकरताहै वहसदादुःखी रहताहै चौथायह
व्यवहारहै किजिसमेंसदासुखहीरहताहै दुःखकभीनहीं सोमुक्ति
है विद्यादिकगुणोंकेनहोहोनेसे सुखकेकर्मोंको जानताहीनहीं
फिरकैसे करसकेगा कभीनकरसकेगा औरईश्वरका करनासब
अच्छाहीहै क्योंकिईश्वरन्यायकारीत्वादिगुणयुक्तरहताहै यहह-
मकोदृढनिश्चयहै किईश्वरअन्यायकभीनहीकरता इतनाहमलो-
गबुद्धिमेंयथावत्जानतेहैं ईश्वरजैसाचाहै वैसानहींकरता जोक-
रताहैसोन्याययुक्तहीकरताहै अन्यथानहीं सोइससे यहसिद्धभया
किअनेकजन्महोतेहैं सोजीवअविद्यादिकदोषोंमें युक्तहोकेविषयमें
फसारहताहै इससे जीवको विवेकादिकगुणनहीहोनेसे बन्धनभी
इसकानष्टनहीहोता जबयथावत्परमेश्वरपर्यन्त पदार्थविद्याहो-
तीहै तबयहसबदुःखोंसेछूटकेमुक्तिकोप्राप्तहोताहै प्रश्न प्रथमआप
कहचुकेहैं किबिनाशरीरसेसुखवादुःखभोगनहीहोसक्ता सोमुक्ति
मेंभीजीवकाशरीररहताहोगा औरजोकहेंकिनहीरहतातोमुक्ति
काभोगकैसेकरसकेगा औरजोकरसक्ताहै तोहमनेकहाथाकिमन
में पश्चात्तापसेपापकाफलभोगलेताहै यहबातमेरी सत्यहोयगी
उत्तर; जीवहीमुक्तिमेंरहताहै औरशरीरनहीं क्योंकिपहिलेजो
लिंगशरीरकहाथा वहीजीवकेसाथ रहताहै सोअत्यन्त सूक्ष्महै
औरसबपदार्थोंसेउत्तमऔरनिर्मलहै जैसेअग्निसलोहातप्तहो-
ताहै उसमेंअग्निसेभीअधिकदाहहोताहै वैसेहीएकअद्वितीय चे-
तनपरमेश्वरसर्वव्यापकहै उसकीसत्तासेयुक्तजीवचेतनसदारह-
ताहै क्योंकिव्यापकसेव्याप्यकावियोगकभीनहींहोता जैसेआकाश

में सबस्थूलपदार्थों का वियोग कभी नहीं मनुष्य और वायु आदिक जहां २ चलते फिरते हैं वहां २ आकाश का संयोग पूर्ण ही है वैसे आकाशादिक पदार्थ भी परमेश्वर में व्याप्य हैं और परमेश्वर सब में व्यापक है परमाणु और प्रकृति जो कि सूक्ष्म पदार्थों की अवधि है इन से सूक्ष्म आगे संसार के पदार्थ कोई नहीं हैं परन्तु परमेश्वर उन से भी अत्यन्त सूक्ष्म और अनन्त है जैसे आकाश किसी पदार्थ के साथ चलता फिरता नहीं वैसे परमेश्वर भी पूर्ण के होने से जीवों के साथ चलता फिरता नहीं किन्तु जीव सब अपने २ कर्मानुसार चलते फिरते हैं परमेश्वर की सत्ता से धारित चेतन है ॥ दुःखजन्मप्रवृत्तिदोषमिथ्याज्ञानानामुत्तरोत्तरापाये तदनन्तरापायादपवर्गः । यह गौतममुनि का सूत्र है मिथ्याज्ञान जो कि मोह से अनेक प्रकार का होता है यथावत् विद्या के होने से जब नष्ट हो जाता है तब । अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्चक्लेशाः ॥ यह पतञ्जलि मुनि का सूत्र है इसका यह अभिप्राय है कि अविद्या तो पहिले प्रतिपादन कर दिया है सो ई सब दोषों का मूल है द्रष्टा जो जीव दर्शन जो बुद्धि इन दोनों की एकस्वरूपता होनी कि मैं बुद्धि हूं ऐसा अभिमान का होना सो अस्मिता दोष कहाता है ।(सुखानुशयी रागः ॥ ३ ॥ प० जिस सुख का पहिले अनुभव साक्षात् किया होय उस में अत्यन्त तृष्णा नाम लोभ कि यह मुझको अवश्य मिलना चाहिए यह दूसरा दोष है क्योंकि अनित्य पदार्थों में अत्यन्त प्रीति के होने से नित्य पदार्थ में जीव को इच्छा कभी नहीं होती (दुःखानुशयी द्वेषः)॥ ४ ॥ प० जिस दुःख का पहिले अनुभव किया होय उस की स्मृति के होने से उस के हनन की इच्छा और उस से क्रोध बढ़ के प्रकट होता है यह तीसरा दोष है । स्वरसवाही विदुषोपि तथारूढोऽभिनिवेशः ॥ ५ ॥ प० सब प्राणियों को यह आशा नित्य बनी रहती है कि मैं सदा रहूं और मेरे ये पदार्थ सदा बने रहैं नाश कभी न होवै सो कृमि से ले के सब प्राणियों को और विद्वानों को भी यह आशा नित्य बनी रहती है यह चौथा अभिनिवेश दोष कहता है और

अविद्यातो प्रथम दोष है एपांच दोष और इन से उत्पन्न भए असंख्यात दोष जीवों में रहते हैं इस से जीवों की मुक्ति भी नहीं हो सक्ती परन्तु बिवेकादि गुणों से जब मिथ्याज्ञान नष्ट होजाता है तब अविद्यादिक दोष भी नष्ट होजाते हैं । प्रवृत्तिर्वाग्बुद्धिशरीरारम्भ इति ६॥ गोत्तम० वचन बुद्धि और शरीर इन्हों से जो व आरम्भ करता है सो प्रवृत्ति कहाती है परन्तु जिसके अविद्यादिक दोष नष्ट होजाते हैं वह उन में प्रवृत्त नहीं होता किन्तु विद्यादिक गुणों में प्रवृत्त होता है इस से उसको मिथ्याप्रवृत्ति कि परमेश्वर से भिन्न पदार्थ को जो इच्छा सो नष्ट होजाती है फिर वह योगाभ्यास विचार और पुरुषार्थ से युक्त अत्यन्त होता है उस से अनेक परमाणु पर्यन्त सूक्ष्म पदार्थों का ज्ञान यथावत् साक्षात्कार होता है फिर अत्यन्त जब विचार और योगाभ्यास करता है तब परमानन्द सर्वव्यापक सर्वाधार जो परमेश्वर उसको अपने हो में व्याप्त देखता है फिर उसको स्थूल शरीर धारण करने का आवश्यक नहीं किन्तु एक परमाणु को भी शरीर बना के रह सक्ता है तब इसका जन्म मरणादिक कारण जो अविद्यादिक दोष उन से किए गए थे जो कर्म के भोग सब नष्ट होजाते हैं और आगे जो कर्म किए जाते हैं एसब ज्ञान हो के वास्ते करता है सो अधर्म कभी नहीं करता किन्तु धर्म ही करता है उस से ज्ञान फल ही वह चाहता है अन्य नहीं फिर उसके जन्म मरण का जो मूल अविद्या सो ज्ञान से नष्ट होजाती है फिर वह जन्म धारण नहीं करता और उसको बुद्धि, मन, चित्त, अहङ्कार, प्राण, और इन्द्रिय एसब दिव्य शुद्ध पदार्थ जीव के सामर्थ्य रूप रह जाते हैं और दिव्यज्ञानादिक गुण नित्य उसमें रहते हैं और आप दिव्य शुद्ध निर्विकार रहजाता है । बाधनालक्षणं दुःखम् ॥ ७ ॥ गोत्तम० जितनी बाधना अर्थात् इच्छाभिघात वह सब दुःख कहाता है ॥ ७ ॥ तदत्यन्तविमोक्षोपवर्गः ॥ ८ ॥ गोत्तम० दुःखों की अत्यन्त जो निवृत्ति उसको मोक्ष कहते हैं कि सब दुःखों से छूटजाना और सदा आनन्द परमेश्वर को प्राप्त होके रहना फिर लेशमात्र भी दुःख का सम्बन्ध

कभीनहीं होता सोकेवलएकपरमेश्वरकेआधारमें वहजीवरहता है औरकिसीकासम्बन्धउसकोनहीं सोपरमेश्वरकेयोगमेंउसजीव मेंसर्वतत्कालज्ञान सबपदार्थोंकागुण औरदोषइनका सत्य २ बोधभीसदारहताहै) इससेजिसदुःखसागरसंसारमें बड़े भाग्यसेकूटकेपरमानन्दपरमेश्वरकोप्राप्तभयाहै सोयथावतजानताहै किपरमेश्वरकेयोगसेअन्यत्रदुःखहीहै सुखकभीनहीं फिरवहइसदुःख मेंकभीनहींगिरता।जैसेचंद्रटी अत्यन्तचञ्चल होतीहै फिरवह नानाप्रकारकेकणोंकोलेरके अपनेबीलमें संचयकरती जाती है उसकोस्थिरतावासन्तोषकभीनहींहोता वहकभीभाग्य औरपुरुषार्थसेमिश्रीकेढलेकोप्राप्तहोय उसकास्वादलेके आनन्दितहोजातीहै फिरवहअपने घरऔरसंचयकोछोड़के उसीमेंनिवासकरतीहै उसकोखींचनेकासामर्थ्य नहीं सदाउसकोछोड़भीनहींसक्ती उत्तमपदार्थकेहोनेसेवैसेजीवभी परमेश्वरसेभिन्न पदार्थोंमें सदाभ्रमणकरताहै तृष्णाकेवशहोके परन्तु जबपरमेश्वरका उसकोयोगहोताहै तबसबतृष्णादिक दोषउसके नष्टहोजातेहैंफिरसबकामऔरस्थिरहोकेपरमेश्वरहीमेंरहताहै सोमुक्तिमेंपरमेश्वरकाआधार उसकोहोनेसे सदापरमानन्दमुक्तिके सुखकोभोगताहै और निराधारमेंविषयसुखवादुःखऔरमुक्तिकाआनन्दभी नहीभोगसक्ता इससे क्याआयाकिबिनास्थूलशरीरधारणसे पापवा पुण्यसंसारमें फलकभीनहीभोगसक्ता औरपरमेश्वरकेआधारके बिनामुक्तिसुखभीनहीभोगसक्ता सोजोकहताहै किमनहीसेपाप वापुण्यभोगताहै वाएकहीजन्महोताहै यहबातउसकीमिथ्याजाननी।प्रश्न वहमुक्तिप्राप्तजीवसदाबनारहताहै वाकभीवहभीनष्टहोजाताहै उत्तर इसकायहविचारहै किपरमेश्वरनेजबसृष्टिरचीहै किजबसंसारकाअत्यन्तप्रलयनहोगा तबभीवेमुक्तजीवआनन्दमेंरहेंगे औरजबअत्यन्त प्रलयहोगा तबकोईनरहेगा ब्रह्मका सामर्थ्य रूपऔरएकपरमेश्वरकेबिना सोअत्यन्तप्रलयतबहोगा किजब

सबजीवमुक्त होजायंगे बीचमें नहीं सोअत्यन्तप्रलयबहुतदूरहै सं-भवमात्रहोताहै किअत्यन्तप्रलयभीहोगा बीचमें अनेकबार महा प्रलयहोगा और उत्पत्तिभीहोगी इससे सबसज्जनोंकोअत्यन्तमुक्ति कोइच्छाकरनीचाहिए क्योंकिअन्यथाकुछसुखनहींहोगा जबतक मुक्तिजीवकोनहींहोती तबतकजन्ममरणादिकदुःखसागरमेंडूबा हीरहेगा औरजोजल्दीमुक्तिकरलेगा सोअतुलआनन्दकोपावेगा प्रश्न मुक्तिएक जन्ममेंहोतीहै वाअनेकजन्ममें उत्तर इसकानि-यमनहीं क्योंकि जबमुक्तहोनेकाकर्मकरताहै तभीउसकोमुक्तिहो-तीहै अन्यथानहीं प्रथमसृष्टिमेंभी कोईजीव पहिलेहीजन्ममें मु-क्तहोगयाहोय इसमेंकुछआश्चर्यनहीं उसकेपीछे तोकोईमुक्तभया होगा वाहोताहै औरहोवैगा सोबहुत जन्महोमेंहोगा मुक्तमो मोक्षअत्यन्त पुरुषार्थमेंहोताहै अन्यथानहीं। भिद्यतेहृदयग्रन्थि श्छिद्यन्तेसर्वसंशयाः। क्षीयन्तेचास्यकर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे॥ यहमुण्डककीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहैकिहृदयग्रन्थिनामअ-विद्यादिकदोषजबजिसजीवकेनष्टहोजातेहैं तबविज्ञानकेहोनेसेसब संशयनष्टहोजातेहैंऔरजबसंशयनष्टहोजातेहैंतबकर्मभीजीवकेनष्ट होजातेहैं किजीवकोफिरकर्तव्य कुछनहींरहता मुक्तिहोनेकेपीछे सोकर्मतीनप्रकारकाहोताहै एकक्रियमाणजोकिनित्यकियाजाता है दूसरासञ्चितजोकिबुद्धिमें संस्काररूपसूक्ष्मरहताहै तीसरा प्रारब्धजोनित्य भोगकियाजाताहै इसकेतीनभेदहैं। सतिमूलेत-द्विपाकोजात्यायुर्भोगाः॥ ८॥ पा० इसकायहअभिप्रायहै किक-र्मोंकेफलतीनहोतेहैं जन्मआयु औरभोग परन्तु जबतक कर्मों कामूलअविद्यादिकरहतेहैं तबतककर्मफल भोगभी रहताहै सो भीजैसाकर्म वैसाजन्मआयु औरभोगउसके अनुसारहोतेहैं जब जीवपुरुषार्थसे विद्या, धर्मऔरपातञ्जलशास्त्रकीरीतिसे योगाभ्या-सकरताहै तबउसकोयथोक्तविज्ञानहोताहै तबमूलसहितकर्मछूट जाताहै क्योंकिउसनेमुक्तिकेवास्ते सबकर्मकिएथे जबमुक्तिहोतीहै

तबउसकोफिरकर्त्तव्यकुछनहींरहता(प्रश्न) मुक्तिसमयमेंजीवपर-
मेश्वरमेंमिलजाताहै जैसेजलमेंजलबानहीं(उत्तर) जोजीवमिल-
जातातोउसकोमुक्तिकासुखकुछनहींहोता औरमुक्तिकेवास्तेजि-
तनेसाधन किएजातेहैं वेसबनिष्फलहोजायगे औरमुक्ति क्याभई
किन्तुउसकानाशहीहोगया इससे यहबात मिथ्याहै किजीवब्रह्ममें
मिलजाताहै बहब्रह्मअर्थातसबसेजोपरेहै औरजोकिअपनेस्वरूप
मेंव्याप्तहै जितनाउसकोयथावत्साक्षात्ज्ञानहोनेसे सबदुःखोंसेछूट
जाताहै जोभाग्यप्रारब्धऔरदैवकेभरोसेरहताहै औरआलस्यसे
कुछकर्मअच्छानहींकरता वहीजीवनष्टहै औरजोअत्यन्तपुरुषार्थ
केऊपरनिश्चयकरकेउद्यमकरताहै सोईजीवभाग्यशालीहै क्योंकि
पुरुषार्थहीसे मुक्तिहोतीहै औरयथावत विवेकहोनेसे हानिवा
लाभमेंशोकवाहर्षरहितहोताहै वहपुरुषार्थी सर्वत्रसुखीरहता
है क्योंकिवहविद्यासेसबपदार्थोंकोयथावत्जानताहै सोसबसज्ज-
नोंकोयहीउचितहै किसदा पुरुषार्थहीकरना आलस्यकभीनहीं
पुरुषार्थइसकानामहै किजितेन्द्रियता,धर्मयुक्त व्यवहार,विद्या,
औरमुक्तिजिससे होय औरअन्यपुरुषार्थनहीं क्योंकिपुरुषकेअर्थजो
करताहै सोईपुरुषार्थकहाताहै औरजोअन्याययुक्त व्यवहारकर्त्ते
हैं उसकानामपुरुषार्थनहीं औरपरमेश्वरअत्यन्तदयालुहै जोजी-
वउसकोप्राप्तिकेहेतु तन,मनऔरधनसे श्रद्धापूर्वकपुरुषार्थ करता
है उसकोशीघ्रहीप्राप्तहोताहै कृपासेविद्यादिकपदार्थोंका उसके
पुरुषार्थकेअनुसारप्रकाशहोताहै फिरसदाआनन्दितमुक्तिमेंरह-
तेहैं सोसबपुरुषार्थोंकाफलमुक्तिहै इससे मुक्तिकोचाहना उक्तप्र-
कार से अवश्य सब कों करनी चाहिए यह विद्या अविद्याबन्ध
और मुक्ति के विषय में संक्षेप मे लिखा और जो विस्तारसे दे-
खा चाहै सो बेदादिक सत्य शास्त्रों में देख लेवै इसके आगे
आचार अनाचार भक्ष्य और अभक्ष्य के विषय में लिखा जा-
यगा॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते नवमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ ९ ॥

अथआचारानाचारभक्ष्याभक्ष्यविषयंव्याख्यास्यामः ॥ श्रुतिस्मृत्युदितंसम्यक् निबद्धंस्वेषुकर्मसु । धर्ममूलंनिषेवेत सदाचारमतन्द्रितः॥ १ ॥ म० श्रुतिजोवेदस्मृतिजोक्तःशास्त्रादिक सत्यशास्त्र औरमनुस्मृति उनमेंजोसदाचारउसकोसदासेवनकरैं औरजितनाअपनाआचारसोसबयुक्तिपूर्वककरै सत्पुरुषोंकेआचरणमेविरुद्धनहीं सोसत्यभाषणादिकआचारधर्मकामूलहै इसकोसदाचारप्रमाणोंमेनिश्चयकरकेसदासेवनकरै सबपदार्थशुद्धारक्खै अशुद्ध एकभीनहीं जितनेअच्छेगुणउनकेग्रहणकासदाआचाररक्खै सत्पुरुषोंकेसंगमेंसदाप्रीति उनसविनयादिक व्यवहारोंकोग्रहण करै जितेन्द्रियता सदारक्खै इनसेविपरीतजोअनाचार उसको छोड़दे जिस्से ज्ञानवाधर्म तथाविद्याप्राप्तहोय उसकोसदामानैं उक्तप्रकारसेउसकोप्रसन्नरक्खै औरअधर्मीपाखण्डी उनकोकभी नमानैं औरजितनीसत्क्रिया उनकोयथावत्करैं सबप्रयत्नोंसेब्रह्मचर्याश्रमसे विद्याग्रहणकरैं बाल्यावस्थामें विवाहकभीनकरैऔर नानाप्रकारकेग्रन्थऔरपदार्थगुणोंसेरसायन विद्याद्वीपद्वीपान्तरमेंभ्रमण उनमनुष्योंकेअच्छेबुरेआचरणोंकीपरीक्षा औरअच्छे आचरणोंकाग्रहणकरैं औरबुरेकानहीं प्रश्न आर्यावर्त्तवासीलोग इसदेशकोछोड़के अन्यदेशमेंजानेमेपापगिनतेहैं औरकहतेहैंकि पतितहोजातेहैंउत्तर यहबातमिथ्याहीहै क्योंकिमनुस्मृतिमेंजहां जिसकेऊपर राजाकाकरलिखाहै सोजोसमुद्रपार द्वीपद्वीपान्तरमेंनजातेहोतेतोक्योंलिखते। समुद्रे नास्तिलक्षणम्। इत्यादिकवचनमनुस्मृतिमेंलिखेहैं सोमहासमुद्रमें जबजहाजजाय तबकुछ

करकानियमनहीं किन्तुद्वीपद्वीपान्तरमेंजाकेव्यापारकरकेपदा-र्थोंकोबेचकेऔरवहांसेपदार्थोंकोलेके इसदेशमेंआकेवेचे फिर उनकोजितनालाभहोवे उसमेंसेपूर्वांहिस्साराजाले औरराजा भीतीनप्रकारकेमार्गकोशुद्धिकरै एकस्थल,जल,औरवनउसमेंजल केमार्गकेव्याख्यानमें जहाजोंकऊपरचढ़के द्वीपद्वीपान्तरमेंजावें औरसमुद्रहीमेंजहाजोंपरबैठके युद्धकरें यहक्योंलिखा औरमहा-भारतमेंलिखीहै किश्रीकृष्णऔरअर्जुन जहाजमेंबैठके समुद्रमें चलेगए वहांउद्दालकऋषिमिलेऋषिकोयज्ञमेंलेआए औरराजसूय तथाअश्वमेधमेंसबद्वीपद्वीपान्तरके राजाओंकोयज्ञमेंलेआएथे सो बिनाजहाजसेद्वीपद्वीपान्तरमेंकैसेजासके औरसगरराजासबपृथिवीका भ्रमणकरताथा बिनाजहाजोंसे समुद्रपारकैसेजासका तथाअ-र्जुन,भीम,नकुल,सहदेव,औरकर्ण सबद्वीपद्वीपान्तरमेंभ्रमणकर्ते थे बिनाजहाजोंसेकैसेकरसके तथाइक्ष्वाकुमेलेकेदशरथपर्यन्तद्वीप द्वीपान्तरमें भ्रमण करतेथे सोजहाजोंहीमेंकर्तेथेऔररामभीस-मुद्रकेपारलंकामेंगएथेसोभीतोएकद्वीपहै इत्यादिकमनुस्मृतिऔर महाभारतादिक इतिहासोंमेंलिखाहै औरयुक्तिसेविचारकरके देखेंतोयहीआताहै किदेशदेशान्तर औरद्वीपद्वीपान्तरमें जाना अच्छाहै क्योंकिअनेकप्रकारकेपदार्थप्राप्तहोंगे अनेकप्रकारकेम-नुष्योंसेसमागमहोगा उनकाव्यवहार भाषागुणऔरदोष विदित होतेहैं औरउत्तम२पदार्थोंकोइसदेशमेंलेजानेऔरलानेसेब-हुतलाभहोताहैतथानिर्भयऔरशूर,वीरपुरुषहोनेलगतेहैं यहतो बड़ाएकअच्छा आचारहै औरजोअपनेहीदेशमेंरहतेहैं औरदेश मेंजानेसे उनकास्पर्शकरनेमें छूतमानतेहैं वविचाररहितपुरुषहैं देखनाचाहिएकि मुसल्मानवाअंगरेजसेछूनेमेंदोषमानतेहैं और मुशल्मानोंवाअंगरेजकेदेशकोस्त्रीसेसंगकरतेहैं औरअपनेपासघ-रमेंरखलेतेहैं उससे कुछभेदनहींरहता यहबड़े अन्धकारकीबात है किमुसल्मानऔरअंगरेज जोभलेआदमी उनसेतोछूतगिनना

औरवेश्यादिकोंमेंनहींछूतमानना यहकेवलयुक्तिशून्यबातहैऔर
जोउनसेछूतहोमानतेहैं किइनसेशरीरनलगे नवस्पर्शहोय इ-
सीबातसेतोआर्यावर्त्तदेशकानाशभयाहै क्योंकिएतोआर्यावर्तवा-
सी उनकेछूतकेडरसे दूर२भागतेरहतेहैं औरवेसुखसे राज्यसब
लेलेतेहैं औरहृदयसेसदाद्वेषहोनेसे अन्यथाबुद्धिरखतेहैं इससेपर-
स्परसबदुःखपातेहैं यहसबअनाचारहै आचारइसकानामहै कि
राग,द्वेषादिकदोषोंकोहृदयसेछोड़देना औरसज्जनताप्रीत्यादि-
कोंकोधारणकरलेना यहीआचारपहिलेमनुष्योंकाथा किआम-
रिकाकीकन्याअर्जुनसेबिवाहीगईथी जोकिनागकन्याकरकेलिखी
है फिरऐसीबातजोकहतेहैं किद्वीपद्वीपान्तरमेंजानेसे जातिपतित
औरनष्टधर्महोजाय यहबातमिथ्याहै क्योंकिछूतऔरदेशदेशान्त-
रमेंनजाना यहबातआर्यावर्तमें जैनोंकेराज्यसेचलीहै पहिलेन-
थी क्योंकिजैनबड़े भीरुहोतेहैं औरछोटे२जीवोंकेऊपर दयारख-
तेहैं इसीसे मुखकेऊपर कपड़ाबांधलेतेहैं सोचलने फिरनेमें भी
दोषगिनतेहैं फिरजहाजोंमेंबैठकेद्वीपद्वीपान्तरमेंजानाइसमेंहिं-
साक्योंनहीगिनेंगेऔरब्राह्मणतथासम्प्रदायीलोगइन्होंनेअपनेमत
लबकेहेतुसबजालफैलारक्खे हैंक्योंकिअपनाचेलावायजमानद्वीप
द्वीपान्तरमेंजायगा तोजीविकाकीहानि होजायगी देशदेशान्तर
औरद्वीपद्वीपान्तरमेंजानेसेकोईबुद्धिमानकाअवश्यसमागमहोगा
उससे सत्यअसत्यकाउसकोबोधभीहोगा फिरउसकेसामनेहमारा
जालनहींचलेगा औरनित्यशनैश्चरादिग्रहकेनामसे तथाभूतप्रे-
तादिकनामसे तथामन्दिरादिकोंमेंआनेजानेसे शिवनारायण दु-
र्गादिकेनामसुनानेसे उनकोडराकेलाखहांरूपएछल,कपटसेनि-
त्यलियाकरतेहैं सोवहद्वीपद्वीपान्तरमेंचलाजायगा बहुतकालमें
आनाहोगा तबतकउनको आजीविकाबन्दहोजातीहै क्योंकिवह
उनकेसामनेहीनहीरहेगाफिरउससेकोईआलेगाफिरभीएकप्रा-
यश्चितकाडरलगादियाहैजोकोईजाकेआवैउसकेऊपरबड़े बखेड़े

लगादेतेहैं क्योंकिउसकोदुर्दशादेखके कोईआनेकोइच्छा करता
होय वहभीडरकेनआय इसहेतुकिहमारोआजीविकासदाबनीर-
है यहकेवलउनकीमूर्खताहै क्योंकिवहधनाढ्यवाराजाभी दरिद्र
बनजायगा ऐसेथोरे २ सबदरिद्र औरमूर्खवनजांयगे फिरउनसे
आजीविकाभोकिसीकोनहोगीपरन्तुवेऐसाबिचारनहीकरतेक्यों-
किअपनेमतलबमेंफसेहैं औरविद्याभोनहीं इससे कुछनहीं जानस-
क्ते परन्तु सज्जनलोग इसबातको मिथ्याहीजानैं औरकभी देश
देशान्तरवाद्वीपद्वीपान्तरकेजानेमें भ्रमनकरैं क्योंकिजबमनुष्यमि-
थ्याभाषणादिकअनाचारकरेगा तबसर्वत्रअनाचारीहोगा और
जोसत्यभाषणादिकआचारकरेगा वहकभीकिसीदेशमेंअनाचारी
नहीहोताऔरजोऐसाजानतेहैं किबहुतनहाना औरहाथोंकोम-
लना आचारजानतेहैं यहभीबातअयुक्तहै क्योंकिउतनाही शौच
करनाउचितहै किजितनेसेहस्त,पाद,शरीरऔरवस्त्रदुर्गन्धयुक्तन
रहै इससे अधिककरनासोअनाचारहै किन्तु जिससे सबपदार्थगृह
पात्रऔरअन्नादिकशुद्धरहैं उतनाशौचकरना सबकोउचितहै अ-
धिकनहीं अधिकआचारसद्गुणग्रहणमें सदारक्खें औरविद्याकेप्र-
चारकाआचारसदारक्खें इसकानामआचारहै सोईमनुस्मृत्या-
दिकोंमेंलिखाहै औरभक्ष्याभक्ष्य दोप्रकारकेहोतेहैं एकतोवैद्यक
शास्त्रकोरीतिसे औरदूसराधर्मशास्त्रकीरीतिसे सोवैद्यक शास्त्रकी
रीतिसे देश,काल,वस्तु औरअपनेशरीरकोप्रकृति उनसेअनुकूल
बिचारकरके भक्षणकरनाचाहिए अन्यथानहीं जिससे बल,बुद्धि,
पराक्रमऔरशरीरमें नैरोग्यबढ़ैवैसापदार्थभक्ष्यहै सोईउक्तवैद्य-
कसुश्रुत शास्त्रमें लिखाहै । औरअभक्ष्योग्राम्यशूकरोऽभक्ष्योग्रा-
म्यकुक्कुटः। इत्यादिकधर्मशास्त्रसे अभक्ष्यका निर्णयकरना क्योंकि
सूअरगांवकाऔरमुर्गाप्रायः मलहीखाताहै उसीकापरिणाममां-
सहोगा उसकेखानेसेदुर्गन्धशरीरमेंहोगा उससे रोगोत्पत्तिकासं-
भवहै औरचित्तभी अप्रसन्नहोजायगा वैसाहीधर्मशास्त्रकी रीति

सेमद्यअभक्ष्य तथाजितनेमनुष्योंकेउपकारक पशुउनकामांसअ-
भक्ष्यतथा।विनाहोमसे अन्नऔरमांसभीअभक्ष्यहै प्रश्न एकजीवको
मारके अग्निमेंजलाना औरफिरखाना यहकुछअच्छीबातनहीं
औरजीवकोपीड़ादेना किसीकोअच्छानहीं उत्तर इसमें क्या।कुछ
पापहोताहै प्रश्न पापहीहोताहै क्योंकिजीवोंकोपीड़ादेके अपना
पेटभरना यहधर्मात्माओंकीरीतिनहीं उत्तर अच्छाएकजीवको
मारनेमेंपीड़ाहोतीहै सोसबव्यवहारोंकोछोड़देनाचाहिए क्यों-
किनेत्रकीचेष्टासेभी सूक्ष्मदेहवाले जीवोंकोपीड़ा अवश्य होतीहै
औरतुम्हारेघरमेंकोईमनुष्यचोरीकरै तोतुमलोगभीअवश्यउस-
कोपीड़ादेओगेऔरमक्खीआदिक भोजनकेऊपरसे उड़ादेतेहो
इसमेंभीउसकोपीड़ाहोतीहै औरजोकुछतुमखातेपीतेचलतेफि-
रतेऔरबैठतेहो इसव्यवहारसेभीबहुतजीवोंकोपीड़ाहोतीहै इ-
ससे तुम्हाराकहनाव्यर्थहै किकिसीजीवकोपीड़ानदेना प्रश्न जिसमें
प्रत्यक्ष पीड़ाहोतीहै हमलोगउसमेंपापगिनतेहैं अप्रत्यक्षमेंकभी
नहीं क्योंकिअप्रत्यक्षमेंपापगिनें तोहमाराव्यवहारनबनें उत्तर
ऐसेहीआपलोगजानैं किजहांअपनामतलबहोय वहांतोपापन-
हींगिनतेहो यहबातयुक्तिसेविरुद्धहै/औरकोईभीमांसनखाय तो
जानवर,पक्षी,मत्स्यऔरजलजन्तु इतनेहैं उनसेशतसहस्रगुनेहो
जांय फिरमनुष्योंकोमारनेलगें औरखेतोंमें धान्यहीनहोनेपावै
फिरसबमनुष्योंको आजीविकानष्टहोनेसे सबमनुष्य नष्टहोजांय
औरव्याघ्रादिकमांसाहारीजीवभी उनमृगादिकोंकाभक्षणकरतेहैं
औरगायआदिकोंकोभीपरन्तु मनुष्यलोगोंकोयहचाहिए किगाय
बैल,भैंसी,छेड़ी,भेंड औरऊंटआदिकपशुओंकोकभीनमारैं क्यों-
किइन्हीसे सबमनुष्योंकी आजीविका चलतीहै जितनेदुग्धादिक
पदार्थहोतेहैं वेसबउत्तमहोतेहैं औरएकपशुसेबहुतआजीवि-
कामनुष्योंकोहोतीहै मारनेसेजहांसौमनुष्यतृप्तहोतेहैं उसगाय
आदिकपशुओंकेबीचमेंसेएकगायकीरक्षासेदसहजारमनुष्योंको

रक्षा है सक्ती है इससे इन पशुओं को कभी न मारना चाहिए प्रश्न इन
पशुओं के नहीं मारने से इन के बहुत होने से सब पृथिवी भर जायगी
फिर भी तो मनुष्यों को हानि होने लगैगी उत्तर ऐसा न कहना चा-
हिए क्योंकि व्याघ्रादिक जीव उनको मारैंगे और कितने रोगों से भी
मरेंगे इससे अत्यन्त नहीं होने पावेंगे और मनुष्यों के मारने से घृतादि-
क पदार्थ और पशुओं की उत्पत्ति भी नष्ट हो जाती है इससे जहां २ गोमे-
धादिक लिखे हैं वहां २ पशुओं में नरों को मारना लिखा है इससे इस
अभिप्राय से नर में लिखा है मनुष्य नर को मारना कहीं नहीं क्यों-
कि जैसी पुष्टि बैलादिक नरों से है वैसी स्त्रियों में नहीं है (और एक बैल
से हजारहां गैया गर्भवती होती हैं इससे हानि भी नहीं होती) सो ई
लिखा है ॥ गौरनुबन्ध्योऽजोऽग्नीषोमीयः । यह ब्राह्मण की श्रुति है इस-
में पुल्लिङ्ग निर्देश से यह जाना जाता है कि बैल आदिक को मारना
गैया को नहीं सो भी गोमेधादिक यज्ञों में अन्यत्र नहीं क्योंकि
बैल आदि से भी मनुष्यों का बहुत उपकार होता है इससे इनकी
भी रक्षा करनी चाहिए (और जो वन्ध्या गाय होती है उसको भी गोमे-
ध में मारना लिखा है ॥ स्थूलपृषतीमाग्निवारुणीमनड्वाहीमाल-
भेत । यह ब्राह्मण की श्रुति है इस में स्त्रीलिंग और स्थूलपृषती विशे-
षण से वन्ध्या गाय ली जाती है (क्योंकि वन्ध्या से दुग्ध और बछड़ादिकों की
उत्पत्ति होती नहीं) और जो मांस न खाय सो घृत दुग्धादिकों से निर्वा-
ह करे क्योंकि घृत दुग्धादिकों से भी बहुत पुष्टि होती है सो जो मांस
खाय अथवा घृतादिकों से निर्वाह करे वे भी मन्त्र अग्नि में होम के बिना
न खांय क्योंकि जीव को मारने के समय पीड़ा होती है उससे कुछ पाप
भी होता है फिर जब अग्नि में वे होम करेंगे तब परमाणु से उक्त प्रकार
सब जीवों को सुख पहुंचेगा एक जीव को पीड़ा से पाप भया था सो भी
थोड़ा सा गिना जायगा अन्यथा नहीं / प्रश्न सखरी निखरी अ-
र्थात् कच्चा पक्का अन्न और इसके हाथ का भोजन करना इस-
के हाथ का खाना और इसके हाथ का न खाना यह बात कै-

भीहै उत्तर इसका यह विचार है भ्रष्टाचार से बनावे अन्ना-
दिकों का यथावत् संस्कार नजानै तथाविधिनजाने उसका भक्षण
नकरनाचाहिए क्योंकि उससे रोगहोतेहैं औरबुद्धिभी मलिनहो
जातीहै सखराऔरनिखरायहमनुष्योंकामिथ्याकल्पनाहै क्योंकि
जोअग्निमेंपकायाजाताहै वहसबपक्काहोगिनाजाताहै औरशूद्र-
हीपाककरनेवालाहोनाचाहिए परन्तु वहशूद्र अपने जिसद्विजके
घरमें रहै उसीकेघरकेअन्न औरउसीकेघरकेपात्रोंमें पवित्रहोके
बनावे उस के हाथसे बनेंहुएको सबखांय तोभीकुछ दोषनहीं ॥
नित्यंशूद्रःकारुहस्तःस्मृतेवार्थसुत्पन्नः। एतेषामेववर्णानां शुश्रूषा-
मनुसूयया इत्यादिकमनुस्मृतिमें लिखाहै सेवामें बड़ीसेवारसो-
ईकाबनानाहै क्योंकिरसोईके बनानेमेंबड़ापरिश्रमहोताहै और
कालभीबहुतजाताहै इससे रसोईआदिकसेवाका शूद्रहीकोअधि-
कारहै जोब्राह्मण,क्षत्रियऔरवैश्यहैं वेतोविद्यादिकप्रचार प्रजा
काधर्मसेरक्षणव्यापार औरनानाप्रकारकेशिल्प इनकीउन्नतिही
मेंपुरुषार्थकरैं क्योंकिजोबुद्धि औरविद्यायुक्तहैं उनकोसेवाकरना
उचितनहीं रसोईआदिक जोसेवासो मूर्खपुरुष जोशूद्र उसीका
अधिकारहै क्योंकिअग्निकेसामनबैठना लपटांमांजना अन्नकोशु-
द्धिकरना नानाप्रकारकेपदार्थबनाना इसमेंबड़ापरिश्रमऔरका-
लजाताहै इसकामकेकरनेसेविद्वानकीविद्यानष्टहोजाय इससे यह
कामशूद्रहीकाहै सोमहाभारतमेंलिखाहै किजबराजसूयऔरअ-
श्वमेध युधिष्ठिरादिकराजालोगोंकेयज्ञभएथे उनमेंसबद्वीपद्वीपा-
न्तरऔरदेशदेशान्तरोंके ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तथाशूद्रराजाऔ-
रप्रजाआएथेउनकीएकहीपंक्तिहोतीथी औरशूद्रनामशूद्रहीपाक
करनेवाले औरपरोसनेवालेथे एकपंक्तिमें सबकेसाथ सबभोजन
करतेथे तथाकुरुक्षेत्रकेयुद्धमें जूते,वस्त्र,शस्त्र, औररथकेऊपर बैठे
भएभोजनकरतेथे औरयुद्धभीकरतेजातेथे कुछशंकाउनकोनथी तभी
उनकाविजयहोताथा औरआनन्दसेराज्यकरतेथे औरजोभोजन

में बड़े बखेड़े करते हैं वे भूख के मारे मर जांयगे युद्ध क्या कर सकेंगे अब भोजमपुरादिकों के क्षत्रिय लोग नापितादिकों के हाथका भोजन करते हैं सो बात सनातन है और बहुत अच्छी है तथा सारस्वत और खत्री लोगों का एकही भोजन है सो अच्छी बात है और गौड़ तथा अगरवाले वनियों का भी एक भोजन प्रायः है सो भी अच्छी बात है और गुजराती, महाराष्ट्र, तैलंग, द्राविड़ तथा कर्नाटक इन में भोजन के बड़े बखेड़े हैं इन पांचों में से गुजराती लोगों के भोजन का बड़ा पाखण्ड है क्योंकि महाराष्ट्रादिक चारों द्रविड़ों का तो एक भोजन है और गुजराती लोगों का आपस में बड़ा भेद है सब से भोजन में पाखण्ड कान्याकुब्जका अधिक है क्योंकि वे जल भी पीते हैं तो जूते उतार के हाथ, पैर धोके पीते हैं तब चौका देके चना चबाते हैं सो बड़े दुःख पाते हैं और चौका बरतन नहीं हाथ में रह गए और कुछ नहीं और सजूपारी में भी बहुत भोजन में पाखण्ड है यह केवल मिथ्या पाखण्ड भाड़ में चला जाते हैं और सब से पाखण्ड भोजन चक्रांकितादिक वैरागियों का अत्यन्त है ऐसा कोई का नहीं क्योंकि जब जगन्नाथ के दर्शन को जाते हैं तब चाण्डालादिकों का जूठ खा लेते हैं फिर अपनी पंक्ति में मिल जाते हैं उनका मिथ्या पाखण्ड भी न रहा और हलवाई के दुकान का दूध दही और मिष्ठान्नादिक खाते हैं वह सब का उच्छिष्ट जानों और मलिन क्रिया में भी होते हैं तथा वो भी लोग मुसल्मान और अमीरादिक होते हैं वे अपने घड़े का जूठा जल मिलाते हैं फिर उसको सा खाते पीते हैं और जानते भी हैं सो सत्य बात हो का निर्वाह होता है झूठ का कभी नहीं रानादिक धनाढ्य वेश्यादिकों को घर में रखते हैं उन से कुछ भेद नहीं रहता उनको कोई नहीं कहता क्योंकि कहैं तब जब कि वे निर्दोष होय सो परस्पर दोषों को छिपाते जाते हैं और गुणों को छोड़ते जाते हैं यह सब अनाचार है और सत्यभाषणादिकों का आचरण करना उसी का नाम आचार युधिष्ठिर के साथ बहुत ऋषि, मुनि, ब्राह्मण लोग थे वे सब सूदनाम शूद्र पाक करते थे और द्रौपद्यादिक परोसते थे वे सब

खाते थे सो खाने पीने से किसी का धर्म भ्रष्ट नहीं होता है और न कोई पतित होता है क्योंकि खाना पीना और धर्म का कुछ सम्बन्ध नहीं धर्म जो अहिंसादि लक्षण सो बुद्धिस्थ है खाना पीना व्यवहार सम्बाह्य है परन्तु शुद्ध पदार्थ का खाना पीना चाहिए कि जिस से शरीर में रोगादिक न होंय और जगत का अनुपकार भी न होय मद्य, भांग, गांजा, अफीम, और जितने नसे हैं वे सब अभक्ष्य हैं क्योंकि जितने नशे हैं वे सब बुद्ध्यादिकों के नाश करने वाले हैं इस से इन का ग्रहण कभी न करना चाहिए क्योंकि जितने नशे होते हैं वे बिना गरमी से नहीं होते फिर गर्मी से सब धातु और प्राण तप्त हो जाते हैं और विषम उन के संग से बुद्धि तप्त और विषम हो जाती है इस से नशा का करना सब को वर्जित है परन्तु औषध के हेतु कि रोग निवृत्ति होता होय तो चौगुणा जल और एक गुण मद्य ग्रहण लिखा है सुश्रुतादिक वैद्यक शास्त्र में क्योंकि रोगनिवृत्ति के हेतु अभक्ष्य भी भक्ष्य हो जाता है और जिन पशुओं के बछड़े को दूध नहीं देते और सब अपने ही दुहलेते हैं यह भी अनाचार है क्योंकि पशु पुष्ट कभी नहीं होते फिर पुष्टि के बिना दुग्धादिक थोड़े होते हैं और पशु भी बलहीन होते हैं सो एक मास भर जितना वह पीए उतना देना चाहिए फिर एक स्तन का दूध दुहले और सब बछड़ा पीए फिर दो मास के पीछे जब वह बछिया घास, पात, खाने लगे तब आधा दूध सब दिन छोड़ दे और आधा दुहले तो पशु भी पुष्ट होवें और दुग्धादिक भी बहुत होवें फिर उन दुग्धादिकों से मनुष्यादिकों को पुष्टि भी हुआ करै इस से खाने और पीने में धर्म मानते हैं वा धर्म का नाश वे बुद्धिहीन मनुष्य हैं ऐसा तो है कि सत्य धर्म व्यवहार से पदार्थों को प्राप्त होय उन से खाना पीना करै तो पुण्य है और चोरी तथा छल, कपट, व्यवहार से खाना पीना करै तो अवश्य पाप होता है सो खाने पीने में जितने भेद हैं वे विरोध दुःख और मूर्खता के कारण हैं इन बखेड़ों से आर्यावर्त्त में पुरुष और स्त्री लोग विद्या, बल, बुद्धि, पराक्रम, हीन हो गए हैं प्रथम देशदेशान्तरों में सब वर्णों में विवाह आदि होता था पूर्वोक्त वर्णानुक्र-

ममेंफिरभोजनमेंकैसेभेदहोगा यहभेदथोड़े दिनसेचलाहै कि जबसेनानाप्रकारकेमतमतान्तरचले औरमनुष्यकीबुद्धिमेंपरस्पर विरोधहोनेसे प्रीतिनष्टहोगई वैरहोगया इससे कोईकिसीके उपकारमें चित्तनहींदेता औरअपने देशकेमनुष्योंके उपकारकेहेतु कोईप्रवृत्तनहींहोताकिन्तुअपने२मतलबमेंरहतेहैं सोसबकानाश होताजाताहै यहबड़ाअनाचारहै औरतथाविचारसेशुद्धपदार्थके खानेसे किसीकापरलोक वाधर्मबिगड़तानहीं परन्तु विद्याऔर विचारकेमहोहोनेसे इनबखेड़े मेंमनुष्यलोगपड़केसदादुःखीरहते हैं औरजोपरस्परगुणग्रहणकरैंतोसुखीहोजांय औरदेखनाचाहिए किसमयकेऊपरभोजननहीं प्राप्तहोताहै भोजनकेपात्रोंको उठाकेलादेफिरतेहैं वैलोंकीनांईदरिद्रलोग औरधनाढ्यलोगबहुतसोंईदार आदिकसाथमेंरहतेहैं उससे मिथ्याधन बहुतखर्च होजाताहै इत्यादिकसबव्यवहार बुद्धिमानलोगविचारलें युक्त२ व्यवहारकरैं अयुक्तकभीनहीं एदशसमुल्लासमसिक्षाके विषयमेंलिखे(इसकेआगेआर्यावर्तवासीमनुष्य जैनमुसल्मान औरअंगरेजों केआचारअनाचार सत्यासत्यमतमतान्तरकेखण्डन औरमण्डन केविषयमेंलिखेंगे इनमेंसेप्रथमसमुल्लासमें आर्यावर्तवासी मनुष्योंकेमतमतान्तरके खण्डनऔरमण्डनकेविषयमेंलिखाजायगा (दूसरेसमुल्लासमेंजैनमतके खण्डनऔरमण्डनकेविषयमें लिखा जायगा तीसरेमेंमुसल्मानोंकेमतकेविषयमें खण्डनऔरमण्डन लिखेंगे औरचौथेमेंअंगरेजोंकेमतमें खण्डनऔरमण्डनकेविषय मेंलिखाजायगा सोजोदेखाचाहै खण्डनऔरमण्डनकीयुक्तिउन चारोंसमुल्लासोंमेंदेखलें) दससमुल्लासतकखण्डन वामण्डननहीं लिखा क्योंकिजबतकबुद्धिमनुष्योंकी सत्यासत्यविवेकयुक्तनहींहोतो तबतकसत्यके ग्रहण औरअसत्यके त्याग करनेमेंसमर्थ नहीं होते इसहेतुग्रन्थकेपूर्वभागमेंसत्य२मनुष्योंकेहितकेहेतुशिक्षालिखी औरइसग्रन्थकेउत्तरभागमें सत्यमतकामण्डनऔरअसत्यम-

नकाखण्डनलिखेंगे संस्कृतमें रचनाकरतेतो सबमनुष्योंकेसमझमें नहींआता इसहेतुभाषामें कियागया इसग्रन्थको दुराग्रह हठऔरईर्ष्याकोछोड़के यथावत्विचारेगा उसकोसत्य२पदार्थोंकेप्रकाशसेअत्यन्तआनन्दहोगा और अन्यथाइसग्रन्थका अभिप्राय भीमालूमनहींहोगा इसहेतुसज्जनलोगोंकोयहउचितहै किइसकायथावतअभिप्रायविचारकेभूषणवादूषणकरें अन्यथानहींऔर मूर्खतथादुराग्रहीपुरुषके कहेदूषणमाननेकेयोग्यनहीं ॥

इति श्री सद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते दसमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ १० ॥

सत्यार्थ प्रकाशस्य प्रथमभागः समाप्तः ॥

———ooo———

अथार्यावर्तवासिमतखण्डनमण्डनेविध्यस्यामः ॥ सरस्वतीदृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम् । तंदेवनिर्मितंदेश मार्यावर्त्तं प्रचक्षते ॥ १ ॥ म० सरस्वतीजोकिगुजरातऔरपंजाबके पश्चिमभागमेंनदी है उससेलकेनैपालके पूर्वभागकोनदीसेलेके समुद्रतकइनदोनोंके बीचमेंजोदेशहै सोआर्यावर्तदेशहै औरवेदेवनदी कहातीहैं अर्थात्दिव्यदेशके प्रांतभागमेंहोनेसेदेवनदीइनका नामहैं सोदेश देवनिर्मितहै अर्थातदिव्यगुणोंसेरचितहै क्योंकिभूगोलके बीचमें ऐसाश्रेष्ठदेशकोईनहींहै जिसदेशमेंसबश्रेष्ठ उपरायहोतेहैं और ऋतुयथावत् वर्त्तमानहोतेहैं औरकेवलसुवर्णरत्नपैदाहोतेहैं इस देशमें जिसकाराज्यहोताहै वहदरिद्रहोयतोभीधनसेपूर्णहो जाताहै इसीहेतुइसकानामआर्यावर्त्त है आर्य्य नामश्रेष्ठमनुष्य औरश्रेष्ठपदार्थइनसेयुक्त अर्थातआवर्त्तहै इसहेतुइसदेशकानाम

आर्यावर्त कहते हैं ॥ १ ॥ (एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः । स्वं स्वंचरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥ २ ॥ म०) इस देश में अग्रजन्मा नाम सब श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न जो पुरुष उत्पन्न होवैं उस से सब भूगोल को पृथिवी के मनुष्य शिक्षा अर्थात विद्या तथा संसार के सब व्यवहारों का यथावत विज्ञान करैं इससे क्या जाना जाता है कि प्रथम इस में मनुष्यों की सृष्टि भई थी पीछे सब द्वीपद्वीपान्तर में सब मनुष्य फैल गए क्योंकि पृथिवी में जितने मनुष्य हैं वे इस देशवालों से विद्यादिक शिक्षा ग्रहण करें और सब देशभाषाओं का मूल जो संस्कृत सो आर्यावर्त ही में सदा से चला आता है आजकाल भी कुछ२ देखने में आता है परन्तु फिर भी सब देशों में संस्कृत का प्रचार अधिक है जर्मनी और बिलायत आदिक देशों में संस्कृत के पुस्तक इतने नहीं मिलते जितने कि आर्यावर्त देश में मिलते हैं और जो किसी देश में संस्कृत के बहुत पुस्तक होंगे सो आर्यावर्त्त ही से लिए होंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं सो इस देश से मिश्र देशवालों ने पहिले विद्याग्रहण की थी उस से यूनान देश, उस से क्रम फिर क्रम से फिरंगस्थान आदि में विद्या फैली है परन्तु संस्कृत के बिगड़ने से गिरीश लाटीन अंगरेज और अरबदेशवालों की भाषा बन गई हैं सो इन में अधिक लिखना कुछ आवश्यक नहीं क्योंकि इतिहासों के पढ़नेवाले सब जानते हैं और पता भी ऐसा ही मिलता है एक गोल्डसटकर साहिब ने पहिले ऐसा ही निश्चय किया है कि जितनी विद्या वा मत फैले हैं भूगोल में वे सब आर्यावर्त्त ही से लिए हैं और काशी में बालेण्टेन साहिब ने यही निश्चय किया है कि संस्कृत सब भाषाओं की माता है तथा दारा शिकोह बादशाह ने भी यह निश्चय किया है कि जो विद्या है सो संस्कृत ही है क्योंकि मैं ने सब देशों की भाषाओं की पुस्तक देखा तो भी मुझ को बहुत सन्देह रह गए परन्तु जब मैंने संस्कृत देखा तब मेरे सब सन्देह निवृत्त हो गए और अत्यन्त प्रसन्नता मुझ को भई और काशी में मानमन्दिर जो रचा है उस में महाराज सवाई मानसिंह जी ने खगोल के कला और यन्त्र ऐसे रचे थे कि जिस में खगोल

कासबहालदेखपड़ताथा परन्तु आजकालउसकी मरम्मतनहोने से बहुतकलायन्त्रबिगड़गएहैं तोभीकुछ२देखपड़ताहै फिरआज कालमहाराज सवाईरामसिंहजीनेकुछमरम्मतस्थानकीकराईहै जोउसयन्त्रकीभीकरावेंगेतोकुछरोजबमारहेगाअन्यथानहींजबसे महाभारतयुद्धभयाउसदिनसेआर्यावर्त्तकोबुरीदशाआईहै सोनित्य२बुरीहीदशाहोतीजातीहै क्योंकिउसयुद्धमें अच्छे२विद्वान राजाऔरब्राह्मणलोगप्रायःमारेगए फिरकोईराजापूर्णविद्यावाला इसदेशमें नहींभया जबराजाविद्वान औरधर्मात्मानहींभया तबविद्याकाप्रचारभीनष्टहोताचला फिरकुछदिनकेपीछेआपसमें लड़नेलगे क्योंकिजबविद्यानहींहोती तबऐसेहीबहुतप्रमादहोते हैं जोकोईप्रबलभया उसनेनिर्बलकाराजछीनकेउसकोमाराफिर प्रजामेंभीगदरहोनेलगा किजहांजिसने जितनापाया उसकावह राजावाजमींदारबनबैठा फिरब्राह्मणलोगोंनेभी विद्याकापरीश्रमछोड़दिया पढ़नापढ़ानाभीनष्टहोताचला जबब्राह्मणलोगविद्याहीनहोतेचले तबक्षत्रिय,वैश्य,शूद्रभीविद्याहीनहोतेचले केवल दम्भ,कपटऔरछलहीसेव्यवहारकरनेलगे फिरजितनेअच्छे कामहोतेथेवेसबबन्धहोतेचले वेदादिकविद्याकाप्रचारभीबहुतथोड़ाहोताचला फिरब्राह्मणलोगोंनेबिचारकिया किआजीविकाकी रीतिनिकालनीचाहिए सोसम्मतिकरकेयहीबिचारकिया किब्राह्मणवर्णमें जोउत्पन्नहोताहै सोईदेवहै सबकापूज्यहै क्योंकिपूर्णविद्यासे ब्राह्मणवर्णहोताहै यहवर्णाश्रमकीसनातनरीतिहै सोई ऋषिमुनियोंकेपुस्तकोंमेंभीलिखोहै(सोबिद्यादिकगुणोंसेतोवर्णव्यवस्थानहींरक्खीकिन्तुकुलमेंजन्महोनेसेवर्णव्यवस्थाप्रसिद्धकरदिया है फिरजन्महीसेब्राह्मणादिकवर्णोंकाअभिमानकरनेलगे)फिरविद्यादिकगुणोंमेंपुरुषार्थसबकाछूटाउसकेछूटनेसेप्रायःराजाऔरप्रजामें मूर्खताअधिक२होनेलगी फिरउन्हसेब्राह्मणलोगअपने चरणऔरशरीरकीपूजाकरानेलगेजबपूजाहोनेलगीतबअत्यन्तअभि-

मानउनमें होनेलगा उनविद्याहीनराजाओंको और प्रजास्थपुरुषोंकोवशीभूत ब्राह्मणोंनेकरलिए यहांतककि सोना, उठनाऔर कोसदोकोसतकजाना वहभोब्राह्मणों कीआज्ञाकेबिनानहींकरना औरजाकोईकरेगा सोपापोहोजायगा फिरग्रहनैश्चरादिकग्रहऔरनानाप्रकारके भूतप्रेतादिकोंकाजाल उनकेऊपर फैलानेलगे औरवेमूर्खताकेहोनेसे माननेभालगे फिरराजा लोगोंको ऐसा निश्चयसबलोगोंनेमिलकेकराया किब्राह्मणलोगकुछभीकरैं परन्तु इनकोदण्डनदेनाचाहिए जबदण्डनहोहोनेलगा तबब्राह्मणलोग अत्यन्तप्रमादकरनेलगे औरक्षत्रियादिकभी फिरबड़े२ ऋषिमुनिऔरब्रह्मादिककेनामोंसे श्लोकऔरग्रन्थरचनेलगे उनमेंप्रायः यहीबातलिखी किब्राह्मणसबकापूज्यऔरमदाअदण्ड्यहै फिरअत्यन्तप्रमादऔरविषयासक्तिसे विद्या, बल, बुद्धि, पराक्रम औरशूरबीरतानष्टहोगई औरपरस्पर ईर्ष्याअत्यन्तहोगई किसोको कोई देखनसकै औरकोई२कासहायकारीनरहे परस्परलड़नेलगें यह बातचीनआदिकदेशोंमेंरहनेवाले। जैनोंनेसुनीऔरव्यापारादिककरनेके हेतुइसदेशमें आतेथें सोप्रत्यक्षभी देखोफिर जैनोंने बिचारकिया किइससमयआर्यावर्त्त देशमें राज्यसुगमतासेहोसक्ताहै फिरवेआएऔरराज्यभी आर्यावर्त्त मेंकरनेलगे फिरथोरे२बोधगयामेंराज्यजमाके औरदेशदेशान्तरमेंफैलानेलगे सो वेदादिकसंस्कृत पुस्तकोंकीनिन्दा करनेलगे औरअपनेपुस्तकोंके पठनपाठनकाप्रचार तथाअपनेमतकाउपदेशभीकरनेलगे सोइसदेशमेंविद्याकेनहोंहोनेसे बहुतमनुष्योंनेउनके मतकास्वीकार करलिया परन्तु कनौजकाशीपर्वतदक्षिणऔरपश्चिमदेशकेपुरुषोंनेस्वीकारनहींकियाथा परन्तु वेबहुतथोड़े होथेवेहीवेदादिकपुस्तकोंका पठनऔरपाठनकरतें औरकरातेथे फिरइनोंनेवर्णाश्रम व्यवस्थाऔरवेदोक्तकर्मोंकोमिथ्या२दोषलगाके अश्रद्धाऔरअप्रवृत्तिबहुतकरादिया फिरयज्ञोपवीतादिककर्मभीप्रायःनष्टहोग-

या और जो२ वेदादिकों की पुस्तक पाया और पूर्व के इतिहासों का उन का प्रायः नाश कर दिया जिस्से कि इन को पूर्व अवस्था का स्मरण भी न रहै फिर जैनों का राज्य इस देश में अत्यन्त जम गया तब जैन भी बड़े अभिमान में होगए (और कुकर्म, अन्याय भी) करने लगे) क्योंकि सब राजा और प्रजा उन के मत में हो होगए फिर उन को डर था शं-का कि सो को न रही अपने मत वालों को अच्छे २ अधिकार और प्रति-ष्ठा करने लगे और वेदादिकों को पढ़ैं तथा उन में कहे कर्मों को करैं उन को अप्रतिष्ठा करने लगे अन्याय से भी उनके ऊपर जाल स्थापन क-रने लगे अपने मत का पण्डित वा साधु उन को बड़ी प्रतिष्ठा करने लगे सो आज तक भी ऐसा ही करते हैं और बहुत स्थान२ में बड़े २ मन्दिर र-चलिए और उन में अपने आचार्यों की मूर्त्ति स्थापन कर दिया तथा उन की पूजा भी अत्यन्त करने लगे सो जैनों के राज्य ही से मूर्त्ति पूजन चली इस के आगे न थी क्योंकि जितने ऋषि मुनियों के किए प्राचीन ग्र-न्थ हैं महाभारत युद्ध के पहिले जो कि रचे गए हैं उन में मूर्त्तिपूजन का लेशमात्र भी कथन नहीं है इस्से दृढ़ निश्चय से जाना जाता है कि इस आर्यावर्त्त देश में मूर्त्ति पूजन नहीं थी किन्तु जैनों के राज्य ही से चला है (एक द्रविड देश के ब्राह्मण काशी में आके एक गौड़पाद पण्डित थे उ-न के पास व्याकरण पूर्वक वेद पर्यन्त विद्या पढ़ी थी जिस का नाम शङ्क-राचार्य था वे बड़े पण्डित भए थे उन ने विचार किया कि यह बड़ा अन-र्थ भया नास्तिकों का मत आर्यावर्त्त देश में फैल गया है और वेदादिक संस्कृत विद्या का प्रायः नाश ही होगया है सो नास्तिक मत का खण्डन और वेदादिक सत्य संस्कृत विद्या का विचार वे अपने मन में ऐसा बि-चार कर के सुधन्वा नाम राजा था उस के पास चले गए क्योंकि बिना राजाओं के सहाय से यह बात नहीं होम के गी सो सुधन्वा राजा भी संस्कृ-त में पण्डित था और जैनों के भी संस्कृत सब ग्रन्थ पढ़ा था सुधन्वा जैन के मत में था परन्तु बुद्धि और विद्या के होने से अत्यन्त विश्वास नहीं था क्योंकि वह संस्कृत भी पढ़ा था और उस के पास जैन मत के पण्डित

भीबहुतथे फिरशंकराचार्यने राजासे कहाकि आप सभाकरावैं और उनसे मेराशास्त्रार्थहोय औरआपसुनैं फिरजोसत्यहोय उसकोमाननाचाहिए उसनेस्वीकारकिया औरसभाभीकराई उसमेंअपनेपासजैनमतकेपण्डितथे औरभीदूर२सेपण्डितजैनमतकेबोलाए फिरसभाभई उसमेंयहप्रतिज्ञाहोगई किहमवेद और वेदमतकास्थापनकरेंगे औरआपकेमतकाखण्डनतथाउनपण्डितोंनेऐसीप्रतिज्ञाकिया किवेदऔरवेदमतका हमखण्डनकरेंगे औरअपनेमतकामण्डन सोउनकापरस्परशास्त्रार्थहोनेलगा उस शास्त्रार्थमेंशङ्कराचार्यकाविजयभया औरजैनमतवालेपण्डितोंका पराजयहोगया फिरकोईयुक्तिजैनोंकीनहींचली किन्तुशङ्कराचार्यकीबात प्रमाणोंसेसिद्धभई उसीसमयसुधन्वाराजा बुद्धिमानथा उसकोजैनमतमेंअश्रद्धाहोगई औरवेदमतमेंश्रद्धाहोगई फिरसभाउठगई राजाऔरशङ्कराचार्य जीकाएकान्तमेंविचारभया कि आर्यावर्त्त मेंबड़ाअनर्थहोगयाहै इससे वेदादिकोंकाप्रचारऔरइन कर्मोंकाप्रचारहोनाचाहिए तथाजैनोंकाखण्डन सोशङ्कराचार्यनेकहाकिजैनोंका आजकालबड़ाबलहै औरवेदमतकाबलनहीं है इससे शास्त्रार्थतोहमकरनेकोतैयारहैं परन्तु कोईउपाधिकरै अथवाशास्त्रार्थहोनकरैं तोहमाराकुछबलनहीं इसमेंआपलोग प्रवृत्तहोंय किकोईअन्यायकरै उसकोआपलोग शिक्षाकरें सोराजानेउसबातकास्वीकारकिया किवहहमकरेंगे परन्तु हमारेछःराजासम्बन्धीहैं उनकेपासहमचिट्ठीलिखतेहैं औरआपकोभीभेजेंगे शास्त्रार्थकरनेकेहेतु फिरवेभीजो मिलजांय तोबहुतअच्छीबातहै फिरशंकराचार्य उनराजाओंकेपासगए औरसभाभई फिरजैन मतकेपण्डितोंकापराजयहोगया फिरवेछःभीसुधन्वासेमिलेऔर सबकीसम्मतिसेसंस्कारभीभया तथावेदोक्तकर्मभीकरनेलगेतबतो आर्यावर्त्त मेंसर्वत्रयहबातप्रसिद्धहोगई किएकशङ्कराचार्य नामकसन्यासीवेदादिकशास्त्रोंकेपढ़नेवालेबड़े पण्डितहैं जिससे बहुतजैन

लोगोंकेपण्डितपरास्तहोगए फिरउनसातराजाओंनेशङ्कराचार्यकी रक्षाकेहेतुबहुतभृत्य तथासेवकऔरसवारीभीरखदिया और सबनेकहाकिआपसर्वत्रआर्य्यावर्त्त में भ्रमणकरें औरजैनोंकाखण्डनकरें इसमेंकोईजबर्द्स्तीकरेगा अन्यायसेउसकोहमलोगसम्भालेंगे फिरशंकराचार्यजीने जहां२जैनोंकेपण्डितऔरअत्यन्तप्रचारथा वहां२भ्रमणकिया औरउनसेसर्वत्रशास्त्रार्थकिया परन्तु जैनलोगोंकासर्वत्रपराजयहीहोतागया(क्योंकिदोतोनदोषउनकेबड़े भारीथे एकतोईश्वरकोनहींमानना दूसरावेदादिकसत्यशास्त्रोंकाखण्डनकरना औरतीसराजगत्स्वभावहीसेहोताहै इसकारचनेवालाकोईनहीं/इत्यादिकअन्यभीबहुतदोषहैं वजैनमतकेखण्डनमण्डनमेंविस्तारसेलिखेंगे फिरजितनीजैनोंके मन्दिरमेंमूर्त्तियांथीं उनकोसुधन्वादिकराजाओंनेतोड़वाडाली औरकूवांवापृथिवीमेंगाड़दिया औरकोईमूर्त्ति जैनोंनेबिनाटूटीभी भयसेलोनमेंगाड़दिया सोआजतकबहुतोऔरबिनाटूटीमूर्त्ति जैनोंकी पृथिवीखोदनमे निकलतीहैं परन्तु मन्दिरनहीतोड़ेगए क्योंकि शंकराचार्य औरराजालोगोने बिचारकिया मन्दिरोंकोतोड़ना उचितनहीं इनमेंवेदादिकशास्त्रोंकेपढ़नेकेहेतु पाठशालाकरेंगे क्योंकिलाखहांकरोड़हांरुपैएकोइमारतहै इसकोतोड़नाउचित नहीं औरकुछ२गुप्तजैनलोग जहांतहांरहगएथे सोआजतकदक्खनमेंआर्य्यावर्त्त देशमेंआतेहैं इसकेपीछेसर्वत्र बेदादिकोंकेपढ़ने औरपढ़ानेकीइच्छा बहुतमनुष्योंकोभई(शंकराचार्यऔरसुधन्वादिकराजा तथाऔरआर्य्यावर्त्तवासीश्रेष्ठलोगोंने बिचारकियाकि बिद्याकाप्रचार अवश्यकरनाचाहिए वेबिचारहीकरतेरहे इतनेमें ३२,वा,३३,बरसकीउमरमें शंकराचार्यकाशरीरछूटगया)उनके मरनेसेसबलोगकाउत्साहभङ्गहोगया)यहभीआर्य्यावर्त्तदेशवालोंकेबड़े अभाग्यकिशंकराचार्यदशवाबारहबरसभोजीतेतोबिद्याकाप्रचार यथावत्होजाता फिरआर्य्यावर्त्तको ऐसोदुर्दशा कभी नहो

होती क्योंकि जैनोंका खण्डन तो होगया परन्तु विद्याप्रचार यथावत् नहीभया इस्से मनुष्योंको यथावत् कर्तव्य और अकर्तव्यका निश्चय नहोहोनेसे मनमें सन्देह होरहा कुछतो जैनोंके मतका संस्कार हृदयमें रहा और कुछ वेदादिक शास्त्रोंकाभी यहबात एक ईसवा बाइससै बरसकी है इसके पीछे २००वा३००बरसतक साधारणपढ़ना और पढ़ानारहा। फिर उज्जयनमें बिक्रमादित्य राजाकुछअच्छाभया उसने राजधर्म कुछ२ प्रकाश किया और बहुत कार्य न्यायसे होनेलगेथे उसके राज्यमें प्रजाको सुखभी भयाथा क्योंकि बिक्रमादित्य तेजस्वी बुद्धिमान और शूरवीर तथा धर्मात्मा इस्से कोई और अन्याय नहीं करनेपाताथा परन्तु वेदादिकविद्याकाप्रचार उसके राज्यमें भी यथावत् नहीं भयाथा उसके पीछे ऐसाराजा नहीं भया किन्तु साधारण होतेगए फिर बिक्रमादित्यसे ५००बर्षके पीछे राजा भोज भए उसने संस्कृतका प्रचार किया सो नवीन ग्रन्थोंका रचना और प्रचार कियाथा वेदादिकोंका नहीं परन्तु कुछ२ संस्कृतका प्रचार भोजराजाने ऐसा करायाकि चाण्डाल और हलजोतने वाले भी कुछ२ लिखना पढ़ना और संस्कृत बोलने भी थे देखना चाहिए कि कालिदास गड़रियाथा परन्तु श्लोकादिक रचलेताथा और राजाभोज भी नए२ श्लोक रचनेमें कुशलथा कोई एकश्लोक भी रचकेले जाताथा उनके पास उसका प्रसन्नतामें सत्कार करतेथे और जो कोई ग्रन्थ बनाताथा तो उसका बडाभारी सत्कार करतेथे फिर लोभसे बहुत संसारमें मनुष्य लोग नए ग्रन्थ रचनेलगे उस्से वेदादिक सनातन पुस्तकोंकी अप्रवृत्ति प्रायः होगई और संजीवनी नाम राजाभोजने इतिहास ग्रन्थ बनाया है उसमें बहुत पण्डितोंकी सम्मति है और यह बात उसमें लिखी है कि तीन ब्राह्मणोंने ब्रह्मवैवर्त्तादिक तीन पुराण पण्डितोंने रचेथे उनसे राजाभोजने कहा कि और के नामसे तुमको ग्रन्थ रचना उचित नहींथा और महाभारतकी बात लिखी है कि कितने हजार श्लोक२०बरसके बीचमें व्यासजीका नामकरके लोगोंने मिला

दिए हैं ऐसेही पुस्तक बढ़ेगा तो एक ऊंट का भार हो जायगा और ऐसेही लोग दूसरे के नाम से ग्रन्थ रचेंगे तो बहुत भ्रम लोगों को हो जायगा सो उस संजीवनी ग्रन्थ में राजा भोज ने अनेक प्रकार की बातें पुस्तकों के विषय और देश के वर्त्तमान के विषय में इतिहास लिखे हैं सो वह संजीवनी ग्रंथ बटेश्वर के पास होली पुर एक गांव है उस में चौबे लोग रहते हैं वे जानते हैं जिस के पास वह ग्रंथ है परन्तु लिखने वा देखने को वह पण्डित किसी को नहीं देता क्योंकि उस में सत्य २ बात लिखी है उस के प्रसिद्ध होने से पण्डितों की आजीविका नष्ट हो जाती है इस भय से वह उस ग्रंथ को प्रसिद्ध नहीं करता ऐसे ही आर्य्यावर्त्तवासी मनुष्यों की बुद्धि क्षुद्र हो गई है कि अच्छा पुस्तक वा कोई इतिहास उस को छिपाते चले जाते हैं यह इन की बड़ी मूर्खता है क्योंकि अच्छी बात जो लोगों के उपकार की उस को कभी न छिपाना चाहिए फिर राजा भोज के पीछे कोई अच्छा राजा नहीं भया उस समय में जैन लोगों ने जहां तहां मूर्ति मन्दिरों में प्रसिद्ध किया और वे कुछ २ प्रसिद्ध भी होने लगे तब ब्राह्मणों ने बिचार किया कि इन के मन्दिरों में नहीं जाना चाहिए किन्तु ऐसी युक्ति रचैं कि हम लोगों की आजीविका जिस से होय फिर उन ने ऐसा प्रपञ्च रचा कि हम को स्वप्न आया है उस में महादेव, नारायण, पार्वती, लक्ष्मी, गणेश, हनुमान्, राम, कृष्ण, नृसिंह, इन्होंने स्वप्न में कहा है कि हमारी मूर्त्ति स्थापन करके पूजा करैं तो पुत्र, धन नैरोग्यादिक पदार्थों की प्राप्ति होगी जिस २ पदार्थ की इच्छा करेगा उस २ पदार्थ की प्राप्ति उस को होगी फिर बहुत मूर्खों ने मान लिया और मूर्त्ति स्थापन करने कोई २ लगा फिर पूजा और आजीविका भी उन को होने लगी एक की आजीविका देख के दूसरा भी ऐसा करने लगा और कोई महाधूर्त्त ने ऐसा किया कि मूर्त्ति को जमीन में गाड़ के प्रातःकाल उठ के कहा मुझ को स्वप्न भया है फिर उन से बहुत लोग पूछने लगे कि कैसा स्वप्न भया है तब उन से उस ने कहा कि देव कहता है मैं जमीन में गड़ा हूं और दुःख पाता हूं मुझ को निकाल के मन्दिर में

स्थापनकरै औरतूंहीपुजारीमेराहो तोमैं सबकाम सबमनुष्यों कासिद्धकरूंगा फिरवेविद्याहीनमनुष्य उससे पूछतेभए किवहमूर्त्ति कहांहै जोतुम्हारासत्यस्वप्नहोगा तोतुमदिखलाओ तबजहां उसनेमूर्तिगाड़ीथी वहांसबकोलेजाकेखोदकेउसकोनिकाली सब देखकेबड़ाआश्चर्यकिया औरसबनेउससे कहाकि तूं बड़ाभाग्यवान् है औरतेरे परदेवताकी बड़ीकृपाहै से हमलोग धनदेतेहैं इससे मन्दिरबनाओ इसमूर्त्ति काउसमें स्थापनकरो तुमइसके पुजारी बनो औरहमलोगनित्यदर्शनकरेंगे तबतोवहप्रसन्नहोकेवैसाही किया औरउसकोआजीविकाभीअत्यन्तहोनेलगी उसकीआजीविकाकोदेखके अन्यपुरुषभी ऐसीधूर्त्तताकरनेलगे औरविद्याहीन पुरुषउसकोमाननाकरनेलगे फिरप्रायःमूर्त्ति पूजन आर्यावर्त्तमें फैला एकमहम्मूदगजनवीइसदेशमेंआया औरबहुतसीमूर्त्तियां सोनेऔरचांदियोंकीलूटलिया बहुतपुजारीऔरपण्डितोंको पकड़लिए औररातको पिसानपिसावै औरदिनमें झाड़ूआदि कोसफाकरावै औरजहांकोई पुस्तकपाया उसकोनष्टभ्रष्टकरदिया ऐसेवह आर्यावर्त्त में बारहदफेआया औरबहुतलूटमारअत्यन्तअन्यायउसनेकिया इसदेशकोबड़ी दुर्दशाउसनेकिया यहांतक किशिरच्छेदनबहुतोंकाकरदिया बिनाअपराधोंसेस्त्री,कन्याऔर बालककोभीपकड़केदुःखदिया औरबहुतोंकोमारडाला ऐसाउन्ने बड़ाअन्यायकियासोजिसदेशमें ईश्वरकीउपासनाकोछोड़केकाष्ठ पाषाण वृक्ष,घास,कुत्ते,गधे,औरमिट्टीआदिको पूजासे ऐसाही फलहोगा उत्तमकहांसे होगा फिरचार ब्राह्मणोंने एकलोहेकी पोलीमूर्त्ति रचवाई औरउसकोगुप्त कहींरखदिया फिरचारोंने कहा हमकोमहादेवने स्वप्नदियाहै किहमारा आपलोगमन्दिर रचैं तोकैलाशकोछोड़के आर्यावर्त्त देशमेंमैं वासकरूं औरसब कोदर्शनदेऊं ऐसासबदेशोंमेंप्रसिद्धकरदिया फिरमन्दिरसबलोगोंनेमिलकेरचवाया उसमेंनीचेऊपरऔरचारोंओर भींतमेंचु-

बड़ापत्थररक्खे जबमन्दिरपूराभया तबसबदेशोंमेंप्रसिद्धकरदिया
किउसदिनमध्यरात्रिमेंकैलाशसेमहादेवमन्दिरमेंआवेंगे जोदर्श-
नकरेगा उसकाबड़ाभाग्यऔरमरनेकेपीछेकैलाशकोवहचलाजा
यगा फिरउससमयमें राजा,बाबू,स्त्री,पुरुष औरलड़केवाले उस
स्थानमेंजुटेफिरउनचारोंधूर्त्तोंनेमूर्त्ति मन्दिरमेंकहींगुप्तरखदि-
ईथी औरमेलामेंऐसाप्रसिद्धकरदिया किमहादेव देवहै सोभूमि
को पगसेस्पर्शनकरेंगे किन्तुआकाशहीमेंखड़े रहेंगे ऐसाहमको
स्वप्नमेंकहाहै सोजबउसदिनपहररात्रिगई तबसबकोमन्दिरकेबा
हरनिकालदिएऔरकिवाड़बन्दकरकेवेचारोंभीतररहे फिरउस
मूर्त्तिकोउठाकेमन्दिरमेंलेगए औरबीचमें चुम्बकपाषाणकेआ-
कर्षणोंसेअधरआकाशमेंवहमूर्त्तिखड़ीरहीऔरउन्होनेखूबमन्दि-
रमेंदीपजोड़दिए फिरघण्टा,झल्लरी,शंख,रणसिंघाऔरनगारा
बजाएतबतोबड़ामेलामेंउत्साहभयाऔरउननेदरवाजेखोलदिए
फिरमनुष्योंकेऊपरमनुष्यगिरे औरमूर्त्तिकोआकाशमेंअधरख-
ड़ीदेखकेबड़े आश्चर्ययुक्तभए औरलाखहांरुपयोंकीपूजाचढ़ी अ-
नेकपदार्थपूजामेंआए फिरवेचारोंधूर्त्तब्राह्मणबड़ेमस्तहोगएऔ-
रमहन्तहोगए फिरनित्यमेलाहोनेलगा करोड़हांरुपयोंकामाल
होगया सोवहमन्दिरद्वारकाकेपासप्रभाक्षेत्रस्थानमेंथा औरउस
मूर्त्तिकानाम सोमनाथरक्खाथा फिरमहमूदगजनवीने सुनाकि
उसमन्दिरमेंबड़ामालहै ऐसासुनकेअपनेदेशसेसेनालेकेचढ़ा सो
जबपंजाबमेंआया तबहल्ला होगया और सोमनाथ कीओरचला
तबलोगोंनेजाना किसोमनाथके मन्दिरकोतोड़ेगा औरलूटेगा
ऐसासुनकेबहुतराजापण्डितऔरपुजारी सेनाले२केसोमनाथकी
रक्षाकेहेतुइकट्ठेभए सोमनाथकेपास जबवहडेढ़सै दोसैकोस दूर
रहा तबपण्डितोंसेराजाओंने पूछाकिमुहूर्त्त देखनाचाहिए हम
लोगआगेजाकेउनसेलड़ैं फिरपण्डितलोगइकट्ठे होके मुहूर्त्त दे-
खा परन्तुमुहूर्त्तबनानहीं फिरनित्यमुहूर्त्त होदेखतेरहे परन्तु

कोईदिनचन्द्रकोईदिन औरग्रहनहीबनेकोईदिनदिकशूलसम्मु-
खआया कोईदिनयोगिनी औरकोईदिनकालनहींबना सोपण्डि-
तोंकीबुद्धिको कालादिकोंकेभ्रमोंनेखालिया औरराजालोगबिना
पण्डितोंकीआज्ञासे कुछकर्त्तेनहीं थे सोप्रायःपण्डित औरराजा
लोगमूर्खहोथे जोमूर्खनहोतेतोपाषाणादिकमूर्त्ति क्योंपूजते औ-
रमुहूर्त्तादिकोंकेभ्रमोंसेनष्टक्योंहोते ऐसेविचारकर्त्तेहीरहे उस-
कोसेना दूसरीमंजलपरपहुंची तबराजालोगोंने पण्डितोंसेकहा
किअबतोजल्दीमुहूर्त्त देखो तबपण्डितोंनेकहाकिआजमुहूर्त्त अ-
च्छानहींहै जोयात्राकरोगे तोतुम्हारापराजयही होजायगा तब
वेब्राह्मणोंसेडरकेबैठेरहे तबमहमूदगजनवीधीरे२पांचछःकोश
केऊपरआकेठहरा औरदूतोंसे सबखबरमंगवाई किवेक्याकर्त्तेहैं
दूतोंनेकहाकिआपसमेंमुहूर्त्तविचाराकर्त्तेहैं महमूदगजनवीकेपा-
स३०हजारसेनाथी अधिकनहीं औरउनकेपास दो,तीनलाख
फौजथी फिरउसकेदूसरेदिनप्रातःकाल राजापण्डितपुजारीमि-
लकेमुहूर्त्त विचारनेलगे सोसबपण्डितोंनेकहाकि आजचन्द्रमा
अच्छानहीं औरभीग्रहक्रूरहैं पुजारीलोग औरपण्डित मूर्त्तिके
आगेजाकेगिरपड़े औरअत्यन्तरोदनकिया हेमहाराज इसदुष्ट
कोखालेओ औरअपनेसेवकोंकासहायकरो परन्तु वहलोहाक्या
करसक्ताहै औरसबसेकहनेलगेकि आपलोगकुछचिन्तामतकरो
महादेवउसदुष्टकोऐसेहीमारडालेंगे वावहमहादेवकेभयसे य-
हांहीसेभागजायगा उसकाक्यासामर्थ्य है किसाक्षात् महादेवके
पासआसके औरसन्मुख दृष्टिकरसके ऐसेसब परस्पर बकरहेथे
फिरकुछलड़ाईभई औरमुसल्मानभीडरे किविजयहोगावापरा-
जय उससमयमेंऔरपुस्तकफैलारके बहुतसेमन्त्रोंकाजपऔरपा-
ठकर्त्तेथे औरकहतेथे किअबदेवताऔरमन्त्रहमारापाठसिद्धहो-
ताहै सोवहवहांहीं अन्धाहोजायगा सोबड़ीमण्डलीकोमण्डली
जप,पाठऔरपूजाकररहीथी औरमूर्त्तिकेसामनेऔंधेगिरकेपुकार

तेथे एकसभालगरहीथी राजाऔरपण्डितविचारतेथे मुहूर्त्तको उससमयमेंउसके निकटएकपर्वतथाऔरमहमूदगजनवीनेएकतो पलगाई औरसभाकेबीचमें गोलामाराउससमयकोईदांतधावन करताथा कोईसोताथाऔरकोईस्नानकरताथाइत्यादिकव्यवहारोंसेगाफिलथे सोउसगोलेसे सबपण्डितलोग पोथीपत्राछोड़के भागे औरराजालोगभीभागउठे तथासेनाभीअपनेरस्थानोंसेभागउठी औरबहमहमूदगजनवीसेनासहितधावाकरके उसस्थान परझटपहुंचा उसकोदेखकेसबभागउठे भागेभएपण्डितपुजारी सिपाही तथाराजाओंको उननेपकड़लिया औरबांधलिया और बहुतसोमारपड़ीउनकेऊपर तथामारभीडालाकिसीको औरबहुतभागगए क्योंकिउनपण्डितोंकेउपदेशसे सोलापहिरकेबैठथे औरकथासुनीथीकिमुसल्मानोंकास्पर्शनहोकरनाऔरउनकेदर्शनसेधर्मजाताहै ऐसीमिथ्याबातसुनकेभागउठे फिरमन्दिरकेचारोंओर महमूदगजनवीकीसेनाहोगई औरआपमन्दिरकेपास पहुंचा तबमन्दिरकेमहंत औरपुजारीहाथजोड़केखड़े भए उनमे पुजारियोंने कहाकिआपजितनाचाहें उतनाधनलेलिजिए परन्तु मन्दिरऔरमूर्त्तिकोनतोड़िए क्योंकिइससे हमलोगोंकी बड़ीआजीविकाहै ऐसासुनकेमहमूदगजनवीबोलाकि हमबुतबेचनेवाले नहीं किन्तु उनको तोड़नेवालेहैं तबतोबड़रे औरकहाकि एक करोड़रुपैया आपलेलिजिए परन्तु इसको मततोड़िए ऐसेकहते सुनतेतोनकरोड़तककहापरन्तुमहमूदगजनवीनेनहींमाना और उनकोमुसकचढ़ालिया फिरउनकोलेकेमन्दिरमेंगयाऔरउनसे पूछाकि खजानाकहांहैसोकुछतोउसनेबतलादियाफिरभीउसको लोभआयाकि औरभीकुछहोगा फिरउनकोमारापीटा तबउनने सबखजानाबतलादिया फिरमन्दिरमेंआकेसबलीलादेखी फिर महन्तऔरपुजारियोंसेकहाकि तुमनेदुनियाकोऐसो धूर्त्ताकरकेठगलिया क्योंकिलोहेकीतोमूर्त्ति बनाईहै इसकेचारोंऔरचुम्ब-

कपाषाणरखनेसे आकाशमें अधरखड़ीहै इसकानामरखदियाहै महादेव यहतुमनेबड़ीधूर्त्ताकियाहै फिरउसमन्दिरकाशिखर उननेतोड़वादिया जबवहचुम्बक पाषाणअलगहोगया तबमूर्त्ति जमीनमें चुम्बकपाषाणमेंलगगई फिरसबभीतें तोड़वाडाली सब चुम्बककेनिकलनेमें मूर्त्ति जमीनमेंगिरपड़ी फिरउसमूर्त्तिकोम- हमूदगजनवीने अपनेहाथमेंलोहेकेघनको पकड़केमूर्त्तिकेपेटमें मारा, उसमूर्त्ति फटगई उसमें बहुतजवाहिरातनिकला क्योंकि होराआदिकअच्छे२रत्नवेपातेथे तबमूर्त्ति हीमेंरखदेतेथें फिर उनमहंतऔरपुजारियोंकोखूबतंगकिया औरफुसलायाभी फिर उननेभयसेसबबतलादिया उनसेकहाकिजोतुम सबसच्चा२बतला- देओगे तोतुमकोहमछोड़देंगे तबउननेसोना, चांदीके पात्रोंको भीबतलादिए जोकुछथा औरउसने सबलेलिया सोअठारह क- रोडकामालउसमन्दिरसेउसनेपाया फिरबहुतसीगाड़ीऊंटऔ रमजूरउसकेपासथें औरभीवहांसेपकड़लिए उनकेऊपरसबमा- लकोलादकेअपनेदेशकीओरचला सोथोड़ेसेथोड़े पण्डितमहंत औरपुजारीतथाक्षत्रिय, वैश्य, ब्राह्मण औरशूद्रतथास्त्रीबालकदश हजारतकपकड़केसंगलेलिएथेंउनकायज्ञोपवीततोड़डालामुखमें थूकदिया औरथोड़े२सूखेचनेनित्यखानेकोदेताथा औरजाजरूर मफाकरवावै पिसवावै घासछिलवावै औरघोड़ोंकीलीदउठवावै औरमुसल्मानोंकेजूठेबरतनमजवावै औरसबप्रकारकीनीचसेवा उनसेलेऐसेकराता२जबमक्काकेपासपहुंचा तबअन्यमुसल्मानोंने कहाकिइनकाफरोंकायहांरखनाउचितनहीं फिरउनकोबुरीदु- शासेमारडाला क्योंकिउनकेकुरानमें लिखाहै किकाफरोंकोलूट ले उनकोस्त्रीछीनले झूठफरेबसेउनकासबमालले२ औरउनको मारडाले तोभीकुछदोषनहीं (किन्तु उसमुसल्मानको बिहिस्तअ- र्थात्उसकोस्वर्गवासमिलताहै)वहखुदाकेघरमेंबड़ामान्यहोताहै फिरकाफरवहकहाताहै जोकिमुहम्मदके कलमाकोनपढ़ै और

कुरानकेऊपरविश्वासनलेआवै उसकोबिगाड़नेऔरमारनेमेंकुछदोषनहीं ऐसामुसल्मानोंकेमतमेंलिखाहै इससे उनको अन्याय करनेमेंकुछभयनहींहोता औरजोकुछपापहोताहै सोतोबाशब्दसे छूटजाताहै इससे वेपापकरनेमेंभयक्योंकरेंगे ऐसेहोबारहदफेवह आयाहै औरदोतीनबारमथुराकीभीदुर्दशाऐसीकिईथी औरजहां २वहगयाथा वहां२ऐसीही उसदेशकोदुर्दशाकिईथी औरडांकूकीनांईवहआताथा मारकेजोकुछपाताथा सोअपनेदेशमेंलेजाताथा उसदिनसेमुसल्मान्लोगदरिद्रसेधनाढ्यहोगएहैं सोआर्यावर्त्तप्रतापसेआजतकभीधनचलाआताहै औरआर्यावर्त्त देशअपनेहीं दोषोंसेनष्टहोताजाताहै सोहमकोबड़ाअपशोचहैकिऐसाजोदेश औरइसप्रकारकाधनजिसदेशमेंहै सोदेशबाल्यावस्थामेंबिवाहबिद्याकात्याग मूर्त्तिपूजनादिक पाखण्डोंकोप्रवृत्ति नानाप्रकार के मिथ्यामजहबोंकाप्रचार बिषयासक्तिऔरवेदबिद्याकालोपजबतक एदोषरहेंगे तबतकआर्यावर्त्त देशवालोंको अधिक२दुर्दशाहोहोगी औरजोसत्यविद्याभ्यास तथासुनियम,धर्मऔरएकपरमेश्वरकीउपासना इत्यादिकगुणोंकोग्रहणकरैं तोसबदु:खनष्ट होजांय औरअत्यन्तआनन्दमेंरहैं फिरचारब्राह्मणोंनेविचारकियाकिकोईक्षत्रियराजाइसदेशमें अच्छानहींहै इसकाकुछउपायकरनाचाहिए वेब्राह्मणचारोंअच्छे थे क्योंकिसबमनुष्योंकेऊपरकृपाकरके अच्छीबातबिचारी यहअच्छे पुरुषोंकाकामहै नोचकानहीं फिर उननेक्षत्रियोंकेबालकोंमेंसे चारअच्छे बालकछांटलिए औरउन क्षत्रियोंसेकहाकि तुमलोग खानेपोनेकाप्रबन्ध बालकोंकारखना उनसेस्वीकारकिया औरसेवकभीसाथरखदिए वेसबआबूराजपर्वतकेऊपरजाकेरहेऔरउनबालकोंकोअक्षराभ्यासऔरअच्छेव्यवहारोंकीशिक्षाकरनेलगे फिरउनकायथाबिधि संस्कारभीउननेकिया सन्ध्योपासन औरअग्निहोत्रादिक वेदोक्तकर्मोंकी शिक्षा उननेकिया फिरव्याकरणछ:दर्शनकाव्यालङ्कारसूत्रऔरसनातन

कोश यथावत्पदार्थविद्या उनको पढ़ाई फिर वैद्यकशास्त्र तथा गान विद्या, शिल्पविद्या, और धनुर्विद्या अर्थात् युद्धविद्या भी उनको अच्छीप्रकार से पढ़ाई फिर राजधर्म जैसा कि प्रजा से वर्त्तमान करना और न्याय करना दुष्टों को दण्ड देना श्रेष्ठों का पालन करना यह भी सब पढ़ाया ऐसे पसीच वा २६ बरस की उमर उनकी भई और उन पण्डितों के स्त्रियों ने ऐसे ही चार कन्या रूपगुणसम्पन्न उनको अपने पास रखके व्याकरण, धर्मशास्त्र, वैद्यक, गानविद्या, तथा नानाप्रकार के शिल्पकर्म उनको पढ़ाए और व्यवहार की शिक्षा भी किया तथा युद्ध विद्या की शिक्षा गर्भ में बालकों का पालन और पतिसेवा का उपदेश भी यथावत् किया फिर उन पुरुषों को परस्पर चारों का युद्ध करना और कराने का यथावत् अभ्यास कराया ऐसे चालीस२ वर्ष के वे पुरुष भए बीस२ वर्ष की वे कन्या भईं तब उनकी प्रसन्नता और गुणपरीक्षा से एक से एक का विवाह कराया जब तक विवाह नहीं भया था तब तक उन पुरुषों की और कन्याओं की यथावत् रक्षा किई गई थी इस से उनको विद्या बल, बुद्धि, तथा पराक्रमादिक गुण भी उनके शरीर में यथावत् भए थे फिर उन से ब्राह्मणों ने कहा कि तुम लोग हमारी आज्ञा करो तब उन सबों ने कहा कि जो आपकी आज्ञा होगी सोई हम करेंगे तब उनने उन से कहा कि हमने तुम्हारे ऊपर परीश्रम किया है सो केवल जगत् के उपकार के हेतु किया है सो आप लोग देखो कि आर्यावर्त्त में गदर मच रहा है सो मुसल्मान् लोग इस देश में आके बड़ी दुर्दशा करते हैं और धनादिक लूट के ले जाते हैं सो इस देश की नित्य दुर्दशा होती जाती है सो आप लोग यथावत् राजधर्म से पालन करो और दुष्टों को यथावत् दण्ड देओ परन्तु एक उपदेश सदा हृदय में रखना कि जब तक वीर्य की रक्षा और जितेन्द्रिय रहोगे तब तक तुमारा सब कार्य सिद्ध होता जायगा और हमने तुम्हारा विवाह अब जो कराया है सो केवल परस्पर रक्षा के हेतु किया है कि तुम और तुमारी स्त्रियां संग२ रहोगे तो बिगड़ोगे नहीं और केवल सन्तानोत्पत्तिमात्र विवाह का प्रयोजन

जानना और मनसे भी परपुरुष वा परस्त्री का चिन्तन भी नहीं करना और विद्या तथा परमेश्वर की उपासना और सत्यधर्म में सदा स्थित रहना जबतक तुमारा राज्य न जमैं तबतक स्त्रीपुरुष दोनों ब्रह्मचर्याश्रम में रहो क्योंकि जो क्रीड़ा मक्त होगे तो बलादिक तुम्हारे शरीर से न्यून होजांयगे तो युद्धादिकों में उत्साह भी न्यून होजायगा और हम भी एक२ के साथ एक२ रहेंगे सो हम और आप लोग चलैं और चलके यथावत् राज्य का प्रबन्ध करैं फिर वे वहां से चले वे चार इन नामों से प्रख्यात थे चौहान पवार सोलंकी इत्यादिक उनने दिल्ली आदिक में राज्य किया था कुछ२ प्रबन्ध भी भया था जब राज्य करने लगे कुछ काल के पीछे सहाबुद्दीन गोरी एक मुसल्मान था सो भी उसी प्रकार इस देश में आया था कनोज आदिक में उस समय कनोज का बड़ा भारी राजा था सो इसके भय के मारे अपने हीं जाके उनको मिला और युद्ध कुछ भी नहीं किया फिर अन्य चव्हयुद्ध जहां तहां किया सो उसका विजय भया और आर्यावर्त वालों का पराजय भया फिर दिल्ली वालों से कोई वक्त उसका युद्ध भया उस युद्ध में पृथिराज मारा गया और उसने अपना सेनाध्यक्ष दिल्ली में रखा के हेतु रखदिया उसका नाम कुतुबुद्दीन था वह जब वहां रहा तब कुछ दिन के पीछे उन राजाओं को निकाल के आपराजा भया उस दिन से मुसल्मान लोग यहां राज्य करने लगे और सबने कुछ२ जुलुम किया परन्तु उनके बीच में से अकबर बादशाह अच्छा भया और न्याय भी संसार में होने लगा सो अपनी बहादुरी से और बुद्धि से सब गदर मिटादिया उस समय राजा और प्रजा सब सुखी थे परन्तु आर्यावर्त्त के राजा और धनाढ्य लोग बिक्रमादित्य के पीछे सब विषय सुख में फसर हेथे उस्से उनके शरीर में बल, बुद्धि, पराक्रम और शूरवीरता प्रायः नष्ट होगई थीं क्योंकि सदा स्त्रियों का संग गाना बजाना, नृत्य देखना, सोना अच्छे कपड़े और आभूषणों को धारण करना नाना प्रकार के अतर और अञ्जन नेत्र में लगाना इस्से उनके शरीर बड़े कोमल होगए थे कि थोड़े से ताप वा शीत अथवा वायु का

सहननहींहोसकताथा फिरवेयुद्धक्याकरसकेंगे क्योंकिजोनित्यस्त्रि-योंका संगकरेंगे औरविषयभोगउनकाभोशरीरप्राय:स्त्रियोंकीनाईंहोजाताहै वेकभीयुद्धनहींकरसक्ते क्योंकिजिनकेशरीर दृढ़रोग रहित बल,बुद्धिऔरपराक्रम तथावीर्यकीरक्षा औरविषयभोगमें नहींफसना नानाप्रकारकीविद्याकापढ़ना इत्यादिककेहोनेसेसब कार्यसिद्धहोसक्तेहैं अन्यथानहीं फिरदिल्लीमें औरंगजेबएकबा-दशाहभयाथा उननेमथुरा,काशी,अयोध्याऔरअन्यस्थानमेंभी जा२के मन्दिरऔरमूर्त्तियोंको तोड़डाला औरजहां२बड़े२म-न्दिरथे उस२स्थानपरअपनी मसजिदबनादिया जबवहकाशीमें मन्दिरतोड़नेकोआया तबविश्वनाथकूएमेंगिरपड़े औरमाधव एकब्राह्मणकेघरमेंभागगए ऐसाबहुतमनुष्यकहतेहैं परन्तुहम-कोयहबातझूठमालूमपड़तीहै क्योंकिवहपाषाणवाधातुजड़पदार्थ केसेभागसक्ताहै कभीनहीं सोऐसाभयाकि जबऔरंगजेबआया तबपुजारियोंनेभयसेमूर्त्ति उठाकेऔरकूएमेंडालदिया औरमा-धवकीमूर्त्ति उठाकेदूसरेकेघरमेंछिपादिया किवहनतोड़सके सो आजतकउसकूंएकाबड़ादुर्गन्धजलउसकोपीतेहैं औरउसीब्राह्म-णकेघरमे माधवकीमूर्त्ति कोआजतकपूजाकरतेहैं देखनाचाहिए किपहिलेतोसोना,चांदीकीमूर्त्तियांबनातेथें तथाहीराऔरमा-णिक को आंख बनाते थे सो मुसल्मानों के भय से और दरिद्र-तासे पाषाण,मिट्टी,पीतल,लोहा, और काष्ठादिकोंकी मूर्त्ति-यांबनातेहैं सोअबतकभीइनसत्यानाशकरनेवाले कर्मकोनहींछो-ड़देते क्योंकिछोड़ेंतो तबजोइनकीअच्छीदशाआवे इनकीतोइन कर्मोंसेदुर्दशाहोहोनेवालीहै जबतककोइनकोनहींछोड़ते और महाभारतयुद्धकेपहिलेआर्यावर्त्त देशमेंअच्छे२राजाहोतेथें उ-नकीविद्या,बुद्धि,बल,पराक्रम तथाधर्मनिष्ठा औरशूरवीरादिक गुणअच्छे२थ इससेउनकाराज्य यथावत्होताथा सोइक्ष्वाकु,सग-र,रघु,दिलीपआदिकचक्रवर्त्तीहुएथे औरकिसीप्रकारकापाखण्ड

उनमेंनहींथा सदाविद्याकीउन्नति औरअच्छे२कर्मआपकरतेथे तथाप्रजासेकरातेथे औरकभीउनका पराजयनहींहोताथा तथा अधर्मसेकभीनहींयुद्धकर्तेथेऔरयुद्धसेनिवृत्तनहींहोतेथे उससमय सेलेकेजैनराज्यकेपहिलेतकइसीदेशके राजाहोतेथे अन्यदेशकेन- हीं सोजैनोंने औरमुसल्मानोंने इसदेशको बहुत बिगाड़ाहै सो आजतकबिगड़ताहीजाताहै सोआजकालअंगरेजकेराज्यहोनेसे उनराजाओंकेराज्यसेसुखभयाहैक्योंकिअंगरेजलोगमतमतान्त- रकीबातमें हाथनहींडालते औरजोपुस्तक अच्छापातेहैं उसको अच्छी प्रकाररक्षाकर्तेहैं औरजिसपुस्तककेसौरुपैएलगतेथे उस पुस्तककाछापाहोनेसेपांचरुपैयोंपरमिलताहै परन्तु अङ्गरेजोंमें भीएककामअच्छानहींहुआ जोकिचित्रकूटपर्वतमहाराजअमृ- तरायजीका पुस्तकालयकोजलादियाउसमें करोड़हांरुपैएके ला- खहांअच्छे२पुस्तकनष्टकरदिए जोआर्यावर्त्तवासीलोग इससमय सुधरजांयतोसुधरसक्ते हैं औरजोपाखण्डहीमेंरहेंगें तोअधिक२ होनाशहोगा इनकाइसमेंकुछसन्देहनहीं क्योंकिबड़े२आर्यावर्त देशकेराजाऔरधनाढ्यलोगब्रह्मचर्याश्रमविद्याके प्रचारधर्मसेसब व्यवहारोंकाकरना औरवेश्यातथापरस्त्रीगमनादिकोंकात्यागक- रैं तोदेशकेसुखकीउन्नतिहोसक्तीहै परन्तुजबतकपाषाणादिकमू- र्त्तिपूजन बैरागी,पुरोहित,भट्टाचार्यऔरकथाकहनेवालोंकेजालों सेछूटें तबउनकाअच्छाहोसक्ताहै अन्यथानहीं प्रश्न मूर्त्ति पूजना- दिक सनातनसेचलेआएहैं उनकाखण्डनक्योंकर्तेहो उत्तर यह मूर्त्ति पूजनसनातनसेनहीं किन्तु जैनोंकेराज्यहोनेसेआर्यावर्त्तमें चलाहै जैनोंनेपरशनाथ,महावीर,जैनेन्द्र,ऋषभदेव,गोतम०क- पिलआदिकमूर्त्तियोंकेनामरक्खेथें उनकेबहुत२चेलेभयेथें औ- रउनमेंउनकोअत्यन्तप्रीतिभीथी इस्से उनचेलोंनेअपनेगुरुओंको मूर्त्ति बनाकेपूजनेलगे मन्दिरबनाके फिरजबउनको शंकराचार्य नेपराजयकरदिया इसकेपीछेउक्तप्रकारसेब्राह्मणोंनेमूर्त्ति यांरची

औरउनकानाम महादेवआदिकरखदिए उनमूर्त्तियोंसेकुछवि-
लक्षणबनानेलगे औरपुजारीलोगजैन तथामुसल्मानोंकेमन्दिरों
कीनिन्दाकरनेलगे। नवदेद्यावनींभाषांप्राणै:कण्ठगतैरपि। ह-
स्तिनाताड्यमानोपि नगच्छेज्जैनमन्दिरम्॥१॥ इत्यादिकश्लोक
बनाएहैं किमुसल्मानोंकीभाषाबोलनीऔरसुननीभीनहीचाहिए
औरमत्तहस्ती अर्थात्पागलपीछेमारनेकोदौड़े सोजैनकेमन्दिर
मेंजानेसेबचसक्ताभीहोय तोभीजैनकेमन्दिरमेंनजाय किन्तु हाथी
केसन्मुखमरजाना उससे अच्छाऐसे२ निन्दाकेश्लोकबनाएहैं सो
पुजारीपण्डितऔरसम्प्रदायीलोगोंनेचाहाकि इनकेखण्डनकेवि-
ना हमारीआजीविकानबनेगी यहकेवलउनकामिथ्याचारहै कि
मुसल्मानकीभाषापढ़नेमें अथवाकोईदेशकोभाषापढ़नेमें कुछदो-
षनहीहोता किन्तु कुछगुणहीहोताहै। अपशब्दज्ञानपूर्वकेशब्द-
ज्ञानेधर्मः। यहव्याकरणमहाभाष्यकावचनहै इसकायहअभि-
प्रायहै किअपशब्दज्ञानअवश्यकरनाचाहिए अर्थात्सबदेशदेशा-
न्तरकीभाषाकोपढ़नाचाहिए क्योंकिउनकेपढ़नेसेबहुतव्यवहारों
काउपकारहोताहै औरसंस्कृतशब्दकेज्ञानकाभीउनकोयथावत्
बोधहोताहै जितनीदेशोंकीभाषाजानें उतनाहीपुरुषकोअधिक
ज्ञानहोताहै क्योंकिसंस्कृतकेशब्द बिगड़केदेशभाषा सबहोतीहै
इस्से इनकेज्ञानोंसे परस्परसंस्कृतऔरभाषाकेज्ञानमें उपकारही
होताहै इसीहेतुमहाभाष्यमेंलिखाकिअपशब्दज्ञानपूर्वकशब्दज्ञा-
नमें धर्महोताहै अन्यथानहीं क्योंकिजिसपदार्थका संस्कृतशब्द
जानेगा औरउसके भाषा शब्दकोनजानेगा तोउसके यथावत्प-
दार्थकाबोध औरव्यवहारभी नहींबलसकेगा तथामहाभारतमें
लिखाहै कियुधिष्ठिरऔरविदुरादिकअरबीआदिक देशभाषाको
जानतेथे सोईजबयुधिष्ठिरादिकलाक्षागृहको औरचले तबविदुर
जीनेयुधिष्ठिरजीकोअरबीभाषामेंसमझाया औरयुधिष्ठिरजीने अ-
बीभाषासेप्रत्युत्तरदिया यथावत्उसकोसमझलिया तथाराक्षसू-

य और अश्वमेधयज्ञमें देशदेशान्तर तथाद्वीप द्वीपान्तरके राजा और प्रजास्थआएथें उनकापरस्पर देशभाषाओंमें व्यवहारहोता था तथाद्वीपद्वीपान्तरमेंयहांके लोगजातेथ और वेइस देशमें आतेथे फिरजोदेशदेशान्तर कीभाषा नजानते तोउनका व्यवहार सिद्धकैसेहोता इस्से क्याआयाकि देशदेशान्तरको भाषाकेपढ़नें औरजाननेमें कुछदोषनहीं किन्तु बड़ाउपकारहीहोताहै और जितनेपाषाणमूर्त्ति के मन्दिरहैंवेसबजैनोंहीकेहैं सोकिसीमन्दिर मेंकिसीकोजानाउचितनहीं क्योंकिसबमेंएकहीलीलाहै जैसीजैन मन्दिरोंमें पाषाणादिकमूर्त्तियांहै वैसीआर्य्यावर्त्त वासिओंकेमन्दिरोंमें भी जड़मूर्त्तियां हैं कुछनाम विलक्षण२ इन लोगों ने रखलिएहैं औरकुछ विशेषनहीं केवल पक्षपातहीसे ऐसाकहते हैं किजैनमन्दिरोंमें नजाना औरअपनें मन्दिरोंमेंजाना यहसब लोगोंने अपना२मतलब सिधुबनालियाहै आजीविकाकेहेतु (प्रश्न) वेदशास्त्रमेंमूर्त्ति पूजनलिखाहै औरवेदमन्त्रोंसे प्राणप्रतिष्ठाहो तीहै उसमेंदेवकोशक्तिभीआजाताहै फिरआपखण्डन क्योंकरतेहैं (उत्तर) वेदशास्त्रमेंमूर्त्ति पूजनकहींनहींलिखा औरनप्राणप्रतिष्ठा औरनकुछ उसमेंशक्तिआतीहै प्रश्न सहस्रशीर्षापुरुषः उद्बुध्यस्वाग्ने प्राणदाअपानदा ॥ इत्यादिकमन्त्रोंसे षोड़शोपचारपूजाऔर प्राणप्रतिष्ठाभीहोतीहै तथाप्रतिष्टा मयूखग्रन्थऔर तंत्रग्रन्थोंमें आत्मेहागच्छतुसुखंचिरन्तिष्ठतुस्वाहा, ॥ प्राणाइहागच्छन्तु सुखंचिरन्तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ इन्द्रियाणिइहागच्छन्तु सुखंचिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा ॥अन्तःकरणमिहागच्छतुसुखंचिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा॥ इत्यादिकलिखेहैं फिरकैसे खण्डनहोसक्ताहै उत्तर इनमन्त्रोंकेअर्थनहीजाननेसेआपलोगोंकोभ्रमहोताहै क्योंकिपुरुषनामपूर्णईश्वरकाहै सहस्रशीर्षाइत्यादिक पुरुषकेविशेषणहैं/सोपुरुषकेनिराकारहोनेसे शिरादिकअवयव कभीनहींहोसक्ते औरजो साकार बनता तोव्यापकनहोबनसक्ता। तथाहिपूर्णत्वात्पुरुषः। इत्यादि-

कनिरुक्तमेंअर्थकियाहै सोउसकासहस्रशीर्षा इत्यादिकविशेषणहैं उसकाअर्थइसप्रकारकाहोताहै।सहस्राणिशिरांसिसहस्राण्यक्षीणितथा सहस्राणिपादाः असंख्याताःयस्मिन्पूर्णपुरुषेसः सहस्रशीर्षासहस्राक्षः सहस्रपात्पुरुषः॥ जितनेशिर,जितनीआंख, और जितनेपग, असंख्यात वेसवपूर्णजो परमेश्वरउसीमें वासकरते हैं क्योंकिसवजगत् काअधिकरण परमेश्वरहीहै और बहुब्रीहि समासहो अन्यपदार्थकेहोनेसेहोताहै तथासहस्रपात्शब्दकेहोने से बहुब्रीहिनिश्चितहोताहै व्याकरणकीरीतिसे सोईअर्थ मन्त्रके उत्तरार्द्धमेंस्पष्टहै। सभूमिꣳसर्वतस्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्। पुरुषएवेदꣳसर्वं वेदाहमेतम्पुरुषम्॥ इत्यादिकउत्तरमन्त्रोंसेयहीअर्थनिश्चितहोताहै औरसवजगतकीउत्पत्तिभीपुरुषमेंलिखीहै विनापरमेश्वरके किसीमेंनहोघटसक्ती इससे जोकोईकहैकिइनमन्त्रोंसे षोड्शोपचारपूजाहोतीहै उसकीवातमिथ्याजाननी और प्राणप्रतिष्ठा शब्दकायहअर्थहै किप्राणकीस्थिति औरस्थापन का होना जोमूर्त्तिमें प्राणआते तोमूर्त्ति चेतनहीहोजाती सोजैसी पहिलेजड़थी वैसीहीसदारहतीहै क्योंकिचलना,फिरना,खाना, पीना,वैठना,देखनाऔरसुनना इत्यादिकव्यवहारवहमूर्त्ति नहीं करती इससे जोकोईकहैकिप्राणप्रतिष्ठाहोतीहै यहवातउसकीमिथ्याजाननी।औरमूर्त्ति ठसहोतीहै उसमेंप्राणके जानेआनेकाछिद्रअवकाशहीनहीं फिरप्राणउसमेंकैसेघुससकेगा औरजोकहैंकि हमप्राणप्रतिष्ठाकरतेहैं उनसेकहनाचाहिए किआपलोगमुरदेके शरीरमेंक्योंनहीप्राणप्रतिष्ठाकरतेहैं किसोराजा,वाबू औरसवजगतके मनुष्योंकोमुरदेमें प्राणप्रतिष्ठाकरके जिलादियाकरो तो तुमलोगोंकोवहुतधनमिलेगा औरवड़ीप्रतिष्ठाहोगी फिरक्योंनहीं ऐसीवातकरतेहो।जोवेकहैंकिजैसापरमेश्वरनेनियमकरदिया है वैसाहीमरनेजीनेकाहोताहै उसकोमरेपीछे कोईनहींजिलासक्ता तोउनसे हमलोगपूछतेहैं किजिनपदार्थोंको परमेश्वरने

प्राणऔरचेतनतारहितजड़बनाएहैं उनकोंतुमचेतन औरप्राण
सहितकैसेबनासकोगे कभीनहीं औरजोकहैंकिदेवऔरसिद्धपुरु-
षन्हतककोजिलादेतेहैं उनसेपूछाजाताहै किवेदेवऔरसिद्ध क्यों
मरजातेहैं इससे प्राणप्रतिष्ठाकोसबबातझूठीहै प्राणदाअपानदा
इनकाअर्थपूर्वार्द्धमेंकरदियाहै वहींदेखलेना औरउद्बुध्यस्वाग्ने।
इसकाभीअभिप्रायवहींदेखलेना। आत्मेहागच्छतुचिरंसुखंतिष्ठ-
तुस्वाहा। इत्यादिसंस्कृतमिथ्याही लोगोंनेरचलिया कोई सत्य
शास्त्रमें नहींहैं देखनाचाहिए कि। शन्नोदेवीरभिष्टयआपोभ-
वन्तुपीतये शंयोरभिस्रवन्तुनः १॥ अग्निर्मूर्द्धा०उद्बुध्यस्वाग्ने०
इत्यादिकमन्त्रोंमेंकहींशनैश्चर,मङ्गल औरबुधादिकग्रहोंकानाम
भीनहींहै परन्तुविद्याहीनहोनेसे आजीविकाकेलोभसे ब्राह्मणों
नेजालरचरक्खाहैकिएग्रहकोकांडीहैं सोकिसीनेऐसाविचाराकि
ग्रहोंकामन्त्रपृथक्निकालनाचाहिए सोमन्त्रोंकाअर्थतोनहींजा-
नता किन्तुअटकलसेउसनेयुक्तिरची किशनैश्चरशब्दके आदिमें
तालव्य शकार है। और शन्नोदेवी इस मन्त्र के आदि में भी
तालव्यशकार है इससे यहीशनैश्चरकामन्त्रहै तथापृथिव्याश्रयम्।
इससे परमेश्वरकाग्रहणहोताहै इसशब्दसेमङ्गलकोलिया औरउ-
द्बुध्यस्वक्रियासेबुधकोलिया देखनाचाहिए किशंहै सुखकानाम
उद्बुध्यस्वबुधअवगमनेधातुकीक्रियाहै इससे बुधकोलियाइत्यादिक
भ्रमसेग्रहोंकोग्रहणकियाहै सोयहकथाकेलालबुझक्कड़कीनांई
है जैसेकिकिसीगांवमें एकमूर्खपुरुषरहताथा उसकानामलाल
बुझक्कड़था कभीकिसीराजाकाहाथी उसगांवकेपास सेचलागया
था औरकिसीनेदेखानहींथा फिरजबप्रातःकाल लोगउठके बा-
हरचले तबखेतऔरमार्गमें हाथीकेपगकेचिन्हदेखके बड़े आश्च-
र्यभए औरलालबुझक्कड़को बुलाकेपूछा किएहक्याहै तबवहबड़ा
रोनेलगाफिररोकेहंसा तबसबनेउससे पूंछाकितुमरोकेक्योंहंसेतब
उसनेउनसेंकहा किजबमैंमरजाऊंगा तबऐसीऐसीबातोंकाउत्तर

कौनदेगा इसहेतुमैंरोया औरहसाइसहेतु किइसकाउत्तरबड़ा
सुगमहै तोभीतुमनेनहींजाना इसहेतुमैंहसा तबउन्ने पूछा कि
इसकातोउत्तरदे तबवहबोलाकि लालबुझक्कड़बुझिया औरनबू-
झाकोइ । पगमेंचक्कीबांधके हिरणाकूदाहोइ ॥ हिरनाअपनेपग
में चक्कीकेपाट बांधके कूदता२ चलागयाहै उसकेपगके एचिन्ह
हैं तबतोवेसुनके बड़ेप्रसन्नभए औरसबने कहाकि लालबुझक्कड़
बड़े पण्डितऔरबुद्धिमान्हैं वैसेहीपाषाणमूर्त्तिकेपूजनविषय औ-
रवेदमन्त्रोंकेविषयमें इनपण्डितलोगोंने मिथ्याकोलाहल करर-
क्खाहै इससे वेदकोनिन्दा औरअप्रतिष्ठाकररक्खीहै वेदोंमेंऐ-
सी२झूठबातहोती तोवेदहीसच्चनहोसक्ते इससे यहीनिश्चयकरना
किअपने२मतलबकेहेतु मिथ्या२कल्पना लोगोंनेकरदियाहै और
वेदमेंसच्चबातहीहै इनबातोंका लेशभीनहींहै । प्रश्न) वेदअनन्तहैं
क्योंकि यजुर्वेदकीशाखा १०१ सामवेदकी १००० ऋग्वेदकी २१
औरअथर्ववेदकी ९ शाखाहैं सोबहुतशाखा गुप्तहोगईहैं उनमें
पाषाणपूजनादिकलिखाहोगा तुमक्याजानतेहो । अनन्ता वै वे-
दाः यहब्राह्मणकोश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहै किवेदअनन्तहैं
अर्थात्अनन्तशाखाहैं(उत्तर)शाखाजोहोतीहै सोस्वजातीय हो-
तीहैं क्योंकिजिसवृक्षकीशाखाहोतीहै उसवृक्षकेतुल्यपत्र,पुष्प,फ-
ल,मूलऔरस्वाद तथारूपऐसोही जो२शाखाप्रसिद्धहैं उन२शा-
खाओंकीलुप्तशाखाभीअवश्यहोगीं किजैसाइनमेंसत्य२अर्थप्रति-
पादितहैं वैसाउनमें भीहोगा इससे जाना जाताहै किइनप्रसिद्ध
शाखाओंमें मूर्त्तिपूजनकालेशनहींहै तोलुप्तशाखाओंमेंभीनहीं
होगा ऐसाजोकोईकहै किआपनेक्या वेशाखादेखीहैं फिरआप
लोगक्योंकहतेहो किउनलुप्तशाखाओंमें लिखाहोगा औरआप
लोगअनुमानभीनहींकरसक्ते क्योंकिइनशाखाओंमेंथोड़ासाभी
प्रतिपादनहोता तोउनशाखाओंमेंभी अनुमानहोसक्ता अन्यथा
नहीं औरजोहठसेमिथ्याकल्पनाकर्तेहो तोहमभीकरसक्ते हैं कि

उनशाखाओंमेंचोरी, मिथ्याभाषण, विश्वासघातक, कन्या, माता, भगिनी, इनसेसमागमकरना वेश्यागमनपरस्त्रीगमनकरना और वर्णाश्रमव्यवस्थानहोगीइत्यादिकअनुमानमिथ्याकरसक्ते हैं और फिरतुमनेभी वेशाखादेखीनहीं वाकोईनहींदेखसक्ता फिरकैसे निश्चयहोगा कभीनहोगा क्योंकिकभीभ्रमकी निवृत्तिनहोगी न जानेउनशाखाओंमेंब्राह्मणकानामचांडालहोय औरचाण्डालका नामब्राह्मणहोय इससेऐसाआपलोग मिथ्याअनुमाननकरैं और इनशाखाओंकामूलभीतोकोईहोगाऔरजोमूलनहोगा तोशाखा कैसी इससे जोवेद पुस्तकहैं वेईसब शाखाओंकेमूलहैं औरशाखा व्याख्यानोंकीनाईं ब्रह्मादिकऋषिमुनिकेकिए हैं। जैसे, मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य:। ऐसापाठशुक्ल यजुर्वेदमें है और तैत्तिरीय शाखामें। मनोज्योतिर्जुषतामाज्यस्य। ऐसापाठहै। जूतिजोमनकाविशेषणथासोज्योति:। शब्दसेस्पष्टार्थहोगया सोसर्वत्रविशेषणकायथायोग्यभेदहै जोविशेष्यका भेदहोगा तोपरस्परविरोध केहोनेसे मिथ्यात्वआजायगा इससे विशेष्यकाभेद कभीनहींहोता विशेष्यभेदसे पूर्वापरविरोधहोजायगा फिरकिसकोसत्यमानैं किसकोमिथ्या इससे वेदोंमें ऐसादोषकहींनहीं इससे ऐसाभ्रमकभी नहीकरनाचाहिए औरजोवेदअनन्तहोंगे तोकोईपुरुषसबकोपढना वादेखभीनसकैगा औरपूर्णविद्वानभीकोईनहोसकैगा फिर भीभ्रमहीरहेगा भ्रमकेरहनेसे किसीपदार्थका दृढनिश्चयनहोगा औरउत्साह भङ्गभीहोजायगा किवेदकाअन्ततोनहींहै हमलोग कैसेपढसकेंगे इससे सबलोगोंको भ्रमहोबनारहेगा इससे वेदशब्द कायहअर्थहै जिससेजानाजायपदार्थ उसकानामवेदहै और वेत्तिसोयवेद:। जोजाननेवालाहै उसकानामभीवेदहै सोअनन्तनाम असंख्यातजीवहैं वेहीजाननेवालेंकेहोनेसे उनकानामवेदहै और विदन्तियैस्ते वेदा:। जिनसेपदार्थजानाजाय उनकानामवेदहै। सोसर्वशक्तिमत्वऔरसबजगत्का रचनादिकपरमेश्वरके अनन्त

गुणहै वेपरमेश्वरके जनानेवालेहैं इससे उनका नामवेदहै इससे अनन्तावैवेदा: । ऐसाब्राह्मणग्रन्थ तिमेंअभिप्रायज्ञापनकियाहै(प्रश्न) पाषाणादिक मूर्त्ति पूजन वेदादिकोंमेंनहींहैं फिरकैसेयहपरंपरा चलीआई औरइतनी बडीप्रवृत्तिभई आजतक किसीने नहीं खण्डनकिया जैसेकिआपखण्डनकर्ते हैं(उत्तर)आपलोगसर्वज्ञनहींहै वाचिकालदर्शीहोकि परम्पराकाठीक२निश्चयकरैं देखना चाहिए किसत्यनारायण शीघ्रबोध,कौमुद्यादिकनए२ग्रन्थ नवीन२तीर्थ तथामन्दिरआदिकहोतेहोजातेहैं औरइनकोपरंपरा मानलेतेहैं औरवेश्वकेरनेहैं सबऔरअपनापिता जैसाकर्मकरताहै वैसाहीउसकापुत्र परंपरामानलेताहै फिरकोईचौर्यादिक अन्यायमेंप्रवृत्तहोजाताहै औरकोईकुछअन्यायमेडरताभीहैसोलोककोपरंपराआपलोगमानेगें तोबहुतदोषआजांयगे औरकभीन होसकेगी क्योंकिकिसीकापितादरिद्रहोवै और उसकेकुलमेंपुत्रादिकधनाढ्यहोतेहैं फिरपरंपरासेजोदरिद्रता उसकोक्योंछोडते हैं किसीकापिताअन्धाहोय उसकापुत्रआंखको क्योंनहींनिकाल डालताहै औरजिसकापितामूर्खहोताहै वापण्डितउसकापुत्रमूर्खवापण्डितनियमसेक्योंनहींहोता किसीकापिताचोरीकर्ताहोय औरजङ्गलखानेकोजाय उसकापुत्रचोरीवाजङ्गलखानेको क्योंनहींजाय जिसदिनउसकापितामरे उसीदिनअपनेभीक्योंनहीमर जाय प्रथमअंगरजीइसदेशमें पढ़ाईनहींजातीथी अबक्यों पढ़ी जातीहै रेलपरपहिलेचढनानहीहोताथा औरतारपर खबरनहीआतीजातीथी फिररेलपरचढ़ते औरतारपरखबर भेजतेभेजातेक्योंहैं इत्यादिकबहुतदोषआतेहैं ऐसामाननेमें औरपरंपराकानिश्चयतो प्रत्यक्षादिकप्रमाण औरवेदसत्यशास्त्रोंहीसे होताहै अन्यथाकभीनहीं यहपाषाणादिकपूजनको मिथ्याप्रवृत्तिबडीभई है सोकेवलविद्या,धर्म,विचार,ब्रह्मचर्याश्रम,सत्सङ्ग औरश्रेष्ठात्माओंकेनहींहोनेसेभईहै क्योंकिसत्यविद्या जबमनुष्योंमेंनहीहो-

ती तबअनेकभ्रमोंमेंबुद्धिनष्टहोतीहै तबबहुतमूर्ख, अधर्मी,पाख-
ण्डी तथामतवालोंके उपदेशलोकमाननेलगतेहैं फिरबड़े भ्रम
जालमेंपड़के वे धूर्त जैसाउपदेशकतेहैं वैसाहीमानलेतेहैं और
लोगोंकोबुद्धि बिपरीतहोजातीहै फिरबड़ाअन्धकारहोजाताहै।
उनकोबुद्धिसेकुछनहींसूझता गतानुगतिकालोका नलोका:पार-
मार्थिका:। बालुकापिण्डदानेन गतंमेताम्रभाजनम् ॥ इसमेंयह
दृष्टान्तहैकिएककोईपण्डितताम्बेकाअर्घालेकेतर्पणऔरस्नानके
हेतुगया उसघाटमेंअन्यपुरुषभीबहुतजातेऔरआतेथे उसपण्डि-
तकोशौचकीइच्छाभई तबतांबेकाअर्घाबालूमेंगाड़दिया औरउ-
सकेऊपरगोलीबालूकापिण्डधरके निशानकेहेतुशौचकोफिरच-
लागया अन्यस्नान करनेवालोंने यहचरित्रदेखा देखकेपण्डित
सेतोकिसीनेनहींपूछा किन्तुजैसापण्डितनेपिण्डबनाकेरक्खाथा
वैसापिण्डसैकड़ों आदमीनेबनाके रखदिया उसकेपास२ उनके
हृदयमें ऐसाविचारआयाकि पण्डितनेजोयहकामकियाहै सोपु-
ण्यकेवास्तेहीकियाहोगाइसहेतुहमभीऐसाहीकरें तबतकपण्डि-
तभी शौचहोकेआया औरउननेदेखाकि बहुतपिण्ड वैसेधरेहैं
औरबहुतमनुष्यपिण्डबना२ केरखतेभीजातेथे सोपण्डितनेउनसे
पूछाकि आपयहकामक्योंकरतेहैं तबउननेपण्डितसेकहा किआप
कादेखकेहमलोगभीकरतेहैं तबपण्डितनेपूछाकिइसकेकरनेकाक्या
प्रयोजनहै तबउननेकहाकि जोआपकाप्रयोजनहोगा सोहमारा
भीहै पण्डितनेबिचाराकिमेरातोपात्रहीनष्टहोगया तबपण्डितने
कहाकिअपना२पिण्डमतबिगारडारो नहींतोतुमकोबड़ापापहो-
गा तबउननेपण्डितसेकहा किआपकोभीपिण्ड बनानेसेपापभया
होगा तबपण्डितनेकहाकि तुमअपना२पिण्डबिगाड़डारो तबमैं
भीअपनाबिगाड़डालूंगा तबतोसबअपने२ पिण्डतोड़डाले तबप-
ण्डितकापिण्डरहगया पण्डितनेजाकेपिण्डतोड़ा औरनीचेसेअ-
र्घानिकाललिया औरउनसेकहा किमैंनेइसहेतु निशानधराथा

तुमनेंपूछाभीनहीं औरपण्डितबननेलगगए तबउनसेकहाकि आप
काकामदेखके हमभीकरनेलगे वैसेहीपाषाणादिक मूर्त्ति पूजन
एककोदेखकेदूसरेभीकरनेलगें ऐसेभेड़ोंकेप्रवाहकोनांई लोगग-
तानुगतिकहोतेहैं जैसेएकभेंड़आगेचले उसकेपीछे सबभेंड़चलने
लगतीहैं और जैसेएकसियार वाएककुत्ताबोलनेवाभूकनेलगें उ-
सकाशब्दसुनकेअन्यसियार वाकुत्ते बहुतबोलने वाभूकनेलगतेहैं
वैसीहीविद्याहीन मनुष्योंकीअन्धपरम्पराचलतीहै उसमेंबड़े२
आग्रहकरकेनष्टहोतेचलेजातेहैं औरपरमार्थविचारसत्य२कोई
नहींकरती इससे हमलोगभी मिथ्याव्यवहारकाखण्डनकर्तेहैं पक्ष-
पातछोड़के क्योंकिप्रत्यक्षादिप्रमाणोंसे औरवेदादिक सत्यशास्त्रों
सेदृढ़निश्चयकरकेजानागयाहै किमुक्तिकेहेतु वाव्यवहारसुखके
हेतुपरमेश्वरहीकोदृढ़उपासनाकरनीयोग्यहै पाषाणादिकजड़मू-
र्त्तियोंकीकभीनहीं प्रश्न आजतकबहुतपण्डितपहिलेभए औरब-
हुतपण्डितभीहैं फिरखण्डननहींकोईकरता औरमूर्त्तियोंकापू-
जननहींकर्तेहैं सोआपएकबड़े पण्डितआए जोखण्डनकर्तेहैं सो
आपकाकहनाकौनमानताहै उत्तर प्रथममैंआपसेपूछताहूं कि
पण्डितकौनहोताहै जोआपकहैं किपञ्चाङ्ग,शीघ्रबोध,मुहूर्त्त चि-
न्तामणि, आदिक सारस्वतचन्द्रिका, कौमुद्यादिक, तर्कसंग्रह,
मुक्तावल्यादिक,भागवतादिक,पुराणमन्त्र,महोदध्यादिक,तंत्रग्रंथ
औरतुलसीकृत रामायणादिक भाषापढ़नेसे क्यापण्डितहोताहै
किन्तु अविवेकीहीबनजाताहै क्योंकि(सदसद्विवेककर्त्री बुद्धिः पण्डा
पण्डासंजातास्येतिसपण्डितः।) जोबुद्धिसदसद्विवेककरनेवाली
होय उसकानामपण्डाहै औरवहीपण्डानामविवेकयुक्त बुद्धिजि-
सकोहोय वहीपण्डितहोताहै सोआपलोगविचारकेदेखें किय-
थावत्धर्मऔरअधर्म तथासत्यऔरअसत्यकाविवेकइनपण्डितोंको
हैवानहीं जिनकोआपपण्डितकहतेहो औरजोमूर्खहैं वेतोआज
कालकोई२अधर्मसेडरतेभीहैं किन्तु पण्डितलोगप्रायःनहींडरते

किन्तु कोईपण्डितसैकड़ोंमेंएकअच्छाभीहै परन्तुउसएककोवेधूर्त लोगबातहीचलनेनहींदेते औरवहसच्चजानताभीहै तोमनहींमें सत्यबातरखताहै क्योंकिवहसत्यकहै तोसबमिलकेउसकोदुर्दशा करदेतेहैं इसभयकामारावहभीमौनकरलेताहै परन्तुउनसत्यपण्डितोंकोमौनवाभयकरनाउचितनहीं क्योंकिमौनऔरभयकेरहनेसे देशकाअकल्याण धर्मकानाश औरअधर्मकीवृद्धि, औरइन धूर्त्तोंकीबनपड़ेगी इससे कभीमौनवाभय सत्यकरनेवाकहनेमेंनहीकरनाचाहिए क्योंकिजोअच्छेपण्डितऔरबुद्धिमान् भयवामौनकरेंगे तोउसदेशकानाशहोजायगा औरवेदविद्यादिकनहीपढ़नेसे बहुतोंकोसत्य२निश्चयभीनहीहै इससे वेखण्डननहींकर्तेहैं लोकके भयकेमारे किहमारीआजीविका नष्टहोजायगी जोहम खण्डनकरेंगे तोहमारीनिन्दाहोगी औरआजीविकाभी नष्टहोजायगी इससे ऐसाकहना वा करनानचाहिए जिससेकिसंसारमें विरोधहोजाय परन्तुमैंकहताहूंकिभयतोश्रेष्ठपुरुषोंकोएकपरमेश्वर औरअधर्मकेआचरणहीमेंकरनाचाहिए औरजोमैंखण्डन कर्ताहूं सोप्रत्यक्षादिकप्रमाण औरवेदादिकसत्यशास्त्रोंहीसेकर्ताहूं सोआजतककिसीनेवेदोक्तप्रमाणवाठीक२युक्तिनहींदियाक्योंकिप्रमाणऔरयुक्तितोसत्यबातमेंहीमिल्ताहै असत्यमेंकभीनहीं औरइस मेंप्रमाणवायुक्तिकोईदेभीनहीसकेगा इसमेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न अनेकसंन्यासी, उदासीवैरागीऔरगोसांईआदिकखण्डननहींकर्तेहैं औरपूजा कर्तेहैं उत्तर वेभी वैसेही संसारकी निन्दा और आजीविकासेडरतेंहै इससे वेखण्डननहींकरतें वापूजा नहींछोड़ते । प्रश्न उनकोक्याआजीविकाकाभयहै औरसंसारका जिससे किवेडरतेहैं क्योंकिउनकोविवाहमरनेमें द्वादशाहकरनाहीनहीं जिसमेंधनकोचाहनाहो औरमाता, पिता, स्त्री, पुत्रादिक, कुटुम्ब, और घरकोछोड़के स्वतन्त्रहैं इससे उनको भयनहींहै परन्तु वेभी खण्डननहींकरते औरपूजाकर्तेहैं फिरआपहीबड़े विरक्तआगए

किइनबातोंका खण्डनकरतेहैं। उत्तर यहबाततोसत्यहै किउनको सत्यभाषणादिककाछोड़ना और पाषाणादिकमूर्त्तिकापूजनकरना उचितनहीं परन्तुवेभोसैकड़ोंमें कोईएकधर्मात्मा और पण्डित है अन्यजैसेगृहाश्रममेंथे वैसेहीबनरहतेहैं और कितनेकगृहस्थों सेभोनीचकर्मकरतेहैं क्योंकिउननेकेवलखानेपोने और विषयभोग केहेतुविरक्तका वेषधारणकरलियाहै परन्तु विरक्तता उनमेंकुछ नहीमालूमपड़ती क्योंकिधर्मकीरक्षाऔरमुक्तिकरनेकेहेतु विरक्त नहोहोतेहैं किन्तु अपनेशरीर औरइन्द्रियभोगकेहेतु विरक्तोंको नांईबनगएहैं कोईधर्मात्माराजाहोय औरइनकोयथावत्परीक्षा करै तोहजारोंमेंएकविरक्तताकेयोग्यनिकलगा बहुतमजूरीऔर हलग्रहणकरनेकेयोग्यनिकलेंगे क्योंकिजबपूर्णविद्या,जितेन्द्रियता,छल,कपटादिकदोषरहितहै वें सत्य२उपदेश तथासबकेऊपर कृपाकरके वैराग्य,ज्ञान,और परमेश्वरकाध्यानकरैं तथाकाम, क्रोध,लोभ,मोहादिकदोषोंकोछोड़ें औरसत्यधर्म,सत्यविद्या,सत्यउपदेशकोसदानिष्ठाहोनेसे विरक्तहोताहै अन्यथानहीं देखना चाहिए किगोकुलस्थगोसांईआदिकके सेधूर्त्ततासे धनहरणकरके धनाढ्यबनगएहैं बहुतसेचेले औरचेलियांबनालेतेहैं उनसेसमर्पणकरालेतेहैं कितननामशरीर,धनऔरमनगोसांईजीकेअर्पण करो सोबड़े२मन्दिरउनोनेबनाएहैंऔरनानाप्रकारकोमूर्त्तियां रखलियाहै औरनानाप्रकारके कलावत्तू,सच्चे झूठेआभूषणोंमें ऐसाजालरचाहै किदेखतेहीमोहितहोके उसमेंफसजातेहैं प्रायःस्त्रीलोगउसमन्दिरमें बहुतजातीहैं जितनी व्यभिचारिणी स्त्री औरव्यभिचारीपुरुष बहुधामन्दिरोंमेंजातेहैं क्योंकिवहांपरस्पर स्त्रीपुरुषोंकादर्शनहोताहै औरजिससे जोचाहै उससे समागमबिना परिश्रमसेकरले उसमेंशयनआतीं औरमङ्गलातीबहुधाव्यभिचारकेमूलहैं क्योंकिउससमयप्रायःरात्रोहोरहतीहै इससे आनन्दपूर्वकनिर्भयहोकेक्रीड़ाकरतेहैं परस्परमिलकेऔरउसमें पापभोन-

होंगिनते क्योंकि एकश्लोक बनारक्खा है ॥ अहंकृष्णस्त्वंराधाच्छाबयोरस्तु संगमः ॥ परस्त्री और परपुरुष जब परस्पर गमन करा चाहैं तो इसको पढ़ले तो कुछ परस्त्रीगमन वा परपुरुषगमन में कुछ पाप नहीं होता है जब वे परस्पर सम्मुख होवें तब पुरुष कहै कि मैं कृष्ण हूं तू राधा है तब स्त्री बोली कि मैं राधा हूं आप कृष्ण हैं ऐसा कहके कुकर्म करने को लगजाते हैं उनके दो मन्त्र हैं श्रीकृष्णः शरणं मम। यह उनोने मिथ्या संस्कृत बना लिया है इसका यह अभिप्राय है कि जो कृष्ण सोई मेरा शरण अर्थात् इष्ट है फिर भागवत की कथा में रासमण्डल की लीला सुनके ऐसा निश्चय करते हैं कि हमलोगों के इष्टने जैसी लीला किया है वैसी हम भी करैं कुछ दोष नहीं और इसका ऐसा भी अर्थ कर सक्ता है कि जो श्रीकृष्ण है सो मेरी शरण को प्राप्त हो। अर्थात् मेरा सेवक श्रीकृष्ण बन जाय ऐसा अनर्थ भी भ्रष्ट संस्कृत से हो सक्ता है सो यह मन्त्र गोसांई लोग दरिद्र, कङ्गाल और साधारण पुरुषों को देते हैं और जो बड़ा आदमी है उसके हेतु दूसरा मन्त्र बनाया है वही समर्पण का मन्त्र है ॥ क्लीं कृष्णाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा ॥ इस मन्त्र को उसको देते हैं कि जो शरीर, मन, और धन गोसांई जी के अर्पण करदे और गोसांई लोग अपने को कृष्ण मानते हैं और अपनी चेलियां वा जगत् की सब स्त्रियां राधा है सो जिस स्त्री से चाहें उस स्त्री से समागम करलें उनको पाप नहीं लगता और उनके समर्पणी जो चेले होते हैं वे अपनी प्रसन्नता से गोसांईजी को प्रसादी करालेते हैं अर्थात् स्त्री वा पुत्र की स्त्री तथा कन्या उनको गोसांईजी को खास सेवा में एकान्त में भेजते हैं जब गोसांईजी एकवार अपनी सेवा में प्रथम रखलेते हैं तब वह स्त्री पवित्र होजाती है और वह स्त्री अपने को धन्य मानती है तथा उनके सेवक भी अपने को धन्य मानते हैं जिनका गुरु इस प्रकार का व्यभिचारी होगा उनका शिष्यवर्ग व्यभिचारी क्यों न हो होगा सो बड़े २ अनर्थ होते हैं अब के सम्प्रदाय में सो कहने योग्य नहीं वे पान बीड़ा खाके पात्र में पीक डालदेते हैं सो उसको उनके चेले बड़ी प्रसन्नता से खालेते हैं और अ-

पनेको बड़ा धन्य मान लेते हैं कि हमको गोसांईजी महाराज की प्रसादी मिल गई अब कोई धनाढ्य उनको अपने घर में ले जाता है उसका नाम पधरावनी कहते हैं जब वे वहां जाते हैं तब बड़ा एक पात्र तांबे वा लोहे का रख लेते हैं उसके बीच में स्नान के हेतु एक चौकी रख देते हैं फिर गोसांईजी एक धोती सहित उस पात्र के बीच में चौकी पै बैठ जाते हैं फिर अनेक सुगन्ध केसरादिक पदार्थों से उनके शरीर को स्त्री और पुरुष मलते हैं फिर अच्छे २ घड़े २ जल से उनको स्नान कराते हैं फिर जब स्नान हो जाता है तब सुखा पीताम्बर को धार लेते हैं और गीली धोती उस कड़ाही के जल में छोड़ देते हैं फिर गोसांईजी निकल आते हैं तब उनके सेवक लोग उस जल को पीते हैं और अपने को धन्य मानते हैं फिर गोसांईजी, बहूजी, बेटीजी, लालजी, ठाकुरजी, पुजारी, गवैयाजी, इन सात गालों से उस गृहस्थ का बहुत धन हर लेते हैं इससे उनके पास खूब धन हो गया है उससे रात दिन विषय सेवा और प्रमाद में रहते हैं उनके चेले जानते हैं कि हम मुक्ति को प्राप्त होंगे परन्तु इन कर्मों से मुक्ति तो नहीं होनी किन्तु नरक ही होना क्योंकि इन प्रमादों में जिनका धन जाता है उनका भला कभी न होगा और उन गुरुओं का भी और उनने एक कथा रच रक्खी है कि लक्ष्मणभट्ट एक ब्राह्मण तैलंग था उसने काशी में आके संन्यास लेने चाहा तब उससे पूंछा कि आपके मातापिता वा विवाहित स्त्री तो घर में नहीं है तब उसने कहा मिथ्या कि मेरे घर में कोई नहीं है मुझको संन्यास दे दीजिए फिर उनने संन्यास दे दिया कुछ दिन के पीछे उसकी स्त्री काशी में खोजती २ आई और वह कहीं मार्ग में मिला सो उसके पीछे २ चली गई वह अपने गुरु के पास जाके बैठे स्त्री भी बैठी और उसके गुरु से बोली कि महाराज मुझको भी आप संन्यास दे दीजिए क्योंकि मेरे पति को तो आपने संन्यास दे दिया अब मैं क्या करूंगी तब तो उस संन्यासी ने बहुत क्रोध करके उसका दण्ड और काषाय वस्त्र ले लिए और उससे कहा कि तूं झूठ क्यों बोला तैने बड़ा अनर्थ किया अब तुम यज्ञोपवीत पहर लेओ और अपनी

स्त्रीकेसाथरहे और उनकेगुरूनेआशिर्वाददिया कितुम्हारापुत्रब-
ड़ाश्रेष्ठहोगा सोउनकेभाषा ग्रन्थमेंऐसीबात लिखीहै सोमुझको
अनुमानसेमालूमपड़ताहैकि जबउसनेकाशीमेंसंन्यासलिया फिर
खूबखानेपीनेलगे तब कामातुरहोके किसीस्त्रीसे फसगए फिर
जबकाशीमेंनिन्दाहोनेलगी तबकाशीछोड़केदक्षिणदेशमेंचलेगए
परन्तुकोईउनकेस्वजाति ब्राह्मण नेपंक्तिमेंनहीलिया सोआजतक
तैलंगब्राह्मणोंकीऔरगोकुलस्थोंकीएकपंक्तिवाएकविवाहनहीहो-
ताजोकोईतैलंग,ब्राह्मण,गोसांईजीकोकन्यादेताहै वहभीजातिबा
ह्यहोजाताहै फिरवेदोनों जहांतहां घूमनेलगे औरउनकाएक
पुत्रभया उसकानामवल्लभरक्खा इसविषयमें वलोगऐसा कहतेंहैं
किजन्मसमयमेंही उसबालककोवनमेंछोड़के चलेगए सोउसबा-
लककी चारों ओर अग्नि जलतारहता था । इससे उस बालक
कोकोईजानवरनहींमारसका जबवेपांचवर्षकेभए तबदिग्विजय
करनेलगे औरसबपृथिवीकेपंडितोंको उननेजीतलिया पांचवर-
षकीउमरमें सोयहबातहमको झूटमालुमदेतीहै क्योंकिवे वनमें
बालककोकभीनहींछोड़ेंगे तथाअग्निरक्षाभीनकरेंगा औरपांच
वर्षकीउमरमें विद्याकभीनहीहोसकी फिरवेक्या पराजयकरेंगे
यहबातअपनेसंप्रदायकीप्रतिष्ठाकेहेतुमिथ्यारचलिईहैक्योंकिसुबो
धिनीतथाविद्वन्मंडनसंस्कृतमेंग्रन्थउनकेबनायेदेखनेमें आतेहैंउन
मेंउनकासाधारण पांडित्यहीदेखनेमेंआताहै इससेवेक्यापंडितों
कापराजयकरसकेंगे फिरवेऐसाकहतेहैं किश्रीकृष्णनेवल्लभजीसे
कहाकिहमारे जितनेदैवीजीवहैं उनकातुमउद्धारकरो फिरवल्ल
भजीफिरतेघूमतेमथुरामे आकेरहेऔरवहांसंप्रदायका जालफै-
लायाकितनेकपुरुष उनकेचेलेभए औरउननेविवाहकिया उससे
सातपुत्रभए सोआजतकगोकुलस्थोंकी सातगद्दीचलतीहै फिरऐ
सीरकथाप्रसिद्धकरनेलगे किजोकोईगोसांई जीकाचेलाहोगाव-
हीवैष्णवऔरदैवीजीवहै औरजोकोईउनकाचेला नहीहोतावह-

आसुर नाम दैत्य और राक्षस संज्ञक जीव हैं ऐसीप्रसिद्धहोनेसे बहुतलोग चेलेहोगये औरबहुतव्यभिचार तथाविषयभोग केहेतु चेलेहोते हैं यहांतकउनने मिथ्याकथारचीहै किजब मथुरामें र-हतेथेतबवल्लभजीने एकचेलेसेकहाकितूंदहीमेरेलिये बाजारसेले आवहचेलादहीलेनेकेहेतु बजारमेगया वहांएकदहीलेकेबुढ़ीस्त्री बैठीथी उससेउसनेकहाको इसदहीकाक्यातूंमूल्यलेगी तबबुढ़ियाने जानाकियह वल्लभजीका चेलाहै उससेबोलीकिमैं इसदहीकेबदले मुक्तिलेऊंगी तबउसनेदहीलेलिया औरबुढ़ियासे कहाकितुझको मैंनेमुक्तिदेदी सोउसबुढ़ियाकोमुक्तिहीहोगई औरवल्लभजीकानाम मरकखाहैमहाप्रभुसोऐसीझूठकथाबनाकेजगतकोठगलेतेहैं एक घासकीकाठोदेतेहैं उसकानाममरकखाहै पवित्राऔररोरीकीदो रेखाश्टङ्गकेतुल्य ललाटमेबनवादेतेहैंफिरकहतेहैंकितुमगोसांई जीकेसमर्पणहोजा औरइससे तुमारासबपापछुटजायगा तुमलोग दैवोजीवऔरवैष्णवकहाओगे इसलोकमेआनन्दसेभोगकरोऔर मरनेकेपीछेतुमलागगोलोकस्वर्गमें जावोगेजहां राधादिकसखी औरश्रीकृष्णनित्य रासमण्डल और आनन्दभोग कर्तेहैं वैसेतुम भीअनकस्त्रीयोंकेसाथ आनन्दभोगकरोगे ऐसीकथाको सुनकेस्त्री औरपुरुषमोहित होकेचेलेहोजातेहैं फिरएकऐसी मिथ्याकथा रचीहैं किविट्ठलसाक्षात् श्रीकृष्णकाअवतारहुआहै औरहमलो-गसाक्षात् कृष्णकेस्वरूपहैं सोबहुत२ धनदेके धनाढ्यकीस्त्रीयां एकराचीं गोसांईजीकेसेआम रहआतीहैं तबउनकेचेले औरचे-लियांउससोसेकहतीहैं कितूंबड़ीभाग्यवतीहै किगोसांईजीनेतु झकोअंगसेलगालिया क्योंकि समर्पणकायहीप्रयोजनहै किगोसां ई जीशरीरधन औरउनके मनको चाहेंसोकरें उनचेलें औरचे-लियोंकाजबमरणहोताहै तबउनका धनसब गोसांईजी लेलेतेहैं क्योंकोपहिलेही समर्पणकियागयाथाबड़ेआनन्दकासंप्रदायउन काहै किचेलेचेलीनौकरचाकरसबविषयभोगआनन्दकेसमुद्रमेंडूब

के मग्न हो जाते हैं और गोसांई लोग खूब शृङ्गार से बन ठन के सदा रहते
हैं जिसे देख के स्त्री लोग मोहित हो जांय सो रात दिन स्त्री लोग घेर के र-
हती हैं और स्त्रियों के अर्थात चेलियों के झुण्ड के झुण्ड २ क्रीडा करते
रहते हैं क्योंकि गोसांई लोग अपने को कृष्ण मानते हैं और उनकी चे-
लियां अपने को राधारूप स्त्री मानती हैं खूब स्त्री लोग धन देती हैं और
अपनी इच्छापूर्वक क्रीड़ा करती हैं केवल वे बड़े पामर हो जाते हैं इ-
स से पशु की नांई अर्थात् लालसुख के बांदर जैसे क्रीडा करते हैं वैसे वे भी
पशु हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं जितने मन्दिरधारी, वैरागी हैं उन-
का भी प्राय: ऐसा ही व्यवहार है एक चक्रांकित लोग जो कि आचारी
कहाते हैं उनका ऐसा मत है कि। तापः पुण्ड्रं तथा नाम मालामन्त्र-
स्तथैव च। अमी हि पञ्च संस्कारा परमैकान्तहेतव:॥ यह उनका
श्लोक है शंख, चक्र, गदा और पद्म लोहे चांदी वा सोने के चार चिन्ह ब-
ना रखते हैं जो कोई उनका चेला वा चेली होती है जब वे स्नान करके
आते हैं तब बराबर पंक्ति उनकी बैठ जाती है और उन चिन्हों को अग्नि
में तपा के उनके हाथ के मूल में तप्त २ लगा देते हैं उस समय जिस अग्नि
में तपाया जाता है उसका नाम वेदी रक्खा है जब उनके हाथ में तप्त २
वे लगाते हैं तब बड़ा दु:ख उनको होता है क्योंकि चमड़े, लोम और
मांस के जलने से उनको बड़ी पीड़ा होती है और दुर्गन्ध भी उठता है
फिर उनके हाथ में लगा के चमड़ा, मांस, उसमें कुछ २ लग रहता है
और एक पात्र में जल वा दूध रख देते हैं उसमें उन चिन्हों को बुझा देते
हैं फिर कोई २ उस जल वा दूध को पीलेते हैं देखना चाहिए यह बात
कौन धर्म और किस युक्ति की होगी केवल मिथ्या ही जानना क्योंकि
जीते शरीर को जलाने से एक प्रथम संस्कार मानते हैं और जितने सं-
प्रदायवाले हैं वे उर्द्ध पुंड्र वा त्रिपुण्ड्र का संस्कार सब मानते हैं उनसे
ही शैव, वैष्णवादिक अपने हृदय में अभिमान करते हैं उर्द्ध पुण्ड्र वाले
नारायण के पग की आकृति तिलक को मानते हैं तथा शैव शाक्तादिक
महादेव के ललाट में जो चन्द्र है उसकी आकृति मानते हैं फिर चक्रां

कितादिक बीचमें रेखाकरते हैं उसकानाम श्रीरखलियाहै इसमें
विचारनाचाहिए किजिनकेललाटमें हरिकेपगकाचिन्ह लक्ष्मी
औरचन्द्रमाकाचिन्हहोवै तोवेदरिद्रदुःखीऔरज्वरादिकरोगउ-
नकोक्योंहोवैंफिर वेकहतेहैं किविनातिलकसेचाण्डालकेतुल्यवह
मनुष्यहोताहै उनसेपूछनाचाहिएकिचाण्डालजोतुम्हारातिलक
लगाले तोतुम्हारेतुल्यहोसक्ताहैवानहीं जोवेकहेंकिहोसक्ताहै तो
गधावाकुत्ते केललाटमें तिलकलगानेसे वहमनुष्यभी होजाताहै
वानहींसोतिलककाऐसासामर्थ्य नहींदेखपड़ताहैकिऔरकाऔ
रहोजाय औरलक्ष्मीचन्द्रइनके ललाटमें बिराजमानतोभीउदर
कापालनहोना कठिनदेखपड़ताहै इससे ऐसा निश्चयहोताहै कि
यहलक्ष्मीऔरचन्द्रमानहींहै किन्तु दरिद्रऔरउष्णताजाननी
चाहिए फिरवेतिलककेविषयमें एकदृष्टान्तकहतेहैं किकोईमनुष्य
एकवृक्षकेनीचेसोताथा बड़ारोगीसोमरणसमय उसकाआगया
वृक्षकेऊपरएककौआबैठाथाउसनेविष्टाकियासोगिरीउसकेललाट
केऊपर सोतिलककीनांईचिन्हहोगया फिरयमराजकेदूतउसको
लेनेकोआए तबतकनारायणनेअपनेभीदूतभेजदिए यमराजकेदू-
तोंनेकहाकियहबड़ापापीहै सोअपनेस्वामीकीआज्ञासेहमइसको
नरकमेंडालेंगे तबनारायणकेदूतबोलेकि हमारेस्वामीकीआज्ञा
है किइसकोवैकुण्ठमेंलेआओ देखोतुमअन्धेहोगए इसकेललाट
मेंतिलकहै तुमकैसेलेजासकोगे सोयमराजकेदूतोंकीबातनहींच-
ली औरउसकोवैकुण्ठमेंलेगए नारायणनेबड़ीप्रीतिसेप्रतिष्ठाकि-
या औरउससे कहातूंआनन्दकर वैकुण्ठमें ऐसे२प्रमाणोंसेतिलक
कोसिद्धकरतेहैं औरलोगमानतेहैं यहबड़ाआश्चर्यहै क्योंकिऐसी
मिथ्याकथाकोलोगमानलेतेहैं गोकुलस्थलोगकेवलहरिपदाकृति
हीकोतिलकमानतेहैंनिम्बार्कसम्प्रदायकेएककालाबिन्दु तिलकके
बीचमेंदेदेतेहैं उसकोजैसेमन्दिरमेंश्रीकृष्णबैठाहोय ऐसामान-
तेहैं तथामाधवार्कसंप्रदायवाले एककालीरेखाखड़ीललाटमेंकरते

है उसको भी ऐसा मानते हैं तथा चैतन्यसंप्रदाय में जो हैं वे कटार के ऐसा चिन्हको हरिपदाकृति मानते हैं और रामावल्लभी भी बिन्दु को राधावत् मानते हैं कबीर के सम्प्रदायवाले दीपकी शिखावत् तिलकको मानते हैं और पण्डितलोग पिप्पलके पत्ते की नांई कोई२ तिलक करते हैं सो के वल मिथ्या कल्पना लोगों ने बनाई है जो तिलक के बिना चाण्डाल होता हो तो वे भी चाण्डाल हो जांय क्योंकि जब स्नान और मुख प्रक्षालन करते हैं तब तो उनके भी ललाट में तिलक नहीं रहने पाता फिर वे चाण्डाल क्यों न बन जांय और जो फिर तिलक के करने से उत्तम बन जांय तो चाण्डाल उत्तम बनने में क्या देर परन्तु चक्रांकितों के ग्रन्थ मन्त्रार्थ दिव्य सूर्य्य, रत्न, प्रभा और नाभा ने बनाई भक्तमालादिकों में यह प्रसिद्ध लिखा है कि जो चक्रांकितों का मूल आचार्य शठकोप जो सो कंजर और रामावडा के कुल में उत्पन्न भए थे सोई उन ग्रंथों में लिखा है कि विक्रीय शूर्पं विचचार योगी। यह वचन है इसका इसमें यह अभिप्राय है कि सूप को बेचके योगी जो शठकोप सो विचरते भए इससे क्या आया कि वह सूप बनाने वाले के कुल में उत्पन्न भया था उन्होंने चक्रांकित संप्रदाय का प्रारम्भ किया इससे उसका टोप चक्रांकित आजतक पूजते हैं उनके पीछे दूसरा उनका आचार्य मुनिवाहन भया उसको ऐसो कथा उन ग्रंथों में है कि दक्षिण में एकतोतादरी और रङ्गजी दो स्थान हैं उनमें बहुत से उनके संप्रदाय के साधु आजतक रहते हैं वहां एक चांडाल था उसको ऐसी इच्छा थी कि मैं भी कुछ ठाकुरजी का परिचर्या करूं परन्तु मन्दिर में झाड़ू बहारू देने के हेतु पुजारी लोग उसको नहीं आने देते थे सो जब प्रातःकाल कुछ रात्रि रहै तब पुजारी लोग स्नान को दरवाजा खोल के चले जांय तब वह चांडाल छिपके मन्दिर में झाड़ू देके निकल जाय कोई उसको देखे नहीं परन्तु पुजारियों ने विचार किया कि झाड़ू कौन दे जाता है रात में छिपके दो चार पुजारी बैठे रहे कि उसको पकड़ना चाहिए जब प्रातःकाल और पुजारी स्नान को चले गये तब वह चांडाल मन्दिर में घुसके झाड़ू देने लगा जब उनने दे

खातथपकडके ऐसामारा कि मूर्छितहोगया तबउनवैरागियोंनेप
कडकेमंदिरकेबाहरउसको डालदिया जबवेस्नानकर के पुजारीलो-
गआकेठाकुरका किवाडखोलनेलगे सोनखुलाक्योंकि ठाकुरजी
नेउसकोमारनेमे बडाक्रोधकिया तबबडेआश्चर्यभये सबकिकिवा-
डक्योंनहीखुलतेहैं फिरएक वैरागीको ठाकुरजीने स्वप्नदियाकि
किवाडोतबखुलेगो आपसबलोग उसचांडालको पालकीमे बैठाके
अपनेकंधेपर सबनगरमेंउसको फिराओऔरपालकीसहितमं-
दिरकीपरिक्रमाकरो फिरउस कोमंदिरमें लेआओ वहीमेरीपू-
जाकरै औरइस मंदिरका अधिष्ठाताऔर सबकागुरुबनैजबवह
किवाडकोआके स्पर्शकरेगा तबकिवाड खुलेगा अन्यथानहीऐ-
साहीउननेकिया औरसबबातहोगई उसकानाम उसदिनसेमु-
निबाहन रक्खागया क्योंकिमुनिजोवैरागी उननेबाहननामपा-
लकीउठाई इससेउसकानाम मुनिबाहनपडा उनका चेलाएकमु-
सलमानभया उसकानाम यावनाचार्य इसकोअब चक्रांकितोंने-
तिकयामुनचार्य्य नामरक्खा है उनके चेला रामानुजभये वहब्रा-
ह्मणथे रामानुजके विषयमेंयेलोगकहतेहैं किशेषजी काअवतार-
है शंकराचार्य शिवका निंबार्कमाधव रामानन्द औरनित्यानन्द
येचारों सनकादिकके अवतारहैं नानकजनकजी काअवतारहै
कबीरब्रम्हका यहबातसब उनकोमिथ्याहै क्योंकिअपने२संप्रदाय
केहेतुमिथ्याकथा लोगोंनेरचलिईहैं तोसरामंस्कारमालाधार-
णकरनाउसमें रुद्राक्षतुलसी घासकमलगट्टे इत्यादिकजानलेना
इसविषयमेंसंप्रदायी लोगकहते हैंकिबिनामाला काठीऔररुद्रा
क्षकेधारणमेजल पीयेऔरभोजनकरै सोमद्यपान औरगोमांस-
केतुल्यहैइनसे पूछनाचाहिये किनशाक्योंनहीहोताऔरमांसका
स्वादक्यों नहीआता इससेयहबात केवलमिथ्या आजीविकाकेहे-
तुलोगोंनेरचलिईहैं इनमेंश्लोकभी बनारक्खे हैंयस्यांगेनास्तिरु-
द्राक्षएकोपि बहुपुण्यदः ॥ तस्यजन्मनिरर्थं स्यात्त्रिपुंड्ररहितंयदि

इत्यादिकश्लोकशिवपुराण औरदेवीभागवतादिक ग्रन्थोंमेंशैवऔ-
रशाक्तोंमेंअपनेसंप्रदायोंकेबढनेकेहेतु लिखेहैं औरवैष्णवादिकोंके
खंडनकेहेतुव्यासादिकों केनामसे बहुतश्लोक रचरक्खे हैंकाष्ठमा
लाधरस्यैवमद्यश्चांडालउच्यतेऊर्द्ध्वपुंड्रधरस्यैव विनाशंव्रजतिध्रुवम्
इनकेविरुद्धइत्यादिक वैष्णवोंनेबनायाहैरुद्राक्षधारणेनैवनरकंप्रा
प्नुयाद्ध्रुवम् शालग्रामसहस्राणांशिवलिंगशतस्यच द्वादशकोटित्रि
प्राणांततफलंश्वपचवैष्णवे ॥ विप्राद्द्विषड्गुणयुतादरविंदनाभपा-
दारविंदविमुखाच्छ्वपच। वरिष्ठम्अभाग्यतस्य देशस्यतुलसीयत्र
नास्तिवै। अभाग्यंतच्छरीरस्यतुलसीयत्रनास्तिहि॥ दोनोंकेवि-
रोधीवाममार्गीआएप्रवृत्ते भैरवीचक्रे सर्वेवर्णा द्विजातयः। निवृत्ते
भैरवीचक्रेसर्वेवर्णाःपृथकपृथक्॥ मद्यंमांसंचमीनंचमुद्रामैथुनमेव
च। एतेपंचमकाराश्चमोक्षदाहियुगेयुगे। पीत्वापीत्वापुनःपीत्वा
यावत्पततिभूतले।उत्थायचपुनःपीत्वापुनर्जन्मनविद्यते।सहस्र-
भगदर्शनान्मुक्तिर्नात्रकार्याविचारणा।मातृयोनिंपरित्यज्यविहरेत्सर्व
योनिषुकाश्यांहिमरणान्मुक्तिर्नात्रकार्याविचारणा। काश्यांमर-
णान्मुक्तिःयहश्रुतिशैवोंनेबनालिईहैसहस्रभगदर्शनान्मुक्तियहशा
क्तोंनेश्रुतिबनालिईहै गंगागंगेतियोब्रूयाद्योजनानांशतैरपि।मु-
च्यतेसर्वपापेभ्योविष्णुलोकंसगच्छति॥ अश्वमेधसहस्राणांवाजपे
यशतस्यच। कन्याकोटिसहस्राणां फलंप्राप्नोतिमानवः।यहएकाद-
श्यादिकव्रतोंकामाहात्म्यबनालियाहैऐसेहीशालिग्रामनर्मदालिं
गआदिकामहात्म्यबनालियाहैसोइसप्रकारकेमिथ्या२जालअपने
मतलबकेहेतुलोगोंनेबनालियेहैंऔरपरस्परएकोएकदेखकेजल
तेहैंतथाअत्यन्तविरोधऔर परस्परनिन्दाहोतीहैक्योंकिजोमिथ्या
२कल्पनाहै उनकोएकताकभी नहींहोतीजो सत्यबातहैसोसबके
बीचमेंएकहीहै चक्रांकितादिकोंने अपनेसंप्रदायकेमन्त्रबनालिए
हैं।ओंनमोनारायणाय ओम्श्रीमन्नारायणचरणौशरणंप्रपद्ये
श्रीमतेनारायणायनमःये दोनोंचक्रांकितोंकेमन्त्रहैंओम्नमोभग

वतेवासुदेवाय ओम्कृष्णायनमः ओम्राधाकृष्णाभ्यांनमः ओम् गोविन्दायनमः ओम्राधावल्लभायनमः येनिंबार्कादिकोंके मन्त्र हैं ओम्रामायनमः ओम्सीता रामाभ्यान्नमः ओम्रामायनमः येरामोपासकोंके मन्त्र हैं ओम्नृसिंहायनमः ओम्हनुमतेनमः येखाखीआदि कोंके मन्त्र हैं ओम्नमः शिवाययह शैवोंकामन्त्र है ऐंह्रींक्लींचामुंडायैविच्चे ओम्ह्रांह्रींह्रूंह्रैंह्रौंह्रः बगलामुख्यै फट्स्वाहा इत्यादिकवाममार्गियोंके मन्त्र हैं सत्यनाम अपयहीकवीरसंप्रदायकामन्त्र है दादूरामयहदादूसंप्रदायकामन्त्र है रामरामयहरामसनेही सम्प्रदायकामन्त्र है वाहगुरु।। एकओंकारसत्यनामकर्त्तापुरुषनिर्भयनिर्वैर अकालमूर्त्त अयोनीसहभंगगुरुप्रसादजप।। यहनानकसंप्रदायकामन्त्र हैं इत्यादिक कहांतकहमजाल गिनावैंकि लाखहां प्रकारके मिथ्याकल्पना लोगोनेकरलियेहैं येसबगायत्री जोपरमेश्वरकामन्त्रइसके छोडानेकेवास्ते धूर्त्तालोगोंनेसबरचीहै औरजैसे गडेरियाअपने भेडऔरछेरियोंकोचराताहैउनमेंजबचाहै तबदूधदुहलेताहै अपनामतलबसिद्धकरलेताहै इहकाउनमेंसे एकभेडवछेरीकोई लेले अथवा भागजायतबउसगडरियेकोबडादुःखहोताहै सदिनभरचराके एकस्थानमें इकट्ठाकरदेताहैवहचाहताहै इसभुंडमेंसे एकभीपृथक्नहोजायकिन्तु अन्यभेडवाछेरीमिलाकेबढायाचाहताहै क्योंकि उनसेहीउसका आजीविकाचलतीहै वैसेहीआजकाल मूर्खमनुष्योंकोधूर्त गुरुलोगजालमेंबांधकेअत्यन्त धनादिकलूटतेहैं औरबडे२ अनर्थकरतेहैं क्योंकिचेले मूर्खहैं इसमें जैसावेकहदेतेहैं वैसाहीमानलेतेहैं जोउनगुरुओंकोविद्याऔर बुद्धिहैतोतो ऐसी अपनेवास्ते नरककीसामग्रीक्योंकरतेतथा चेलेलोगोंको विद्याऔरबुद्धिहोतीतो इनधूर्त्तोंकेजालमेंफसकेक्यों नष्टहोतेदेखनाचाहिये किनानकजीकबीरजी औरदादूजी इनकेसंप्रदायमें पाषाणादिकमूर्त्ति पूजनतोनहीहै परन्तुउनमेंभीसंसारका धनादिकहरनेके वास्ते ग्रन्थसाहबकीउ

से भी अधिक पूजा करते हैं यह भी एक मूर्त्तिपूजन ही है पुस्तक भी जड़ होता है क्योंकि जैसी पाषाणादिकों की पूजा वैसी पुस्तकों की भी पूजा जाननी इसमें कुछ भेद नहीं यह केवल परपदार्थ हरने के वास्ते ही लोगों ने युक्ति रच लिई है अपने २ संप्रदाय में ऐसा आग्रह है उनको कि वेदादिक सत्य पुस्तकों की ऐसी पूजा वा उनमें प्रीति कभी नहीं करते जैसी कि अपने भाषापुस्तकों में प्रीति करते हैं और संन्यासियों ने एक ग्रंथ शंकरदिग्विजय रच लिया है उसमें बहुत २ मिथ्या कथा रक्खी है उसमें दण्डी लोग और गिरी पुरी आदिक गोसांई लोग अत्यन्त प्रीति करते हैं अर्थात् रामानुजदिग्विजय निंबार्कदिग्विजय माधवार्कदिग्विजय वल्लभदिग्विजय कबीर दिग्विजय और नानक दिग्विजयादिक अपनी २ बड़ाई के वास्ते लोगों ने मिथ्या २ जाल रच लिये हैं शंकराचार्य कोई संप्रदाय के पुरुष नहीं थे किन्तु वेदोक्त चार आश्रमों के बीच संन्यासाश्रम में थे परन्तु उनके विषय में लोगों ने संप्रदाय की नांई व्यवहार कर रक्खा है दश नाम लोगों ने पीछे से कल्पित कर लिये हैं जैसे कि किसी का नाम देवदत्त होय इसके अन्त में दश प्रकार के शब्द रखते हैं कि देवदत्ताश्रम एक १ देवदत्तार्थतीर्थ २ देवदत्तानन्दसरस्वती और दूसरी का भेद दूसरा कि देवदत्तेन्द्रसरस्वती ३ देवदत्तगिरी ४ देवदत्तपुरी ५ देवदत्तपर्वत ६ देवदत्तसागर ७ देवदत्तारण्य ८ देवदत्तवन ९ देवदत्तभारती १० ये दश नाम रच लिये हैं फिर इनमें शृंगेरी शारदा भूगोवर्द्धन और ज्योतिमठ ये चार प्रकार के मठ मानते हैं और दण्डियों ने दामोदर नृसिंह नारायण इत्यादिक दण्डों के नाम रख लिये हैं उसमें यज्ञोपवीत बांधते हैं उसका नाम शंखमुद्रादिक रक्खा है ऐसे २ बहुत कल्पना दण्डियों ने भी किई है किन्तु जो बाल्यावस्था में नाम रहता था सोई सब आश्रमों में रहता था जैसे कि जैगीषव्य आसुरि पंचशिखा और बोध्य ऐसे २ नाम संन्यासियों के महाभारत में लिखे हैं इससे जाना जाता है कि यह पीछे से मिथ्या कल्पना दण्डी लोगों ने कर लिया है परन्तु दण्डी लोग सनातन संन्यासाश्रमी हैं क्यों-

किमनुस्मृत्यादिकमें इनका व्याख्यान देख ने में आता है और गोसांई लोगोंने भोटुगीनाथ इत्यादिकमहो शब्दकल्पित करलिया है जैसे किबैरागीआदिकोंने नारायणदासइस्से बड़ा भारी बिगाड़भया। कि नीचऔर उत्तमकी परीक्षाहीनहोहोती क्योंकिमब काएकमाहीनामदेख पड़ताहै तथाप: पुंड्रनाममाला औरमन्त्रयेपंचसंस्कारचक्रांकितादिकमानतेहैं औरमोक्षहोना भी इससे मानतेहैंपरन्तु इसमेंबिचार करनाचाहिए किसंस्कारनामहै पवित्रताकासो पवित्रतादोप्रकार कीहोतीहै एकमन कोदूसरीबाह्यपदार्थोंकोइनमेंसे मनकीपवित्रताहोनेसे बाह्यपवित्रता भीहोतीहै जिनका मनअधर्मकरने मेंरहताहै उनकोबाह्यपवित्रताव्यर्थहै सोउनसंस्कारोंसेमनकोपवित्रताकुछनहीं होसक्तीदेखनाचाहिए किगोकुलस्थोंकेमन्दिरोंमें रोटोऔरदालतकलागबेचतेहैं औरबाहरसेप्रसिद्वरखतेहैं किठाकुरकोइतनाबड़ा भोगलगताहै सोजितने नौकरचाकरमन्दिरोंमेंरहतेहैं उनकोमासिकधननहीदेतेकिन्तु इसकेबदलेपक्वान्न रोटोदालतकदेतेहैं उनके हाथगोसांईजीअन्नबेचतेहैं औरबेप्रजाके हाथबेचतेहैं जैसेहलवाईकी दुकानमें बेचाजाताहै औरप्रसादभी उनकेयहां भेजतेहैं सबमन्दिरधारी कि जिस्से कुछप्राप्तिहोतीहो मन्दिरोंमेंजब दर्शनकेहेतुजातेहैं तब जोउनकेस्त्रीवापुरुष,सेवक तथाधनदेनेवाले उनकाबड़ासत्कारकतेहैं अन्यकानहीं इनमिथ्याव्यवहारोंकेहोनेसेदेशकाबड़ाअनुपकारहोताहै क्योंकिबाहरसेतोमहात्माकीनांईबनेरहतेहैं छलऔरहृदयमेंकपट,काम,क्रोध,लोभादिकदोषबढ़तेचलेजातेहैं देखनाचाहिए किबड़े२मन्दिर,मठ,गांव,राज्यदुकानदारीकतेहैं औरनामरखतेहैं वैष्णव,आचारी,उदासी,निर्मलगोसाईं जटाजूटबने रहते हैंतिलक,छापा,माला, ऊपरसेधारणरखतेहैं औरउनकाहृदयका व्यवहारहमलोगदेखतेहैं बिद्याकालेशनहीं बातभीयथावत्कहना वासुननानहींजानें इस्से सबमनुष्योंकोएकसत्य,धर्मबिद्यादिकगु-

ग्रहण करना चाहिए और इन नष्ट व्यवहारों को छोड़ना चाहिए तभी सब मनुष्यों का परस्पर उपकार हो सकता है अन्यथा नहीं वाममार्गी लोग एक भैरवी चक्र रचते हैं उसमें एक नङ्गी स्त्री करके उसके हाथ में छूरी वा तलवार दे देते हैं और बीच में एक आसन के ऊपर बैठा देते हैं फिर उस स्त्री की पूजा करते हैं यहां तक गुप्त अंग की भी फिर उस जल को सब लोग पीते हैं और उस स्त्री को मानते हैं कि यह साक्षात् देवी है और ब्राह्मण से लेके और चमार तक उस स्थान में सब बैठते हैं फिर एक पात्र में मद्य को पूजा करके मद्य रखते हैं उसी एक पात्र से वह स्त्री पीती है फिर उसी जूठे पात्र से सब लोग मद्य पीते हैं और मांस भी खाते जाते हैं रोटी और बड़े खाते जाते हैं फिर जब मद्य पी के मस्त हो जाते हैं तब उसी स्त्री से भोग करते हैं जिसको कि पहिले देवी मानी थी और नमस्कार किया था और मनुष्य का बलिदान भी करते हैं कोई २ उसका भी मांस खाते हैं मुरदे के ऊपर बैठ के जप करते हैं और स्त्री के समागम के समय जप करते हैं। योन्यां लिंगं समास्थाप्य जपेन्मन्त्रमतन्द्रितः। और यह भी उनका मन्त्र है कि एक माता को छोड़ के कोई स्त्री अगम्य नहीं फिर उनमें एक मातङ्गी विद्या वाला है वह ऐसा कहता है कि मातरमपि न त्यजेत् माता को भी नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि मातङ्ग उस्ताद का नाम है सो माता को भी नहीं छोड़ता वैसे वे भी मानते हैं ऐसी दशमहाविद्या उन लोगों ने बना रक्खी है उनमें से एक चोली मार्ग है उसका ऐसा मत है कि स्त्री और पुरुष सब एक स्थान में रात्रि को इकट्ठे होते हैं एक बड़ा भारी मृत्तिका का घड़ा वहां रखते हैं उसमें सब स्त्री लोग अपने हृदय का वस्त्र अर्थात् जिसका नाम चोली है उसका उस घड़े में डाल देती हैं फिर उन वस्त्रों को घड़े के बीच में मिला देते हैं फिर खूब मद्य पीते हैं और मांस खाते हैं जब वे बड़े उन्मत्त हो जाते हैं फिर उस घड़े में हाथ डालते हैं जिसके हाथ में जिसका वस्त्र आवै वह उसकी स्त्री होती है वह माता, कन्या, भगिनी वा पुत्र की भी हो स्त्री ऐसे २ मिथ्या व्यवहार करते हैं और मानते हैं कि मुक्ति होय यह बड़ा आश्चर्य है ऐ-

सेकर्मोंमेंकभीनहींमुक्तिहोसो परन्तु विद्याहीनजोपुरुषहैं वेऐसे
२ जालोंमेंफसजातेहैं औरइनलोगोंनेअपने२ मतकेपुष्टिकेहेतुअ-
नेकपाराशर्यादिकसत्य तिब्रह्मवैवर्त्तादिकपुराणतन्त्र उपपुराणपर-
स्परविरुद्ध ऋषिऔरमुनियोंके नामोंसे रचलिएहैं एककादूसरा
अपमानकर्ताहै अपनी२पुष्टिकेहेतु क्योंकिअसत्यबातऔरभ्रमजो
होताहै सोपरस्पर विरुद्धसेहीहोताहै औरजो सत्यबातहै सोसब
केहेतु एकहीहैजोसज्जनहोतेहैं वेसदाश्रेष्ठ कर्महीकरतेहैं क्योंकि
वेसत्यासत्यविचारसे असत्यकोछोड़तेहैं औरसत्यको ग्रहणकरते-
हैंऔरकिसीकेजालमें विचारवान्पुरुष नहींफसतासबकेउपकार
मेंहीउसकाचित्त रहताहैऐसेजामनुष्यहैंवेधन्यहैं इससे क्याआया
किश्रेष्ठगृहस्थवाविरक्तजोहैं वेसदाश्रेष्ठकर्मही करतेहैंअश्रेष्ठ न-
हींइसवास्ते वेविरक्तलोग अपनेमतरूपजालमेंफसके सत्यासत्यनहींजा
नसकेहैं क्योंकिउनकोभ्रम अंधकारमेंकुछनहीं सूझताहै जगन्ना-
थादिकमेंबहुतचमत्कार देखपड़ताहै तथानानाप्रकारकेतीर्थजोगं
गादिकवेपापनाशकऔर मुक्तिप्रदहैंवानहीं उत्तर नहींक्योंकिज-
गन्नाथकीमूर्त्तिचंदनवा निंबकाष्ठकीबनातेहैंउसकीनाभिमेंपोलर-
खतेहैंउसमें सोनेकेसंपुटमें एकशालग्राम रखकेधरदेतेहैंउसको
ब्रह्मतरूमानतेहैंफिरआ भूषणवस्त्र पहिरादेतेहैं उसमेंकुछचमत
कारनहीहै किन्तु पुजारियोंनेआजीविका केवास्तेबातऔरमहा-
त्म्यकापुस्तकबनालियाहैवेएकतोयह चमत्कारकहतेहैंकिछत्तीस
वर्षमेंचोलाबदलताहै सोबात हमको झूठमालूमदेतीहै क्योंकि
३६ वर्षमेंमूर्ति पुरानीहोजातीहै फिरदूसरीबना केरख देतेहैंऔर
कृष्णतथाबलदेवको मूर्त्तिकेबीचमेंसुभद्राको मूर्त्तिबनारखीहैइसमें
विचारनाचाहिये किएककेवामभाग दूसरेकेदहिने भागमेंमूर्त्ति
रखनाधर्मशास्त्रऔरयुक्तिसे विरुद्धहैऔरदूसरा चमत्कारयहकह
तेहैंकिएकराजाबठहोऔर पछाड़ायेतोभीउसीसमयमरजातेहैंयह
बातउनकीमिथ्याहै क्योंकिअकस्मात्कोईउसदिन मरगयाहोगा

अथवा शत्रु लोगों ने विष दान देके भी मार डाले होंगे सो माहात्म्य
की ऐसी बात लोगों ने मिथ्या बना लिया है तीसरा चमत्कार यह कहते
हैं कि आप से आप ही रथ चलता है यह भी उनकी बात मिथ्या है क्यों-
कि हजारहां मनुष्य मिलके रथ को खींचते हैं और कारीगर लोगों ने
उस रथ में कला बना रक्खी है उस के उलट घुमाने से वह रथ खड़ा हो जा
ता होगा और सूधे घुमाने से कुछ चलता होगा जैसे कि घड़ी आदिक
के यन्त्र घूमते हैं ऐसे बहुत पदार्थ विद्या से होते हैं चौथा चमत्कार य-
ह कहते हैं कि एक चूल्हे के ऊपर सात पात्र धर देते हैं उन में से ऊपर के
पात्रों का चावल पहिले चुर जाते हैं यह भी उनकी बात मिथ्या है क्यों-
कि उन पात्रों में चावल पहिले डाल देते हैं फिर उसके पेंदे को मांज दे-
ते हैं फिर ऊपर २ पात्र रखते हैं और नीचे के चूल्हे में धीरे सी आंच
लगा देते हैं फिर दरवाजा बन्द कर देते हैं और अच्छे २ धनाढ्य तथा रा-
जा लोगों को ऊपर से करछुल से निकाल के देखा देते हैं और कहते हैं कि
देखिए महाराज कैसा चमत्कार है कि नीचे का अब तक चावल कच्चा
है क्योंकि उस पात्र में चावल अग्नि पर पीछे धरे हैं उस को देखके वि-
चार रहित पुरुष मोहित होके बड़ा आश्चर्य गिनते हैं और हजारहां
रुपैया देते हैं यह केवल उन मनुष्यों की धूर्तता है और चमत्कार कु-
छ नहीं है पांचवां चमत्कार यह कहते हैं कि जो पापी होय उसको उस
मूर्ति का दर्शन नहीं होता यह भी उनकी बात मिथ्या है क्योंकि किसी के
नेत्र में दोष होने से आंख के सामने तिमिर आ जाता है और वे पुजारी लो-
ग ऐसी युक्ति रचते हैं कि वस्त्र के अन्यथा रूप करके पर्दे बना रक्खे हैं
उनके दोनों ओर पुजारी लोग खड़े रहते हैं और फिरते भी रहते हैं
सो किसी प्रकार से उस मूर्ति का आड़ कर देते हैं फिर नहीं देख पड़ती तो उ-
स बन्दे से वे कहते हैं कि तुम लोग पापी हो अब तुम्हारा पाप कट जाय
गा तब तुम को दर्शन होगा तब वे बुद्धिहीन पुरुष झट २ रुपैये धर देते हैं फि-
र उन को दर्शन करा देते हैं यह सब मनुष्यों की धूर्तता है चमत्कार कुछ
नहीं है छठवां यह चमत्कार कहते हैं कि अन्धा वा कुष्ठी हो जाता है जो कि

वहांकाप्रसादनहीखातायहभीउनकीबातमिथ्याहैक्योंकिइसबात
मेकभीकोईकुष्टीवा अंधानहीहोसक्ताहै बिनारोगसेऔर अनेक
दिनकासडासडायाअन्न तथापचावलौ और हंडियों केखपरे जिन
कोकौवेकुत्ते चमारऔर चांडालादिकस्पर्शकरतेहैंऔरधूरभीलग
जातीहै सबकाउच्छिष्टखानेसे कुष्ठरोगभीहोसक्ताहै औरपरस्पर
सबकाजूठसबखातेहैं औरफिर अन्यजगाकेकिसीकाजलवाअन्नन-
हीखातेयह देखनाचाहियेकि इनकाआश्चर्यव्यवहारकिसबकास-
बजूठखातेभीहैं फिरकहतेहैंकिहमकिसीकानहीखातेयहकेवलइ-
नकाअविचारहीहै सोजिनकीवहां आजीविकाहै वेऐसे२ मिथ्या
बातसदा रचतेरहतेहैं कलिकत्तामें एकमृत्तिकाकीमूर्त्ति बनार-
क्खीहैउसकानामरक्खाहै कालीयहांभीऐसी २मिथ्या २ जालर-
चरक्खीहैं किकालीमद्यपीतीहै औरमांसखातीहैसोवहजडमूर्त्ति
क्यापीयेगीऔर क्याखावेगी परन्तु उनपुजारियोंका खूबमद्यपीने
औरमांसखानेमें आताहै वेलोगस्वादकेहेतुऔर धनहरणकेहेतु
नाना प्रकारकीझूठ २ बातबनालेतेहैं वहांएकमंदिर में पाषाण
कालिंग स्थापन कररक्खाहै उसकानामतारकेश्वर रक्खाहै इस-
विषयमेउनोंने बातबनारक्खीहै किरोगियोंकोंस्वप्नावस्थामें महादे-
वऔषधबताजातेहैं उस औषधसे उनकारोगछूटजाताहै यहबात
उनकीमिथ्याहैक्योंकिउनकाजोपुजारीहै वहीवैद्यऔरडाकतरों-
की औषधीकियाकर्त्ताहै औरऐसीऔषधि क्योंनहो स्वप्नावस्था
मेंमहादेवकहदेताहै किजिसकेखानेसे किसीकोकभी रोगहीनहो-
इससेयहबात झूठहै किवहपाषाण क्याकहवा सुनसक्ताहैकभीन-
हो सेतबन्धरामेश्वरकेविषयमें ऐसालोगकहतेहैं कि जबगंगाजल
चढातेहैंतबवहलिंगबढजाताहै यहबातमिथ्याहै क्योंकिउसमंदि-
रमेंदिवसकोभीअंधकाररहताहै उसीमेचारकोनेमें चारदीपसदा
जलतेरहतेहैंउसमंदिरमें किसीकोघुसनेदेतेनही उनकेहाथसेगंगा
जललेके उसमूर्त्तिकेऊपर जलचढाताहै जबवह पुजारीनीचेसे-

ऊपरहाथकरताहैतबमूर्त्तिमेंलेकरहाथतक गंगाजीकीएकधाराब-
नजातीहै उसधारामेंचारोंद्वीपकेप्रकाशकेपड़नेसे जलबिजलीको
नांईचमकताहैतबउनयात्रियोंकोपुजारीलोग कहतेहैंकितुमलो-
गोंकेऊपर महादेवकीबड़ोकृपाहै देखोमहादेवकालिंगबढ़गया
सोतुमरुपैयेचढ़ाओ ऐसेबहुत२केखूबधन हरण करतेहैंऔर क-
हतेहैंकिरामनेयहमूर्तिस्थापनकिईहै सोयहबातमिथ्याहीहै क्यों-
किवाल्मीकीयरामायणमेंउसकानामभीनहीहै केवलतुलसीदासके
झूठलिखनेसेलोगकहतेहैं क्योंकि तुलसीदास कीमिथ्या२बातबि-
चारनाचाहिये नारीनामस्त्रीकारूपदेखके सोमोहितनहीहोतो
फिरसीताकेस्वयंबरमें लिखाहै किजबस्वयंबर मेंसीताजीआईतब-
नरऔरनारीसब मोहितहोगये सीताजीकोदेखके यहबात पूर्वा-
परउसकीबिरुद्धहै औरअपनेग्रंथमेंउननेलिखाहै (किअठारहपद्म
यूथपबानरथे सोएक२ काचार२कोसकाशरीरलिखा तथाकुंभक-
र्णकीमोंछचार २ कोसकीलंबोलिखीहै १६ सोलहकोसकीनांक
६४कोसकाहाथलम्बा८६ कोसकाउदरऐसाजोकुंभकर्णहोता तो-
लंकामें एकभीनहीसमाता/औरअठारहपद्मबानरपृथिवी भरमेंन-
हीसमाते तथा बांदरमनुष्यकीभाषानहीबोलसक्के फिरसुग्रीवादि-
करामसेकैसेबोलसकेंगे राज्यकाकरनाऔरविवाहपशुओंमेंकभी
नहीहोसक्ता ऐसी२ बहुत तुलसीकृतरामायणमें झूठबातलि-
खीहै सोइसके कहनेकाक्या प्रमाण फिरपाषाणकेऊपररामना-
मलिखदिये उससेपाषाणसमुद्रकेऊपरतरेहैं यहबातउसकी मिथ्या-
है क्योंकिऐसाहोता तोहमलोगभीपाषाणकेऊपररामनामलि-
खके उसकातरनादेखते सोनहीदेखनेमेंआता इससेझूठबातको
माननानचाहिये जैसीयहबातझूंठहैउसकोवैसीरामेश्वरकोलिखी
भीझूठहैकिसीदक्षिणकेधनाढ्यनेमंदिरबनायाहै उसकानामहैरा-
मेश्वर उसकोचार४००बरसभयेहोंगे औरएकदक्षिणमेंकालिया-
कंतकामंदिरहै इसविषयमेंलोगोंनेऐसीबातबनाईहै किवहमू-

र्तिहुक्कापीतीहै सोझूठहै क्योंकि पाषाणकीमूर्तिहुक्काकैसेपीयेगी इसमेंलोगोंने मूर्तिकेमुखमेंछिद्रबनारक्खाहै उसछिद्रमें नालीलगाकेकोईमनुष्यछिपकेधुंआखींचताहैफिरवेपुजारीकहतेहैं देखोसाक्षात् मूर्तिहुक्कापीतीहै ऐसा बहकाकेधनहरलेतेहैं ऐसेहीजयपुरकेराज्य मेंएकजीनदेवीबजतीहै बहमद्यपीतीहै सोभीबातझूंठहै क्योंकिवहमूर्ति पोलीबनारक्खीहैउसकेमुखमेंछिद्रहै मद्यकेपात्रकोमुखमेंलगाके ढरकादेतेहैं वह मद्यअन्यस्थानमें चलाजाताहै फिरउसीकोलेकेबेचतेहैं तथाद्वारिकाकेविषयमें लोगकहतेहैं कि द्वारिकामेंनेकीबनीहै उसमेंएकपोपाभक्तसमुद्रमें डूबकेचलागयाथा उनकोश्रीकृष्णजीमिले उनसेबातचीतभई पोपानेकहाकिमैं तोआपके पासरहूंगा तबश्रीकृष्णनेकहाकिमर्त्यलोककाआदमीयहांनहीरहसक्ता सोतुमहमाराशंखचक्रगदापद्म केचिन्हद्वारकामें लजाओ औरसबसेकहदेओ किइनचिन्होंकादागतप्तकरके जोलगवालेगासोवैकुंठ मेंचलाआवेगाऐसेहीचक्रांकितलोगभी कहतेहैं सोएबबातमिथ्याहै क्योंकि जीतेशरीरकोजलानेसेकोईवैकुंठमेंनहींजासक्ताहै औरजोजासक्ता तोमरेभयेशरीरको भस्मकरदेतेहैं इससेवैकुंठके आगेभीजायगा फिरजीतेशरीरको जोजलानायह बातकेवलमिथ्याहै एकपंजावमेंज्वालाजीका मंदिरहैउसमेंअग्नि निकलतारहताहै इसकोकहतेहैं कि साक्षात् भगवतीहै इनसे पूंछना चाहिये कितुमारे घरमेंजबरसोईकरतेहैं तब चूलेमेंभी ज्वालानिकलती रहतीहै प्रश्न चूलेमेंतोलकडी लगानेसे निकलतीहै औरवहांआपसे आपहीनिकलती रहतीहै उत्तर ऐसेही अनेकस्थानोंमें अग्निनिकलतीहै सोपृथिवीमें अथवापर्वतमें गंधकादिकधातुहैंउनमेंकिसीप्रकारसेअग्निउत्पन्नहोकेलगजाताहैसो पृथिवीकोफोडकेऊपरनिकलआताहै जबतकवेगन्धकादिकधातु रहतीहैंतबतकअग्निजलताहीरहताहैयहीपृथिवीकेहिलनेकाकारणहै क्योंकिजबभीतरसेबाहरपर्वतमेंअग्निनिकलताहै तभीपृथिवी

मेंकंपहोजाताहै सोयहबातकेवलमनुष्योंनेअपनीआजीविकाकेवा-
स्ते मिथ्याबनालिईहै एकउत्तराखण्डमें केदारऔरबद्रीनारायणये
दोस्थानप्रसिद्धहैं इसविषयमेंलोगऐसाकहतेहैंकिबद्रीनारायणकी
मूर्तिपारसपत्थरकीहै औरशङ्कराचार्यनेस्थापितकिईहै सोयहबा
तमिथ्याहै क्योंकिजोवहपारसपत्थरकीरहती तो पुजारीलोगद-
रिद्रक्योंरहते औरयहबातझूठमालूमदेतीहै किपारसपत्थरसेलो
हाकुआनेसेसोनाबनजाताहै इसकोकिसीनेदेखातोहैनही सुनतेसु
नातचलेआतेहैं इसबातकाक्याप्रमाण औरशङ्कराचार्यतोमूर्ति-
योंकेतोडनेवालेथे वेस्थापनक्योंकरते केदारकेविषयमें ऐसीबात-
लोगकहतेहैं किजबपांडवलोग हिमालयमेंगलनेकोगये तबमहा
देवकादर्शनकियाचाहतेथे सोमहादेवने दर्शननहींदिया क्योंकि-
वेगोत्रनामअपनेकुटुंबके पुरुषोंकोमारकेयुद्धमेंआयेथे सोमहादे-
वपार्वती औरसबउनकेगणोंने भैंसेकारूपधारणकरलियाथा सो-
नारदजीनेंकहाकिमहादेवादिकोंनेभैंसाकारूपधारणकरलियाहै
तुमकोबहकानेकेवास्तेइसकोयहपरीक्षाहैकिमहादेवकिसीकीटां-
गकेनीचेसेनहींनिकलतसोभीमनेतीनकोसकेछोटेदोपर्वतथेउनके
ऊपरटोटांगरखदिई एक२के ऊपर फिरसबभैंसेतोउनकेनीचेसे-
निकलगये परन्तुएकभैंसानहींनिकला तबभीमनेनिश्चयकरलिया
कियहीभैंसाहैउसकोपकडनेकोभीमदौडा तबवहभैंसापृथिवीमेंगु-
सहोगया उसकासिरनैपालमेंनिकलाजिसका नामपशुपतिरक्खा
है तथाउसकापगकाश्मीरमेंनिकला उसकानामअमरनाथरक्खा
औरचूतडवहींनिकला जिसकानामकेदारहै औरजंघाजहांनिक
लीउसकानामतुंगनाथादिकरक्खाहैऐसेपंचकेदारलोगोंनेरचलि
येहैं इसमेंविचारनाचाहियेकिनैपालमेंभैंसेकाशृंगनाककानकुछ
नहींदेखपडताहै तथाकाश्मीरमेंखुरभीनहींदेखपडते ऐसेअन्यच
कुछभीनहींभैंसेका चिन्हदेखपडताकिन्तु सर्वत्र पाषाणहीदेखप-
डताहैपरन्तु ऐसी२ मिथ्याबातकोमनुष्यलोग मानलेतेहैंयहके-

वह अविद्या और मूर्खता का गुण है क्योंकि भीम इतना लंबा चौड़ा होता तो उसका घर कितना लंबा चौड़ा होता और नगर में वा ग्राम में कैसे चलसक्ता तथा द्रौपद्यादिक उनको स्त्री कैसे बन सक्ती और महादेव को क्या डर पड़ा था कि भैंसा होजाय फिर इतना लंबा चौड़ा क्यों बनजाता और क्या अपराध वा पाप महादेव ने किया था कि चेतन से जड़ बनजाय इससे यह बात सब मिथ्या है एक कामाख्या स्थान रचरक्खा है उसमें एक कुंड बनारक्खा है उसका नाम योनि रक्खा है और वह रजस्वला होती है यह सब बात उन पुजारियों ने आजीविका के हेतु मिथ्या बना लिई है एक बौद्ध गया स्थान है उसमें बौद्ध की मूर्ति बनारक्खी है उसकी पूजा और दर्शन आज तक करते हैं वह मूर्ति केवल जैनों की ही है सो ऐसा जानना चाहिये कि जितना पाषाण पूजन है और जो जड़ पदार्थों का पूजन सो सब जैनों का ही है एक गया स्थान बनारक्खा है उसमें बड़ा संसार का धन लूटा जाता है गया के पण्डाओं को मुफ्त का बहुत धन मिलता है सो वेश्यागमन मद्यपान और मांसाहार में होजाता है केवल प्रमाद में अच्छे काम में कुछ नहीं फिर यजमान लोग मानते हैं कि गया के श्राद्ध में ही पितरों का उद्धार होजाता है सो ऐसे कर्मों से उद्धार तो किसी का होता नहीं परन्तु नरक होने का संभव होता है फिर इस विषय में ऐसा कहते हैं कि रामचन्द्र ने गया में श्राद्ध किया था सो साक्षात् दशरथ जी उनके पिता उनने हाथ निकाल के गया में पिण्ड ले लिया था उस दिन से गया का माहात्म्य चला है और वह स्थान गयासुर का था सो यह बात सब मिथ्या है क्योंकि वे लोग आज काल भी हाथ निकाल के क्यों नहीं पिण्ड लेलेते कि सो समय कोई पुरुष फल्गु नदी में भूमि में गुहा बना के भीतर बैठ रहा होगा और उनों ने मकान बना रक्खा था ऐसे ही उसने भूमि में से हाथ निकाल के पिण्ड ले लिया होगा फिर झूंठ बात प्रसिद्ध करदिई कि साक्षात् पितृलोग हाथ निकाल के पिण्ड लेलेते हैं उस स्थान का पण्डितों ने माहात्म्य बना लिया फिर प्रसिद्ध होगई और सब मानने लगे सो गया ना-

मनिसस्थानमेंवासकरें औरअपनेपुत्रपौत्र तथाराज्यजिसदेशमें-
अपनेरहताहोयउनका नामगयावेदीकेनिघण्टुमें लिखाहैउस-
काअर्थ अभिप्राय तोजानानहीं फिरयहपाखण्डरचलियाकाशि-
राजनेमहाभारतमेंलिखाहै किउसनेनगरबसायाथा इससेउसका
नामकाशीपड़ा औरवरुणा तथा असीनालाके बीचमेंहोनेसे वा-
राणसीनामरक्खागया इसकाऐसा झूंठ माहात्म्य बनालिया है-
किसाक्षात महादेव कीपुरीहै और महादेव नेमुक्तिका सदावर्त्त
बांधरक्खा हैतथाऊसरभूमिहै इससेपापपुण्यलगताहीनहीं रुद्रदेव-
तापंदरह२कलामेंकाशीमेंरहतेहैं औरएक२कलासेअपने२स्थान
मेंरहतेहैं एकमणिकर्णिकाकुंडरच रक्खाहै कियहांपार्वतीकेकान
कामणिगिरपड़ाथा तथाकालभैरव यहांकाकोटपालहै सोसबको
दण्डदेताहै पापपुण्य कीव्यवस्था सेइसकाशीका महाप्रलयमें भीप्र-
लयनहींहोता क्योंकिकालभैरव त्रिशूलकेउपरकाशीकोरखलेताहै
औरभूचालमेंहलतीभीनहीं पंच काशीकेबीचमें जोकोईकीटपतंग
तकभीमरैतोउसको महादेव मुक्तिदेतेहैं अन्नपूर्णा सबकोअन्न
देतीहै अन्तर्गृहीऔरपंचक्रोशीके करनेसेसबपापछूटजातेहैं इत्या-
दिकमिथ्या२जालरचकेकाशीरहस्य औरकाशीखण्डादिकग्रंथब-
नालियेहैं औरकहतेहैंकिबारहज्योतिलिंगहोतेहैंउनमेंसेएकयह
विश्वनाथहैउनसे पूछना चाहियेकिज्योति लिंगहोतेतोमंदिरमें
कभीअन्धकारनहीं होता औरवहपाषाण मुक्तिवाबन्धकभी नहींकर
सक्ताक्योंकिउसीको कारीगरोंने मंदिरकेबीच गढ़ेमेंचिपकाकेबं-
धकररक्खाहैफिर अपनेहीबंधनसेनहींछूटसक्ता फिरअन्यकोमु-
क्तिक्याकरसकेगा सोयहकेवलपण्डितोंने बातबनालिईहै किका-
शीमेंमरनेसे मुक्तिहोतीहै क्योंकिइसबातको सुनकेसबलोगकाशी
मेंमरनेकेहेतुआवेंगे उनसेहमारी आजीविका सदाहुआकरेगी
इससे ऐसी २ जाल रचाकरतेहैं प्रयागमें गंगायमुनाके संगममेंए-
कतीसरीझूंठसरस्वती मानलेतेहैंकि तीसरीसरस्वती भीयहांहै

और दूर स्थान में मुंडानेसे सिद्ध होजाताहै सो ऐसा अनुमान किया जाताहै कि पहिले कोई नौवाय । उसने अपने कुलको आजीविकाकर लिई है और संगममें स्नानकरनेसे मुक्ति होजाती है यह केवल आजीविकाकेवास्ते झूठ २ बात और झूठ २ पुस्तक लोगोंने बनालिए हैं कि प्रयागतीर्थराज है ऐसेही अयोध्या में हनुमानजीको रामजीगद्दीदे गये हैं और अयोध्यामें निवासमेंभी मुक्ति होतीहै यहभी उनकी बात मिथ्याहीहै तथा मथुरा और वृन्दावनमें बड़े २ मिथ्या बात बनालिई हैं कि यमद्वितीयाके स्नानसे यमके बंधनसे जीव छूटजाताहै क्योंकि यमुना यमराजकी बहिन है और वृन्दावनके विषयमें भक्ति भी होती है कि मेरी मुक्तिके से होयगी मुक्ति मुक्तिके वास्ते वृन्दावनकी गलियोंमें झाडू देतो है और मंदिरोंमें नानाप्रकारके प्रमादोंसे व्यभिचारादिक करते हैं तथा अनेकप्रकारके जालोंसे लोगोंका धन हरण करलेते हैं एकचक्रांकितोंने मंदिर रचवाया है उनके दरवाजोंका नाम वैकुंठद्वार इत्यादिक रक्खे हैं और सकल पुंगव सब मनुष्य मिलके इकट्ठे खाते हैं सकलपुंगव उसका नाम है कि कच्चा पक्का सब प्रकारका पक्काकच्चा अन्न बनताहै फिर ब्राह्मणसे लेके अंत्यजपर्यन्त उनके जितने शिष्य हैं उनको पंक्ति लगजाती है उनके हाथके बीचमें थोड़ा २ सब पदार्थ सबको देदेते हैं और वे खालेते हैं उनमेंसे कोई जल हाथधोडालता है और कोई वस्त्र से पोंछ लेता है और ठाकुरजीको झुलावदेते हैं उसमें भी बड़े २ अनर्थ सुननेमें आते हैं और एक राचवेश्याके घर ठाकुरजी जाते हैं फिर उनको प्रायश्चित्त कराते हैं और यमुनाजीमें डुबाके स्नानकराते हैं यह केवल उनका मिथ्या प्रपंच है पर धनहरनेके वास्ते और मूर्खोंको बहकानेकेवास्ते फिर उसमंदिरमें बहुत लोगोंको शंखचक्रादिक तपाके दागदेदेते हैं ऐसे २ मिथ्याछलप्रपंचसे अपनी आजीविका करते हैं इनमें कुछ सत्यवा चमत्कार नहीं तथा गंगादिकतीर्थोंके विषयमें सब पापका छूटना वैकुंठमें आना मुक्तिका होना और ब्रह्मद्रव तथा साक्षात् भगवती का मानना यह बात मि-

थ्या है क्योंकि हिमवतः प्रभवति गंगा यह व्याकरणमहाभाष्य का व-
चन है इसका यह अभिप्राय है कि हिमालय से गंगा उत्पन्न होती है
तथा यमुनादिक नदियां बहुत हिमालय से उत्पन्न भई हैं और वि-
न्ध्याचल में तथा तडागों में भी बहुत नदियां उत्पन्न होती हैं केवल जल
सब में है उस जल में उत्तम मध्यम और नीचता भूमि के संयोग गुण से
है इस से अधिक कुछ नहीं सो जल होता है वह जल क्या पाप को छोड़ा स-
केगा और मुक्ति को भी दे सकेगा कुछ भी नहीं जैसा जिस जल में गुण है
शीत उष्ण मिष्ट निर्मलता वैसा ही उस में होता है इन में अधिक गुण
नहीं वे क्षार मिष्टादिक गुण सब भूमि के संयोग से हैं अन्यथा नहीं गंगे-
त्वद्दर्शनान्मुक्तिर्न जाने स्नानजं फलम् इत्यादिक नारदादिकों के
नामों से मिथ्या २ श्लोक लोगों ने बना लिए हैं जो दर्शन से मुक्ति हो-
ती तो सब संसार की हो मुक्ति हो जाती और मुक्ति में कोई अधिक फ-
ल नहीं है कि संसार में स्नान से कुछ अधिक होवै यह केवल मिथ्या क-
ल्पना उनकी है कि काश्यां मरणान्मुक्तिः गंगे त्वद्दर्शनान्मुक्तिः सह-
स्रभगदर्शनान्मुक्तिः हरिस्मरणान्मुक्तिः ॥ इत्यादिक मिथ्या श्रुति
लोगों ने बना लिई हैं किन्तु ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः यह सत्य श्रुति है कि
बिना ज्ञान से किसी की मुक्ति नहीं होती क्योंकि सत्यासत्य विवेक के बिना
असत्य के दोषों का ज्ञान नहीं होता दोष ज्ञान के बिना मिथ्या व्यवहार
और मिथ्या पदार्थों से कभी नहीं जीव छूटता इस से मुक्ति के वास्ते सत्या
सत्य का विवेक परमेश्वर में प्रीति धर्म का अनुष्ठान अधर्म का त्याग स-
त्सङ्ग सद्विद्या जितेन्द्रियतादिक गुण इन में अत्यन्त पुरुषार्थ से मुक्ति
हो सकती है अन्यथा नहीं और जिस को इस बात का निश्चय करना होवै
वह इस बात को करै कि जितने तीर्थों के पुरोहित और मंदिर स्थान के
पुरोहित उनके प्राचीन पुस्तकों के देखने से सत्य २ निश्चय होता है
क्योंकि वह यजमान देश गांव जाति दिन मास और संवत्सर इनका
यथावत् पुस्तक जो बही खाता उस में लिखे रखते हैं उनके देखने से ठी
क २ दिन मास और संवत्सर का निश्चय होता है कि इस तीर्थ वा इस मं-

दिरकाप्रारंभ इससंवत्सरमेंभयाहै क्योंकिजब जिसकाप्रारंभहोता हैतबउसकेपण्डे औरपुजारी तथापुरोहित उसीसमयबनजातेहैं देखनाचाहियेकि विंध्याचलमूर्ति केविषयमें लोगकहतेहैंकिएक दिनमें देवीतीनरूप धारणकरतीहै अर्थात्प्रातः कालमेंकन्या मध्यानमेंजवान औरसंध्याकालमेंबुड्ढोबनजातीहै इनसेपूछनाचाहियेकि रातमेंउसमूर्तिकी कौनअवस्थाहोतीहै सोकेवलपुजारीलोगोंकोधूर्त्तताहै क्योंकिजैसावस्त्रआभूषणधारणकरैं वैसाहोस्वरूपदेखपड़ताहैऔरकहतेहैंकिइसमंदिरमेमक्खीनहीहोतीपरंतु असंख्यातमक्खीहोतीहैं सोकेवलझूठ बकातेहैंआजीविकाकेवास्ते तथावैजनाथकेविषयमेंकहतेहैंकिकैलाससेरावणलेआयाहैयहसवमिथ्याकल्पना लोगोंकीहै क्योंकिआजतक नये२ मंदिरनये२ मूर्त्तियोंकेनामधरतेहैं औरसंप्रदायीलोगोंनेअपने२ संप्रदायकेपुष्टिकेवास्ते बनालियेहैं उनकानाम रखदियापुराणऔरऐसाभीवेकहतेहैं कि अष्टादशपुराणानांकर्त्तासत्यवतीसुतः इसकायहअभिप्रायहैकिअठारहपुराणोकेकर्त्ताव्यासजीहैं जोकिसत्यवतीकेपुत्रहैं यहबातमिथ्याहै क्योंकिव्यासजीवडपंडितथे और सत्यवादी सबपदार्थविद्या यथावत्जानतेथे उनका कथनयथावत्प्रमाणयुक्तहीहोताहै क्योंकिउनकेबनायेशारीरकसूत्रहैं और महाभारतमें ऊ२ स्लोकहैं वेभीयथावत्सत्यहीहैं परन्तुमहाभारतमेंअन्यभीस्लोकहैं अथवामबव्यासजीकेबनायेहैं उनमें कईहजारस्लोकसंप्रदायीलोगोंनेमहाभारतमें मिलादियेहैं अपने२ संप्रदायकेप्रमाणकेवास्ते क्योंकिशांतिपर्वमें विष्णुकीबडाईलिखीहैऔरसबकोन्यूनताओरउसीमें सहस्रनामलिखेहैं इससे विरुद्धउसीपर्वमे शिवसहस्रनामजहांलिखेहैं वहांविष्णुकोतुच्छकरदियाहै तथाजहां विष्णुकी बडाईहै वहांमहादेवको तुच्छकरदियाहैऔरजहांगणेशऔरकार्तिकस्वामीकीस्तुतिकिईहै वहांअन्यसबकोतुच्छबनादियेहैं तथाभीष्मपर्व औरविराटपर्वमे जहांदेवीकीकथालिखीहै वहांअन्यसब

तुच्छगिनेहैं एकभीमऔरधृतराष्ट्रको कथालिखीहै किधृतराष्ट्रकेश-
रीरमें ६००० हाथीकाबलथा तथाभीमकेशरीरमें दसहजारहा-
थीकाबलथा औरएकगरुड़पक्षीकाबल ऐसावर्णनकियाकि जिस-
कातोलन नहींहोसक्ता उसगरुड़काबलविष्णु केआगेतुच्छगिना-
तथाउसविष्णु कावल वीरभद्रकेआगे तुच्छकरदियाहै वीरभद्रका
रुद्रकेआगे औररुद्रकाविष्णु के विष्णु का वीरभद्रकेआगेऐसेपर-
स्परमिथ्याकथा व्यासजीकी बनाई महाभारत मेंनहीबनसक्ती-
औरभीऐसी २ कथालिखीहैं किभीमकोदुर्योधननेविषदानदिया-
जबवहमूर्छितहोगया तबउसकोबांधकेगंगाजीमेंगिरादियासोव-
हपातालकोचलागया वहांसर्पोंनेबहुतकाटा फिरजबउसकावि-
षउतरगया तबसर्पोंकोमारनेलगा उससेसर्पभागगयेवासुकीराजा
सेजाकेफिरकहा किएकमनुष्यका लड़काआयाहै सोबड़ा पराक्र-
मीहै तबवासुकी भीमकेपासगया औरपूछाकि तूकौनहै कहांसे
आयाहै तबभीमनेकहा किमैंपाण्डुकापुत्रहूं औरयुधिष्ठिरकाभाई
तबतोवासुकी बड़ेप्रसन्नभये औरभीमसेकहा किजितनातुझसेइ-
नकुण्डोंमेंसेजल पीयाजाय उतनापी क्योंकियेनवकुण्डअमृतसेभ-
रेहैंऐसासुनकेउठा औरनवकुण्डोंका सबजलपीगया सोनवहजा-
रहाथीकाबलबढ़गया इसमेंविचारनाचाहियेकि विषकेदेनेसे वह
भीम मरक्योंनगया औरजलमें एकघड़ीभरनहींजीसक्ता औरपा-
तालकामार्ग वहांकहांहोसक्ताहै औरजोहो सक्तातोगंगाकाजल
सब पातालमें चलाजाता ऐसी २ मिथ्याकथा व्यासजीकी कभी
नहींहोसक्ती औरजितनी सत्यकथाहै वहसबमहाभारतमें व्यास
जीकीहोसक्तीहैं औरजितने पुराणहैं उनमेंव्यास जीकाकियाएक
श्लोकभीनहीं क्योंकिशिव पुराणादिक सबशैव लोगोंके बनायेहैं
उनमेंकेवल शिवकोही ईश्वरवर्णन कियाहै औरनारायणादिक
शिवकेदासहैं फिर रुद्राक्षभस्म नर्मदाकालिंग औरमृत्तिका का
लिंग बनाकेपूजने बिनाकिसीकी मुक्तिनहीं होतीयहकेवल शै-

वोंकी मिथ्या कल्पना है और इन बातों से कभी नहीं मुक्ति होती बिना धर्मानुष्ठान विद्या और ज्ञानसे फिर वह जो शिव जिसको कि ईश्वर वर्णन किया था पार्वतीके मरनेमें सर्वत्र रोता फिरा ऐसी कथा श्रेष्ठ पुरुषोंकी कभी नहीं होती किन्तु यह केवल शैवसंप्रदाय-वालोंकी बनाई है तथा शाक्तलोगोंने देवीभागवत तथा मार्कण्डेय पुराणादिक बनाए हैं उनमें ऐसी२ कथा झूठ लिखी है कि श्रीपुरमें एक भगवती परब्रह्मरूप थी उसने संसार रचनेकी इच्छा किई तब प्रथम ब्रह्माको उत्पन्न किया और कहा कि तूं मेरेसे भोग कर तब ब्रह्माने कहा कि तूं मेरी माता है तुझसे मैं समागम नहीं करसक्ता तब कोपसे भगवतीने ब्रह्माको भस्म कर दिया और दूसरा पुत्र उत्पन्न किया जिसका नाम विष्णु है उससे भी वैसा ही कहा फिर विष्णुने भी समागम न हीं किया इससे उसको भी भस्म कर दिया फिर तीसरा पुत्र उत्पन्न किया जिसका नाम शिव है उससे भी कहा कि तूं मुझसे समागम कर तब महादेवने कहा कि तूं तो मेरी माता है तेरेसे मैं समागम नहीं कर सक्ता परन्तु तूं अपने अंगसे एक स्त्रीको पैदा कर उससे मैं समागम करूंगा फिर उसने पैदा किई और दोनोंका विवाह भी किया फिर महादेव ने देखा कि ये दो भस्म क्या पडी हैं तब देवीने कहा कि तेरे भाई हैं इन दोनोंने मेरी आज्ञा नहीं मानी इससे इनको मैंने भस्म कर दिया फिर महादेवने कहा कि मेरे भाई हैं इनको जिलादेओ तब भगवतीने जिला दिये और फिर कहा कि और दो कन्या उत्पन्न करो कि मेरे भाई का भी विवाह होजाय भगवतीने उत्पन्न किई विवाह होगया एकका नाम उमा दूसरीका नाम लक्ष्मी तीसरी सावित्री इनके विषयमें ब्रह्मा नारायणकी नाभिसे उत्पन्न भया कहीं लिखा कि ब्रह्मासे रुद्र और नारायण उत्पन्न भये कहीं लिखा कि उमा दक्षकी कन्या कहीं लिखा हिमालयकी कन्या है लक्ष्मी समुद्रकि कन्या है कहीं लिखा कि वरुणकी कन्या कहीं लिखा कि सावित्री सूर्यकी कन्या है कहीं लिखा कि ब्रह्मासे जगत उत्पन्न भया कहीं नारायणसे कहीं महादेवसे-

कहींगणेशसे कहीस्कंदसे ऐसे झूंठ २ कथापुराणोंमेंबनारक्खीहैं
प्रश्न इसमेंविरोधनहीं क्योंकियेसबकथाकल्पकल्पान्तरकीहैंउत्त-
र यहबातमिथ्याहै क्योंकि सूर्याचन्द्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत्
जैसीसूर्यादिकसृष्टिपूर्वकल्पमेंभईथीवैसीसबकल्पमेंहोतीहै ऐसा
जोकहोगेतोकिसीकल्पमे पगसेभोखातेहोंगेऔरमुखसेचलतेहों-
गेनेत्रसेबोलतेहोंगे जीभसेनबोलतेहोंगे इत्यादिकसबजाननलेना
लोगोंनेमार्कण्डेयपुराणान्तर्गतजोदुर्गास्तोत्रहैजिसकानामरक्खा
हैसप्तशती उसमऐसी २ झूंठकथालिखीहै किरुधिरौघमहानद्यः
सद्यस्तत्रप्रसुस्रुवुः रक्तबीजऔर देवीकेयुद्धमें रुधिरकीबडी २ न-
दियांचलीं इनसेपूंछना चाहिएकि रुधिरवायुकेंस्पर्शसेजमजा-
ताहै उसकीनदीकभीनहींचलसक्ती रक्तबीजइतनेबढेकिसबजग-
त्पूर्णहोगया उनकेशरीरसे उनसेपूंछनाचाहिएकिइतनगरगां-
व पर्वतभगवती भगवतीकासिंह कहांखडेथेयस्याःप्रभावमतुलंभ-
गवाननन्तो ब्रह्माहरश्चनहिवक्तुमलंबलंचसा चंडिकाखिलजगत्प-
रिपालनाय नाशायचाशुभभयस्यमतिंकरोतु इसश्लोकमेंब्रह्मा वि-
ष्णुऔरमहादेव कोतोमूर्खबनाया क्योंकिचंडिकाकाअतुलप्रभाव
और बलकोवेनहीं जानतेहैं अर्थात् मूर्खहोंभयेचंडिकोपेइसधा
तुसे चण्डिकाशब्द सिद्धहोताहै जोकोपरूपहै वहअधर्मकास्वरू-
पहीहै विष्णुःशरीरग्रहण महमीशानएवच कारितास्तेयतोऽत-
स्त्वांकः स्तोतुंशक्तिमान्भवेत् ब्रह्माविष्णु औरमहादेवतैंनेहीश-
रीरधारणवालेकियेहैं फिरतेरीस्तुतिकरनेकोसमर्थकौनहोस-
क्ताहै ऐसाकहके त्वंस्वाहा त्वंस्वधा त्वंहि इत्यादिक स्तुतिकरने
भीलगा यहबडीभारी प्रमादकीबातहै किजिसकानिषेधकरैउसी
कोअपनेकरनेलगजाय सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः
मनुष्योमत्प्रसादेन भविष्यतिनसंशयःपुछनाचाहिये उसभगवती
कीप्रतिज्ञाहैकिमेराइसस्तोत्रका पाठऔरमेरीभक्तिकरेगासर्वा-
त्मवदुःखोंसेछूटजायगा औरधान्यधनपुत्रोंसे युक्तहोताहैसो यह

प्रतिज्ञा नजानकहांगई किइसपाठककरने औरकरानेवाले अनेक दुःखोंमेंपीडित देखनेमेंआतेहैं धनधान्यपुत्रोंको इच्छाभी अत्यन्त होतीहै औरमिलताकुछनहीं यहांतककिपेटभीनहींभरताऐसी २ मिथ्याकथाओंमें विद्याहीनपुरुषोंको विश्वासहोजाताहै यहबड़ा एकआश्चर्यहै ऐसेहीविष्णुपुराण ब्रह्मवैवर्तऔर पद्मपुराणादिकों मेंअनेक २ झूंठकथा लिखीहैं तथाभागवतमें बहुतमिथ्या कथा लिखीहैं किशुकाचार्य व्यासजीकेपुत्र परीक्षितके जन्मसेसौ१०० बरसपहिलेमरगयाथा परीक्षितका जन्मपीछे भयाहैसोमोक्षधर्म में महाभारतकेलिखाहै फिरजोमनुष्य कहतेहैंकि शुकाचार्यने सप्ताहसुनाया सोकेवलमिथ्याबातहै क्योंकिउससमयशुकाचार्यका शरीरहीनहीथाऔर ऋषिकाआपथा कियमलोककोपरीक्षितजा य फिरभागवतमेंलिखा किपरीक्षितपरमधाम कोगयायहउनकी बातपूर्वापरविरुद्ध औरमिथ्याहै औरचतुःश्लोकीसबभागवतकामू-लमानतेहैंसोनारायणनेब्रह्मासे ब्रह्मानेनारदसेनारदने व्यासजी से व्यासजीनेशुकसे शुकनेपरीक्षितसे फिर भागवत संसारमेचल-निकसा सो यहबड़ाजाल रचलियाहैक्योंकि ज्ञानंपरमगुह्यं मेंय-द्विज्ञानसमन्वितम् सरहस्यंतदंगंचगृहाणगदितंमया इत्यादिक चारश्लोक बनालियेहैं क्योंकिपरम और गुह्ययेदोनोंज्ञानकेविशे-षणहोनेसे वही विज्ञानहोजाता है फिर यद्विज्ञानसमन्वित यह जोउसकाकहना सोमिथ्याहोजाताहै औरगुह्य विशेषणसेसरह-स्यमिथ्याहोताहै क्योंकि रहस्यनामएकान्त और गुह्यकाहोहैप-रमज्ञानकेकहनेसेतदंग अर्थात मुक्तिकाअंगहै यहउसकाकहना मिथ्याहीहैक्योंकि परमज्ञानजोहोताहै सोमुक्तिकाअंगहीहोता-हैऐसायह श्लोकमिथ्याहै वैसासब भागवतभी मिथ्याहै क्योंकिजय-विजयकी कथाभागवतमें लिखीहै सनकादिकचारवैकुंठ कोगयेथे उससमयनारायण लक्ष्मीजीकेपासथे जयऔर विजययेदोनोंवैकुंठ केद्वारपालोंने उनकोरोकदिया तबउनको क्रोधभयाऔरशापज-

यविजयको दियाकितुम जाओभूमिमेंगिरपडोतबतोउनकोबडाभय भया औरउनकोप्रार्थनाकिई किमहाराजमेरे शापकाउद्धारकैसेहोगा तबसनकादिकोंनेकहाकि जोतुमप्रीतिसे नारायणकीभक्तिकरोगेतोसातवें जन्मतुमाराउद्धारहोगा औरजोवैरसेभक्तिकरोगे तो तीसरेजन्मतुमारा उद्धारहोगा इसमेंविचारनाचाहिये किसनकादिकसिद्धथे वेवायुवत् आकाशमार्गमे जहांचाहैवहांजातेथे उनकानिरोधकैसेहोसक्ताहै तथाजयविजयनेबालकरूपथेआनेकोक्योंरोका क्योंकिवेक्यादोनोंमूर्ख थे औरवेसाक्षातब्रह्मज्ञानीथे उनकोक्रोध क्योंहोता और कोईकिसीको प्रीतिसेसेवाकरै औरदूसराउसकोदण्डसेमारै उनमेंसेकिसके ऊपरवहप्रसन्नहोगाजोकिसेवाकर्त्ताहै औरजोदण्डामारताहै उसके ऊपरकभी किसीकीप्रसन्नतानहींहोसक्ती फिरवहिरण्याक्ष औरहिरण्यकश्यपदोनोंभयेएककोवराहनेमारा औरदूसरेकोनृसिंहनेउसकापुत्रथाप्रल्हादउसकेविषयमेंबहुतझूंठकथाभागवतमेंलिखीहै किउसकोकूएमेंगिरायाऔरपर्वतसेगिरायापरन्तुवहनमराफिरलोहेकाखंभअग्निसेतपाया औरप्रल्हादसेकहा कितूंइसकोपकड नहींतोतेरासिरमैंकाटडालूंगाफिरप्रल्हादखंभकेसामनेचला औरचित्तमें डराभीकुछ किमैंजलनजाऊं सोनारायणने चिवटीउसकेऊपरचलाई उनकोदेखके प्रल्हादनिडरहोके खंभेकोपकडा तब खंभाफटगया औरबीचमेंसेनृसिंह निकलेसोउसकेपिताकोपकडके पेटचीरडालाऔरनृसिंहकोबडाक्रोधआयासोब्रह्मामहादेवलक्ष्मीतथाइन्द्रादिकदेवोंसे नृसिंहकेकोपकीशांतिहीनहोभई फिरप्रल्हादसे सबने कहाकि तूंहीशान्तिकर सोप्रल्हाद नृसिंहकेपासगया औरनृसिंहशांतहोगया सोप्रल्हादको जीभसेचाटनेलगा औरकहाकि वरमांग तबप्रल्हादनेकहा किमेरेपिताका मोक्षहोयतबनृसिंहबोले किमेरेवरसे २१ पुरुषोंकामोक्ष होगयातेरेपितादिकोंकाइनसेपूंछनाचाहियेकिनारायणने शूकरऔरपशुकाशरीरक्योंधारणकि-

या और कैसे धारणकरसक्ता फिरण्याक्षपृथिवीको चटाईकीनाईं ध
रके सिराने सोगया सोकिसके ऊपर सोया और पृथिवीको उठाई
सोकिसके ऊपर खडारहीके और पृथिवीको कोईउठा भीसकता है
और कोई नारायणके भक्त हो पर्वतसेगिरादेवा कूएमेंडालदेवत म
रजायगा अथवाहाथगोडटूटजायगा रक्षाकोईनहीकरेगा खंभमें
से नृसिंहका निकलना यहबातबडीमिथ्या है और नृसिंह जो नारा-
यणका अवतार और रूवंशहोता तो पहिली बातको क्योंभूलजाता
जो सनकादिकोंने सातवा तीनजन्ममें सद्गतिकहीथी उनने पहिले ही
जन्ममें सद्गतिक्यों टेदिई और प्रथमही उनका जन्मथा उसकी २१ पी
ढीनहीरनसक्ती और जोकश्यप मरीचिब्रह्मातकविचारें तोभीचा-
रपीढीहोसक्ती हैं २१ तककभीनहीं फिर उसने लिखा कि हिरण्या-
क्ष हिरण्यकश्यप ही रावणकुंभकर्ण शिशुपाल और दन्तवक्रहोतेभ
ये फिर सद्गतिकिनकोभई यहबडीमिथ्याकथा है अजामीलकीकथा
मे लिखा है कि अपनेपुत्रको मरणसमयमें बोलायाउसकाभी नाम-
नारायणथा सोनारायणने इतना भानाभीनहीं कि मेरेकोपुकार-
ता है वा अपनेपुत्रको और वहबडापापीथापरन्तुएकसमयनारायण
केनामसे उसको वैकुंठकावासदेदिया सोबडाभारीअन्यायकिपा-
पकरै और दण्डनहोय ऐसीकथासुनके लोगोंकीभ्रष्टबुद्धिहोजाती
है क्योंकिएकबार नारायणके नामसे सबपापछुटजाते हैं फिरकोई
पापकरनेसेभयकभीनहीकरेगा व्यासजीनेसबवेदवेदांग विद्याओं
कोपढलिया और परमेश्वर पर्यन्तयथावत्पदार्थोंकासाक्षात्कार-
कियाथा तथा अणिमादिकसिद्धिभीभईथी फिरभी सरस्वतीनदीके
तटमें एकवृक्षकेनीचे शोकातुरहोके जैसेरोताहोवै वैसेबैठेथे उ-
ससमयमें ब्रह्मानारदआये और व्यासजीसेपूंछा कि आपऐसीअव
स्थामेंक्यों बैठे हैं तबव्यासजीबोले किमैंनेसबविद्यापढी और सबप्र-
कारकाज्ञानभी मुझकोभया परन्तुमेरेचित्तकी शांतिनहीभई तब
नारदजीबोले कितुमने भगवतकथानहीकिई और ऐसाग्रन्थभीको

इनहोंबनाया जिसमें भगवतकथा होवै सोत्रापभागवतबनावैं क्याजीकेगुणयुक्त तबत्रापकाचित्त शान्तहोगा इसमेंविचारनाचाहियेकिव्यासजी जोनारायणका अवतारहोते तोउनकोत्रज्ञानशोक औरमोह क्योंहोता और जोउनकोत्रज्ञानादिकथेतोत्रज्ञानीकाबनाया जोभागवतउसकाप्रमाणनहींहोसक्का फिरइसकथामेवेदादिकोंकोकेवलनिन्दात्रातीहै क्योंकिवेदादिकोंके पढनेमंव्यासजीकोज्ञान नहींभया तोहमलोगोंका कैसेहोगा फिरभीनिगमकल्पतरोर्गलितंफलं इत्यादिकश्लोकोंमे केवलवेदोंकीनिन्दाहीकिईहै क्योंकिवेदादिक सत्यशास्त्रोंका यहनिन्दानकरतातोइसमहामिथ्याजालरूपजोभागवतग्रन्थउसकी प्रवृत्तिहो नहींहोतीफिरउसनेनृगराजकीकथालिखीकि यावत्यः सिकताभूमौयावन्तोदिवितारका: यावन्तोवर्षधाराश्च तावतीरददंस्मगा॥नृगराजानेइतनीगायदिईकिजितनेभूमिमेकणिकाहैं इसमें पूंछनाचाहियेकिइतनीगायकहां खडीरहतीथीं क्योंकिएकगायतीनवाचारहाथकेजगहमेंखडीरहतीहैंउसभूमिकेकणोंको सबभूमिकेमनुष्यकरोडहांलाखहां वर्षतकगिनें तोभीपारावार नहींहोवै फिरभीउसमिथ्यावादीको संतोषनहींभया मिथ्याकहनेसेकि जितनेत्राकाशमेतारे औरजितने वृष्टिकेबिंदु उतनेगोदान नृगराजनेकियेफिरभीवह दुर्गतिकोप्राप्तभया क्योंकिएकगाय एकब्राह्मणकोपहिलेदिईथी फिरभूलके दूसरेकोदेंदिई फिरदोनोंब्राह्मण लडनेलगेकिएक कहैयहमेरीगायहै दूसराकहेकिमेरी तबनृगराजनेकहाकिदोनोंतुम समझकेएकतो इसगायकोलेलेत्रो दूसराएकबदलेमे सोहजारलाख करोडत्रौर सबराज्य लेलेत्रो परन्तुलडोमतवेदोनोऐसेमूर्खकिलडनेहीरहे किन्तुशान्तनभयेत्रौरफिर राजाकोत्रापदेदियाकितूदुर्गतिकोजाइसमेंविचारनाचाहिये किएकतोइसनेकर्मकांडकीनिन्दाकिईकीथोडीसीभीभूलपडजायतोदुर्गतिकोजाय इसमें कर्मकाण्डमंकुछफलनहीं ऐसाउनकीमिथ्याबुद्धि

थी कि इसप्रकारकी मिथ्याकथाउसनेलिखी औरब्राह्मणोंकीनिन्दा लिखीकिसदा हठीहोतेहैं औरराजाने उनकोदण्डभी नहींदिया ऐसेपुरुषोंको दण्डदेनाचाहिये राजाकोफिरकभी हठदुराग्रहन करैं औरराजाका अपराधक्याभयाथा किउसकोंश्रापलगा एक गोदानके व्यतिक्रमसेदुर्गतीकोवह्नगया और असंख्यातगोदानका पुन्यउसका कहांगयायह अन्धकारकीबात उनकोकिइतने उसने गोदानकिये परन्तु सबउसकेनष्टहोगये बह्नतगोदानोंके पुन्यनेकुछसहायनहींकिया फिरउसनेएककथालिखीकि रथेनवायुवेगेन जगामगोकुलंप्रतिजबकंसनेअक्रूरजीकोश्रीकृष्णकेलेनेकेवास्तेभेजा तबमथुरासे सूर्योदयसमयमें वायुवेगरथके ऊपरबैठ केचलेदो-कोस दूरगोकुलथासोचारप्रहरमेंअर्थात् सूर्यास्तसमयमेंगोकुल कोआपहुचे इसमेंपूछनाचाहियेकि रथकावायुवेगकहांनष्टहोगया जोकोईकहेकि अक्रूरजीकोप्रेमहुआ सोदेरमेंपहुंचेपरन्तु घोड़े-कोऔर सहीसको प्रेमकहांसेआया और उसका वायुवेग उसने क्योंमिथ्यालिखा फिरपूतनाकोश्रीकृष्णने मारके गोकुलमथुरा केबीचमें उसकाशरीर डालदिया सोछ:कोसतकउसशरीर की-स्थूलतालिखी फिरकंसको मालूम भीनहीं भयाकि पूतनामारी गईवानहीं जोछ:कोसकी स्थूलताहोतीतो दोकोसकेबीचमें कैसे समातीकिन्तु गोकुलमथुरा येदोनोंचूर्णहोजाते औरगोकुलमथुराके पारकोस२ तकशरीरगिरतासो ऐसी२ झूठकथा लिखीहैं परन्तु कथाकरनेऔरकरानेवाले सबभांगपानकरकेमस्तहोगये-हैं किऐसेझूठकोभीनहीं जानसक्ते ब्रह्माजीको नारायणजीनेवर दियाकि। भवानकल्पविकल्पेषु न विमुह्यतिकर्हिचित्जबतकसृष्टि है इसकानामहै कल्पऔरजबतक प्रलयबनारहे उसकानामहैवि-कल्पसोनरायणने ब्रह्माजीसेकहाकितुमको कभीमोहनहोगाफि-रवत्सहरणकथामेंलिखा किब्रह्मामोहितहोगये और बछड़े कोह-रलियाऔरउनीब्रह्मानेतोकहाथा किआपवासुदेवऔदेवकीकेघर

मेंजम्मलीजियेफिर कैसोगाढी भांगपीलिईकिझटभू लगयेकि यह गोपहैवाविष्णुकाअवतारहै औरभागवतबनानेवालेने ऐसानशा कियाहै किबड़ाअंधकारइसकेहृदयमेंहैकि ऐसाबड़ापूर्वापरविरुद्ध लिखताहै औरजानताभीनहींप्रिय ब्रतकोकथाउसनेलिखीकिसा- तदिनतक सूर्योदयनहींभया तबप्रियब्रत रथपैंबैठकेसूर्यकीनांईप्र- काशितहोकेघूमनेलगामोउसकेरथकेपहियेकेलीकसेसातदिनतक घूमनेससातसमुद्रसप्तद्वीपबनगये इस्सेपूछनाचाहियेकिरथकेचक्र कोइतनोबड़ी स्थूललीकभईतो उसरथ केचक्रका क्याप्रमाणरथ अश्वऔर प्रियब्रतकेशरीरका क्याप्रमाणहोगा एकरथइसकथामे इतनास्थूलहोगाकि पृथ्वीकेऊपर अवकाश नहींहोसक्ताऔरसूर्य आकाशमेंभ्रमणकर्त्ताहै प्रियब्रतनेपृथ्वीकेऊपर भ्रमणकियाफिर जितनासूर्यकाप्रकाश उतनाउस्सेकभीनहीं होसक्ता औरसूर्य लोककेइतनास्थूलभी कभीनहींहोसक्ता भूगोलकेविषयमें जैसा उननेलिखाहै वैसा उन्मत्तभी नलिखतथा सुमेरुपर्वतकेविषयमें जैसालिखाहैवैसाबालकभीनहींलिखेगा सोऐसीअसंभवऔरमि- थ्या कथाभागवतका करनेवालालिखताहै श्रीकृष्णविद्वानधर्मात्मा औरजितेन्द्रियथे ऐसामहाभारतकी कथासे यथावत् निश्चयहोता हैसो श्रीकृष्णकी जैसीनिन्दा इसनेकराई ऐसीकिसीकीनहोगी क्योंकि उसनेरासमंडलकोकथालिखी उसमेंऐसो २ बातलिखी जिस्से यथावत् श्रीकृष्णकीनिन्दाहोय जैसेकिवृन्दावनसे महावन छः कोसहै वृन्दावनमें वंसोबजाई उसकाशब्दनिकट २ गांवऔर मथुरामेंकिसीनेनहींसुनाकिन्तुजैसाबांदर उड़केजायवैसाशब्दउ- डकेमहावनमें कैसेगयाहोगा फिरउसशब्द कोसुनके महावनकी स्त्रियांव्याकुलहोगई फिरउनकेपतियोंनेनिरोधभीकियातोभीकि- सीनेनमाना फिरउलटाआभूषणऔरवस्त्रधारणकरके वहांसेचली सोछःकोसवृन्दावन मेंनजानेपक्षीकीनांई उड़गई होंगीपगकाआ- भूषणनाकमेंनाकका आभूषणपगमें कैसधारणकरलेगीफिरश्रीकृ-

ष्णनेगोपियोंसेकहाकितुमनेबडाबुराकामकियाइस्से तुमअपने२घ
रकोचलीजाओ औरअपनो २ पतिकोसेवाकरो पतियोंकीआज्ञा
भंगमतकरो फिरगोपियांबोलीं कियेझूठपतिहैं सत्यपतितोआ-
पहोहैं हमउनकेपासक्योंजाय आपकोछोडकेतबतोश्रीकृष्णभीप्र-
सन्नहोगये औरहाथसेहाथ पकडकेझटक्रीडा करनेलगेसो छः
मासकोरात्रिकरदिई क्योंकिस्त्रियांबहुतथीं औरकामातुरथीफि-
रश्रीकृष्णने भीविचाराकि इनमेंथोडेकालमें तृप्तिनहोगाइस्सेछः
मासकाक्रीडाकेवास्ते कालबनाया फिर क्रीडाकरते२ अन्तर्ध्यान
होगए फिरगोपियांबहुतब्याकुलहोनेलगींऔररोनेलगीं तबश्री
कृष्णफिरप्रसिद्धहोगये तबफिरगोपीप्रसन्नहोगई फिरभीसबमि-
लके क्रीडाकरनेलगे फिरएकबारएकगोपीकोश्रीकृष्णकंधेपरले-
केबनमेंभागगए उसस्त्रीकावीर्यस्रावहोगयाइसमेंविचारनाचाहि-
एकि श्रीकृष्णकभीऐसी बातनकरेंगेइस्से बहुतजगत्काअनुपका-
रहोताहै क्योंकिस्त्रीलोगगोपियोंका दृष्टान्तसुनके व्यभिचारिणी
होजांयगीतथापुरुषभीश्रीकृष्णकादृष्टान्त सुनकेव्यभिचारीहोजां-
यगेऐसीकथासे बहुतजगतका अनुपकारहोताहै फिरवहांपरी-
क्षितनेप्रश्नकियाकियहधर्मकाउल्लंघनश्रीकृष्णने क्योंकियाउसका
शुकनेउत्तरदिया ॥ धर्मव्यतिक्रमोदृष्ट ईश्वराणांचसाहसम् तेजी-
यसांनदोषायवन्हेः सर्वभुजोयथा इसकायहअभिप्रायहै किजोई-
श्वरहोताहै सोधर्मकाउल्लंघनकर्त्ताभीहै किन्तु जैसाचाहेवैसा
करें परस्त्रीगमनकरले वाचोरीभीकरले उनकोदोषनहीं जैसे
तेजस्वीपुरुष जोचाहेसोकरले जैसेअग्निसबकोजलादेताहै औ-
रदोषनहीलगताहै वैसेकृष्णादिक समर्थथेउनकोभी दोषन-
हीलगताइनमेंविचारनाचाहिये किश्रीकृष्णधर्मात्माथेऐसाका-
मकभीनहीकरेंगे(औरजोश्रीकृष्ण ऐसाकर्त्तेतो कुंभीपाकसेकभी
ननिकलते)इस्से श्रीकृष्णनेकभीऐसा कामनहीकियाथा क्योंकिवे
बडेधर्मात्माथे ईश्वराणांवच सत्यं तथैवाचरितंक्वचित् इसकायह

अभिप्रायहै किईश्वरकावचनकहीं २ जैसेसत्यहोताहै वैसेआचर-
णभीसत्यकहीं२होताहैसर्वथाईश्वर असत्यबोलताहैऔर अधर्मको
होकर्तेहैंकिन्तु कदाचित् सत्यवचनबोलताहै ईश्वरऔरसत्यआच-
रणइनसेपूछनाचाहिये कोयहईश्वरकीबातहै वाउन्मत्तकी जेकह
तेहैंकि जिसकेकण्ठमेंरुद्राक्ष वातुलसीकीमालानहोय वाललाट
मेंतिलकउनकेमुख देखनेसेपापहोताहै उनसेकहोकि उनकीपीठ
देखनेसेतोपुण्यहोताहोगा औरवेकहेंहैंकिउनकेहाथसे जललेनेमें
पापहोताहै तोउनसेकहोकी वहपगसेजलदेदे फिरतोकुछपाप
नहीहोगा ऐसी २ बातेंलोगोंनेमिथ्या बनालिईहैं औरभागवत
केविषयमेंहमनेथोडेसे दोषदेखाहै परन्तु भागवतसबदोषरूपही
है वैसेहीअठारहपुराण अठारहउपपुराण औरसबतन्त्रग्रन्थबन-
रहीहैं इस्सेकुछजगत् काउपकार नहीहोतासिवाय अनुपकारके
ब्रह्माविष्णु महादेवादिक देवउनकानिवासस्थानकहांहैउत्त-
रमहाभारतकोरीतिसे औरयुक्तिसेभीयहनिश्चयहोताहैकिब्रह्मा-
दिकसबहिमालयमें रहतेथेक्योंकि इसभूमिमें उनकेचिन्हपाये
जातेहैंखाण्डववन इन्द्रका बागथा पुष्करमेंब्रह्माने यज्ञकियाकुरु
क्षेत्रमेंदेवोंने यज्ञकियाअर्जुन और श्रीकृष्णसे इन्द्रादिकोंकायुद्ध
होनातथापाण्डवोंसेगन्धर्वोंका युद्धहोनादमयन्तीकेस्वयंवरमेंइ-
न्द्रादिकोंकाआना अर्जुनकामहादेवसे पाशुपतास्त्रकासीखनात-
थादेवलोकमें जाकेविद्या कापढना भीमका कुबेरपुरीमें जाना
तथादशरथऔर केकैयीका रथकेऊपरचढके देवासुरसंग्राम में
जानासर्वत्रयुद्धदेखनेकेवास्ते विमानोंपरचढकेदेवोंका आनाइस
देशवासियोंका अनेकबार समागमका होनामहोदधि औरगंगा
काब्रह्मलोकसे आनास्वर्गारोहिणीका कैलाससेनिकलनाअलक
नन्दाकाकुबेरपुरीसेआना वसुधाराकावसुपुरीसे गिरनानरऔर
नारायणकाबदरिकाश्रममेंतपकाकरना युधिष्ठिरकाशरीर स-
हितस्वर्गमेंजाना नारदका देवलोकसे इसलोकमें आना यज्ञोंमें

देवोंकोनिमन्त्रणदेना औरउनोंका यज्ञोंमेंआना नहुषकेइन्द्रका
होना युधिष्ठिरऔरयमराजका समागमकाहोना इसवक्ततकब्र-
ह्मलोककैलासवैकुंठ इन्द्रवरुणकुबेर वसुअग्न्यादिक आठवसुपुरि
योंकाइनसबकेआजतक उत्तरखण्डमेंप्रसिद्धविद्यमानोंका होना
महाभारतऔर केदारखण्डादिकोंमें सबकेजो२चिन्हलिखेहैं उन
केप्रत्यक्षकाहोनाहिमालयकीकन्यापार्वतीसेमहादेवकाविवाहहो
नावरुणकीकन्यासे नारायणका विवाहहोना इत्यादिकहेतुओंसे
हिमालयमेंदेवलोक निश्चितथा इसमेंकुछसंदेहनहींसोप्रथम
जबसृष्टिभईथी इसकाआशयाकि प्रथमसृष्टिमनुष्योंकी हिमालय
मेंभईथीफिरधीरे२ बढतेचलेवैसे२ सबभूगोलमेंमनुष्यवासकरते
चले औरफैलतेभीचले सोजितनेपुरुषहैं मनुष्यसृष्टिमें वसबहि-
मालयउत्तराखण्डसेहीबढेहैं सोउत्तराखण्डमें ३३ करोडमनु-
ष्यप्रथमथे सबपर्वतोंमें मिलके फिरजबबहुतबढे तबचारोंओरम-
नुष्यफैलगएउनमेंसेविद्याबल बुद्धिपराक्रमादिक गुणोंसेजोयुक्तथे
वेब्रह्मादिकदेव कहातेथेऔर उनकीगद्दीपर जोबैठताथा उनका
नामब्रह्मापडताथा वैसेहीमहादेवविष्णु इन्द्रकुबेरऔरवरुणादि-
कनामपडतेथे जैसेमिथिलापुरीमें जोगद्दीपरबैठताथा।उसकाना-
मजनकपडताथा तथाजोकोईराज्याभिषेकहोके राजपरबैठे हैंउ-
सकानाम पदवीकेयोग्य अबतकपडताजाताहै जैसेअमात्योंकाना-
मदीवानलाटजजकलकटरइत्यादिकनामप्रत्यक्ष पडतेहीहैं परन्तु
वेहिमालयवासीदेव पदार्थविद्याकोहस्तक्रियासहितअच्छीप्रका-
रसेजानतेथे उनमेंसेविश्वकर्मा बडेपदार्थविद्यायुक्तथे अनेकप्रकार
केयन्त्रअग्नि जलवायु इत्यादिककेयोगसे विमानादिकरथचलतेथे
धर्मात्मातथा जितेन्द्रियादिकश्रेष्ठगुणवालेहोतेथेऔर बडेशूरवी-
रथेनाना प्रकारके आकाशपृथिवी औरजलमेंफिरनेकेवास्तेबना
लेतेथेआकाशमें जोयानरचतेथे उसकानामविमान रखतेथे सो
उनमनुष्योंमेंसे बहुतदुष्टकर्मकरनेवालेथे उनको हिमालयसेनि-

कालदिएथे सोहिमालयके दक्षिणदेशमें आकरके तथफिरबडेकुकर्मकरनेको लगगएथे उनकानाम राक्षसपडाथा और कुछउन डाकुओंमेंसेअच्छेथे उनकानामदैत्यपडगयाथा इनदैत्यऔरराक्षसोंसेहिमालयवासी देवोंका वैरबनगयाथा जबउनदेवोंकाबल होताथातबइनको मारतेथेऔरउनकाराज्य छीनलेतेथे जबदैत्यादिकोंकाबलहोताथा तबदेवोंकाराज्यछीनलेतेथे औरमारतेभीथेएकथा आचार्यदैत्योंका गुरुथाऔरबृहस्पति देवोंकाथा दोनोंअपने२ चेलोंकोविद्यापढ़ातेथे जबजिसकाबलबुद्धि पराक्रमबढ़ता थाउनकाविजय होताथापरन्तु देवविद्याओंमें सदाश्रेष्ठहोतेथे औरहिमालयमें देवोंकेराज्यस्थानथे इससेदैत्योंकाअधिक बलनहीं चलताथा सोअबउसहिमालय देवलोकमें कोईनहीं है किन्तु सबजोपर्वतवासीहैं देवोंकापरीवारवहीहै आर्यावर्त्तादिक देशोंमें जितने उत्तमआचारवालेमनुष्यहैं वेदेवोंकेपरीवारहैं औरजितने हवशीआदिक आजतकभी जोमनुष्योंकेमांसको खालेतेहैं वे राक्षसऔरदैत्यके कुलकेहैंसोमहाभारतादिक इतिहासोंसेस्पष्ट निश्चयहोताहै इसमेंकुछसंदेहनहीं एकजयपुरमेंनाभाडोमजातिकाथाजिसकागुरुअग्रदासथा सोउसकोंउननेचेलाकरलियाथा उनकानाम नाभादासरक्खाथा सोवैरागियोंकाजूठखाताथाऔरजहांवैरागीलोक मुखहाथधोतेथे उसकाजलपीताथा सोवैरागियोंकेजूंठअन्न औरजूंठजलखानेपीनेसे सिद्धहोगया इसप्रमाणसेआजतकवैरागोलोक परस्परजूंठखातेहैं क्योंकिजैसेनाभासिद्ध होगयावैसेहमलोगभी सिद्धहोजांयगे परन्तुआजतककोईजूंठके खानेऔरपीनेसे सिद्धनहीभया इससे यहभीनिश्चितभया किनाभाभीसिद्धनहीथा उननेएकग्रंथबनायाहै उसकानामभक्तमालरक्खा हैउसमें वैरागियोंकानामसन्तरक्खाहैसोपीपाकीकथाउसनेलिखीहै उसकोस्त्रीकानाम सीताथाभोउनकेपास वैरागोदसपांचआए उनकेखानपीनेकेवास्ते पीपाकेपासकुछ नहीयासोउसकी स्त्रीके

पासकहाकि इनसाधुओंके खानेकेवास्ते कुछ लेआना चाहिये क्योंकिउसकोकोई उधारवासांगनेसे नहीदेताथा और उसकोस्त्री सीतारूपवतीथी सोएकदुकानदारके पासगई औरकहाकिहमको अन्नऔरघीतुमदेओतबवैश्यनेउसकोदेखके कहाकितूं एकरातभर मेरेपासरहेतो तुझकोमैंदेऊं तबसीतानेकहाकि कुछचिन्तान-हीसाधुओंकिसेवाकेवास्ते मेराशरीरहै तबवैश्यनेअन्नादिकदि-येऔरउनवैरागियोंको भोजनउनने करायाफिरजब पहररात्रि गईतबपीपासेकहाको ऐसीबातकहके मैंपदार्थलेआईहूं तबतोपी-पानेधन्यवाददिया कितूंबडीसाधुओंकी सेवकहै परन्तुउसवक्तकु-छ २ वृष्टिहोतीथीसोसीताको कंधेपरलेजाकेउसबनियेकेपासप-हुंचादियातब बनियेनेकहाकि वृष्टिहोतीहैवृष्टिमेंतेरापगभीनहीं भीजाफिरतूं कैसेआईतबसीतानेकहाकितुझको इसबातकाक्या प्रयोजनहै तुझकोजोकरनाहोय सोकरतबवैश्यनेकहाकि तूंस-चबोलसीतानेकहाकिमेरा पतिकांधेपरचढाकेतेरेदुकानपैंपहुं-चादिया तबतोवहवैश्य सीताकेचरणमें गिरपडाऔरकहाकितूं औरतेरापतिधन्यहै क्योंकितुमने संतोंकेवास्ते अपनाशरीरभीबं-चडालायहसब बातउनकीअधर्मयुक्त औरझूंठहैक्योंकि यहश्रेष्ठ पुरुषोंकाकामनहीं जोकिवेश्याऔर भडुओंकाकामकरैं ऐसेहीध-न्नाभगतकाविनाबीजसे खेतजमगयानामदेवकी पाषाणकीमूर्त्ति नेदूधपीलिया मीराबाईपाषाण कोमूर्त्तिमेंसमागई औरकोईभग-तकेरासमेनारायणकुत्ताबनकेरोटी उठाकेभागे औरमीरा विष पीनेसेभीनहीमरी इत्यादिकभगत मालकीबातझूंठहैऔरएकप-रिकालउनसाधुओंकीसेवाकरताथा जोकिचक्रांकितथेवहभीच-क्रांकितथा परन्तुवहपरिकाल डांकूपनेसेधनहरणकरकेसाधुओं-कोदेताथा सोएकदिनचोरी सेवाडांकूपनसे धननहींपायाफिरब-डाब्याकुलभया औरघोडे परचढके जहांतहांघूमताथा सोना-रायणएकधनाढ्यके वेषसेरथपैंबैठके परिकालकोमिले सोझटप-

रिकालने उनको घेरलिया औरकहाकितुमको मारडालूंगानहीं तोतुमसबकुछरखदेओ परन्तुउनकेरखनेमें कुछदेरभई सोझटउ-तरकेनारायणकेअंगुलीमें सोनेकीअंगुठियांथीं सोअंगूठोसहित अंगुलीकोकाटलिईतबनारायण बडेप्रसन्नभये औरदर्शनदियाकि तूंबडाभक्तहै देखनाचाहियेकिनारायणभीकैसेअन्यायकारीहैं डां-कूओंके ऊपर कृपाकर देतेहैं अर्थात् डांकूऔर चोरोंके संगीहैं फिरवेचक्रांकितलोगनित्य उपदेशसबकर्त्ते हैं किचोरीकरकेभोप-दार्थलेआवै औरनारायण तथावैष्णवोंकी सेवामेंलगावैतोभीव-हब डाभक्तहोताहै औरवैकुंठकोजाताहै फिरवहपरीकालकोईब-नियेकेजहाजपर बैठकेसमुन्द्रपार बनियोंकेसाथ चलागया वहां बनियोंनेजहाजमें सुपारीभरीसो एकसुपारीका आधाखण्डपरि-कालनेजहाजमेंधरदिया औरवैश्योंसे कहदिया किमैंआधीसुपा-रीपारजाकेलेलेऊंगा तबवैश्योंने कहाकिएकक्या दशतुमलेलेना तबपरीकालने कहाकिनहीं मैंतोआधोहीलेऊंगाफिरजहाजपा-रकोआगया जबसुपारीजहाजसे उतारनेलगे तबपरिकालनेक-हाकिआधीसुपारी हमकोदेदेओ तबवैश्यलोग सुपारीका आधा खण्डदेनेलगेसोपरीकाल बडाक्रोधकरके सबसेकहनेलगाकियेवै-श्यमिथ्यावादीहैं क्योंकिदेखोइसपत्रमें आधीसुपारीमेरीलिखीहै सोयेदेतेनहीं सोअत्यन्तधूर्त्तता करनेलगाऔर लडनेकोतैयार भया।फिरजालसाजी करके आधीसुपारी नावमेंसे बटवालिई उ-नवैरागियोंकेसेवामें सबधनलगादिया सोऐसेपरीकालकोच-क्रांकितके संप्रदायमें बडी प्रतिष्ठाहैसोचक्रांकितके मन्त्रार्थग्रंथ में ऐसीबातलिखीहै सोजितनेसंप्रदाईहैं वेअपनेचेलको ऐसे २ उपदेशकरकेऔर ऐसेग्रन्थोंको सुनाके गपोंमें लगादेतेहैंफिरभ-गतमालामें एक कथालिखीहै किएकसाधूएक ब्राह्मण केघरमें ठहराथाऔर ब्राह्मणउसकी सेवाकरताथा उसकोएककुमारीक-न्याथीउससे वहसाधू मोहितहोगया सोउसकन्याको लेकर।फिर

कुकर्मकियाऔरखटियाकेउपरदोनोंनंगेसोगएथे सोजबउसकन्या कापिताप्रातःकालउठातबदोनोंकोनंगे देखकेअपनीचादरदोनों परओढादीई औसिपाहियोंसे कहाकियहसाधू भागनजाय फिरवहबाहरचलागया तबवेदोनोंउठे उठकेदेखा किवस्त्रकिननडालासोकन्याने पहिचानलिया किमेरेपिताकायहवस्त्रहै फिरवहकन्याडरकेभागगई भागकेछिपगई औरसाधूभीवहांसे निकलके जानेलगा तबसिपाहियोंनेउसको रोकलिया तबतोसाधूबहुतडरा अबतक कन्याकापिता बाहरसेआया सोसाधू केपासआकेसाष्टांगनमस्कारकिया किमेराधन्यभाग्यहै जोकिआपनेमेरीकन्याकाग्रहणकिया इससेमेराभी उद्धारहोजायगा सोआपआनन्दसेमेरेघरमेंरहिये औरकन्याकोभी मैंनेआपकोसमर्पण करदिया तबसाधूबडा प्रसन्नहोकेरहा औरविषय भोगकरनेलगा इसकोविचारना चाहिये किबड़े अनर्थकीबातहै क्योंकिऐसीकथा कोसुनकेसाधू औरगृहस्थलोग भ्रष्टहोजातेहैं इसमेंकुकर्मदेहनहो फिरभक्तमालमेंएक कथालिखीहै किएकभक्तथा उसकेघरमें साधूपाहुनेआये फिरउनकी सेवाकेवास्ते पितापुत्रदोनों चोरीकरनेकेवास्तेगये सोएकबनिये कीदुकान कीभींतमें सुरंगदेकपुत्रभीतर घुसा औरपिताबाहरखडारहा सोभीतरसे घीचौनीअन्ननिकालकेदेताथा औरवहलेताथा जबभीतरसेबाहर निकलनेलगा तबतक दुकानवालेजागउठे सोउसकेपगतो भीतरथे औरसिरबाहरनिकलाथा तबतकउसनेउसके पग पकडलिये औरसिरपकड लियापिताने दोनोंतर्फ खींचनेलगे सोउसकेपिताने विचारकियाकि हमपकडजांयगेतो साधूओंकी सेवामेंहरकतहोगी सोपुत्रकासिरकाटके औरघृतादिक पदार्थोंकोलेके भागगयातबतकराजपुरुषआये और उनकाशरीर राजघरमेंलगये औरखोजहोनेलगा कियहकिसकाहै फिरवहअपनेघरमेंचलागया और साधुओंकेवास्ते भोजनबनाया औरउन कीपंक्तीभई उस समयमेंसाधु

ओंनेपूंछाकि कहांहैतुमारालडका उसकोजलदी बोलाओ तबउ-
सकेमाता और पिता जोचोर उन्नेंकहाकि कहींचलागयाहोगा
आ जायगा आपतबतकभोजनकीजिये तबसाधुओंनेकहाकि वहज
बआवेगा तबहमलोग भोजनकरेंगे अन्यथानहीं तब उसकीमा-
तानेरोकेकहा किवहतोमारागया तबसाधुओंनेपूंछा कैसे मारा
गया किहमारेघरमेंआपकेसत्कारकेहेतु पदार्थनहोथा इससे बेटो
नेंचोरीकरनेकोगयेथे वहांवह मारागया तबसाधुओंनेकहाकि
उसकाशरीरकहांहै तब उन्ने कहाकि सिरहमारेघरमे हैऔरश-
रीर राजघरमेंहै वेसाधूलोग राजघरमेंजाके शरीरलेआयेशरी
रऔरसिर कासन्धान करकेबीचमेंरखदिया फिरवेसाधूनाचने-
कूदनेऔरगानेलगे फिरवहजीउठा और साधूओंनआनन्दसेभो
जनकिया औरउनसेकहासाधुओंने कितुमबडेभक्तहो और स्वर्ग
मेंतुह्मारावासहोगा इसमेंविचारनाचाहिये किसाधुओंकोआज्ञा
होनाऔरचोरीकाकरना फिरनरकमेंनजाना किन्तु स्वर्गमेंजा-
ना यहबडोमिथ्याकथाहै ऐसीकथाकोसुनके लोगसब भ्रष्टबुद्धिहो
जातेहैं ऐसी२ कथासबभ्रष्ट भक्तमालमेंलिखींहैं फिरभीलोगों-
कोऐसीमूर्खताहैकिसुनतेहैं औरकतेहैं शिवपुराणमें त्रयोदशीप्र-
दोषब्रत जोकोईनकरै वेनरकमेंजांयगे तन्त्र औरदेवीभागवता-
दिकोंमेंलिखाहै नवरात्र काब्रत नकरैं वेनरकमेंजांयगे तथापद्म
पुराणादिकमेंलिखाहै किदशमी दिग्पालोंका एकादशी विष्णु-
का द्वादशीवामनका चतुर्दशीनृसिंह औरअनन्तका अमावस्या-
पितृओंका पौर्णमासीचन्द्रका सो मतमतान्तरोंसे औरपुराणत-
था उपपुराणोंमे यहआयाकि किसीतिथिमेंभोजननकरना औरज
लभीनपीना औरजोकोईखाया वा पीयावहनरककोजायगा इस
मेंवेकहतेहैं किजिसकाबिवाह उसकोगीत इससे ऐसीकथामेंविरो
धनहीआता उनसेपूछनाचाहियेकि जिसकाबिवाह होताहै उस
केगीतगायेजातेहैं परन्तु पहिलेजिनके बिवाहभयेथे औरजिनके

होनेवाले हैं उनका खण्डन तो नहीं होता किय ही उसमें है वा पहि
ले जिसके विवाह भये और जिनके होंगे उनको नीच तो नहीं
बनाते इससे ऐसे२ मूर्खता के दृष्टान्त से कुछ नहीं होता ऐसे २ स्नोक
लोगों ने बना लिये हैं कि शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता शी
तले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमोनमः एक विस्फोट रोग है उसका
नाम शीतला रक्खा याद्दशी शीतलादेवी ताद्दशो वाहनः खरः शीत
ला अष्टमी को गधे की पूजा करते हैं और हनुमान् का रूप मानके बानर
की पूजा करते हैं भैरव का बाहन कुत्ता को मानके पूजा करते हैं तथा पाषा-
ण पिप्पलादिक वृक्ष तुलस्यादिक औषधी दूब और कुशादिक घास-
पित्तलादिक धातु चन्दनादिक काष्ठ,पृथिवी,जल,अग्नि,वायु,जूता,
और विष्ठा तक आर्यावर्त्त देशवाले पूजा करते हैं इनको सुख वा कल्याण
कभी नहीं होसक्ता जबतक इन पाखण्डों को आर्यावर्त्त बासी लोग न
छोडेंगे तबतक इनका अच्छा कुछ नहीं होसक्ता फिर एक शालिग्राम
पाषाण और तुलसी घास दोनों का विवाह करते हैं तथा तडागबाग
कूपादिकों का विवाह करते हैं और नाना प्रकार की मूर्तियां बनाके मं-
दिर में रखते हैं उनके नाम शिव और पार्वती नारायण और लक्ष्मी
दुर्गा काली भैरव,बटुक ऋषि मुनि राधा और कृष्ण सीता और रा-
म जगन्नाथ विश्वनाथ गणेश और ऋद्धि सिद्धि इत्यादिक रख लिये-
हैं फिर इनके पुजारी बहुत दरिद्र देखने में आते हैं और सब संसार से
धन लेने के हेतु उपदेश करते हैं कि आओ यजमान धन चढाओ दे-
वताओं को नहीं तो तुमको दर्शन का फल न होगा आम नियाले ओ
ठाकुर जी के हेतु बालभोग ले आओ तथा राजभोग के वास्ते दओ औ-
र गहना चढाओ तथा वस्त्र और नारायण तथा माहादेव के वास्ते
मंदिर बनवाओ और खूब आजीविका लगवाओ हम कहते हैं कि ऐ-
से दरिद्र देवता और महंत तथा पुजारी लोग आर्यावर्त्त के नाश के
वास्ते कहां से आगये और कौनसा इस देश का अभाग्य और पाप था
कि ऐसे२ पाखण्ड इस देश में चलगये फिर इनको लज्जा भी नहीं आ-

तोकिअपनेपुरुषोंका उपहासकर्त्ते हैं कियह सीतारामहैं इत्यादि कनामलेलेके दर्शनकरातेहैं इसमेंबड़ाउपहासहै परन्तु समझते नहीं देखनाचाहियेकि कृष्णतोधर्मात्माथे उनकेऊपर झूठजाल भागवतमेंलिखाहैं फिरउसीलीला कोरासमण्डल बनाकेकहते हैंउसमेंकिसीलड़केको कृष्णबनातेहैं किसीकोराधाऔर गोपियां बनालेतेहैं तथासीतारामऔर रावणादिक लड़कोंकोबनाकेली-लाकरतेहैं सोकेवलबड़े लोगोंकाउपहासइसमेंहोताहै और कुछ नहींक्योंकि श्रीकृष्णऔररामादिकोंकेजोसत्यभाषणादिकव्यवहा-र तथाराजनीतिका यथावत्पालना औरजितेन्द्रियादिक सबवि-द्याओंकापढना इनसत्यव्यवहारोंका आचरणतोकुछ नहीं करते किन्तुकेवलउपहासकीबातें तथापापोंकोप्रसिद्धकर्त्ते हैं अपनेकुग-तिकेवास्ते-दशसूनासमंचक्रं दशचक्रसमोध्वजः दशध्वजसमोवे-षो दशवेषसमोनृपः॥ यहमनुकाश्लोकहै इसकायहअभिप्रायहैकि सूना नामहत्यासोदशहत्याकेतुल्य जीवोंकोपीडा औरहननचक्र-सेहोताहै सो तेलीवाकुहारकेव्यवहारसेजीवोंकोदशगुणपीडा वा हननहोताहै इससे दशगुणधोबी वामद्यकेनिकालनेवाले के व्यव हारमें सौगुणहत्याहोतीहै तथाइससे दशगुणहत्यावेषमेंहोतीहैअ र्थात् वेषकिसकोकहतेहैंकिकिसीकास्वरूपबनाना औरनकलकर ना अर्थात् मूर्तिपूजन रामलीलाऔररास मण्डलादिकजितने-व्यवहारहैंवेसबवेषमेंहीगिनेजातेहैंक्योंकिउनकावेषधारणहीकि-याजाताहै इससेवेषमेंहजारहत्या काअपराधहैतथा जोराजान्या-यसेपालननहींकरता औरअन्यायकर्त्ताहै वहदसहजार हत्याका स्वरूपहै इससे वेषबनानाबनवाना तथादेखनाभी सज्जनोंकोन चाहिये औरइनसबव्यवहारोंकोछोड़नाचाहियेऔर अच्छेव्यव-हारोंकोकरनाचाहिये ऐसोइसदेशमें नष्टप्रवृत्तिभई हैकिकोईऐ सा कहताहै मारणमोहनउच्चाटन वशीकरणऔर विद्वेषणादिक मैंजानताहूं इनसेपूछनाचाहिये कितूंजीवन मरेभयेकाभी करा-

सच्चाहै वानहो सोकोईदैवयोगसेमर जाताहै वाकपटछलसे विषादिदेके मारडालतेहैं फिरकहतेहैं किमेरा पुरश्चरण सिद्ध हो गया यहबातसबझूंठहै कोईरोगीहोताहै उसको बतलाताहै कि भूतचढगयाहै फिरदूसरा बतलाता है किइसकेऊपर शनैश्चरादिकग्रहचढेहैं तीसराकहताहै किसोदेवताकीखोरहै चौथा कहताहै किकिसीकाश्रापलगाहै येसब बातमिथ्याहैं कोईकहताहै कि मैंरसायन बनाताहूं औरदूसरा कहताहै किमैंपारे कोभस्मबनाताहूं उसकोकोईखालेतो बुड्ढेकाजवान होजाताहै यह भीमिथ्याहोजानना औरबहुत सेपाखण्डीलोग बहुतपुरुषऔरस्त्रियों सेकहतेहैं किजाओतुमकोपुत्र होजायगा सोसबतोबन्ध्याहोतीही नहीहैं जोकिसीकोपुत्रहोजाताहै तबवहपाखण्डीकहता हैकिदेखमेरेवरसे पुत्रहोगया औरऐसेभी कहताहै किमेरवरसे पुत्रहोगया वहस्त्रीऔर उसका पतिभी बकतेरहतेहैं किबाबाजीके वरसे मुझको पुत्रभया उनकोबातसुनके बहुतमूर्खलोग मोहित होके बाबाजीकोपूजामें लगजातेहैं फिरवहपाखण्डी धनपाकेबडे२ अनर्थकरतेहैं यहसबबातझूंठहै मुहालेऔरमुहर्रई इनदोनोंसे धूर्त्त लोगकहदेतेहैं कितुह्माराबिजयहोगा सोदोनोंकापराजयतोहोतानही जिसकाविजयहोताहै उससे खूबधनलेतेहैं किहमारेपुरश्चरणऔरवरसे तेराविजयभयाहै अन्यथाकभीनहोता फिरबहुत बुद्धिहीनपुरुष इसबातसेभी धननाशकरतेहैं कोईकहताहैकि जो कुछहोताहैसो ईश्वरकीइच्छासेहीहोताहै जैसाचाहता है वैसा करालेताहै औरकिसीकेकुछकरनेसेहोतानहीसबकोनचावैराम गोसांई ऐसे २ झूंठवचनबनालियेहैं इनसेपूंछना चाहियेकि जो वहमिथ्याभाषण चोरीपरस्त्रीगमनादिक कराताहैतो वहबहुतबुराहैवहकभीईश्वर वाश्रेष्ठनहीहो सक्ता कोईकहताहै कि जोकुछ होताहैसोप्रारब्धसेही होताहै इनसेंपूंछनाचाहिये कितुमव्यवहारचेष्टाक्योंकरतेहो सोपुरुषार्थमेंही सदाचित्तदेनाचाहियेअन्य-

चनहीबहुतऐसे २ बालकोंकोऔर स्त्रियोंकोबहकातेहैंकिवे जन्म तकनहीं सुधरसकें ऐसाकहतेहैंकि वहमातापिता तोभूंठहैतुम आजाओनारायणके शरणऔरएक२साधूहजार२कोमूडलेताहै औरबहकाके पतितकरदेतेहैंउनकामरणतक कुछसुकर्मनहींहो-ताक्योंकिसुधरेतो तबजोकुछ विद्यापढे औरबुद्धि होतो फिरएक घरकोछोंड़देतेहैं औरमातापिताकी सेवाभीछोडदेतेहैंफिरकुटी मठऔर मंदिरोंकोबनाके हजारहांप्रकारके जालमेंफस जातेहैं उनसेपूंछनाचाहियेकि तुमलोगोंनेघर औरमातापितादिकक्यों छोडेथेत बवेकहतेहैं किऐसासुखघरमेंनहींहै ठीकहै किघरमेंछ-प्परकेनोचेरहनापडताथा मजूरोमेहनतसेचना औरजवकाआ-टाभीपेटभरनहीं मिलताथा सोआर्यावर्त्तमेंअन्धकारपूर्णहै नित्य मोहनभोगमिलताहै औरनित्यनयेभोग ऐसासुखस्त्रीकाभी गृहा-श्रमनमेंहीहोता इससे गृहाश्रममेंकुछहै नहींदेखियेकिएकरुपैया कोईमंदिरमेंचढाताहै उसकोएकआनेका प्रसाददेतेहैं कभीनहीं देतेहैंपरन्तुहमलोगोंने इसकोविचारलियाहैकिसोलहपचाससौ औरहजारगुनातकभी इसमंदिरकेदुकानदारोंमें तथातीर्थमें हो ताहै अन्यत्र कैसोहीदुकानदारीकरो तोभीऐसा लाभनहींहोता क्योंकिखाना नित्यनयीस्त्रियां औरनित्यनानाप्रकार केपदार्थोंकी प्राप्ति अन्यत्रकहीं नहींहोती सिवायमंदिर पुराणादिकोंकीकथा और चेलोंकेमूड़नेसे इससेआपहजारकहो हमलोगइस आनन्द-कोछोडनेवालेहैं नहीअच्छा हमनेभीजानलियाहैकिजबतकयज-मानविद्या औरबुद्धियुक्तनहींहोंगे तबतकतुम लोगकभीनहींछो-डोगे परन्तुकभीदैवयोगसेविद्या औरबुद्धिआर्यावर्त्त मेंहोगी फि रतुमको औरतुमारे पाखण्डोंकोवे सेवकऔरयजमान हीछोडें गे तबपोछेभकमारकेतुमलोग भीछोडदेओगे ऐसे२ मिथ्या मत चलगयेहैं किकानकोफाडके मुद्राकोपहिरनेसे योगीऔर मुक्ति होतीहै सोइनकेमतमेंमत्स्येन्द्रनाथ औरगोरक्षनाथ दोआचार्य

भयेहैं उननेयहमतचलाया उनकोशिवकाअवतारऔर सिद्धमानतेहैं नमःशिवाय उनकामन्त्रहै और अपने मतकादिग्विजयभीब नालियाहै और जलंधर पुराण हठप्रदीपिका गोरक्षशतकादिक बनालियेहैं फिरकहतेहैं येग्रन्थमहादेवनेबनायेहैं उनकाअनाचारवाममार्गियोंकीनांईहै क्योंकिजैसेवाममार्गी लोग श्मशानमें पुरश्चरणकर्त्तेहैं तथामनुष्यकपाल खानेपीनेकेवास्ते रखतेहैं तथारजस्वलास्त्रीका वस्त्रशिखावाबाहुमें बांधरखतेहैंइससे अपनेको धन्यमानतेहैं औरऐसे २ प्रमाण मानलेतेहैं रजस्वलास्तिपुष्करंचाण्डालीतुस्वयं काशीव्यभिचारिणीतुगङ्गास्यात्पुंश्चलीतुकुरुक्षेत्रं यमुनाचर्म कारिणी इत्यादिकवचनोंमें वेऐसामानतेहैं किइनस्त्रियोंकेसाथ समागम करनेसे इनतीर्थोंकाफलप्राप्त होताहै फिरवेऐसे २ श्लोककहतेहैं किहालांपिबतिदीक्षितस्यमंदिरेसुप्तोनिशायांगणिका गृहेषुदिक्षितनाम रक्खाहै मद्यवेचनेवालेकाउसकेघरमें जोपुरुषनिर्भयऔर निर्लज्ज होकेमद्यपीताहै फिरवेश्याकेघरमेंजाके उससे समागमकरै औरवहींसोजाय उसकानामसिद्ध औरमहावीर रखतेहैं औरलज्जादिक आठपाशोंकोछोडदे तबवहशिवहोताहै इसमेंऐसा प्रमाणकहतेहैं॥ पाशबद्धोभवेज्जीवः पाशमुक्तःसदाशिवः अर्थात जितनेव्यभिचारादिकपापकर्म हैंउनकेकरनेमें लज्जादिकजबतककर्त्ताहै तबतकवहजीवहै जबनिर्लज्जादिक दोषोंसेयुक्तहोताहै तबसदाशिवहोजाताहै देखनाचाहियेकि यहकैसीमिथ्याबातउनकीहै फिरउनने मद्यकानामतीर्थरक्खाहै मांसकानामशुद्धि मत्स्यकानामतृतीया रोटीकानामचतुर्थीऔरमैथुनकानामपंचमी जबवेआपसमेंबातकर्त्ते हैंकिलेआओतीर्थऔरपीयो इसवास्ते इननेऐसेनाम रखलियेहैं किकोईऔरनजाने औरजितनेवाममार्गीहैं उनकेकौलवीर भैरवआदिऔरगणयेपांच नामरखलियेहैं स्त्रियोंकेनाम भगवती देवीदुर्गाकालीइत्यादिकरखलियेहैं औरजोउनकेमतमेंनहीहैंउनकानामप-

शु कण्टकशुष्क और विमुखादिक नामरखलिये हैं सो केवल मिथ्या
जाल उनका है इसको सज्जनलोग कभी न मानें वैसे ही कानफटेना
थोंका व्यवहार है क्योंकि वेभी श्मशान में रहते हैं मनुष्यों का कपाल
रखते हैं वाममार्गियों में वे मिलते हैं इत्यादिक बहुत नष्टव्यवहार-
आर्यावर्त्त में चलजाने से देशका सब व्यवहार नष्ट होगया और सब
देश खराब होगया परन्तु आजकाल अंगरेज के राज्य में कुछ२ सुध-
रना और सुख भया है जो अब अच्छे २ ब्रह्मचर्याश्रमादिक व्यवहार-
वेदादिक विद्या और पाखण्ड पाषाणपूजनादिकों का त्याग करैं तो
इनको बहुत सुख होजाय क्योंकि राज्य का आजकाल बहुत सुख है ध-
र्मविषय में जो जैसा चाहै वैसा करै और नानाप्रकार के पुस्तक भी य-
न्त्रालयों के स्थापन से सुगम तासे मिलती हैं अच्छे २ मार्ग शुद्ध बनग-
ये हैं तथा राजा और दरिद्र को भी बात राजघर में सुनी जाती है कोई
किसी का जबरदस्ती से पदार्थ नहीं छीन सक्ता अनेक प्रकार की पाठशा
ला विद्या पढने के वास्ते राजप्रबन्ध से बनती हैं और बनी भी हैं उन
में बालकों की यथावत् शिक्षा होती है और पढने से आजीविका भी-
राजघर में पढनेवाले को होती है किसी का बन्धन वा दण्ड राजघर में
नहीं होता जिसमें जिसको खुशी होय उसको वह करै अपनी प्रसन्न
ता में अत्यन्त देश में मनुष्यों की वृद्धि भई है और पृथिवी भी खेत आदि
कों से बहुत होगई है वनादिक नहीं रहे हैं लडाई बखेडा गदर कुछ इ
स वक्त नहीं होते हैं और व्यवस्था राजप्रबन्ध से सब प्रकार से अच्छी ब
नी है परन्तु कितनी बात हमको अपनी बुद्धि में अच्छी मालूम नहीं दे-
ती हैं उनको प्रकाश करते हैं न जाने वे बडे बुद्धिमान् हैं उनने इन बातों
में गुण समझा होगा परन्तु मेरी बुद्धि में गुण इन बातों में नहीं देखप
डते हैं इससे इन बातों को मैं लिखता हूं एक तो यह बात है कि नोन औ
र पौन रोटी में जो कर लिया जाता है वह मुझको अच्छा नहीं मालू-
म देता क्योंकि नोन के बिना दरिद्र का भी निर्वाह नहीं होता किन्तु
सबको नोन का आवश्यक होता है और वे मजूरी मेहनत से जैसे तैसे

निर्वाह करते हैं उनके ऊपर भी यह नोन का दण्ड तुल्य रहता है इस से दरिद्रों को क्लेश पहुंचता है इस से ऐसा होय कि मद्य अफीम गांजा भांग इनके ऊपर चौगुना कर स्थापन होय तो अच्छी बात है क्योंकि नशादिकों का छूटना ही अच्छा है और जो मद्यादिक बिलकुल छूट जांय तो मनुष्यों का बड़ा भाग्य है क्योंकि नशा से किसी को कुछ उपकार नहीं होता परन्तु रोगनिवृत्ति के वास्ते औषधार्थ तो मद्यादिकों की प्रवृत्ति रहना चाहिये क्योंकि बहुत से ऐसे रोग हैं कि जिन के मद्यादिक ही निवृत्तिकारक औषध हैं सो वैद्यकशास्त्र की रीति से उन रोगों की निवृत्ति हो सक्ती है तो उनको ग्रहण करैं जबतक रोग न छूटे फिर रोग के छूटने से पीछे मद्यादिकों को कभी ग्रहण न करैं क्योंकि जितने नशा कर नेवाले पदार्थ हैं वे सब बुद्ध्यादिकों के नाशक हैं इस से इन के ऊपर ही कर लगाना चाहिये और लवणादिकों के ऊपर न चाहिये पौनरोटी से भी गरीब लोगों को बहुत क्लेश होता है क्योंकि गरीब लोग कहीं से घास छेदन कर के ले आये वा लकड़ी का भार उनके ऊपर कौड़ियों के लगने से उनको अवश्य क्लेश होता होगा इस से पौनरोटी का जो कर स्थापन करना सो भी हमारी समझ से अच्छा नहीं तथा चोर डाकू परस्त्रीगामी और जूआ के करनेवाले इनके ऊपर ऐसा दण्ड होना चाहिये कि जिस को देख वा सुनके सब लोगों को भय हो जाय और उन कामों को छोड़ दें क्योंकि जितने अनर्थ होते हैं वे सब उनसे ही होते हैं सो जैसा मनुस्मृति राजधर्म में दण्ड लिखा है वैसा ही करना चाहिये जब कोई चोरी करै तब यथावत् निश्चय कर के कि इस ने अवश्य चोरी किई है कुत्ते के पंजे की नांई लोहे का चिन्ह राजा बना रक्खे उस को अग्नि में तपा के ललाट के भौंक बीच में लगा दे कुछ बेत भी उसको मार दे और गधे पै चढ़ा के नगर के बीच में बजार में जूतियां भी लगतीं जाय और फिरा करै फिर उस के कुछ धन दण्ड दे अथवा थोड़े दिन जङ्गल खाना रक्खे वहां सूखे चने पाव भर तक खाने को दे और रात भर पिसवावै न पीसे तो वहां भी उसको जूते बैठें और दिव-

समें भी कठिन काम उससे करावे जबतक वह निर्बल न होजाय परन्तु
ऐसा बहुत दिन न रक्खे जिससे कि मर न जाय फिर उसको दो तीन दि-
न तक शिक्षा करै कि सुन भाई तैंने मनुष्य होके ऐसा बुरा काम किया
कि तेरे ऊपर ऐसा दण्ड हुआ हमको भी तेरा दण्ड देखके बड़ा हृद-
यमें दुःख भया और आप भले आदमी होके व्यवहार करना फिर ऐ-
सा काम कभी न करना चाहिये अच्छे २ काम करना चाहिये जिससे
राजघरमें और सभामें तथा प्रजामें तुम लोगोंकी प्रतिष्ठा होय और
आप लोगोंके ऊपर ऐसा कठिन जो दण्ड दिया गया सो केवल आप-
लोगोंके ऊपर नहीं किन्तु सब संसारके ऊपर यह दण्ड भया है जिससे
इस दण्डको देख वा सुनके सब लोग भय करैं और फिर ऐसा काम
कोई न करै ऐसे शिक्षा जितने बुरे कर्म करनेवाले हैं उनको दण्डके
पीछे अवश्य करनी चाहिये क्योंकि दण्ड जो है सो सदा उसको स्मरण रहै
और हठी वा विरोधी न बन जाय इसवास्ते शिक्षा अवश्य करना चा-
हिये केवल शिक्षा वा केवल अत्यन्त दण्डमें दोनो सुधरने नहीं कि-
न्तु दोनोंसे मनुष्य सुधरसक्ते हैं फिर भी वह चोरी करै तो उसका हा-
थ काटडालना चाहिये फिर भी वह न माने तो उसको बुरी हवालसे
मारडालना चाहिये किसी दिन उसकी आंख निकालडाले किसी
दिन कान किसी दिन नाक और सब जगह घुमाना चाहिये कि जिस
को सब देखें फिर बहुत मनुष्योंके सामने उसको कुत्तेसे चिथवाडालें
ऐसा दण्ड एक पुरुषको होय तो उसके राजभरमें कोई चोरीकी इ-
च्छा भी न करेगा और राजाको भी इनके प्रबन्धमें बड़ा आनन्द होगा
नहीं तो बड़े प्रबन्धमें लगे रहते हैं साधारण दण्डसे वे कभी सुधरेंगे
नहीं डाकुओंको भी चोरकीनाईं दण्ड देना चाहिये और जुआ कर-
नेवालोंको एकबार करनेसे हो बुरी हवालसे जैसा को चोरोंका लि-
खा गधेपर चढाना आदिक सब करके फिर कुत्तेसे चिथवाडालना चा-
हिये क्योंकि जो परस्त्रीगमन और जितने बुरे कर्म हैं वे जुआरोंसे
होते हैं इसके उनके सहाय करनेवालेको भी ऐसा दण्ड देना चा-

हिये क्योंकिजितनेलड़ाईदंगा चोरीपरस्त्रीगमनादिकइनसेहोतेउ-
त्पन्नहोतेहैं इससेइनकेऊपर राजादण्डदेनेमें कुछथोड़ाभी आल-
स्यनकरै सदातत्पररहै महाभारतमें एकदृष्टान्तलिखाहैकि सो-
नेचांदीऔर अच्छे२ पदार्थधरेरहैं उसकोकोईनस्पर्शकरैतबजा-
नना किराजाहै और धनाढ्यलोगलाखहां रुपैयोंकोदुकानकाकि-
वाड़कभीनहींलगावै और रातदिनकोईकिसीका पदार्थनउठावै
तबजाननाकिराजाहै धर्मात्माइसवास्ते ऐसाउग्रदण्डचाहिये कि
सबमनुष्यन्यायमेंचलैं अन्यायमेंकोईनहो जबस्त्रीवापुरुषव्यभिचार
करैं अर्थात परपुरुषसे स्त्रीगमनकरै परस्त्रीसेपुरुष जबउनकाठी-
क२ निश्चयहोजाय तबस्त्रीकेललाटमें अर्थातभौंकेबीचमें पुरुष के
लिंगन्द्रियका चिन्हलोहेकाअग्निमें तपाकेलगादे तथा पुरुषकेल-
लाटमें स्त्रीकेइन्द्रियकाचिन्हलगादे फिरजिसकोसबदेखाकरैं फि-
रउनकोभी खूबफजीहतकरैं औरकुछभनदण्डभोकरैंपीछेउसीप्र-
कारसेभिक्ष भाकरैंसबको फिरभोविनमानैं औरऐसा कामकरैंत-
ब बहुतस्त्रियोंकेसामने उसस्त्रीको कुत्तोंसेचिथवाडालऔरपुरुषको
बहुतपुरुषोंकेसामने लोहेकेतख्तको अग्निमेंतपाकेसोवादे उसके
ऊपर फिरउसकेऊपर घुमावै उसीपर्यंककेऊपरउसका मरणहो
जाय फिरकोईपुरुषव्यभिचारकभीनकरेगा ऐसादण्डदेखकेवासु-
नके औरसर्कार कागदकोबेचतीहै औरबहुतसाकागजों परधन
बढादियाहै इससे गरीबलोगोंको बहुतक्लेशपहुंचताहै सोयहबात
राजाको करनीउचितनहीं क्योंकि इसकेहोनेसे बहुतगरीबलोग
दुःखपाकेबैठेरहतेहैं कचहरीमेंबिनाधनसे कुछबातहोतीनहीइ-
ससे कागजोंकेऊपर जोबहुत धनलगानाहै सोमुझकोअच्छामालू
मनहीदेता इसकोछोड़नेसेही प्रजामेंआनन्दहोताहै क्योंकिथो-
ड़ेसेलेकेआगे२ धनकाहीखर्चदेखपड़ताहैन्यायहोनातोपीछेफि-
रनानाप्रकारके लोगसाक्षीझूंठ सबबनालेते हैं यहांतककिसाक्ष
खानेकोदेदेओ औरझूंठगवाहीहजारबहुतदेवादेओ जोजैसामनु

मेंदण्डलिखाहै वैसादण्डचलेतो खानेपीनेके वास्तेझूंठी साक्षीदेनेको कोईतैयारनहीहोय अवाङ्नरकमभ्येति प्रेत्यस्वर्गाच्चहीयते इसकायहअभिप्रायहै कि जबयहनिश्चयहोजायकिइसनेझूंठसाक्षीदिई तबउसकोजीभ कचहरीकेबीचमें काटलेयहीअवाक् नाम जीभरहित जोनरकभोगउस कोप्रत्यक्षहोय क्योंकिराजा प्रत्यक्षन्यायकर्त्ताहै उसीवक्तउसकोप्रत्यक्ष हीफलहोनाचाहियेऔर जितने अमात्यविचारपति राजघरमेंहोवैंउनके ऊपरभीकुछदण्डव्यवस्था रखनीचाहिये क्योंकिवेभीअत्यन्तसच झूंठकेविचारमें तत्पर होके न्यायहीकरनेलगे देखनाचाहियेकि एककेयहांअर्जीपचदियाउसकेऊपर विचारपतिने विचारकरकेअपनीबुद्धि औरकानून कीरीतिसे एककीजीतभई और दूसरेकापराजय जिसकापराजयभयाउसनेउसकेऊपर जोहाकिमहोताहै उसके पासफिरअपीलकरी सोप्रायःजिसकाप्रथम विजयभयाथा उसकोदूसरेस्थानमें पराजयहोताहै औरजिसका पराजयहोताहै उसकाविजय फिर ऐसेही जबतकधननहीचूकता दोनोंका तबतकविलायततकलडते हीचलेजातेहैं प्रायःरईसलोग इसबातसे हठकेमारे बिगड़जाते हैं इससे क्याचाहियेकि बिचारकरनेवालेके ऊपरभीदण्डकी व्यवस्थाहोनीचाहिये जिससे वे अत्यन्त बिचारकरकेन्यायहोकरैं ऐसा आलस्यनकरैं किजैसाहमारीबुद्धिमें आया वैसाकरदिया तुमको इच्छाहोयतो तुमजाओ अपीलकरदेओ ऐसीबातोंसेविचारपति भीआलस्यमेंआजातेहैं औरविचारपतिको अत्यन्तपरीक्षा करनी चाहिये किअधर्मसेडरतेहोंय औरविद्याबुद्धिमें युक्तहोयकामक्रोध लोभ मोहभय शोकादिकदोषजिनमेंनहोयऔर अन्तर्यामीजो सबका परमेश्वर उससे हीजिनकोभयहोय औरसेनहीं सोपक्षपात कभीनकरैं किसीप्रकारसे तबउसराजाकीप्रजाको सुखहोसक्ताहै अन्यथानहीं और पुलिसका जोदरजाहै उसमें अत्यन्तभद्रपुरुषों कोरखनाचाहिये क्योंकिप्रथमस्थानन्यायकायहीहैइससे ही आगे

प्रायः वादविवादकेव्यवहार चलतेहैं इसस्थानमेंजोपक्षपातसेग्र-
न्थलिखा पढ़ाजायगा सोआगेभीअन्यथा प्रायःलिखापढ़ाजायगा
औरअन्यथा व्यवहारभी प्रायः होजायगाइसपुलीसमें अत्यन्तश्रे-
ष्ठपुरुषोंको रखनाचाहिये अथवा पहिलेजैसे चौकीदारमहल्ले२
मेंएक२ रहताथा उससेबहुधा अन्यायनहींहोताथा जबसे पुलिस
काप्रबन्धभयाहै तबसेबहुधा अन्यथा व्यवहारही सुननेमेंआताहै
औरगाय बैलभैंसोंकरो और भेंडोंआदिक मारेजातेहैं इससे प्र-
जाको बहुतक्लेश प्राप्त होताहै औअनेकपदार्थोंकी हानिभी होती
हैक्योंकिएकगैयादस१०सेरदूधदेतीहैकोईआठ८सेरछः६सेरपांच५से-
रऔरदो२ सेरतक उसकेमध्यछः६ सेरनित्य दूधगिनाजाय कोई
दस१० मासतकदूधदेतीहै कोईछः६ मासतकउसकामध्यस्थआ-
ठमासतक गिनाजाताहै सोएकमासभरमें सवाचारमन दूधहो-
ताहै उसमेंचावलडालके चीनीभीडालदेंतो सौपुरुषतृप्त होसक्ते
हैं जोऐसेहीपोये तो ८० पुरुषतृप्त होजांयगे और ८०० वा ६४०
पुरुषतृप्तहोसक्ते हैं कोईगाय १५ दफेबियातीहै कोईदसदफे उस
काहमने १२ बक्षारखलिये सो ९६०० सैपुरुषतृप्त होसक्ते हैंफिर
उसके बछड़ेऔरबछियांबढ़ेंगे उनसेबहुतबैल औरगाय बढेंगेए-
कगायसेलाख मनुष्योंका पालन होसक्ताहै उसको मारके मां-
ससे ८० पुरुषतृप्त होसक्तेहैंफिरदूधऔर पशुओंकीउत्पत्तिकामूल
हीनष्टहोजाताहैजोबैलआर्यावर्त्तमेंपांचरुपैयोंसेआताथासोअब
३०सेभीनहींआता औरकुछगांव औरनगरकेपास पशुओंकेचर-
नेकेवास्तेउसकीसीमामेंभूमिरखनीचाहियेजिसमेंकिवपशुचरेंजै-
सेदुग्धादिकसमनुष्यके शरीरकीपुष्टिहोतीहै वैसीसूखे अन्नादि-
कोंसनहींहोती औरबुद्धिभीनहींबढ़ती इससेराजाकोयहबात अव-
श्यकरनीचाहिये किजिनपशुओंसे मनुष्यके व्यवहारसिद्ध होतेहैं
औरउपकारहोताहै वकभीनमारेजांय ऐसाप्रबन्धकरनाचाहिये
जिससेसबमनुष्योंकोसुखहोय वैसाहीप्रजास्थ पुरुषोंकोभीकरनाउ-

चितहै सोराजासेप्रजाजिस्से प्रसन्नरहे औरप्रजासेराजा प्रसन्न-
रहै यहीबातकरनी सबकोउचितहै देखनाचाहियेकि महाभार-
तमेंसगरराजाको एककथालिखीहै उसका एकपुत्र असमंजानाम
थाउसको अत्यन्त शिक्षाकिईगई परन्तु उसनेअच्छाआचारवावि-
द्याग्रहणनहिं किई औरप्रमादमेंहीचित्तदेताथा सोउसकोयुवाव-
स्थाभोहोगई परन्तु उसकोशिक्षा कुछनलगी राजादिकश्रेष्ठपुरु-
षोंकोउसकेऊपर प्रसन्नतानहीभई फिरउसका विवाहभीकरादि-
याएकदिनसर्जूमें असमंजास्नानकेलिये गयाथा वहांप्रजाके बाल-
कआठ २ दश २ बरसके जलमें स्नानकरतेथे औरक्रीडा भीकरतेथे
सोउनमेंसेएक बालकबाहरनिकला उसकोपकडके असमंजानेग-
हिरेजलमें फेंकदिया सोबालकडूबनेलगा तबतककोईप्रजास्थपु-
रुषनेबालकको पकडलिया उसकेशरीरमें जल प्रविष्टहोनेसे वह
मूर्छितहोगया उसकीदशादेखके असमंजाबहुत प्रसन्नभया औ-
रउसकेघरकोचलागया कोईबालकउसकेपिताके पासगया और
कहाकितुमारे बालककीयहदशाहै राजाकेपुत्रनेंकरदिई सुनके
उसकीमातापिता औरसब कुटुंबकेलोग दुःखीभये उसको देखके
फिरउसबालककोउठाके जहांसगरराजाकीसभालगीथी वहांको
चलेराजासभाकेबीचमें सिंहासनपैबैठेथेसोउनकोआतेदूरसेदेख
केझटउठकेउनकेसामनेचलेगयेऔरपूंछाकि इसबालकको क्याभया
तबउनकीमातारोनेलगी राजानेदेखके बहुतउनकोधैर्यदियाकि
तुमरोओमत बातकहदेओकिक्याभयातबबालककापिताबोलाकि
हमारेबडेभाग्यहैंकिआपकेजैसेराजाहमलोगकेऊपरहैं दूरसेदेख
केप्रजाकेऊपरकृपाकरकेपूंछना औरदौडकेआनायहबडाप्रजाका
भाग्यहै इसप्रकारकाराजाहोना फिरराजानेपूंछाकितुमअपनीबा-
तकहो तबउसनेराजाकोकहाकोएकतोआपहैं औरएकआपकापु-
त्रहै जोकिअपनेहाथसेहीप्रजाकोमारनेलगा औरजैसाभयाथावै-
सासब २ हालराजासेकहदियातबराजानेंवैद्योंकोबोलाकेउसका

जलनिकलवाडाला औरऔषधोंसे उसीवक्तस्वस्थ बालकहोगया
फिरसभाकेबीचमेंबालकउसकोमातपिता औरजिसनेबालकनि-
कालाथावहभीवहांथाफिरराजानेसिपाहियोंकोआज्ञादिई किअ-
समंजाकिसुसकेचढाकेलेआओ। सिपाहीलोगगयेऔरवैसेहीउसको
बांधकेलेआयेअसमंजाकीस्त्रीभी संग२ चलीआईऔरसभामेंखडे-
करदियेराजानेपुत्रकीस्त्रीसे पूंछाकितूइसकेसाथजानेमेंप्रसन्नहैवा-
नहींतबउसनेकहाकिअबजोदुःखवासुखहोसोहोयपरन्तुमेरेअभा-
ग्यसेऐसापतिमिलासोमैंसाथहीरहूंगीपृथकनहीं तबराजानेअस-
मंजासेकहाकितेराकुछभाग्यअच्छाथा कियहबालकमरानहींजो
यहमरजातातोतुझको बुरेहवालसेचोरकीनाईं मैंमारडालतापर-
न्तुतुझको मैंमरणतककेवनवासदेताहूं सातूकभीगांवमें वानगरमें
अथवा मनुष्योंके पासखडारहा वा गयातोतुझको चोरकीनाईं
मारडालेंगे इससेतूऐसेवनमें जाकेरहकिजहांमनुष्य कादर्शनभीन
होय सिपाहियोंसे हुकुमदेदिया किजाओतुमघोरवनमेंइनदोनों
कोछोडआओ उसकोनवस्त्रदिये अच्छे२ नखानेकोदिई नधनदिये
किन्तुजैसेसभामेंदोनोंखडेथेवैसेहीछोडआये फिरवेवनमेंरहे
औरउनदोनोंसे वनमेंहीपुत्रभया उसकोस्त्रीअच्छीथीसोअपनेपा-
ससेबालककोरक्खा और शिक्षाभीकिई जबपांचवर्षकाभया तब
ऋषियोंकेपास पुत्रकोवहलेआई औरऋषियोंसेकहाकिम-
हाराज यहआपकाहीबालकहै जैसेयहअच्छाबने वैसाकीजियेत-
बऋषिलोग बहुतप्रसन्नहोके उसकोरक्खा किइसकोअच्छेप्रका-
रसेशिक्षाकिईजायगी क्योंकियहसगरकापौत्रहै फिरस्त्रीचलीगई
अपनेस्थानपर औरऋषिलोगोंने उसबालकके यथावत्संस्कारकि-
येविद्यापढाई औरसबप्रकारकी शिक्षाभीकिई औरउसनेयथावत्
ग्रहणकिई जबवह १६ वर्षकाहोगया तबउसकोलेके सगरराजा
केपासऋषिलोगगये औरकहाकियह आपकापौत्रहै इसकीपरी-
क्षाकीजियेसोराजानेउसकी परीक्षाकिई औरप्रजा सबऔर पुत्र-

षोंनेभी सोसबगुणऔरविद्यामें योग्यजोहुआ तबप्रजास्थपुरुषों-
नेराजासेकहा किअसमंजानजो आपकापौत्र सोराजाहोनेकेयो-
ग्यहै तबराजानेकहाकि सब बुद्धिमानप्रजास्थजोश्रेष्ठपुरुष उनको
प्रसन्नता औरसम्मतिहोयतो इसकाराज्याभिषेकहोजायफिरसब
श्रेष्ठलोगोंने सम्मतिदिई और उसकाराज्याभिषेकभीहोगया क्यों-
किसगरराजा अत्यन्तवृद्धहोगयथे राज्यकार्यमें बहुतपरिश्रमपड-
ताथा सोसबअधिकार उसकेऊपरदेदिये परन्तुअपनभी जितना
होसकाथा उतनाकर्त्तेथे राजाऐसाहोनाचाहिये किएकभर्त्त
राजाथा जिसकेनामसे इसदेशकाभरतखण्डनामरक्खागयाहैउ-
सकेभीनवपुत्रथे सो २५ वर्षकेऊपरसबहोगयेथेपरन्तुमूर्खऔरप्र-
मादीथे राजानेऔर प्रजास्थपुरुषोंने विचारकियाकि इनमेंसे एक
भीराजाहोनेके योग्यनहींसो भरतराजाने इश्तिहार करकेपुरुष-
औरस्त्रीलोगोंको बोलाया जोप्रतिष्ठितराजाऔरप्रजास्थथे सोएक
मैदानमें समाजस्थानबनाया उसकेबीचमें एकमंचानभीगाडदि-
या सोजबसबलोग एकदिनइकट्ठेभये परन्तु किसीकोंविदितनभ-
याकिराजाक्याकरेगा औरक्याकहेगा फिरमंचानकेऊपरराजा
चढ़केसबसे कहाकिजिनराजा अथवाप्रजास्थ रहीसलोगोंका पुत्र
इसप्रकारकादुष्टहोय उसकोऐसाही दण्डदेना उचितहै जोकिइ-
सबकोहम अपनेपुत्रोंकोदेंगे सोसदा सबसज्जन लोगइस नीतिको
मानें औरकरें फिर मंचानसेउतरे औरनवपुत्रभीबीचमें खडेथे
सब समाजवाले देखभीरहेथे औरउनकीमाताभी सोसबकेसाम-
नेखड्गहाथमेंलेके नवोंकासिरकाटके औरमंचानके ऊपरबांधदि-
ये फिरभीसबसेकहाकि जोकिसीकापुत्रऐसादुष्टहोय उसकोऐसा
हीदण्डदेनाचाहिये क्योंकि जोहमइनका सिर नकाटते तोयेह-
मारपीछेआपसमें लडते राज्यकानाशकरतेऔरधर्मकी मर्यादा-
कोतोडडालते इससे राजपुत्र वाप्रजास्थजोश्रेष्ठ धनाढ्यलोग उन
कोऐसाहीकरना उचितहै अन्यथाराज्यधन औरधर्मसबनष्टहो-

जायगे इसमें कुछसन्देह नहीं देखनाचाहिये किआर्यावर्त्त देशमें
ऐसे २ राजाऔर प्रजास्थश्रेष्ठपुरुषहोतेथे सोइसवक्त आर्यावर्त्त
देशमें ऐसेभ्रष्टाचारहोगयेहैं कोजिनको संख्याभीनहीं होसक्तीऐ-
सासर्वत्र भूगोलमें देशकोईनहीं ऐसाश्रेष्ठआचारभीकिसोदेशमें
नहोथा परन्तु इसवक्त पाषाणादिक मूर्तिपूजनादिक पाखण्डोंसे
चक्रांकितादिक संप्रदायोंके वादविवादोंसे भागवतादिक ग्रन्थोंके
प्रचारसे ब्रह्मचर्याश्रम औरविद्याके छोडनेसेऐसादेशबिगडाहैकि
भूगोलमें किसीदेशकीनहीं जैसोकिदुर्दशा महाभारतकेयुद्धकेपी-
छेआर्यावर्त्तदेशकीभईहै सोआजकालअंगरेजकेराज्यमेंकुछ २ सु-
खआर्यावर्त्त देशमेंभयाहै जोइसवक्तवेदादिक पढनेलगेंब्रह्मचर्या-
श्रमआश्रम चालीसवर्षतककरें कन्याऔर बालकसबश्रेष्ठशिक्षा
औरविद्यावालेहोवें इनमत मतान्तरोंके वादविवाद आग्रहोंको
छोडैंसत्यधर्म औरपरमेश्वरको उपासनामें तत्परहोवें तोइसदेश
कीउन्नति औरसुखहोसक्ताहै अन्यथानहीं क्योंकिबिनाश्रेष्ठव्यव-
हारविद्यादिकगुणोंसे सुखनहींहोता आजकालजोकोई राजा ज-
मींदार वाधनाढ्यहोताहै उनकेपास मतमतान्तरके पुरुष और
खुशामदीलोग बहुतरहतेहैंवबुद्धिधनऔरधर्मनष्टकरदेतेहैंइससे
सज्जनलोग इनबातोंको विचारकेसमझलें और करनेकेव्यवहा-
रोंकोकरैं अन्यथानहीं।एकब्रह्म नमाज मतचलाहै वेऐसामानते
हैं नित्यपरमेश्वर सृष्टिकर्त्ताहै अर्थात् जीवादिकनये २ नित्यउत्प-
न्नकर्त्ताहै जीवपदार्थऐसाहै किजड औरचेतनमिलाभया उत्पन्न
ईश्वरकर्त्ताहै जबवह शरीर धारणकर्त्ताहै तबजडांशसे शरीरबन-
ताहै और चेतनांशजोहै सोआत्मारहताहै जबशरीरछूटताहैतब
केवलचेतन औरमनआदिक पदार्थरहतेहैं फिरजन्मदूसरानहीं
होता किन्तुपापोंकाभोग पश्चात्तापसेकरलेताहै ऐसेहीक्रमसे अ-
नन्तउन्नतिकोप्राप्तहोताहै यहबातउनकीयुक्ति औरविचारसेवि-
रुद्धहै क्योंकिजोनित्य २ नईसृष्टि ईश्वरकर्त्तातो सूर्य चन्द्रपृथिव्या-

दिकपदार्थोंकोभी सृष्टिनई २ देखनेमेंआतीजैसे पृथिव्यादिककीसृ-
ष्टिनई २ देखनेमेनहीआती ऐसेजीवको सृष्टीभीईश्वरने एकोबे
रकिईहै सोकेवल कल्पनामात्रसे ऐसाकथनवेलोगकहतेहैं किन्तु
सिद्धान्तबातयहनहीहै इससे ईश्वरमें नित्यउत्पत्तिका विघ्नपदोष
आवेगा और सर्वशक्तिमत्वादिकगुणभीईश्वरमेंनहीरहेंगे क्योंकि
जैसेजीव क्रमसेशिल्पविद्यासे पदार्थोंकीरचनाकर्त्ताहै वैसा ईश्वर
भीहोजायगा इससे यहबात सज्जनोंकोमाननेके योग्य नहीं और
एकजन्मवादजोहै सोभी विचारविरुद्धहै क्योंकि अनेकजन्महोते हैं
सोप्रथमपूर्वार्द्ध मेंविचारकियाहैवहीदेखलेना औरपश्चात्तापसेपा-
पोंकोनिवृत्तिमानना यहभीयुक्तिविरुद्धहै सोप्रथम लिखदियाहैकि
पश्चात्तापजो होताहैसो क्रियमाणपापोंका निवर्त्तकनहीहोताकि-
न्तुआगेकर्त्तव्य पापोंकानिवर्त्तकहोताहै विनाशरीरसेपापपुण्यों
काफलभोग कभीनहीहोसक्ता औरविना शरीरके जीवरहताही
नहीं जोमनमेंपश्चात्तापसे पापोंकाफल जीवभोक्ता तोजिस २ दे
श कालऔर जिनजीवोंकेसाथ पापऔरपुण्यकियेथे उनकाभीम
रनमेंस्मरणहोता औरजोस्मरणहोतातो फिरभीजीव मोक्षकेहो
नेसेवहीं अपनेपुत्र स्त्रियादिकसंबन्धियों के पासआजाता सोकोई
आतानहीं इससे यहबातभी उनकोप्रमाणविरुद्धहै और वर्णाश्रम
कोजोसत्यव्यवस्था शास्त्रकीरीतिसे उसकाछेदनकरताहै सोसबम
नुष्योंके अनुपकारकाकर्महै यहदशवेंसमुल्लासमें विस्तारसेलिख
दियाहै वहांदेखलेना यज्ञोपवीत केवलविद्यादिक गुणोंका और
अधिकार काचिन्हहै उसकातोडनासाहससे इससे भी अत्यन्तमनु
ष्योंका उपकारनहीहोता किन्तु विद्यादिक गुणोंसेवर्णाश्रम का
स्थापनकरना शास्त्रकीरीतिसे इससेजोमनुष्योंका उपकारहोसक्ता
है संसाराचारकी रीतिसे नहीं वेब्राह्मणादिकवर्णवाच जोशब्द
हैंउनकोजातिवाचि ब्राह्मलोगजानके निषेधकतेहैं सोकेवल उन
कोभ्रमहै किन्तु शास्त्रकीरीतिसे मनुष्यादिक जातिवाचकशब्द हैं

सोमनुष्यपशुद्दक्षादिककी एकताकोई नहींकरसक्ता सोईमनुष्या-
दिकशब्दजातिवाचकशास्त्रमेंलिखेहैं सोसत्यहीहैऔरखानपीनेसे
धर्मकिसीका बढ़तानहीं औरनकिसीकाघटता इसमेंभीअत्यन्तजो
आग्रहकरनाकिसबकेसाथखानाअथवाकिसीकेसाथनहींखानाय
हीधर्ममाननेनायहभी अनुचितबातहै किन्तु नष्टभ्रष्टसंस्कार ही
नपदार्थोंकेखाने औरपीनेसे मनुष्यकाअनुपकार होताहै अन्यच
नहींऔरवार्षिकउत्सवादिकोंमेंमेलाकरनाइसमेंभी हमकोअत्यन्त
श्रेष्ठगुणमालूमनहीं होता क्योंकिइसमें मनुष्यकी बुद्धिबहिर्मुखहो
जातीहै औरधनभीअत्यन्तखर्चहोताहै केवलअंगरेजीपढ़नेसेसं-
तोषकरलेनायहभी अच्छीबातउनकीनहींहैं किन्तु सबप्रकारकीपु
स्तकपढ़नाचाहिये परन्तुजबतकवेदादिक सनातन सत्यसंस्कृतपु-
स्तकोंकोंनपढेंगे तबतकपरमेश्वरधर्म अधर्मकर्त्तव्य औरअकर्त्त-
व्यविषयोंको यथावत् नहींजानेंगेइससे सबपुरुषार्थसेइन वेदादि-
कोंकोपढनाऔरपढानाचाहिये इससेसबविघ्ननष्टहोजांयगेअन्यथा
नहींऔर हमकोऐसा मालूमदेताहैकि थोडेहीदिनोंमें ब्राह्मस-
माजकेदोतीनभेदचलगयेहैं औरउनकाचित्तभी परस्परप्रसन्नन-
हींहै किन्तु ईर्ष्याहीएकसे दूसरेकीहोतीहै सोजैसेवैराग्यादिकों-
में अनेकभेदोंकेहोनेसे अनेकप्रमादऔरविरुद्ध व्यवहारहोगयेहैंऐ-
साउनकाभी कुछकालमेंहोजायगा क्योंकिविरोधसेहीविरुद्धव्यव-
हारमनुष्योंकेहोतेहैं अन्यथानहींसोवेदादिक सत्यशास्त्रोंको ऋ-
षिमुनियोंकेव्याख्यान सनातनरीतिसे अर्थसहितपढेंतोअत्यन्तउ-
पकारहोजाय अन्यथानहींतो आगे २ व्यवहारहोजायगा ईसा
मूसामहम्मदनानक चैतन्यप्रभृतियोंकोही साधुमानना औरजै-
गीषव्यपंचशिखा आसुरिऋषिऔर मुनियोंकोनही गिननायहभ
भीउनकोभूलहै अन्यबातजेपरमेश्वरकी उपासनादिकवेसबउन-
कीअच्छीहैं इसके आगे जैनमतके विषय मेंलिखा जायगा ॥

इतिश्री मद्दयानन्द सरस्वतिस्वामि कृते स

त्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते एकादशः समुल्लासः संपूर्णः ॥ ११ ॥

अथ जैनमतविषयाख्याख्यास्यामः॥ सब संप्रदायोंसे जैनकामत प्रथमचलाहै उसकोसाढेतीनहजार वर्षअनुमानसेभयेहैं सोउनके २४ तिर्थङ्कर अर्थात् आचार्य भयेहैं जैनेन्द्र पारसनाथ ऋषभदेव गौतमऔर बौधादिक उनके नामहैं उन्ने अहिंसाधर्मपरममाना है इसविषयमेंवेऐसा कहतेहैं किएकबिन्दुजलमेंअथवाएकअन्नकेकणमें असंख्यातजीवहैं उनजीवोंके पांखआजायतो एकबिन्दुऔर एककणकेजीव ब्रह्माण्डमें नसमावैं इतनेहैं इस्सेमुखके ऊपर कपडाबांधरखतेहैं जलकोवस्त्रतछानतेहैं औरसबपदार्थोंको शुद्धरखतेहैं।और ईश्वरकोनहीमानते ऐसाकहतेहैं किजगत् स्वभावसेसनातनहै इसकाकर्त्ताकोईनही जब जीवकर्मबन्धनसेछूटजाताहै औरसिद्धहोताहै तब उसकानाम केवलीरखतेहैं और उसीको ईश्वरमानतेहैं अनादिईश्वर कोईनहीहै किन्तुतपोबलसे जीवईश्वररूपहोजाताहै जगत्काकर्त्ताकोईनही।जगत्अनादिहै जैसेघासवृक्ष पाषाणादिक पर्वत वनादिकोंमें आपसे आपहीहोजातेहैं ऐसेपृथिव्यादिक भूतभीआपसे आपबनजातेहैं।परमाणुकानाम पुद्गलरक्खाहै सोपृथिव्यादिकोंको पुद्गल मानतेहैं जबप्रलयहोताहै तब पुद्गलजुदे २ होजातेहैं औरजबवे मिलतेहैं तबपृथिव्यादिक स्थूलभूतबनजातेहैं।औरजीवकर्मयोगसे अपना २ शरीरधारणकरलेतेहैं जैसाजोकर्म करताहै उसकोवैसाफलमिलताहै।आकाशमें चौदहराज्यमानतेहैं उनकेऊपर शीपद्मशिला उसकोमोक्ष स्थानमानतेहैं जबशुभकर्मजीवकर्ताहै तब उनकर्मोंकेवेगसे चौदह राज्योंकोउल्लंघन करके पद्मशिलाके ऊपर विराजमानहोतेहैं चराचरकोअपनी ज्ञानदृष्टिसेदेखतेहैं फिर संसार दुःखजन्ममरणमेंनहीआते वहीआनन्दकरतेहैं ऐसीमुक्तिजैनलोगमानतेहैं।और ऐसाभीकहतेहैं किधर्मजोहैसोजैनकाहीहै और

सबहिंसकहैं तथा अधर्मी क्योंकि जो हिंसा करतेहैं वे धर्मात्मा नहीं
जो यज्ञमें पशु मारतेहैं और ऐसी २ बातें कहतेहैं कि यज्ञमें जो पशु
माराजाताहै सो स्वर्गको जाता होय तो अपना पुत्र वा पिता को
न मारडालैं स्वर्गको जानेके वास्ते ऐसे २ श्लोक उनने बनारक्खे हैं।
(त्रयोवेदस्य कर्त्तारो धूर्त्तभण्ड निशाचराः) इसका यह अभिप्राय है
कि ईश्वर विषय कि जितनी बात वेदमें हैं वह धूर्त्तोंकी बनाई है जित-
नी फलस्तुति अर्थात् इस यज्ञको करैं तो स्वर्गमें जाय यह बात भा-
ण्डोंने बनारक्खी है और जितना मांसभक्षण पशुमारनेका विधि
है वेदमें सो राक्षसोंने बनाया है क्योंकि मांसभोजन राक्षसोंको बड़ा
प्रिय है सब बात अपने खानेपीने और जीविकाके वास्ते लोगोंने बना-
ई है। और जैनमत है सो सनातन है और यही धर्म है इसके विना कि
सीको मुक्ति वा सुख कभी नहीं होसक्ता ऐसी २ वे बातें कहतेहैं।(उत्तर)ऐ-
से पूंछना चाहिये कि हिंसा तुमलोग किसको कहतेहो जो कहो कि
किसी जीवको पीडा देना सो तो बिना पीडाके किसी प्राणीका कुछ व्य-
वहार सिद्ध नहीं होता क्योंकि आपलोगोंके मतमें ही लिखा है कि ए-
कबिन्दुमें असंख्यात जीव हैं उसको लाख वस्त्रसे छाने तोभी वे जीव पृथ-
क नहीं होसकें फिर जलपान अवश्य किया जाता है तथा भोजनादि-
क व्यवहार और नेत्रादिकोंकी चेष्टा अवश्य की जाती है फिर तुमा-
रा अहिंसा धर्म तो नहीं बना (प्रश्न) जितने जीव बचाये जातेहैं उतने ब-
चाते हैं जिसको हमलोग देखते हैं नहीं उनको पीडामें हमलोगों
को अपराध नहीं (उत्तर) ऐसा व्यवहार सब मनुष्योंका है जे मांसाहा-
री हैं वे भी अश्वादिक पशुओंको बचालेते हैं वैसे तुमलोग भी जिन जी-
वोंसे कुछ व्यवहारका प्रयोजन नहीं है जहां अपना प्रयोजन है वहां म-
नुष्यादिकोंको नहीं बचाते हो फिर तुमारी अहिंसा नहीं रही (प्रश्न)
मनुष्यादिकोंको ज्ञान है ज्ञानसे वे अपराध करते हैं इससे उनको पीडा
देनेमें कुछ अपराध नहीं वे पश्वादिक जीव बिना अपराध हैं उनको पी-
डा देना उचित नहीं (उत्तर) यह बात तुमलोगोंकी विरुद्ध है क्योंकि ज्ञा-

नवालोंकोपीडादेना और ज्ञानहीनपशुओंको पीडा नदेना यहबा-
तविचारशून्यपुरुषोंकोहै क्योंकि जितने प्राणीदेहधारीहैं उनमेंसे
मनुष्य अत्यन्तश्रेष्ठहै सोमनुष्योंका उपकारकरना औरपीडाका
नकरना सबकोआवश्यकहै हिंसानामहैवैरकासो योगशास्त्र व्या
सजीके भाष्यमेंलिखाहै (सर्वथासर्वदा सर्वभूतेष्वनभिद्रोहः अहिं-
सा) यहअहिंसाधर्म कालक्षणहै इसकायह अभिप्रायहैकि सबप्र-
कारसे सबकालमें सबभूतोंमेंअनभिद्रोह अर्थात् वैरका जोत्याग
सोकहाताहै अहिंसासो आपलोगअपने संप्रदायमेंतोप्रीतिकरते
हो औरअन्यसंप्रदायोंमेंद्वेष तथा वेदादिकसत्यशास्त्र तथाईश्वर
पर्यन्त आपलोगोंको वैरऔरद्वेषहै फिरअहिंसाधर्म आपलोगों
काकहनेमात्रहै अपनेसंप्रदायोंके पुस्तकतथाबातभी अन्यपुरुषोंके
पासप्रकाशितनहींकरतेहो यहभीआपलोगोंमें हिंसासिद्धहैईश्वर
कोआपलोगनहींमानतेहैं यह आपलोगोंकी बडीभूलहैऔर स्व
भावसे जगत्कीउत्पत्तिकामानना यहभीतुमलोगोंकोझूठबातहैइ-
सकाउत्तर ईश्वरऔरजगत्की उत्पत्तिके विषयमेंदेखलेना प्रथम
जीवकाहोना औरसाधनोंकाकरना पश्चात् वहसिद्धहोगा जबजी-
वादिक जगत्बिनाकर्त्तासे उत्पन्नहीनहींहोता औरप्रत्यक्षजगत्में
नियमोंकेजगत्में देखनेसे सनातन जगत्कानियन्ता ईश्वर अवश्य
है फिरउसकोईश्वर नहींमानना औरसाधनोंसे सिद्धहोभया उ-
सीकोहीईश्वरमानना यहबात आपलोगोंकोसबझूठहै आपसेआ
पहीजीवशरीरधारणकरलेतेहैं तोशरीरधारणमेंजीव स्वतन्त्रठह-
रे फिरछोडक्योंदेतेहैं क्योंकिस्वाधीनतासे शरीरधारणकरलेते
हैं फिरकभी उसशरीरकोजीव छोडगाहीनहीं जोआपकहोंकिक-
र्मोंकेप्रभावसे शरीरकाहोना और छोडनाभीहोताहै तोपापोंके
फलजीवकभीनहींग्रहणकर्त्ता क्योंकि दुःखकी इच्छाकिसीकोनहीं
होतीसदा सुखकीइच्छाहोरहतीहै जबसनातन न्यायकारीईश्वर
कर्मफलकी व्यवस्थाकाकरनेवालानहोगा तोयहबातकभीनबनेगी

आकाशमें चौदहराज्य तथा पञ्चशिलामुक्तिकास्थानमानना यह
बातप्रमाण औरयुक्तिसेविरुद्धहै केवलकपोलकल्पनामात्रहै और
उसके ऊपरबैठेकेचराचर कादेखना औरकर्मबंधमेंवहांसेचलाआ-
नायहभीबात आपलोगोंकीअसत्यहै(यज्ञोंकेविषयोंमें आपकुतर्क
कर्त्ते हैं सोपदार्थविद्याकेनहोनेसे क्योंकिघृतदूध औरमांसादि
कोंकेयथावत् गुणजानते और यज्ञकाउपकारकि पशुओंकोमार-
नेमेंथोड़ासादुःखहोताहै परन्तुयज्ञमें चराचरकाअत्यन्त उपका-
रहोताहै/इनको जोजानते तोकभीयज्ञविषयमें तर्ककर्त्ते/वेदोंका
यथावतअर्थकेनही जाननेसेऐसीबात तुमलोगकहतेहो।किधूर्त्त
भाण्डऔर निशाचरोंनेलिखाहै यहबातकेवल अपनेअज्ञानऔ-
रसंप्रदायोंके दुराग्रहसेकहतेहो और वेदजोहै सोसबकेवास्तेहित-
कारीहै किसीसंप्रदायकाग्रन्थ वेदनहीहै किन्तु केवलपदार्थविद्या
और सबमनुष्योंके हितकेवास्ते वेदपुस्तकहै पक्षपातछोड़केकुछभ-
ी इनबातोंकोजानतेतो वेदोंकात्याग और खण्डनकभीनकरते
सोवेदविषयमें सबलिखदियाहै वहींदेखलेना और(यज्ञमेंपशुको
मारनेसे स्वर्गमेंजाताहै यहबातकिसीमूर्खके मुखसेसुनलिईहोगी
ऐसीबात वेदमेंकहींनहीलिखी)जीवोंकेविषयमें वेऐसाकहतेहैंकि
जीवजितने शरीरधारीहैं उनकेपांचभेदहैं एकइन्द्रिय द्वीन्द्रियत्री-
न्द्रिय चतुरिन्द्रिय औरपंचेन्द्रिय उसमेंएक इन्द्रियमानतेहैं अर्थात्
वृक्षादिकोंमें सोयहबात जैनोंकीविचारशून्यहै क्योंकिइन्द्रिय सू-
क्ष्महोनेसे कभीनहीदेखपड़ती परन्तुइन्द्रियका कामदेखनेसेअ-
नुमानहोताहै किइन्द्रियअवश्यहै सोजितनेवृक्षादिकोंकेबीजहैंउ-
नकोपृथिवीमें जबबोतेहैं तबअङ्कुरऊपरआताहै औरमूल नीचे
जाताहै जोनेत्रेन्द्रिय उनकीनहोतीतो ऊपरनीचेको कैसेदेखता
इसकामसे निश्चितजानाजाताहै किनेत्रेन्द्रियउनवृक्षादिकोंमेंभी
है तथाबहुतलताहोतीहै सोवृक्षऔर भित्तीके ऊपर चढ़जातीहै
जोनेत्रेन्द्रियनहोती तोउसकोकैसेदेखता तथास्पर्शेन्द्रियतो वेभी

मानते हैं जो भइन्द्रिय भी वृक्षादिकों में हैं क्योंकि मधुर जल में बागादिकों में जितने वृक्ष होते हैं उनमें खारा जल देने से सूख जाते हैं जो भइन्द्रिय न होता तो खारा खारे वा मीठे का कैसे जानते तथा श्रोत्रेन्द्रिय भी वृक्षादिकों में है क्योंकि जैसे कोई मनुष्य सोता होय उसको अत्यन्त शब्द करने से सुन लेता है तथा तोफ आदिक शब्द से भी वृक्षों में कम्प होता है जो श्रोत्रेन्द्रिय न होता तो कम्प क्यों होता क्योंकि अकस्मात् भयङ्कर शब्द के सुनने से मनुष्य पशु पक्षी अधिक कम्प जाते हैं वैसे वृक्षादिक भी कम्प जाते हैं जो वे कहैं कि वायु के कम्प से वृक्ष में चेष्टा होजाती है अच्छा तो मनुष्यादिकों को भी वायु की चेष्टा से शब्द सुन पड़ता है इस से वृक्षादिकों में भी श्रोत्रेन्द्रिय है तथा नासिका इन्द्रिय भी है क्योंकि वृक्षों को रोग धूप के देने से छूट जाता है जो नासिकेन्द्रिय न होता तो गन्ध का ग्रहण के से करता इस से नासिका इन्द्रिय भी वृक्षादिकों में है तथा त्वगिन्द्रिय भी है क्योंकि कुमोदिनि कमल लज्जावती अर्थात् छुईमुई औषधि और सूर्यमुखी आदिक पुष्पों में और शीत तथा उष्ण वृक्षादिकों में भी ज्ञान पड़ते हैं क्योंकि शीत तथा अत्यन्त उष्णता से वृक्षादिक कुमला जाते हैं और सूख भी जाते हैं इस से तत्त इन्द्रियों का कर्म देख के मत तत् इन्द्रिय वृक्षादिकों में अवश्य मानना चाहिये (यह जैनसम्प्रदाय वालों को स्थूल गोलक इन्द्रियों के नहीं देखने से हुआ है) सो इस जैन लोग इन्द्रियों को नहीं जान सके परन्तु कार्य द्वारा सब बुद्धिमान लोग वृक्षादिकों में भी इन्द्रिय जानते हैं इस में कुछ सन्देह नहीं और जहां जीव होगा वहां इन्द्रिय अवश्य होंगी क्योंकि इन सब क्रियाओं का जो सम्बन्ध है इसी को जीव कहते हैं जहां जीव होगा वहां इन्द्रियां अवश्य होंगी (जैनों का ऐसा भी कहना है कि ताला वा तालाब को कुआ वा बाग़ीचा न बनाना क्योंकि उनमें बहुत जीव मरते हैं जैसे ताला बनाने से कर-चने से भी सो उसमें बैठेगी उसके ऊपर मेघा बैठेगा उसको कौआ ले जायगा और मार भी डालेगा उसका पाप ताला बनाने वाले को होगा क्योंकि वह ताला न बनाता तो यह हत्या न होती इस में उन्हें कुछ

नहीं समझा क्योंकि उस तालाव के जल से असंख्यात जीव सुखी होंगे उसका पुण्य कहां जायगा सो पापके वास्ते तालाव कोई नहीं बनाता किन्तु जीवोंके सुखके वास्ते बनाते हैं इस्से पाप नहीं हो सक्ता परन्तु जिस देशमें जल नहीं मिलता होय उस देशमें बनानेसे पुण्य होता है जिस देशमें बहुत जल मिलता होवै उस देशमें तडागादिकोंका बनाना व्यर्थ है। और वे बडे २ मंदिर और बडे २ घर बनाते हैं उनमें क्या जीव नहीं मरते होंगे सो लाखहां रुपैये मन्दिरादिकोंमें मिथ्या लगा देते हैं जिनसे कुछ संसार का उपकार नहीं होता और जो उपकार की बात है उसमें दोष लगाते हैं फिर कहते हैं कि जैनका धर्म श्रेष्ठ है और इसके विना मुक्ति भी किसीको नहीं होती सो यह बात उनकी मिथ्या है क्योंकि कभी बात और ऐसे कर्मों से मुक्ति कभी नहीं हो सक्ती मुक्ति तो मुक्तिके कर्मों से सर्वत्र होती है अन्यथा नहीं। जितना मूर्ति पूजन चला है सो जैनों से ही चला है यह भी अनुपकार का कर्म है इस्से कुछ उपकार नहीं संसार में विना अनुपकार के सो जैनोंको बडा भारी आग्रह है जो कोई कुछ पुण्य किया चाहता है धनाढ्य सो मन्दिर ही बना देता है और प्रकार का दानपुण्य नहीं कर्त्ते हैं। उनने जैनगायत्री भी एक बना लिई है और एक यती होते हैं उनको श्वेताम्बर कहते हैं दूसरा होता है दिगम्बर जिसको मुनि और श्रावक कहते हैं उनमें से ढूंढिये लोग मूर्तिपूजन को नहीं मानते और लोग मानते हैं उनमें एक श्रीपूज्य होता है उसका ऐसा नियम होता है कि इतना धन जबसे एकलो गद्दे तब उसके घरमें जाय और मुनि दिगम्बर होते हैं वे भी उनके घरमें जब जाते हैं तब आगे २ थान बिछाते चले जाते हैं और उनके मतमें नहीं होय वह श्रेष्ठ भी होय तो भी उसको मैत्री अर्थात् जलतक भी नहीं देते यह उनका पक्षपात सो अनर्थ है किन्तु जो श्रेष्ठ होय उसकी सेवा करनी चाहिये दुष्टकी कभी नहीं यह सब मनुष्योंके वास्ते उचित है जो ढूंढिये होते हैं उनके केशमें जूं भी पड जांय तो भी नहीं निकालते और उनका मत नहीं बनवाते किन्तु उनका

साधु जब आताहै तब जैनीलोग उसकीदाढ़ी मूंछ और सिर केबा-
लसबनोंचलेतेहैं जोउसबक्त वहशरीरकम्पावै अथवा नेत्रसेजल
गिरावै तब सबकहतेहैं कियहसाधुनहोभयाहै क्योंकि इसकोश-
रीर केऊपरमोहहै विचारकरनाचाहिये किऐसो २ पीड़ाऔर
साधुओंको दुःखदेना और उनकेहृदयमें दयाकालेशभीनहोआ-
ना यहउनकीबात बहुतमिथ्याहै क्योंकि बालोंके नोंचनेमें कुछ
नहीहोता जबतक काम क्रोध लोभ मोह भय शोकादिक दोषहृद
यसे नहीनीं चेजायंगे यह ऊपरका सबढोंगहै उनमेंजितने आ-
चार्यभयेहैं उनकेबनाये ग्रन्थोंको वेदमानतेहैं सोअठारहग्रन्थवे-
हैं तथा महाभारत रामायणपुराण स्मृतियांभी उनलोगोंनेअ-
पने मतके अनुकूलग्रन्थबनालियेहैं अन्यभगवतीगोता ज्ञानचरि-
त्रादिकभीग्रन्थ नानाप्रकारके बनालियेहैं बहुत संस्कृतमेंग्रन्थहैं
औरबहुत प्राकृतभाषामें रचलियेहैं उनमें अपनेसंप्रदायकीपुष्टि
और अन्यसंप्रदयोंका खण्डन कपोलकल्पनासे अनेक प्रकार लि-
खा है जैसे कि जैन मार्ग सनातन है प्रथम सबसंसार जैनमा
र्गमेंथा परन्तु कुछदिनोंसे जैनमार्गको छोड़दियाहै लोगोंनेसोब
ड़ाअन्यायहै क्योंकिजैनमार्गछोड़ना किसीको उचित नहीऐसीर
कथा अपनेग्रन्थोंमें जैनोंनेलिखीहैं सोसब संप्रदायवाले अपनी२
कथा ऐसी हीलिखतेहैं और कहतेहैं इसमें प्रायःअपनेमतलबके
लिये बातेंमिथ्या २ बनालिईहैं। यावज्जीवसुखंजीवेन्नास्तिमृत्यो
रगोचरः। भस्मीभूतस्यदेहस्य पुनरागमनंकुतः॥ यावज्जीवेत्सु-
खंजीवे दृणंकृत्वाघृतंपिवेत्॥ अग्निहोत्रंत्रयोवेदा त्रिदण्डं भस्मगु-
ण्ठनम्॥ बुद्धिपौरुषहीनानां जीविकेतिवृहस्पतिः॥ अग्निरुष्णोज
लंशीतं शीतस्पर्शस्तथानिलः॥ केनेदंचित्रितंतस्मात स्वभावात्तद्व
व्यवस्थितिः॥ नस्वर्गोनापवर्गोवा नैवात्मा:पारलौकिकः। नैववर्णाश्र
मादीनां क्रियाश्चफलदायकाः॥ अग्निहोत्रंत्रयोवेदा त्रिदण्डं भ-
स्मगुण्ठनम्॥ बुद्धिपौरुषहीनानां जीविकाधातृनिर्मिता॥ पशु

न्निहतःस्वर्गं ज्योतिष्टोमेगमिष्यति ॥ स्वपितायजमानेन तचक-स्मान्नहिंस्यते ।। मृतानामपिजंतूनां श्राद्धंचेत्तृप्तिकारणम् ॥ गच्छतामिहजंतूनां व्यर्थंपाथेयकल्पनम् ।। स्वर्गस्थितायदातृप्तिं गच्छेयुस्तत्रदानतः ॥ प्रासादस्योपरिस्थाना मत्रकस्मान्नदीयते ।। यदिगच्छत्परंलोकं देहादेषविनिर्गतः ॥ कस्माद्भूयोनचायाति बन्धुस्नेहसमाकुलः ।। ततश्चजीवनोपायो ब्राह्मणैर्विहितस्त्विह ॥ मृतानांप्रेतकार्याणि नत्वन्यद्विद्यतेक्वचित ।। त्रयोवेदस्यकर्तारो भण्डधूर्त्तनिशाचराः ॥ जर्फरीतुर्फरीत्यादि पंडितानां वचःस्मृतम् ।। अश्वस्यात्रहिशिश्नन्तु पत्नीग्राह्यंप्रकीर्त्तितम ॥ भण्डैस्तद्वत्परंचैव ग्राह्यजातंप्रकीर्त्तितम । मांसानांखादनंतद्वन्निशाचरसमीरितम् इत्यादिकश्लोक जैनीलोगोंके हैं और अर्थ तथा काम दोनोंपदार्थमानतेहैं लोकसिद्ध जोराजासोईपरमेश्वर औरईश्वरनहींपृथिवी जल अग्नि वायु इन केसंयोगसे चेतनउत्पन्नहोके इन मेंलोनहोजाताहै और चेतनपृथकपदार्थनहो ऐसे २ प्राकृतदृष्टान्तदेकेनिर्बुद्धि पुरुषोंकोबहकादेतेहैं जोचारभूतोंकेयोगसे चेतनउत्पन्नहोता तो अबभीकोई चारभूतोंकोमिलाके चेतनदेखलादे सोकभीनहींदेखपडेगा इनस्वभावसे जगतकी उत्पत्तिआदिकका उत्तर ईश्वर और सृष्टिकेविषयमें लिखदियाहै वहींदेखलेना। भूतेभ्योमूर्त्युपादानं तत्तदुपादानम् इत्यादिक गोतममुनिजीके कियेसूत्र नास्तिकोंकेमतदेखाने केवास्तेलिखेजातेहैं औरउनकाखण्डनभी सोजानलेना जैसेपृथिव्यादिक भूतोंसेबालु पाषाण गेरुअंजनादिक स्वभावसेकर्त्ताकेबिना उत्पन्नहोतेहैं वैसेमनुष्यादिकभी स्वभावसे उत्पन्नहोतेहैं नपूर्वापरजन्म नकर्म औरनउनकेसंस्कार किन्तु जैसे जलमेंफेन तरंग और बुद्बुदादिक अपने आपसे उत्पन्नहोतेहैं वैसेभूतोंसे शरीरभीउत्पन्नहोताहै उसमें जीवभीस्वभावसेउत्पन्नहोताहै उत्तर नसाध्यसमत्वात् २ गो० जैसेशरीरकीउत्पत्ति कर्मसंस्कारकेबिना सिद्धमानतेहो वैसेबालुकादिक

को उत्पत्ति नहिं हुआ तो बालुकादिकोंके पृथिव्यादिकप्रत्यक्ष निमित्त और कारण हैं वैसे पृथिव्यादिक स्थूलभूतोंका कारणभी सूक्ष्ममानना होगा ऐसे अनवस्थादोषभी आजायगा और साध्यसम हेत्वाभास के नांई यह कथन होगा और इस देहोत्पत्तिमें निमित्तान्तर अवश्य तुमको मानना चाहिये नोत्पत्तिनिमित्तत्वमाता पित्रोः ३ गो० यह नास्तिकका अपने पक्षका समाधान है कि शरीरकी उत्पत्तिका निमित्त माता और पिता हैं जिनमेंकि शरीर उत्पन्न होता है और बालुकादिक निर्बीज उत्पन्न होते हैं इस्से साध्यसम दोष हमारे पक्षमें नहीं आता क्योंकि मातापिता खानापीना करते हैं उस्से वीर्य बीजशरीरका होजायगा उत्तर प्राप्तौ चानियमात् ४ गो० ऐसा तुम मत कहो क्योंकि इसका नियम नहीं माता और पिताका संयोग होता है और वीर्यभी होता है तोभी सर्वत्र पुत्रोत्पत्ति नहीं देखनेमें आती इस्से यह जो आपका कहा नियम सो भङ्ग होगया इत्यादि नास्तिकके खण्डनमें न्यायदर्शनमें लिखा है जो देखा चाहै सो देखले दूसरे नास्तिकका ऐसा मत है कि अभावाद्भावोत्पत्तिर्नानुपमृद्य प्रादुर्भावात् ५ गो० अभाव अर्थात् असत्यसे जगत् की उत्पत्ति होती है क्योंकि जैसे बीजका नाश करके अङ्कुर उत्पन्न होता है वैसे जगत् की उत्पत्ति होती है उत्तर व्याघातादप्रयोगः ६ गो० यह तुम्हारा कहना अयुक्त है क्योंकि व्याघातके होनेसे जिसका मर्दन होता है बीजके ऊपर भागका वह प्रकट नहीं होता और जो अङ्कुर प्रकट होता है उसका मर्दन नहीं होता इस्से यह कहना आपका मिथ्या है तीसरा नास्तिक का मत ऐसा है ईश्वरः कारणं पुरुषकर्माफल्यदर्शनात् ७ गो० जीव जितना कर्म करता है उसका फल ईश्वर देता है जो ईश्वर कर्मफल न देता तो कर्मका फल कभी न होता क्योंकि जिस कर्मका फल ईश्वर देता है उसका तो होता है और जिसका नहीं देता उसका नहीं होता इस्से ईश्वर कर्मका फल देनेमें कारण है उत्तर पुरुषकर्माभावे फलानिष्पत्तेः ८ गो० जो कर्मफल देनेमें ईश्व-

र कारणहोता तो पृथक्कर्मकर्त्ता तोभोईश्वर फलदेता सो बि-
नाकर्म करनेसे जीवकोफलनहि देता इस्से क्याजानाजाताहै कि
जोजीव कर्मजैसाकर्त्ताहै वैसा फल आपहोप्राप्तहोताहै इस्से ऐ-
साकहनाव्यर्थहै फिरभीवह अपनेपक्षको स्थापनकरने केवास्ते क
हताहै कि तत कारितत्व'दहेतु: ९ गो० ईश्वरही कर्मका फल
औरकर्मकरानेमें कारणहै जैसा कर्मकराताहै वैसा जीवकर्त्ताहै
अन्यथानहीं उत्तर जोईश्वकराता तोपापक्योंकराता और ईश्व-
रके सत्यसंकल्पके होनेसे जोजिव जैसाचाहता वैसाहीहोजाता
और ईश्वर पापकर्मकराके फिर जीवकोदण्डदेता तोईश्वरकोभी
जीवसेअधिक अपराधहोता उसअपराधका फलजो दु:खसो ईश्व
रकोभीहोनाचाहिये और केवल छली कपटी औरपापोंके करा-
नेसे पपोहोजाता इस्से ऐसा कभी कहनाचाहिये किईश्वर करा
ताहै चौथे नास्तिकका ऐसामतहै कि अनिमित्ततो भावोत्प
त्त: कण्टकतैक्ष्ण्यादिदर्शनात् १० गो० निमित्तके बिनापदार्थों
की उत्पत्तिहोतीहै क्योंकि वृक्षमें कांटेहोतेहैंवेभीनिमित्तके बि
ना तीक्ष्णहोतेहैं कणादोंकी तीक्ष्णता पर्वतधातुओंको विच.
पाषाणोंकोचिक्कनता जैसे निमित्त देखनेमेआतीहै वैसेहीशरीरा
दिकसंसारकी उत्पत्तिकर्त्ता केबिनाहोतीहै इसका कर्त्ताकोईनहीं
उत्तर अनिमित्त अनिमित्तत्वान्ना निमित्तत: ११ गो० बिननि-
मित्तके सृष्टिहोतीहै ऐसामतकहो क्योंकि जिस्से जो उत्पन्नहोता
है वहीउसका निमित्तहै वृक्ष पर्वत पृथिव्यादिक उनके निमित्त
माननाचाहिये वैसेही पृथिव्यादिककी उत्पत्तिकानिमित्तपरमेश्व
रहै इस्से तुमारा कहनामिथ्याहै/पांचवे नास्तिकका ऐसामत
है कि सर्वमनित्य मुत्पत्ति विनाशधर्मकत्वात् १२ गो० सबजगत्
अनित्यहै क्योंकि सबकीउत्पत्ति और बिनाशदेखनेमें आताहैजो
उत्पत्ति धर्मवालाहै सो अनुत्पन्न नहीहोता जो अविनाशधर्मवा
लाहै सो विनाशी कर्मानि... अभिप्रायादिमन शरीर पर्यन्त

ऋ स्थूलजितना जगतहै और बुद्ध्यादिसूक्ष्म जितनाजगत्है सो सबअ
न नित्यही जाननाचाहिये उत्तर नानित्यतानित्यत्वात् १३ गो० स
र बअनित्यनहीहैं क्योंकि सबकीअनित्यता जोनित्यहोगी तो उस
व नित्यहोनेसे सब अनित्यनहीभया और जोअनित्यता अनित्यहोगी
गे तो उसके अनित्यहोनेसे सब जगत नित्यभया इससे सब अनित्यहै
कि हैऐसाजोआपकाकहनासो अयुक्तहै फिरभीवह अपने मतको
है स्थापन करनेलगा तदनित्यत्वमग्नेर्दाह्यं विनाश्यानु विनाशवत्
मा १४ गो० वह जोहमने अनित्यता जगतकीकही सोभी अनित्यहै
से क्योंकि जैसेअग्निकाष्ठादिक कानाशकरके अपनेभीनष्टहोजाता
ऐसे है वैसेजगत कोअनित्यकरके आपभी अनित्यतानष्टहोजातीहै उ-
सपर उत्तर नित्यस्याप्रत्याख्यानंयथोपलब्धिव्यवस्थानात् १५ गो० नित्य
त्व का प्रत्याख्यान अर्थात् निषेधकभीनहीहोसक्ता क्योंकि जिसकीउप-
लब्धिहोतीहै और जोव्यवस्थितपदार्थहै उसकीअनित्यतानही
देखहोसक्ती जोनित्यहै प्रमाणोंसे और जोअनित्य सोनित्य २ होही-
१४ मृद्ग्राह्यहै और अनित्य २ होहोताहै क्योंकि परम सूक्ष्मकारण जोहै
होतीहै अनित्यकभी नहीहोसक्ता और नित्यकेगुणभीनित्यहैं तथा जो
जगत् संयोगसे उत्पन्नहोताहै और संयुक्तकेगुण वह अनित्यहैं नित्यक
१५ भीकभीनहीहोसक्ते क्योंकि पृथकपदार्थोंका संयोग होताहै वे फिरभी
ताहै पृथकहोजातेहैं इससेकुछसंदेहनही छःटवां नास्तिकयहहैकि स
टहोतवैनित्यपंचभूतनित्यत्वात् १६ गो० जितना आकाशादिक यहजग
है तोसबहै जोकुछइन्द्रियोंसे स्थूल वा सूक्ष्मजानपडताहै सोसबनित्यही
दर्शन है पांचभूतोंके नित्यहोनेसे क्योंकि पांचभूतनित्यहैं उनसे उत्पन्न
है जो भयाजो जगतसोभीनित्यहीहोगा उत्तर नोत्पत्तिविनाशकारणो
सकमेवपलब्धेः १७ गो० जिसकाउत्पत्तिकारण देखपडताहै और वि-
देता उनाशकारण वह नित्यकभीनहीहोसक्ता इत्यादिक समाधानन्या-
तर पुरुषदर्शनमेंलिखेहैं सोदेखलेना सातवांनास्तिक कामतयहहै कि
सर्वंपृथक्भाव लक्षणपृथक्त्वात् १८ गो० सबपदार्थ जगतमें पृथ

होता है क्योंकि घटपटादिक पदार्थों के पृथक् २ चिन्ह देखपड़ते हैं इससे सबवस्तु पृथक् २ होहैं एकनहीं उत्तर नास्तिकका मोर भावान्निष्पतेः १९ सू० यहबात आपकीअयुक्त है क्योंकि घड़ा गंधादिक गुण हैं और सब दिक घड़े के अवयव भी अनेक पदार्थों में एक पदार्थ युक्त प्रत्यक्ष देख पड़ता है इससे सबपदार्थ पृथक् २ हैं ऐसा जो कहना सो आपका व्यर्थ है अब इनका मत यह है कि सर्वमभावोभाव ष्वितरेतराभावसिद्धेः २० सू० इत जगत् है सोसब अभावही है क्योंकि घड़ेमें वस्त्रका भाव और वस्त्र में घड़ेका अभाव तथा गायमें घोड़का और घोड़ेमें गायका भाव है इससे सब अभावही है उत्तर नस्वभावसिद्धेर्भावानाम् २१ सू० सबअभाव नहीं है क्योंकि अपनेमें अपना अभाव कभीनहीं होता जैसे घड़ेमें घड़ेका और घोड़ेमें घोड़का अभाव नहीं होता है और जो अभावही होता तो उसकीप्राप्ति और उससे व्यवहारसिद्धि कभी नहीं होती इससे सबअभाव है ऐसाजो कहना सो व्यर्थ है क्योंकि आपही अभावहो फिर आपकहते और सुनते हो सो कैसे बनता सो कभी नहीं बनता ऐसे २ वादविवाद मिथ्याजो करते हैं नास्तिक गिनेजाते हैं सो जैन संप्रदायमें अथवा किसी संप्रदा मतवाला हुआ होय उसको नास्तिक ही जानलेना जैसे ... यह इसप्रकार ... हैं ये सब मिथ्या ... सज्जनों को जानना चाहिये जमानको ... कागि अके पकड़ें यह बात मिथ्या है तथा संसार राजा जो है ... ईश्वर है यह भी बात उनकी मिथ्या है क्योंकि सत्यन्यायपरमेश्वर कभी होसक्ता है धर्मको बड़ा न समझना और अधर्मका मको ही उत्तम समझना यह भी उनकी बात मिथ्या है इत्यादि बहुत उनके मत में मिथ्या २ कल्पना है उनको सज्जन लोग कभी न मानें

इतिश्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते द्वादशः समुल्लासः संपूर्णः